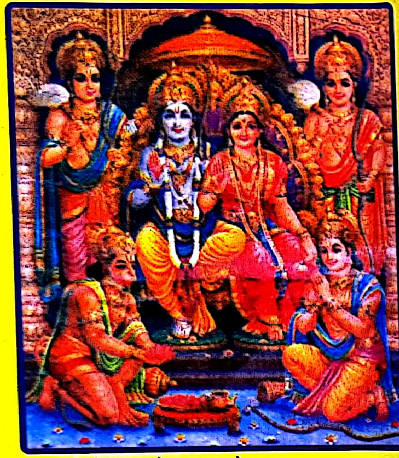
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्त्तेति नैयायिकाः ❁ तिथिर्वारश्च नक्षत्रं योगः करणमेव च ❁ श्रीगणेशाय नमः ❁ लक्ष्मीः स्यादचला तिथिश्रवणतो वारात्तथायुश्चिरं नक्षत्रं कृतपापतापशमनं योगो वियोगापहः ❁ गणाधिपोऽर्कश्च शशी धरासुतो बुधो गुरुर्भार्गवसूर्यनन्दनौ ❁
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्मेति मीमांसकाः सोयं वो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः ❁ पञ्चाङ्गस्य फलं श्रुत्वा गङ्गास्नानफलं लभेत् ❁ मकरन्दानुसारि ❁ सर्वाभीष्टकरन्तथैव करणं पञ्चाङ्गमेवं स्फुटं श्रोतव्यं गणकाननात्प्रतिदिनं श्रेयस्करं सिद्धिदम् ❁ राहुश्च केतुश्च परं नवग्रहाः कुर्वन्तु वः पूर्णमनोरथान् सदा ❁

❁ तिथ्यम्बुवृद्धं करणारविन्दं पर्वप्रवालं सुकरावतारम् ❁ ❁ विदेहजाजन्मभुवोऽन्तराले कामेश्वरीये सदनेऽतिरम्ये ❁ ❁ अपेक्षितं सर्वमिहोपदिष्टं विसृष्टमन्यन्न नृणां यदिष्टम् ❁
❁ योगोपबन्धं मनुजैरजस्रं सरोऽवगाह्यं तिथिपत्रमेतत् ❁ ❁ गिरोनिकेते निरतैर्निबद्धं बुधैर्विबृद्धिं लभतां सदेदम् ❁ ❁ ततोऽधिदेशं विततं मुदेऽदो विपश्चितामर्चनमातनोतु ❁

श्रीसीतारामाभ्यान्नमः

विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्गम्

शकाब्दः १९३३–३४



दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य वामे च जनकात्मजा ।
पुरतो मारुतिर्यस्य तं वन्दे रघुनन्दनम् ॥

जगल्लग्नम् ४।१५



विक्रमसंवत्	२०६८–६९
लक्ष्मणसंवत्	९०२–९०३
कलिसंवत्सरः	५११३

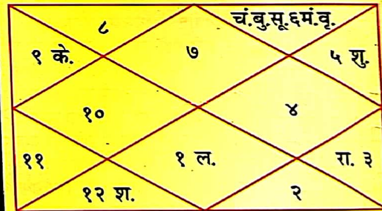
राजा–बुधः
वर्षा १५

मन्त्री–शनिः
धान्यम् १७

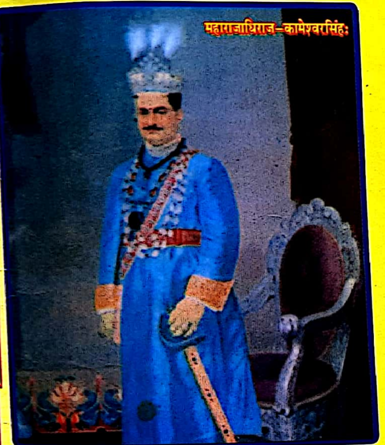
सन् १४१९ साल

कामेश्वरसिंहदरभङ्गासंस्कृतविश्वविद्यालयप्रकाशितम्

वर्षलग्नम् ६।०२



शालिवाहनशकाब्दः	१९३३–३४
भारतीयस्वतन्त्रताब्दः	६४–६५
खृष्टाब्दः	२०११–१२



संवत् २०६८–६९

❋ प्रवर्त्तकः –डॉ. रामकरण शर्मा, पूर्वकुलपतिः ❋ संरक्षकः–डॉ. उमेश शर्मा, कुलपतिः ❋ निदेशकः–डॉ. शिवाकान्त झा

प्रधानसम्पादकः–पं. श्रीरामचन्द्रझा ❋ गणितकर्त्ता सम्पादकश्च–पं. श्री भारतेन्दुनाथ ठाकुरः, पं. श्री राकेश कुमार झा

प्राप्तिस्थानम्–प्रताप ग्राफिक्स, खजांची रोड, पटना (बिहार) । मो० : 9334101241, 9431456472 ❁ सूचना–१६३४–३५ शकाब्दस्य विश्वविद्यालयपञ्चाङ्गं १६३४ शकाब्दस्य ज्येष्ठमासे प्रकाशमेष्यति ❁ मूल्यम् ₹ ३५.०० रूप्यकाणि ❁ विदेश में मूल्यम $ 10 डॉलर ❁ मुद्रकः–प्रताप ग्राफिक्स, पटना–४ ❁

आनन्दादियोगचक्रम्

योगनाम	सू.	चं.	मं.	बु	बृ	शु.	श.	फलम्
आनन्दः	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	शत.	सिद्धिः
कालदण्डः	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	मृत्युः
धूम्रः	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	दुखम्
धाता	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	ध.	रे.	शुभः
सौम्यः	मृ.	आश्ले	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	सुखम्
ध्वांक्षः	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	हानिः
केतुः	पुन	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	कृ.	दुःखम्
श्रीवत्सः	पु.	उफ	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	सम्पत्तिः
वज्रः	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	हानिः
मुद्गरः	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	पूषा.	भ.	आ.	नाशः
छत्रम्	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	उभा.	कृ.	पुन.	सम्मानः
मित्रम्	उफ	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	पुष्टिः
मानसम्	ह.	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	सुखम्
पद्मः	चि.	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	लाभः
लुम्बः	स्वा.	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ	हानिः
उत्पातः	वि.	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	नाशः
मृत्युः	अनु.	उषा.	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	मृत्युः
काणः	ज्ये.	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	क्लेशः
सिद्धिः	मू.	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	सिद्धिः
शुभः	पूषा.	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	शुभः
अमृतम्	उषा.	श.	अ.	मू.	आश्ले	ह.	अनु.	सम्मानं
मुशलम्	अभि.	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	लाभ
गदः	श्र.	उभा.	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	हानिः
मातंगः	ध.	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	वृद्धिः
राक्षसः	श.	अ.	मृ.	आश्ले.	ह.	अनु.	उषा.	कष्टम्
चरः	पूभा.	भ.	आ.	म.	चि.	ज्ये.	अभि.	सिद्धिः
सुस्थिरः	उभा	कृ.	पुन.	पूफ	स्वा.	मू.	श्रव.	शुभः
प्रवर्द्धमानः	रे.	रो.	पु.	उफ	वि.	पूषा.	ध.	सुखम्

पञ्चाङ्ग देखने की विधि

इस पञ्चाङ्ग में सर्वप्रथम तिथि उसके बाद सूर्यादि दिन का नाम एवं तिथि का दण्डपलात्मक मान, तिथि का घंटा मिनट, उसके बाद नक्षत्र का नाम, दण्डपल एवं घंटा मिनटात्मक मान, उसके बाद क्रमशः योग एवं करण के दण्डपलात्मक मान, मेषादि राशि में चन्द्रमा की अवस्थिति दण्डपल एवं घंटामिनटात्मक समय, उसके आगे क्रमशः सूर्य का मिश्रमानकालिक (मध्यरात्रिकालिक) स्पष्टराश्यादि, दण्डपलात्मक दिनमान, घण्टामिनटात्मक सूर्योदयास्त तथा राष्ट्रीय, सौर (गते) एवं अंग्रेजी तिथियाँ हैं। उसके बाद उस दिन के मुहूर्त्त एवं पर्वादि दिए गए हैं। यथा–श्रावणकृष्ण १ शनि को प्रतिपदा का दण्डपलात्मक मान १४।५६ (दिन घंटा ११ मिनट १३) तक, उत्तराषाढ का दण्डपल ११।०३ (दिन घंटा ६ मिनट ४०) तक आदि सारी बातें इसी तरह जाननी चाहिये। पञ्चाङ्ग के निचले भाग में निशीथ (मिश्रमान) कालिक दैनिक स्पष्टग्रह एवं दण्डपलात्मक मिश्रमान दिया गया है। यथा–श्रावणकृष्णप्रतिपदा शनि को मिश्रमानकालिक स्पष्टमंगल राश्यादि १।२२।४२।१६ तथा स्पष्ट बुधराश्यादि ३।२५।२२।१६ आदि। दो दिनों के स्पष्टग्रहों का अन्तर ग्रह की दैनिक गति होती है। यथा–श्रावणकृष्ण प्रतिपदा शनि एवं द्वितीया रवि के स्पष्ट मंगल का अन्तर ४१।२६ कलादि दैनिक गति मंगल की हुई। इसी तरह अन्य ग्रहों की भी गति समझनी चाहिये। इसके बाद इसी चक्र के अन्तिम भाग में दैनिक लग्नसारिणी दी गई है। सुविधा की दृष्टि से प्रतिदिन मेष से आरम्भ कर मीन तक लग्नों का मान रेलवे घड़ी के अनुसार लिखे गये हैं। अर्थात् १३, १४ आदि घण्टे से दिन के १, २ आदि घण्टे तथा शून्य घंटे से २४ यानि १२ बजे रात्रि समझना चाहिये। यथा–श्रावणकृष्णप्रतिपदा शनि को रात्रि २३।३६ बजे से १।१२ मेष, १।१३ बजे से ३।०८ तक वृष, ३।०६ से ५।२१ तक मिथुन, ५।२२ से ७।३६ दिन तक कर्क, ७।४० से ६।५५ तक सिंह, ६।५६ से १२।१० दिन तक कन्या, १२।११ बजे दिन से १४।२७ तक तुला, १४।२८ से १६।४४ तक वृश्चिक, १६।४५ दिन से १८।४६ सायं तक धनु, १८।५० से २०।३५ रात तक मकर, २०।३६ से २२।०६ रात्रि तक कुम्भ एवं २२।०७ से २३।३५ रात्रि तक मीन लग्न रहेगा। इसी तरह प्रतिदिन समझना चाहिये। पाक्षिक विषयों के साथ–साथ अन्य उपयोगी विषय 'विविधविषयाः' में दिये गये हैं। उसके बाद पाक्षिक वातावरण एवं ग्रहस्थिति (ग्रहों के उदय, अस्त, वक्र या मार्ग) लिखी गई है। शुद्धादि विषयों की सुविधापूर्वक जानकारी के लिए प्रत्येक पक्ष में पञ्चाङ्ग के ऊपरी भाग दाईं ओर गुरु और शुक्र के उदयास्त एवं शुद्धादि विवरण दिये गये हैं, ताकि सामान्य जानकारी रखनेवालों को भी सुविधा हो। यात्रादिमुहूर्त्त अर्द्धप्रहररहित नहीं है। अतः अर्द्धप्रहर एवं आनन्दादियोग का विचार कर लेना चाहिए। शमिति।

मिश्रमान (निशीथ) कालिकग्रह से इष्टकालिकग्रहस्पष्टीकरण– यथा–श्रावणकृष्ण ०२ रवि को ३०।१२ दण्डादि पर स्पष्ट मंगल बनाना है तो मिश्रमानवारादि १।४६।५२ एवं इष्टकालवारादि १।३०।१२ का अन्तर १६।४० मिश्रेष्टान्तर ऋणदण्डादि। तथा (१।२३।२३।४८) (१।२२।४२।१६) = ४१।२६ मंगल की गति कलादि। अतः (१६।४०)× (४१।२६)=११।३१ कलादि फल। अब १।२३।२३।४८–०।०।११।३१ = १।२३।१२।१७ इष्टकालिक मंगल। इसी तरह सभी ग्रह बनाना चाहिये।

समर्थका विद्वांसः

पं. श्री विद्येश्वर झा, वेद – विभागाध्यक्षः
पं. श्री देवनारायण झा, साहित्य – विभागाध्यक्षः
पं. श्री वौआनन्द झा, दर्शन – विभागाध्यक्षः
पं. श्री शिवाकान्त झा, ज्यौतिष – विभागाध्यक्षः
पं. श्री शशिनाथ झा, व्याकरण – विभागाध्यक्षः
पं. श्री चौठी सदाय, धर्मशास्त्र – विभागाध्यक्षः

पं. श्री कृपाकान्त ठाकुर — पं. श्री श्यामानन्द झा — पं. श्री कीर्त्यानन्द झा
पं. श्री तारकेश्वर त्रिपाठी — पं. श्री कृष्णानन्द झा — पं. श्री दामोदर झा
पं. श्री कालीकान्त मिश्र — पं. श्री सुरेश्वर झा — पं. श्री गोविन्द चौधरी
पं. श्री श्यामनन्दन मिश्र — पं. श्री लक्ष्मीनाथ झा — पं. श्री श्रुतिधर झा
पं. श्री उपेन्द्र झा — पं. श्री शिवकान्त झा — पं. श्री श्रीनारायण मिश्र
पं. श्री महाकान्त पाठक — पं. श्री उपेन्द्र झा — पं. श्री शुकदेव पाठक
पं. श्री किशोरनाथ झा — पं. श्री राधाकान्त मिश्र — पं. श्री उद्दिष्ट ना. झा
पं. श्री उमारमण झा — पं. श्री भगीरथ मिश्र — पं. श्री कमलेश झा
पं. श्री चन्द्रकिशोर झा — पं. श्री रामजी ठाकुर — पं. श्री विक्राऊ झा
पं. श्री देवनारायण शर्मा — पं. श्री हर्षित नारा. मिश्र — पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री हरिहर झा — पं. श्री राधाकान्त ठाकुर — पं. श्रीमती मीना कुमारी
पं. श्री गणेशकान्त झा — पं. श्री कालिकादत्त झा — पं. श्री वाचस्पति त्रिपाठी
पं. श्री त्रिलोकनाथ झा — पं. श्री सच्चिदानन्द मिश्र — पं. श्री उदितनारायण झा
पं. श्री चन्द्रनाथ मिश्र — पं. श्री काशीनाथ मिश्र — पं. श्री सर्वनारायण झा
पं. श्री उमानन्द मिश्र — पं. श्री श्रीपति त्रिपाठी — पं. श्री शोभाकान्त झा

पं. श्री महेश झा — पं. श्री खगेश झा
पं. श्री हेमनारायण चतुर्वेदी — पं. श्री फणीन्द्र चौधरी
पं. श्री सत्यनारायण झा — पं. श्री गंगाधर झा
पं. श्री ताराकान्त झा — पं. श्री शम्भुनाथ झा
पं. श्री वटेश झा — पं. श्री सूर्यकान्त झा
पं. श्री शोभाकान्त मिश्र — पं. श्री इन्द्रनाथ झा
पं. श्री विद्यानाथ मिश्र — पं. श्री तारणीश झा
पं. श्री रामगुलाम मिश्र — पं. श्री महेश मिश्र
पं. श्री वीरचन्द्र राय — पं. श्री श्रीधर त्रिपाठी
पं. श्री अमरनाथ झा — पं. श्री पुरेन्द्र वारिक
पं. श्री चन्द्रमोहन झा — पं. श्री शशिधर झा
पं. श्री धनेश्वर झा — पं. श्री लक्ष्मीश्वर झा
पं. श्री शिवकुमार शर्मा — पं. श्री शंकर कु. मिश्र
पं. श्री रामजीवन मिश्र — पं. श्री विनय कु. मिश्र
पं. श्री राजेन्द्र प्र. दूबे — पं. श्री हरेराम शर्मा
पं. श्री रामनारायण झा — पं. श्री रेणुका सिन्हा
पं. श्री चित्रधर झा — पं. श्री पारसनाथ मिश्र
पं. श्री हरिनारायण झा — पं. श्री विश्राम तिवारी
पं. श्री सिंहेश्वर झा — पं. श्री दयानाथ झा
पं. श्री धीरेन्द्र झा — पं. श्री रामलखन झा
पं. श्री चण्डेश्वर झा — पं. श्री राजकुमार झा
पं. श्री षडानन मिश्र — पं. श्रीमनोरंजन दूबे
पं. श्री अच्युतानन्द झा — पं. श्री राधारमण झा
पं. श्री इन्द्रमणि दास — पं. श्री कुलानन्द झा
पं. श्री गुणानन्द झा — पं. श्री ओंकारनाथ मिश्र
पं. श्री ललन झा — पं. श्री रामप्रपन्न शर्मा
पं. श्री विनयनाथ झा — पं. श्री खोजनारायण झा
पं. श्री फूलेन्द्र झा — पं. श्री ब्रह्मदेव मिश्र
पं. श्री शिवलोचन झा — पं. श्री उमेश मिश्र
पं. श्री दिलीप कु. झा — पं. श्री गोविन्द झा
पं. श्री ब्रह्मदेव शर्मा — पं. श्री सीताचरण झा
पं. श्री विद्याधर मिश्र — पं. श्री उग्रानन्द प्रतिहस्त
पं. श्री थानेश्वर झा — पं. श्री रामलखन शर्मा
पं. श्री शक्तिधर मिश्र — पं. श्री कुणाल कु. झा
पं. श्री दुर्गानाथ झा — पं. श्री चिरंजीव झा
पं. श्री शंकरजी झा — पं. श्री गणेश झा
पं. श्री गोलोकनाथ झा — पं. श्री बटोही झा

पं. श्री गुंजन चौधरी — पं. श्री कमलाकान्त मिश्र
पं. श्री भूपेन्द्र झा — पं. श्री श्रीरामकुमार शर्मा
पं. श्री हरेन्द्रकिशोर झा — पं. श्री भूपनारायण मिश्र
पं. श्री धनेश झा — पं. श्री तेजनारायण झा
पं. श्री कुलानन्द झा — पं. श्री श्री राजेन्द्र झा
पं. श्री कामेश्वर मिश्र — पं. श्री रतीशचन्द्र झा
पं. श्री रामविलास चौधरी — पं. श्री विष्णुदेव झा
पं. श्री भोलानाथ मिश्र — पं. श्री दिनेश ओझा
पं. श्री रामकृष्ण झा — पं. श्री हर्षनाथ झा
पं. श्री इन्द्रदेव झा — पं. श्री बाबूलाल मिश्र
पं. श्री देवनन्दन मिश्र — पं. श्री रामदेव झा
पं. श्री कपिलेश्वर झा — पं. श्री वैद्यनाथ झा
पं. श्री लक्ष्मीकान्त झा — पं. श्री नवीनचन्द्र ठाकुर
पं. श्री मधुकान्त झा — पं. श्री राजेश्वर झा
पं. श्री शिवानन्द झा — पं. श्री चन्द्रनाथ झा
पं. श्री भवनाथ झा — पं. श्री कृष्णकान्त मिश्र
पं. श्री मदनमोहन पाठक — पं. श्री भुवनेश्वर झा
पं. श्री जगन्नाथ मिश्र — पं. श्री फूलचन्द्र मिश्र
पं. श्री सदानन्द झा — पं. श्री मदनानन्द झा
पं. श्री मदन कुमार झा — पं. श्री श्रीकान्त प्रतिहस्त
पं. श्री मुनीन्द्र झा — पं. श्री कमलाकान्त ठाकुर
पं. श्री शुकदेव शर्मा — पं. श्री भागवत ठाकुर
पं. श्री राजेश्वर झा — पं. श्री कलाधर झा
पं. श्री प्रेमकान्त झा — पं. श्री रवीन्द्र ना. झा
पं. श्री हृषिकेश झा — पं. श्री रघुवीर झा
पं. श्री खगेन्द्रनाथ झा — पं. श्री विश्वनाथ झा
पं. श्री बबुआजी झा — पं. श्री हरिनारायण ठाकुर
पं. श्री हंसधर झा — पं. श्री गोपालकृष्ण झा
पं. श्री महानन्द ठाकुर — पं. श्री इन्दुनाथ ठाकुर
पं. श्री उमेश झा — पं. श्री शक्तिनन्दन झा
पं. श्री महाकान्त ठाकुर — पं. श्री मायानन्द झा
पं. श्री विजय कान्त झा — पं. श्री अनिल कु. ईश्वर
पं. श्री विनोदानन्द झा — पं. श्री भुवनेश्वर मिश्र
पं. श्री अरुण कु. उपाध्याय — पं. श्री तीर्थनाथ झा
पं. श्री गंगानाथ झा — पं. श्री विन्ध्यनाथ मिश्र
पं. श्री सत्यवान झा — पं. श्री भगलू झा
पं. श्री सुरेश झा — पं. श्री इन्द्रकान्त झा

श्रीमङ्गलमूर्तये नमः ✡ श्रीसरस्वत्यै नमः

कलिसंवत् ५११३, शकाब्दः १६३३–३४, विक्रमसंवत् २०६८–६६, सन् १४१६ साल, लक्ष्मणसंवत् ६०२–०३ खृष्टाब्दः २०११–१२ ई. तत्र प्रभवादिवार्हस्पत्यगताब्दादयः ३७ ।११ ।१८ ।५१ ।५० ।। भोग्याब्दादयः २२ ।०० ।११ ।८ ।१० ।। अत्र विद्यमाने गुणगुणनवेन्दुमिते शकाब्दे विष्णुविंशतिकायां विश्वेदेवदैवतयुगेऽष्टत्रिंशत् **क्रोधी** नामकमध्यमगुरुसंवत्सरफलम्–

विषमं च जगत्सर्वं व्याकुलं जायते प्रिये । प्रजानां जायते क्रोधः क्रोधीवर्षे परस्परम् ।।

वर्षेश (राजा) बुधफलम्

राजानो मुदिता भवन्त्यतिबलाः कीर्तिप्रतापान्विताः
गीते नृत्यरताः सदा विजयिनः कान्तामुखे षट्पदाः ।
वृष्टिः शस्यकरी घनाम्बरयुता विप्राश्च पूर्णालया
रोगानां च विनाशनं नरपशोश्चन्द्रात्मजेऽब्दाधिपे ।।

संवाहक (मन्त्री) शनिफलम्

मेघो घोररवं करोति विविधं स्वल्पं प्रयच्छेज्जलं
दुष्टानां विजयो महाजनपदा विख्यातनाशास्पदाः ।
धर्माणां खलु विप्लवो नरपतिः संक्षोभलोभाकुलः
सर्पश्वापदवेष्टिता च वसुधा संवाहके सूर्यजे ।।

पालक-शुक्रफलम्

मेघाः काले बहुसलिलमुचश्चारुकीर्त्यान्विताः स्यु–
र्लोकाः सम्पन्नवित्ता नयविनययुताः कीर्त्तिभावं वहन्ति ।
राजानः शिष्टपक्षैः प्रमुदितहृदया दानदाक्षिण्ययुक्ताः
स्वस्थाः विज्ञानशीलाः प्रतिदिनमुदिताः पालके भार्गवे च ।।

मेघेशकुजफलम्– सदा जलधराः खिन्नाः स्वल्पवृष्टिकराः कुजे ।।
तोयेशबुधफलम्– शस्ययुक्ता मही नित्यं मुदिताश्च बुधे नराः ।।
शस्येशचन्द्रफलम्– पृथ्वी शस्यसमाकीर्णा जलदा भूरितोयदाः । नन्दन्ति मानवाः सर्वे शस्येशे च निशाकरे ।।
लोकेशसूर्यफलम्– वायवो दुस्सहा वान्ति लोकसन्तापकारिणः । विनाशविकला लोका मनुष्येशे दिनाधिपे ।।
द्रोणमेघफलम्– द्रोणो द्रोहकरो लोके जलदा भूरितोयदाः । हीना वृद्धिं सुसंयान्ति शस्यं भवति दुर्लभम् ।
सिन्धुगतरोहिणीफलम्– यदि समुद्रगता शशिवल्लभा बहुजलैर्धरणी परिपूरिता ।।
चैत्रशुक्लप्रतिपच्चन्द्रफलम्–चन्द्रस्य वारो बहुवृष्टिदः स्यात् । **पौषामावास्याशनिफलम्**–बहुधनैर्धरणी परिपूरिता सकलशस्ययुता मुदितप्रजा । **नवरात्रफलम्**-मध्यमफलप्रदम् ।।
आर्द्राप्रवेशफलम्– वृष्टिप्रदम् ।। होलिकाफलम्–मध्यमम् ।। वायुः–प्रवहः ।।
दीपावलीफलम्– शोभनम् ।। मेषसंक्रान्तिफलम्–शोभनम् ।
शकाब्दफलम्– सुभिक्षमतिवृष्टिश्च ।। विक्रमसंवत्फलम्–विरोधकरं मध्यमफलदञ्च ।।
जलाढकमानम्– ८० ।। समुद्रे ४० ।। पर्वते २४ ।। पृथिव्याम्–१६ ।।

● वर्षादिविश्वाः ●

वर्षा १५ धान्यं १७ शीतं १५ तृणं १५ ऊष्णं ११ वायुः १३ प्रजावृद्धिः १५ प्रजाक्षयः १५ विग्रहः ११ क्षुधा ६ तृष्णा १३ निद्रा १ आलस्यं ११ उद्यमः ३ शान्तिः १३ क्रोधः ११ दण्डः ३ मैत्री १ उत्सवः १३ पापं ७ पुण्यं ११ रसादि ६ उग्रत्वं ७ रसोत्पत्तिः ५ फलोत्पत्तिः ६ रोगः ७ रोगक्षयः ३ आचारः १६ अनाचारः ७ मरणं ३ जननं ११ चौरभयं १७ चौरशान्तिः ५ अग्निभयं ११ अग्निशान्तिः ३ ।।

● मेषादिराशीनां सफलमायव्ययचक्रम् ●

राशि	मेषः	वृषः	मिथुनं	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः
आयः	५	१४	२	११	१४	२	१४	५	८	११	११	८
व्ययः	५	११	११	८	२	११	११	५	११	५	५	११
फलं	लाभः	हानिः	रोगः	सुखं	विजयः	रोगः	हानिः	लाभः	सुखं	विजयः	विजयः	सुखं

● सन् १४१६ साल, १६३३-३४ शकाब्दीय शुद्ध्यशुद्धी ●

श्रावणकृष्णप्रतिपच्छनिवासरादाश्विनकृष्णपञ्चम्यां शनौ ५२ ।१ यावद् भृगुक्षैण्यास्तसिंहादित्यदोषेभ्य अशुद्धस्तन्मानं मासादि २ ।३ ।५२ ।०१ । ततः पौषकृष्णषष्ठ्यां भृगौ ३६ ।१६ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि २ ।२६ ।४७ ।१५ । ततो धनुरादित्यदोषान्माघकृष्णपञ्चम्यां शनौ ५८ ।३३ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि ० ।२६ ।१६ ।१७ । ततो वैशाख शुक्लषष्ठ्यां भृगौ १६ ।२१ यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ३ ।१३ ।१७ ।४८ । ततो गुरुभृगुक्षैण्यास्तबाल्यदोषेभ्य आषाढकृष्णतृतीयायां गुरौ २० ।५१ यावदशुद्धस्तन्मानं मासादि १ ।११ ।४ ।३० । तत आषाढीं यावच्छुद्धस्तन्मानं मासादि ० ।२६ ।३६ ।०६ । अतो वर्षेऽशुद्धसमयमानं मासादि ४ ।१४ ।१५ ।४८ ।। शुद्धसमयमानं मासादि ७ ।६ ।४४ ।१२ ।। तेन वर्षपूर्त्तिदिनानि ३५४ ।।

सन् १४१६ साल, १६३३-३४ शकाब्दीय शुद्धादि

कार्तिके कार्त्तिकाकाशदीपतुलसीव्रतोद्यापनानि । मार्गमाघफाल्गुनवैशाखाषाढेषु विवाहदिनानि । माघफाल्गुन वैशाखाषाढेषूपनयनदिनानि । तदानीं गुरुर्मेषे, आषाढे च वृषराशौ । कार्त्तिकमाघफाल्गुनेष्वेकादशीव्रतोद्यापनानि। मार्गफाल्गुनवैशाखेषु पश्चिमोदितशुक्रत्वात्तृतीयादिविषमवर्षीय–पूर्वोत्तरदिशोर्द्विरागमनदिनानि बहूनि, तदितर–पश्चिमदक्षिणदिशोर्द्विरागमनदिनानि शुक्रान्ध (रे. अश्वि. रो. मृग.) नक्षत्रेष्वेव ।

●सन् १४२० साल, १६३४-३५ शकाब्दीय संभावित संक्षिप्त शुद्धादि●

कार्त्तिकमार्गमाघवैशाखज्येष्ठपूर्वार्द्धाषाढोत्तरार्द्धेषु समयशुद्धिः । मार्गादिषु विवाहादिमुहूर्त्ताः । कार्तिके कार्तिकादिव्रतोद्यापनम् । गुरुर्वैशाखंयावद्वृषे तदग्रे मिथुने । मार्गे पूर्वोदितशुक्रत्वाद्दक्षिणपश्चिमदिशोर्वैशाखे पश्चिमोदितत्वात्पूर्वोत्तरदिशोस्तृतीयादिविषमवर्षीय द्विरागमनदिनानि, तदितरदिशोस्तु शुक्रान्धनक्षत्रेषु। फाल्गुने शुक्रास्तत्वात्तृतीयादिवर्षीयद्विरागमनदिनाभावः । माद्रे **मलमासः** ।

●वर्षफलम्●

इस वर्ष के राजा बुध, मन्त्री शनि, पालकेश शुक्र, मेघपति मंगल, जलपति बुध, शस्यपति चन्द्रमा, लोकपति सूर्य, द्रोण नामक मेघ तथा रोहिणीवास समुद्र में है । वर्षारंभ में क्रोधी नामक वर्ष है । वर्षा विश्वा १५, धान्य विश्वा १७, प्रवह नामक वायु तथा जलाढक मान १६ विश्वा है । जगल्लग्न, वर्षलग्न, राजा मन्त्री में सममित्रभाव, जगल्लग्नेश सूर्य माग्यस्थ, उच्चगत, वर्षलग्नेश शुक्र पञ्चमस्थ, मित्रगृही, जगल्लग्नगत चन्द्र एवं वर्षलग्न कुण्डली में राजा षष्ठस्थ तथा मन्त्री व्ययस्थ और जगल्लग्न कुण्डली में अष्टमस्थ राजा एवं धनस्थ मन्त्री, अधिकारियों में शुभग्रह की अधिकता तथा ग्रहयुति दृष्टि के आलोक में राजा को विषम परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा। शासकवर्ग में समय समय पर वैमनस्य के कारण कार्यक्रम प्रभावित होगा । संचार, यातायात, विज्ञान के क्षेत्र में नये–नये अनुसंधान तथा विकास होंगे। कृषि–उद्योग–व्यापार–श्रम–उर्जा एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में विकासमूलक कार्य होंगे। महिलाओं की अभ्युन्नति के लिये अनुकूल कार्य होंगे। विश्वपटल पर भारत की स्थिति सामान्यतः प्रभावशाली रहेगी। मित्रता, सहयोग एवं व्यापार के क्षेत्रों में अनुकूलता रहने के बावजूद शस्त्रास्त्र निर्माण में विश्व के प्रायः अधिकांश देश प्रयासरत रहेंगे । चार–पाँच–छह ग्रहों तक के योग हैं। अतएव प्राकृतिक उत्पात (भूकम्प, बाढ़, ज्वालामुखीकोप, तूफान, हिमपात, भूस्खलन, विद्युत्, प्रचण्डवायु आदि), हिंसक घटनाएँ, यान–दुर्घटना, अग्निकोप एवं हड़ताल आदि से धन जन की हानि संभावित रहेगी । बाहरी अनुकूलता के बावजूद पड़ोसी देशों से सम्बन्ध अच्छा नहीं रहेगा । अतिवृष्टि, विषमवृष्टि या खण्डवृष्टि तथा बाढ़ से कृषि प्रभावित होगी। कृषि को ईति से क्षति होगी। चैत्री, भाद्री एवं अगहनी फसल की उपज क्रमशः ६०, ८०, ८५ प्रतिशत होगी ।

●मासफलम्●

श्रावण–इस मास में ५ रविदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ३० तथा सौम्यशृंग है । अतः खाद्यपदार्थ, वस्त्र, धातुपदार्थ, फल–व्यञ्जनादि के भाव में साम्य रहेगा । अतिवृष्टि, विषमवृष्टि, बाढ़ एवं वायुवेग से कृषि को हानि हो सकती हे । उत्तरार्द्ध में अन्नादि के भाव में तेजी संभव है । ५ रविवासर रोगचोरभय, उत्पात, दुर्घटना एवं उपद्रवसूचक हैं । कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

भादव–इस मास में ५ बुधवासर, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त्त ४५ एवं सौम्यशृंग है। अतएव सभी प्रकार के जीवनोपयोगी वस्तुओं के भाव में साम्य–सस्ती का क्रम रहेगा। अभ्युन्नति मूलक कार्य होंगे। खण्डवृष्टि, विषमवृष्टि एवं बाढ़ के कारण कृषि पर प्रतिकूल प्रभाव संभावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है।

आश्विन—इस मास में ५ शनिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं सौम्यशृंग है । अतः सभी प्रकार के जीवनोपयोगी वस्तुओं के भाव में तेजी का क्रम रहेगा । तरलपदार्थ एवं श्वेतपदार्थ विशेष महंगे होंगे । पञ्चग्रहयोग भी है। अतः रोगचोरभय, प्राकृतिक उत्पात, यान दुर्घटना, हड़ताल, विषमवृष्टि, मेघगर्जन, वायुवेग एवं वज्रपात से क्षति संभावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है ।

कार्तिक—इस मास में ५ मंगलवासर, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं सौम्यशृंग है । चारग्रहों का योग भी है । अतः पूर्ववत् वस्तुओं के भाव में साम्य–तेजी का क्रम रहेगा । लाल पदार्थ, धातुपदार्थ में तेजी रहेगी । उपद्रव, यान दुर्घटना, प्राकृतिक उत्पात, हिमपात, राजनैति उत्थल–पुत्थल या शासन सूत्र में परिवर्तन संभावित रहेगा। खण्डवृष्टि एवं हिमपात संभावित है । कल्याणार्थ धर्माचरण करना चाहिए ।

अगहन—इस मास में ५ वृहस्पतिदिन, सूर्यसंक्रान्तिमूहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५, ग्रहचतुष्टययोग एवं सौम्यशृंग है। अतः वस्तुओं के भाव में पूर्ववत् उतार–चढ़ाव का क्रम रहेगा । तरल पदार्थ एवं श्वेतपदार्थ महंगे होंगें। प्राकृतिक उत्पात, यान–दुर्घटना, हिमपात, असन्तोष एवं चौररोगभय संभावित रहेगा । कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

पौष—इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्य संक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं सौम्यशृंग है । अतएव पूर्वापेक्षया हर प्रकार के वस्तुओं की तेजी में कमी आएगी । श्वेत पदार्थ एवं तरल पदार्थ सस्ते होंगे । फल–व्यञ्जनादि के भाव में भी साम्य रहेगा । हिमपात, यान दुर्घटना, शीतवृद्धि एवं झंझावात संभावित रहेगा । कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

माघ—इस मास में ५ शनिवासर, सूर्य संक्रान्ति मुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है। अतः खाद्य पदार्थ, धातु पदार्थ, खनिज पदार्थ, फल–व्यञ्जनादि के भाव में साम्य रहेगा । तरल पदार्थ एवं काले पदार्थ के मूल्य में तेजी आएगी। हिमपात, उपलपात, उपद्रव, हड़ताल, प्राकृतिक उत्पात, यान दुर्घटना एवं राजनैतिक उथल–पुथल संभावित रहेगा। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्तव्य है ।

फागुन—इस मास में ५ सोमदिन, सूर्य संक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं समशृंग हैं। अतएव धातुपदार्थ, काले पदार्थ, लाल पदार्थ एवं गृहनिर्माणोपकरण के मूल्य में तेजी आएगी । श्वेत पदार्थ, वस्त्र एवं तरल पदार्थों के मूल्य में साम्य रहेगा । फल–व्यञ्जनादि के भाव में उतार–चढ़ाव रहेगा । अग्निभय, रोग–चौरोपद्रव, यान दुर्घटना, झंझावात, प्राकृतिक उत्पात एवं राजनैतिक उतार–चढ़ाव की स्थिति रहेगी । कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

चैत—इस मास में ५ बुधदिन, सूर्यसंक्रान्ति मुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं सौम्यशृंग है। अतः खाद्य पदार्थ, फलादि, व्यञ्जनादि, खनिज पदार्थ तथा रसादि के मूल्य में उतार–चढ़ाव का क्रम रहेगा । धातुपदार्थ, रक्त पदार्थ एवं कृष्णपदार्थ के मूल्य में तेजी का क्रम रहेगा । औषधियां महंगी होगी । राजनीतिक हलचली, दुर्घटना, अग्निभय, उपद्रव एवं झंझावात संभावित है। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

वैशाख—इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्य संक्रान्ति मुहूर्त ४५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त १५ एवं याम्यशृंग है। इस मास में मंहगाई बढ़ने की संभविना है । श्वेतपदार्थ, रसादि के मूल्य में उतार–चढ़ाव का क्रम रहेगा। झंझावात, तूफान, अग्निभय, गर्मी की अधिकता तथा यान दुर्घटना संभावित रहेगी । कल्याणार्थ धर्माचरण अपेक्षित है ।

जेठ—इस मास में ५ सोमदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त १५, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ३० एवं समशृंग है । षडग्रह का योग हैं अतः सभी प्रकारक के वस्तुओं के भाव में उतार–चढ़ाव का क्रम रहेगा । रक्तपदार्थ, धातुपदार्थ एवं कृष्णपदार्थ महंगे होंगें । प्राकृतिक उत्पात, झंझावात, उपलपात, उपद्रव, राजनैतिक अस्थिरता, यान दुर्घटना, वायुवेग, अग्निकाण्ड आदि से क्षति तथा रोगचौरभय संभावित रहेगा । कल्याणार्थ विशेषरूप से धर्मकृत्य कर्त्तव्य है ।

आषाढ़—इस मास में ५ शुक्रदिन, सूर्यसंक्रान्तिमुहूर्त ३०, चन्द्रदर्शनमुहूर्त ४५ एवं सौम्यशृंग है । चार ग्रहों का योग भी है। अतएव पूर्वापेक्षया वस्तुओं के भाव सम रहेंगे । झंझावात, वायुवेग, अग्निभय एवं दुर्घटना संभावित रहेगी। उपद्रव या राजनैतिक उथल–पुथल संभावित रहेगी। कल्याणार्थ धर्माचरण कर्त्तव्य है ।

राशिफलम्

मेष—(चु, चे, चो, ल, लि, लु, ले, लो, अ)—वर्षफल मध्यम है । उदर पीड़ा, रक्तवातदोष, घाव, आपरेशन एवं अशान्तिकर स्थिति की संभावना रहेगी । स्थान परिवर्तन होगा । पारिवारिक सुख में कमी तथा सन्तानसुख मध्यम है। शिक्षा, उद्योग, कृषि, व्यवसाय एवं राजनीति क्षेत्रों में आंशिक लाभ होगा। नवीन कार्यारंभ में बाधा संभावित रहेगी। मांगलिक कार्यों, तीर्थाटन एवं न्यायालय से संबद्ध कार्य में व्यय होगा। राहु की तथा १५ नवम्बर से १४ मई तक शनि की शान्ति करना श्रेयस्कर होगा। मंगलव्रत एवं हनुमदुपासना लाभकर होगी ।

वृष—(इ, उ, ए, ओ, व, वि, बु, वे, वो)—वर्षफल मिश्रित फलद हैं । मूत्रविकार, उदरपीड़ा, घाव एवं वातरक्तदोष संभावित रहेगी। पारिवारिक सुख मध्यम तथा सन्तान सुख में यदा कदा बाधा उत्पन्न होगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, राजनीति एवं नवीन कार्यारंभ में यदा–कदा बाधा एवं विलम्ब के कारण आंशिक लाभ होगा। स्थान परिवर्तन का योग है। राहु केतु की तथा १४ मई तक गुरु की उपासना लाभकर होगी। दुर्गोपासना कर्त्तव्य है ।

मिथुन—(क, कि, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह)—वर्षफल सामान्य है। रक्त वातदोष, उदरपीड़ा, मूत्रदोष एवं घाव से समय–समय पर स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है । पारिवारिक सुख अनुकूल तथा सन्तान सुख मध्यम रहेगा। नवीन कार्य में बाधा हो सकती है । शिक्षा, उद्योग, व्यवसाय एवं राजनीति के क्षेत्रों में आंशिक लाभ होगा। भ्रमण, तीर्थाटन एवं मांगलिक कार्य संभव है । केतु की तथा १५ मई के बाद गुरु की उपासना लाभकर होगी। विष्णुसहस्रनाम का पाठ श्रेयस्कर होगा।

कर्क—(हि, हु, हे, हो, ड, डि, डु, डे, डो)—वर्षफल शुभद है । उदरविकार, कफदोष, वात या घाव से स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है । उद्योग–व्यापार, शिक्षा एवं राजनीति के क्षेत्रों में सफलता मिलेगी । नवीन कार्यारंभ का योग बनेगा। प्रभाववर्द्धक स्थिति रहेगी । राहु तथा १५ नवम्बर से १४ मई तक शनि की उपासना लाभकर होगी । दुर्गापाठ (चतुर्थाध्याय) करना श्रेयस्कर होगा ।

सिंह—(म, मि, मु, मे, मो, ट, टि, टु, टे)—वर्षफल मिश्रित फलद है । वात रक्तदोष से स्वास्थ्य में न्यूनता, पारिवारिक सुख में कमी तथा सन्तानसुख अनुकूल रहेगा। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति में अपेक्षाकृत लाभकर स्थिति रहेगी । नवीन कार्यारंभ में बाधा एवं विलम्ब से आंशिक सफलता मिलेगी । राहु तथा शनि (१४ नवम्बर से ११ मई तक छोड़कर) की उपासना लाभकारक होगी। दुर्गापाठ (चतुर्थाध्याय) करना श्रेयस्कर होगा।

कन्या—(टो, प, पि, पू, ष, ण, ठ, पे, पो)—शनि की साढे साती चल रही है । अतएव रक्त वात दोष से अस्वस्थता, चौर–तस्करभय, मानसिक चञ्चलता, चोर–चपेट की संभावना, शत्रुबाधा, व्यय, बाधा–विलम्ब के पश्चात् कार्यासिद्धि में सफलता में कमी तथा स्थान परिवर्तन संभव रहेगा। शिक्षा, कृषि, राजनीति एवं व्यापार में आंशिक लाभ होगा। सन्तान सुख मध्यम तथा पारिवारिक सुख बाधित रहेगा। शनि शान्त्यर्थ हनुमद्दर्शन–पूजन स्तोत्रपाठ, कृष्णगोदर्शन, गोग्रासदान, मंगलव्रत, सुन्दरकाण्डपाठ अथवा सप्तशतीपाठ, शनिपूजन दर्शन–स्तोत्रपाठ–मन्त्रजप, शनिदिन अश्वत्थ में जलतिलदान, तिलतैल से हनुमद्दीपदान कर्त्तव्य हैं। काले घोड़ा नाल–वृषोत्सर्गदगनी–नाव के माङि के लोहे की अंगूठी (गंगाजल से सिक्त एवं शनिमन्त्राभिमन्त्रित) वाम हाथ की मध्यमा में शनिदिन धारण करना श्रेयस्कर होगा। १४ मई तक गुरु की भी उपासना अपेक्षित है।

तुला—(र, रि, रु, रे, रो, त, ति, तु, ते)—शनि की साढ़े साती चल रही है। अतएव मूत्रदोष एवं रक्त वात दोष से स्वास्थ्य की प्रतिकूलता, कार्यसिद्धि में बाधा एवं विलम्ब, शत्रु प्रकोप, विरोध, व्यय तथा शिक्षा–राजनीति–व्यापार–कृषि क्षेत्रों में आंशिक लाभ, स्थान परिवर्तन, व्यर्थभ्रमण एवं चोट–चपेट की संभावना रहेगी। अतः कन्या राशिवत् शनि की, राहु की तथा १४ मई के बाद वृहस्पति की उपासना लाभकर होगी।

वृश्चिक—(तो, न, नि, नु, ने, नो, य, यि, यु)—वर्षफल मिश्रित फलद हैं । वात–रक्त–मूत्रविकार, घाव या चोट से स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा। पारिवारिक सुख अनुकूल एवं सन्तान सुख में कमी संभावित रहेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार, राजनीति एवं कृषि क्षेत्रों में बाधा–विलम्ब के बाद आंशिक लाभ होगा। स्थान परिवर्तन, मांगलिक कृत्य एवं भ्रमण का योग है। राहु–केतु तथा १५ मई से गुरु की एवं १५ नवम्बर से ११ मई तक कन्या राशिवत् शनि की उपासना लाभकर होगी ।

धनु—(ये, यो, भ, भि, भू, ध, फ, ढ, भे)—वर्षफल सामान्यतः अनुकूल रहेगा। वातरक्तदोष, मूत्रविकार या घाव से स्वास्थ्य में न्यूनता संभावित रहेगी। ह्रदयविकार या आपरेशन संभावित है । पारिवारिक सुख अनुकूल तथा सन्तान सुख में कमी रहेगी। शिक्षा, उद्योग, व्यापार एवं राजनीति में सफलता मिलेगी। राहु की उपाासना लाभकर होगी।

मकर—(भो, ज, जि, जु, जे, जो, ख, खि, खु, खे, खो, ग, गि)—वर्षफल शुभद है। नवीन कार्यारम्भ में सफलता मिलेगी। मित्र सहयोग तथा न्यायालय के कार्यों में विजय होगा । वातरक्तदोष अथवा उदरविकार से अस्वस्थता, पारिवारिक सुख अनुकूल, सन्तान की उभ्युन्नति, शिक्षा–उद्योग–व्यापार–कृषि–राजनीति में लाभ, स्थान परिवर्तन, अभ्युन्नति, अपव्यय, भ्रमण एवं तीर्थाटन संभव है। साझेदारी कार्य में विवाद हो सकता है। हनुमदुपासना लाभकर होगी।

कुंभ—(गु गे, गो, स, सि, सु, से, सो, द)—वर्षफल मध्यमफलद है । वातरक्तदोष, चोट–चपेट, उदविकार या घाव से स्वास्थ्य में न्यूनता संभव है । पारिवारिक सुख अनुकूल एवं सन्तान सुख मध्यमोत्तम रहेगा। अकारणविवाद, भ्रमण, अपयश एवं अशान्तिकर स्थिति समय–समय पर संभावित रहेगी। शिक्षा, राजनीति, उद्योग–व्यवसाय में लाभ होगा। कुछ बाधा एवं विलम्ब से नवीन कार्यारंभ में सफलता मिलेगी। प्रभाववर्द्धक एवं अभ्युन्नति शील स्थिति रहेगी। तीर्थाटन का योग लगेगा। १५ नवम्बर से पूर्व तथा ११ मई के बाद कन्या राशिवत् शनि की उपसाना लाभकारी होगी ।

मीन—(दि, दु, थ, झ, ञ, दे, दो, च, चि)—शनि की साढ़े साती चल रही हैं । अतः वातरक्तदोष, ब्रण एवं उदविकार से पीड़ा होगी । सन्तान सुख उत्तम, पारिवारिक सुख बाधायुक्त, भ्रमण, स्थानपरिवर्तन, शत्रुबाधा, साझेदारी के कार्यों में रूकावट, शिक्षा–राजनीति–कृषि–उद्योग–व्यापार आदि कार्यों में बाधा एवं विलम्ब से अपेक्षानुरुपलाभ में कमी तथा नवीन कार्यारंभ में बाधा हो सकती है । अतएव कन्या राशिवत् शनि की उपासना लाभकर होगी।

अथ ग्रहाणां तान्त्रिकमन्त्राः

सूर्यस्य–ओम् घृणिः सूर्य आदित्य । **चन्द्रस्य**–ओम् सों सोमाय नमः । **कुजस्य**–ओम् अं अङ्गारकाय नमः । **बुधस्य**–ओम् बुं बुधाय नमः । **गुरोः**–ओम् वृं वृहस्पतये नमः । **शुक्रस्य**–ओम् शुं शुक्राय नमः । **शनेः**–ओम् शं शनैश्चराय नमः । **राहोः**–ओम् रां राहवे नमः । **केतोः**–ओम् कें केतवे नमः ॥

ग्रहाणां समिधः–अर्कः पलाशः खदिरस्त्वपामार्गोऽथ पिप्पलः । औदुम्बरः शमी दूर्वा कुशश्च समिधः क्रमात् ॥

शाकल्यनिर्माणम्–तिलार्द्धं तण्डुलं प्रोक्ताः तण्डुलार्द्धं यवाः स्मृताः । यवार्द्धं शर्करा प्रोक्ता सर्वार्द्धन्तु घृतं स्मृतम् ॥

छन्दोगप्राण–प्रतिष्ठामन्त्रः–ओम् वाङ्मनः प्राणापानौ व्यानश्चक्षुः श्रोत्रं शर्म्म वर्म भूतिः प्रतिष्ठा ॥ वाजसनेयिनां **देवताप्राणप्रतिष्ठामन्त्रः**–ओम् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञग्वं समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

शुभदिनानि–चन्द्रबुधगुरुशुक्रदिनानि । **शुभतिथयः**–२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५ ।

शुभनक्षत्राणि–अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. रे. । **शुभलग्नानि राशयश्च**–वृष, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला, धनु, मीन ।

ग्रहकृतारिष्टशमनाय सौषधजलस्नानम्

लज्जावती, कुष्ठः (कुढ), बला (बरियार), प्रियंगु (काउनी), घनः (मोथा), सर्षपः, हरिद्रा, देवदारु, पुंखा (सहफोका), लोध्रं एतैरौषधैर्युतजले पुष्पाक्षतदूर्वाश्रीखण्डरक्तचन्दन–धान्यशतावरी–तीर्थोदक–सप्तमृत्तिका– तिल–यव–पञ्चगव्य–ताम्बूल–पञ्चपल्लव–पञ्चरत्नादीनि प्रक्षिप्य तैर्जलैः स्नायात् । एवं कृते दुष्टग्रहसूचितारिष्टनाश इष्टसिद्धिश्च ।

अर्द्धप्रहराबोधकचक्रम्

दिन	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
दिने	४।५	२।७	२।६	३।५	७।८	३।४	१।६।८
रात्रौ	४।६	४।७	०।२	५।७	५।८	०।३	१।६।८

ग्रहाणामरिष्टहरत्वम्

राहुदोषं बुधो हन्यादुभयोस्तु शनैश्चरः । त्रयाणां भूमिजो हन्ति चतुर्णां दानवार्चितः ॥ पञ्चानां देवमन्त्री च षण्णां दोषन्तु चन्द्रमाः । सप्तदोषं रविर्हन्ति विशेषादुत्तरायणे । शुक्रो दशसहस्राणि बुधो दशशतानि च । लक्षमेकं तु दोषाणां गुरुर्लग्ने व्यपोहति॥

योगिनीवासो युद्धयात्रायाम्

तत्र वामपृष्ठगता योगिनी शुभा, दक्षिणसम्मुखगा चाशुभा

तिथयः	१।६	३।११	५।१३	४।१२	६।१४	७।१५	२।१०	८।३०
दिशा	पू.	अ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई.

गर्भाधानमुहूर्तः

रो. मृ. उत्तरा 3. ह. स्वा. अनु. श्र. ध. श. चि. पुन. पु. अश्वि. नक्षत्रेषु, १ ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ तिथिषु । चं. बु. वृ. शु. वारेषु । रात्रौ, रजोदर्शनानन्तरं चतुर्थरात्रितः 12 रात्रिं यावत् । शुभैः केन्द्रत्रिकोणगैः, पापैस्त्र्यायारिगैः, पुंग्रहदृष्टलग्ने, चन्द्रे विषमांशगे युग्मराशौ शुभम् ।

सीमन्तपुंसवनमुहूर्त्तः

पुंसवनं गर्भतस्तृतीये मासि कार्यम् । सीमन्तोन्नयनं च षष्ठेऽष्टमे वा मासि मासाधिपतौ सवले कार्यम् । मृ. पुष्य. श्रव. मृ. पुन. ह. रो. रे. उत्तरा 3 (जन्मभं विना) नक्षत्रेषु, १ ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । सू. मं. वृ. वारेषु, मतान्तरेण शु. चं. अपि. पूर्वाह्णे, पुंभस्यांगे तदंशे शुभम् । तत्र पापैः ३ ।६ ।११ स्थितैः, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितैः, चन्द्रे २ ।३ ।४ ।५ ।९ ।१० ।११ स्थिते, ४ ।८ ।१० पापरहितैः शुभम् ।

जातकर्ममुहूर्त्तः

जातकस्य ग्रहदोषनाशाय आयुःश्रीवृद्धये च जन्मकाल एव जातकर्म पिता कुर्यात् । तदतिक्रमे एकादशे द्वादशेऽह्नि, चि. अनु. रे. उत्तरा 3. रो. अश्वि. पुन. पु. स्वा. श्र. ध. श. नृक्षत्रेषु पूर्णिमां विहाय शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

शिशोर्दुग्धपानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. ह. पुन. उत्तरा 3 पुष्य. चि. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु वृष–सिंह–वृश्चिक कुम्भलग्नेषु स्तनपानं शुभम् । अन्नप्राशनोक्त–दिनतिथिनक्षत्रेषु **सूतिकापथ्यं** शुभम् । भैषज्योक्तनक्षत्रेष्वौषधिभक्षणञ्च शुभं स्यात्।

सूतिकास्नानमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. स्वा. अनु. उत्तरा ३.रे. नक्षत्रेषु रवि, मङ्गल, वृहस्पतिवारेषु, शुभलग्नेषु शुभदृग्युतेषु १ ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१३ ।१५ तिथिषु सूतिकास्नानं शुभम् । आश्ले, पूर्वा ३, ज्ये. ध. श. नक्षत्रेषु मध्यमम् ।

प्रसूतिनखच्छेदनमुहूर्त्तः

अश्वि रो. मृ. पुन. पु. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. वि. अ. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, ३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१३ तिथिषु ३ ।५ ।६ ।७ ।८ ।११ लग्नेषु शुभदिनेषु पूर्वाह्णे शुभम् ।

स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणमुहूर्त्तः

भ. आ. आश्ले. म. वि. श. रहितनक्षेत्रषु शनिमंगलरहितदिनेषु शुभतिथौ स्त्रीणां लाक्षाभरणधारणं (लहठी धारणं) शुभम्। **शिशुनिष्क्रमणमुहूर्त्तः**–जन्मतश्चतुर्थे मासि यात्रोक्तदिनतिथिनक्षत्रेषु द्वादशे दिवसे वा शुभं स्यात् ।

शिशोर्भूम्युपवेशनमुहूर्त्तः

आदौ पृथ्वीं वराहञ्च सम्पूज्य कुजवले पञ्चमे मासि उत्तरा 3. रो. मृ. ज्ये. अनु. अश्वि. ह. पुष्य अभि. नक्षत्रेषु रिक्तमारहिततिथिषु शुभदिनेषु वृष, वृष, सिंह, वृश्चिक, कुम्भलग्नेषु शिशोः कटिप्रदेशे कटिसूत्रं बद्ध्वा पृथिव्यामुपवेशयेत्। **तन्मन्त्रः**–रक्षैनं वसुधे देवि सदा सर्वगतं शुभम्। आयुः प्रमाणं सकलं निक्षिपस्य हरिप्रिये । अत्रैव शिशोरग्रे वस्त्रं, शस्त्रं, लेखिनीं, पुस्तकं, सुवर्णं रौप्यं च स्थाप्यम् । तेषु बालो यं गृह्णाति तैस्तस्य वृत्तिः ज्ञातव्येति ।

शिशुविलोकनमुहूर्त्तः

तृतीये मासि शुभतिथिदिननक्षत्रेषु पुष्पफलवस्त्रद्रव्यादिना शिशुदर्शनं शुभम् ।

नामकरणमुहूर्त्तः

विप्राणां ११, १२ क्षत्रियाणां १३ वैश्यानां १६ शूद्राणां ३१ तमे दिने नामकरणं शुभम् । अथवा स्वा. पुन. श्र. ध. ह. अश्वि. पुष्य, अभि. उत्तरा ३, रो. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १ ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, पूर्वाह्णे शुभम्, मध्याह्ने मध्यमम् । शुभलग्ने, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितैः, पापैः ३ ।६ ।११ स्थैः, ८ ।१२ गृहे शुद्धे, चन्द्रे २ ।३ ।५ ।९ ।१० स्थिते । लग्ने शुभांशे पितृपुत्रयोश्चन्द्रतारानुकूले उत्तरायणे शुद्धसमये शुभं नामकरणम् ।

अन्नप्राशनमुहूर्त्तः

कन्यकानां पञ्चममासतो विषममासेषु बालकानां षष्ठात्सममासेषु रो. उत्तरा ३. मृ. रे. चि. अनु. स्वा. पुन. श्र. ध. श. ह. अश्वि. पुष्य, नक्षत्रेषु, २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।१३ ।१५ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुक्लपक्षे, पूर्वाह्णे, २ ।३ ।४ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ लग्नेषु, एषु जन्मलग्नराश्योरष्टमलग्नमंशं च रहितेषु । शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितैः, पापैः ३ ।६ ।११ गतैः, दशमस्थाने ग्रहरहिते, शुभदृग्युतलग्ने, ४ ।६ ।८ ।१२ रहिते चन्द्रे अन्नप्राशनं शुभम् ।

कर्णवेधमुहूर्त्तः

१ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, चं. बु. शु. दिनेषु, जन्मतारां विहाय श्र. ध. ह. अश्वि. पुष्य. अभि. मृ. रे. चि. अनु. नक्षत्रेषु, १२ ।६ मासे वा विषमवर्षे, चैत्रपौषहरिशयनरिक्तासमवर्षाणि त्यक्त्वा, २ ।३ ।४ ।६ ।७ ।९ ।१२ लग्नेषु, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० गतैः, पापैः ३ ।६ ।११ गतैः, लग्नस्थे गुरौ शुद्धसमये शुभः ।

चूडाकरण (मुण्डनाद्यकचकर्त्तन) मुहूर्त्तः

चैत्ररहितमाघादि षण्मासे, ज्येष्ठाग्रहायणयोः ज्येष्ठसन्तानं विना, विषमवर्षे, अश्वि., मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. ज्ये. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु चं. बु. वृ. शु. वारेषु २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१३ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २ ।३ ।४ ।८ ।९ ।१२ एतद्राशेर्लग्नांशे शुक्रवर्जिताष्टमशुद्धे, पापैः ३ ।६ ।११ गतैः, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० गतैः, जन्मराशिलग्नयोरष्टमेतरलग्ने, ४ ।६ ।८ ।१२ रहितचन्द्रे शुभम् ।

अक्षरारम्भमुहूर्त्त

उत्तरायणे पञ्चमवर्षे (वालो यदि क्षमस्तदा तत्पूर्व्वमपि) गणेशविष्णुसरस्वतीलक्ष्मीकुल–ग्रामदेवताः विधिवत्सम्पूज्य प्रथमाक्षरारम्भो विधेयः । अश्वि. आर्द्रा. पुन. पुष्य ह. चि. स्वा. अनु. अभि. श्र. रे. नक्षत्रेषु, २ ।३ ।५ ।६ ।१० ।११ ।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, वृष, मिथुन, कन्या, धनु, मीन, लग्नेषु तन्नवांशे चोत्तमः, कुम्भांशकं विनाऽष्टमशुद्धे, गुरौ दशमे, बुधे सप्तमे, शुक्रे लग्ने ग्रहवलाढ्ये शुभः ।

विद्यारंभमुहूर्त्तः

उत्तरायणे गणेशविष्णुलक्ष्मीसरस्वतीकुलग्रामदेवताश्च सम्पूज्य अक्षरग्रहणे दृढे सञ्जाते सति, सूर्यबुधगुरुशुक्रवारेषु, २।३।५।६।१०।११।१२ तिथिषु, अश्वि. मृ. आर्द्रा. पुन. पुष्य, आश्ले ह. चि. स्वा. मूल, पूर्वा. ३. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, लग्नाष्टमशुद्धे, शुभैः १।४।५।७।९।१० गतैः, पापैः ३।६।११ गतैः वृषमिथुनकन्याधनुर्मीनान्यतमलग्ने तदंशे वा विद्यारंभः शुभः।

उपनयन (व्रतबन्ध) मुहूर्त्तः

शुद्धसमये, उत्तरायणे, माघादिषण्मासेषु, सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु (सामवेदिनां मंगलवारेऽपि), जन्ममासनक्षत्रादौ व्रतं शुभम्। २।३।५।१०।११।१२ तिथिषु शुक्लपक्षे, पूर्वाह्ने च शुभम्। मकरार्के-पौषे ११।१२, मकरार्के माघे १२, चैत्रे वैशाखे च तृतीया, वैशाखभिन्नमासानां द्वितीया, आषाढे १०।११ चोपनयने निषिद्धाः। अश्वि. रो. मृ. आ. पुष्य. आश्ले. पूर्वा ३, उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु (क्षत्रियवैश्ययोः पुनर्वसावपि) शुभम्। ब्राह्मणानां पुनर्वसुनक्षत्रे उपनयनं निषिद्धम्। मन्वादियुगादिषु, अपराह्ने, सायं, प्रदोषेऽनध्याये, कृष्णपक्षे चोपनयनं निषिद्धम्। त्रिषडस्थाः खलाः सर्वे चन्द्रो द्विद्यूनदिक्त्रिगः। सौम्याः केन्द्रत्रिकोणस्थाः लाभे सर्वे व्रते शुभाः। लग्नेशचन्द्रशुक्रगुरवः षडष्टगा न शुभाः। चन्द्रशुक्रौ लग्नात् १२ गतौ न शुभौ। १। ५।८ स्थाः पापा न शुभाः। ६। ८।१२ गताः शुभा न शुभप्रदाः। ३। ६।११ गताः पापाः शुभदाः, पूर्णचन्द्रो वृषकर्कलग्नगतः शुभो नान्यथा। लग्नेऽर्कः शुभः। **गुरुशुद्धिः**—जन्मराशितः उपनयनकाले २।५।७।९।११ स्थानगतः गुरुः शुभः, ४।१०।१२ स्थानगतः शान्त्या शुभः, १।३।६।८ स्थानगतो निषिद्धः। रामाचार्यमतेन १।३।६।१० स्थानगतो गुरुः शान्त्या शुभः, ४।८।१२ स्थनगतो निषिद्धः। ब्राह्मणानां पञ्चवर्षतः षोडशवर्षपर्यन्तं, क्षत्रियाणां षड्वर्षादारभ्य द्वाविंशतिवर्षपर्यन्तं, वैश्यानामष्टवर्षादारभ्य चतुर्विंशतिवर्षपर्यन्तमुपनयनकालः। तत्रोपनयनारम्भकालात्सर्वेषां यथोत्तरं गौणकालोऽतः समये प्राप्ते सति यथापूर्वमुपनयनं कार्यम्।

प्रदोषनिर्णयः—यदा तृतीयायां प्रहररात्र्यभ्यन्तरे चतुर्थी, द्वादश्यां मध्यरात्र्यभ्यन्तरे त्रयोदशी, षष्ठ्यां सार्द्धप्रहररात्र्यभ्यन्तरे सप्तमी तिथिर्भवेत्तदा प्रदोषोऽवगन्तव्यस्तत्रोपनयनं निषिद्धम्।

विवाहमुहूर्त्तः

मार्गमाघफाल्गुनवैशाखज्येष्ठाषाढमासेषु सौरक्रमेण (मार्गे देवोत्थानात्परमाषाढे हरिशयनात्प्रागेव) १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, सू.चं.बु.वृ.शु. वारेषु, अश्वि. रो.मृ.म. उत्तरा 3, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.रे. नक्षत्रेषु पंचशलाकावेधरहितेषु, वृष, मिथुन, कन्या, तुला, धनु, मीन, लग्नेषु, शुभग्रहेषु १।४।५।७।९।१० स्थितेषु, पापेषु ३।६।११ गतेषु शुभः। विवाहे यदि गुर्वा शुक्रो १।४।५।७।९।१० गतो भवेत्तदा सकलदोषं नाशयति। ज्येष्ठ कन्या, ज्येष्ठो वरः ज्येष्ठमासश्च त्रिज्येष्ठसंज्ञकस्तत्र विवाहो न कार्यः। ज्येष्ठकन्यावरयोः ज्येष्ठमासे विवाहो निषिद्धः। ज्येष्ठद्वयं मध्यमं स्यात्। आवश्यके कृत्तिकास्थं सूर्यं त्यक्त्वा ज्येष्ठमासेऽपि ज्येष्ठवरकन्ययोर्विवाहः शुभः।

वरवरणमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु कृतिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः शुभम्।

कन्यावरणमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु कृत्तिकापूर्वात्रयविवाहोक्तभेषु पुष्पफलवस्त्रादिभिः शुभम्।

विवाहोपनयनादौ मण्डपादिनिर्माणमुहूर्त्तः—विवाहमुहूर्त्ते वैवाहिकमुपनयनादिमुहूर्त्ते चोपनयनादि कृत्यं (आवश्यके शुभतिथिदिननक्षत्रेषु वा) विधेयम्।

महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य जपविधिः—श्रीगणेशादिस्मरणपूर्वकंशान्तिपाठं कृत्वा कुशत्रयतिलजलान्यादाय संकल्पः—ॐ अद्य अमुके मासि अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकगोत्रस्यास्य श्री अमुकशर्म्मणः उपस्थितशरीराविरोधेनाखिलारिष्टझटिति प्रशमनपूर्वक—दीर्घायुष्ट्वबलपुष्टिनैरुज्यप्राप्तिकामः अद्यारभ्य यथाकालं यजुर्वेदान्तर्गतमाध्यन्दिनशाखीय ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूं सः हौं ॐ" इति महामृत्युंजयमन्त्रस्य एतत्सहस्रसंख्यकजपमहं करिष्यामि। ॐ हौं ॐ जूं सः (समस्तमन्त्रः) अस्य श्री महामृत्युञ्जयमन्त्रस्य वामदेवकहोलवशिष्ठाः ऋषयः, पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दांसि सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रादेवता हौं बीजं जूं शक्तिः सः कीलकं महामृत्युञ्जयप्रीतये ममाभीष्टसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः। ऋष्यादिन्यासः—वामदेवकहोलवशिष्ठऋषिभ्यो नमः शिरसि। पंक्तिर्गायत्र्यनुष्टुप्छन्दोभ्यो नमः मुखे। सदाशिवमहामृत्युञ्जयरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदि। हौं बीजाय नमः नाभौ। जूं शक्तये नमःपादयोः। सः कीलकाय नमः सर्वाङ्गे। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं ॐ नमो भगवते रुद्राय शूलपाणये स्वाहा हृदयाय नमः। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः यजामहे ॐ नमो भगवते रुद्राय अष्टमूर्त्तये मां जीवय शिरसि स्वाहा। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं ॐ नमो भगवते रुद्राय चन्द्रशिरसे जटिने स्वाहा शिखायै वषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वःउर्व्वारुकमिव बन्धनात् ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिपुरान्तकाय ह्रां ह्रीं ह्रौं कवचाय हुम्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मृत्योर्मुक्षीय ॐ नमो भगवते रुद्राय त्रिलोचनाय ऋग्यजुः साममन्त्रत्रयाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ हौं ॐ जूं सः भूर्भुवः स्वः मामृतात् ॐ नमो भगवते रुद्राय अग्नित्रयाय उज्ज्वलज्ज्वालाय मां रक्ष रक्ष अघोराय अस्त्राय फट्। इति षडंगन्यासः। ततः—चन्द्रोद्भासितमूर्द्धजं सुरपतिं पीयूषपात्रं बहद्धस्ताब्जेन दधत्सुदीप्तममलं हास्यास्यपंकेरुहम्। सूर्येन्द्वग्निविलोचनं करतले पाशाक्षसूत्रांकुशाम्भोजं विभ्रतमक्षयं सुरपतिं मृत्युञ्जयं संस्मरेत् इत्यनेन ध्यात्वा यथोपचारैः सम्पूज्य मन्त्रं जपेत्। जपसमाप्तौ च शाकल्यादिभिर्दशांशक्रमेण होमतर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। **लघुमृत्युञ्जयमन्त्रः**—ॐ जूं सः।

वधूप्रवेशमुहूर्त्तः

विवाहदिवसात्षोडशदिनमध्ये समदिने पञ्चमसप्तमनवमदिने (आचारादन्यविषमदिनेऽपि) ततो मासमध्ये विषमदिने ततो वर्षाभ्यन्तरे विषममासे, चैत्रपौषभाद्रक्षयमासमलमासभिन्नसमये वधूप्रवेशः प्रशस्तः। नात्र शुक्रविचारः कालविचारो वा। १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। चं. वृ. शु. श. वारेषु, मतान्तरेण बुधेऽप्यावश्यके। अश्वि. रो. मृ. पुष्य, उत्तरा 3, ह. चि. स्वा. अनु. मृ. श्र. ध. रे. नक्षत्रेषु। २।३।५।६।७।८।९।११ ।११ लग्नेषु। शुभैः १।२।५।७।१०।११ स्थितैः। पापैः ३।६।११ स्थितैः। चतुर्थाष्टमशुद्धे शुभः।

नववध्वाः पाकारम्भमुहूर्त्तः

रो. मृ. उत्तरा 3. पुष्य, कृ. वि. ज्ये. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, बु. वृ. श. वारेषु, शुभतिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्, २।५।८।११ लग्नेषु, लग्नात् चतुर्थाष्टमगृहे शुद्धे, शुभे बलान्विते सप्तमस्थे शुभः।

द्विरागमनमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य, उत्तरा 3, ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु मृत्युयोगादिरहितेषु, २।३।६।७।१२ लग्नेषु शुभयुतेक्षितेषु। शुक्रे १।४।७।१० गते, जीवे ३।६।१०।११ गते। पापैः ३।६।११ स्थितैः शुभम्। **विषमवर्षे सौरक्रमेण** मागफाल्गुनवैशाखमासेषु शुक्रबाल्यास्तवृद्धत्वभिन्नकाले वामपृष्ठगते शुक्रे, शुक्रोदिते द्विरागमनं शुभम्। **प्रथमवर्षे न शुक्रविचारः कार्यः**। तृतीयादिविषमवर्षे शुक्रविचारो विधेयः। शुक्रान्धविहित (रे. अश्वि. रो. मृ.) नक्षत्रेषु सम्मुखदक्षिणशुक्रेऽपि द्विरागमनं शुभम्। व्यतीते पञ्चमे वर्षे न शुक्रविचारो न वा मुहूर्त्तविचारः। तदानीं यस्मिन् कस्मिन्नपि शुभतिथिदिननक्षत्रयुक्तकाले द्विरागमनं शुभम्।

वापीकूपतडागादिखननमुहूर्त्तः

विचैत्रोत्तरायणे, शुक्लपक्षे, शुद्धसमये, रो. मृ. पुष्य. म. उत्तरा 3. ह. अनु. पूषा. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, पृथ्वीशयननक्षत्ररहितेषु, शुभतिथिदिनेषु, ४।१०।११।१२ लग्नेषु राशिषु च, शुक्रे दशमस्थे, गुरुबुधयोरन्यतरस्थलग्ने, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, शुद्धे वापीकूपतडागादिचक्रे शुभम्।

जलाशयवाटिकादेवादिप्रतिष्ठामुहूर्त्तः

चैत्ररहितोत्तरायणे शुद्धसमये शुक्लपक्षे सू. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। मृ. रे. चि. अनु. ह. अश्वि. पुष्य. स्वा. पुन. श्र. ध. श. रो. उत्तरा 3 नक्षत्रेषु। अथवा प्रतिष्ठाप्यदेवताकतिथिदिननक्षत्रेषु देवादिप्रतिष्ठा शुभा। सिंहे सूर्यं, कुम्भे ब्रह्माणं, मिथुने शंकरं स्थापयेत्। द्विस्वभावे देव्यः, चरलग्ने च योगिन्यः स्थापनीयाः। सर्वे स्थिरलग्नेषु स्थाप्याः। चन्द्रपापैः ३। ६।११ स्थितैः। शुभैः १२।८ भिन्नस्थानगतैः देवादिप्रतिष्ठा शुभा। ग्रहान् पुष्ये, बुद्धं श्रवणायां, गणेशादीन् रेवत्यां स्थापयेत्। भगवतो देवोत्थानैकादश्यां रामनवम्यां, कृष्णाष्टम्यां, देव्याः नवरात्रौ दीपमालिकायां, शङ्करस्य शिवरात्रौ (माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां) वा शुभं प्रतिष्ठापनम्।

कूपचक्रं रोहिणीभात्			सूर्यभात्तडागचक्रम्		
स्थान	न	फलानि	स्थान	न	फलानि
मध्य	३	शीघ्रस्वादु	पूर्व	२	जलशोष:
पूर्व.	३	निर्जलम्	अग्नि	३	बहुजलम्
अग्नि	३	शीघ्रजलम्	दक्षिण	२	जलहानि:
दक्षिण	३	निर्जलम्	नैऋत्य	२	अमृतजलम्
नैऋत्य	३	निर्मलजलम्	पश्चिम	३	स्वादुजलम्
पश्चिम	३	शीतलजलम्	वायु	२	निर्जलम्
वायु	३	जलहानि:	उत्तर	३	स्थिरजलम्
उत्तर	३	मधुरजलम्	ईशान	३	नष्टजलम्
ईशान	३	क्षारजलम्	मध्य	५	पूर्णजलम्
अथवा सूर्यक्षादप्येवमेव गणनीयम्			वाह्य	३	अमृतजलम्

रोहिणी-नक्षत्राद्वापी चक्रम्

स्थान	न	फलानि
पृष्ठे	४	शुभजलम्
नाभौ	४	बद्धिनाश:
हृदि	४	स्थिरता
मध्ये	४	कलह:
नेत्रयो:	४	धनागम:
पादयो:	८	दु:खम्

हवनचक्रं सूर्यभात्

न	ग्रह	फलानि
३	सू	अशुभम्
३	बु	शुभम्
३	शु.	शुभम्
३	श.	अशुभम्
३	चं.	शुभम्
३	मं.	अशुभम्
३	वृ	शुभम्
३	रा.	अशुभम्
३	के	अशुभम्

बीजवपने फणिचक्रं राहुनक्षत्रात्

नक्षत्र	फलं
४	अशुभं
३	शुभम्
१	अशुभम्
३	शुभम्
१	अशुभं
३	शुभम्
१	अशुभं
३	शुभम्

हलचक्रमर्कभुक्तभात्

नक्षत्र	फलं
८	अशुभं
८	शुभम्
६	अशुभं
८	शुभम्
३	अशुभं

गृहारम्भ (वास्तु) मुहूर्त:

वैशाख, आषाढ (पशुगृहं त्यक्त्वा) कार्तिक, मार्ग, फाल्गुन, श्रावण (सौरक्रमेण) मासेषु । सम्मुखकालवर्जितसमये ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे ५ यावत् । अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा 3. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे नक्षत्रेषु पृथ्वीशयन- नक्षत्ररहितेषु।

च. बु. वृ. शु. श. वारेषु । दिवा । शुद्धसमये । शुद्धे वृषवास्तुचक्रे, २ ।३ ।५ ।६ ।९ ।८ ।११ ।१२ लग्नेषु । लग्ने शुभदृग्युते। शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितै:, पापै:, ३ ।६ ।११ स्थितै:, ८ ।१२ ग्रहरहिते शुभ: । तृणकाष्ठादिगृहनिर्माणमशुद्धेऽपि परञ्चेष्टिकादिगृहनिर्माणं शुद्धसमये एव । देवालयमठादिनिर्माणमप्येष्वेव मुहूर्तेषु शुभम् ।

देवालयगृहारम्भजलाशयारम्भे खातदिग्ज्ञानम्

खातदिक्	नैर्ऋत्यां	आग्नेयां	ऐशान्यां	वायव्यां
देवालयारम्भे	ध.म.कु. सूर्ये	मी.मे.वृ. सूर्ये	मि.क.सि. सूर्ये	क.तु.वृ. सूर्ये
जलाशयारम्भे	तु.वृ.ध. सूर्ये	म.कु.मी. सूर्ये	मे.वृ.मि. सूर्ये	क.सि.कं. सूर्ये
गृहारम्भे	वृ.मि.क. सूर्ये	सिं.क.तु. सूर्ये	वृ.ध.म. सूर्ये	कु.मी.मे. सूर्ये

गृहप्रवेशे कुम्भचक्रमर्कभात्			गृहारम्भे वृषचक्रमर्कभात्		
स्थान	न.	फलानि	स्थान	न.	फलानि
मु.	१	अग्निदाह:	शीर्षे	३	अग्निभयम्
पू.	४	उद्वसनम्	अ. पा.	४	शून्यम्
द.	४	लाभ:	पू.पा.	४	स्थैर्यम्
प.	४	धनम्	पृष्ठे	३	धनम्
उ.	४	कलह:	द.कु.	४	लाभ:
म.	४	विनाश:	पृ.	३	नाश:
अ.	३	स्थिरता	वा.कु.	३	धननाश:
क.	३	स्थिरता	मुखे	३	कष्टम्

अथ तिथिनन्दादिसंज्ञा

संज्ञा	नन्दा	भद्रा	जया	रिक्ता	पूर्णा	सिनीवाली	कुहूः
तिथयः	१।६।११	२।७।१२	३।८।१३	४।९।१४	५।१०।१५	दृष्टेन्दुमा	नष्टेन्दुमा

गृहप्रवेशमुहूर्त:

वैशाख-आषाढ-कार्तिक-मार्ग-फाल्गुन-श्रावण (सौर) मासेषु २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु, शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा 3. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। चं. बु. वृ. शु. श. वारेषु । दिवारात्रौ, शुद्ध समये, शुद्धे कुम्भचक्रे ।२ ।५ ।८ ।११ लग्नेषूत्तमः ।३ ।६ ।९ ।१२ लग्नेषु मध्यम: ।

जन्मराशिलग्नाभ्यामुपचय–३ ।६ ।१० ।११ राश्यंशयो: स्थिरराशौ, लग्नात् १ ।३ ।५ ।७ ।९ ।१० ।११ स्थानेषु शुभा:, ३ ।६ ।११ स्थानेषु पापा:, ४ ।८ भवने ग्रहरहिते । सम्मुखकालरहितसमये शुभ: । इष्टिकादिगृहप्रवेश: शुद्धसमये, तृणकाष्ठादिकगृहप्रवेशोऽशुद्धसमयेऽपि । अग्निभये राजकोपे दैविके प्रकोपे सति यस्मिन् कस्मिन् शुभमुहूर्ते गृहारंभो गृहप्रवेशश्च कार्य: ।

चरणिविचार:–स्वामिहस्तप्रमाणेन दीर्घविस्तार-संयुतमष्टभिश्च हरेद् भागं शेषं चरणिरुच्यते । **तत्फलम्**–पशुहानि: पशो रोग: पशुलाभ: पशुक्षय: । पशुनाश: पशोर्वृद्धि: पशुभेदो बहुपशु: ।

पृथ्वीशयननक्षत्राणि–सूर्यनक्षत्रात् ५ ।७ ।९ ।१२ ।१९ ।२६ मिते चन्द्रनक्षत्रे पृथ्वी शेते । एषु तडागवापीकूपवास्तुप्रभृतिकार्यं ट्यूब्वेल बोरिंग प्रभृतिस्थापनञ्च न कर्त्तव्यम् ।

ट्यूब्वेल, बोरिंग, टंकी प्रभृति स्थापने शुभमुहूर्त:– कृत्तिका, आश्ले, मघा, पूर्वा 3, भरणी, विशा, मूल नक्षत्रेषु ।२ ।४ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१३ ।१५ तिथिषु । शुक्लपक्षे, कृष्णपक्षे ५ यावत्, चं. बु. वृ. शु. वारेषु, पूर्वाह्णेऽपराह्णेवा, २ ।३ ।४ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ ।१२ लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० स्थितै: । पापै: ३ । ६ ।११ गतै: शुभम् ।

मासस्नानमुहूर्त:–विवाहदिनात्षोडशदिनमध्ये तदभावे मासपर्यन्तं २ ।३ ।५ ।७ ।१० ।१३ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, आर्द्रा, पुन. पुष्य, आश्ले, म, पूफ. उफ. ह. चि. स्वा. नक्षत्रेषु, वृष मि. कन्या. तु. लग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकास्थापनमुहूर्त:–अश्वि, भ, वि, रो, मृ, उत्तरा 3, कृ, मृ, पूषा, ध, आर्द्रा नक्षत्रेषु, सू. मं. श. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभम् ।

चुल्हिकाचक्रम् सूर्यभाद्दिनभावधि

स्थान	न॰	फलम्	स्थान	न॰	फलम्
पृष्ठे	६	धनम्	गर्भे	५	नाश:
शीर्षे	४	मृत्युभयम्	हस्ते	२	भोग:
बाहौ	८	सुखम्	चरणे	२	स्त्रीमृति:

मन्त्रग्रहणमुहूर्त:–अश्वि. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा. 3. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु ।२ ।३ ।५ ।७ ।१० ।११ ।१२ ।१३ ।१५ तिथिषु। शुक्लपक्षे । आत्यावश्यके कृष्णपक्षे ५ यावत्, सू. चं, बु, वृ, शु, वारेषु । शुद्धसमये प्रात: मध्याह्ने वा । २ ।३ ।५ ।७ ।९ ।१२ लग्नेषु, शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१० गतै:, पापै: ३ ।६ ।११ स्थितै: वै, श्र, आश्वि, का, अग्र, मा, फा, मासेषु (सौरक्रमेण)। संक्रान्तौ पूर्णिमायां नवरात्रमध्ये, ग्रहणे, सिद्धिक्षेत्रे मन्वादि-युगादिषु च मुहूर्त विनाऽपि मन्त्रग्रहणं शुभम्।

व्रतोद्यापनमुहूर्त:–अश्वि, रो, मृ, पुन, पुष्य, उत्तरा 3, ह. चि., स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु । शुद्धसमये क्रियमाणव्रततिथिषु दिवसे वा । का, मा, फा, वै, ज्ये, आषा, मासेषु । शुभलग्नेषु । कार्तिकव्रतोद्यापनं तुलस्याकाशदीपदानव्रतोद्यापनं च शुद्धसमये वृश्चिकसंक्रान्तिपूर्वरात्रौ । एवमेव यस्य व्रतस्य मासविशेषेण सह सम्बन्धस्तत्तस्मिन्नेव मासे शुद्धसमये कार्यम्। शुभैः १ ।४ ।५ ।७ ।९ ।१०। स्थितै:, पापै: ३ ।६ ।११ स्थितै:, पञ्चमेशे नवमेशे गुरौ च बलद्ये सति शुभमन्यथा ग्रहशुद्ध्यभावेऽपि परमावश्यके शुभम् ।

यात्रामुहूर्त:–वामपृष्ठराहौ । मलमासक्षयमास-सौरक्रमेण चैत्रभाद्रपौषरहित मासेषु । अश्वि. मृ. पुन, पुष्य, ह, ज्ये, अनु, श्र, रे, नक्षत्रेषूत्तमः । रो, पूर्वा 3, चित्रा-स्वा, मू, पूषा, ध, नक्षत्रेषु मध्यम: । मृत्युयोगदग्धतिथिमासान्तसंक्रान्तिमासादि-प्रभृतिदोषरहिते । अमृतसिद्ध-सर्वार्थसिद्धादिशुभयोगेषु । अमावस्यां विहायान्यतिथिषु योगवशेनान्यथा शुभतिथिषु। दिक्शूलरहितदिने ।२ ।४ ।६ ।८ ।९ तारासु । पञ्चमताराया: प्रथमद्वितीयावृत्तिषु च। १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ चन्द्रेषु । आवश्यके ४ ।१२ चन्द्रेऽपि । द्विरागमनानन्तरं पितृगहागताया: पुन: पतिगृहगमने दक्षिणसम्मुखकालौ त्याज्यौ । तदनन्तरमावश्यके केवलं सम्मुखकालस्त्याज्य:, दक्षिणकाले च सम्मुखचन्द्रवशेन यात्रा कार्या ।

राहु (काल) वास:–सौरक्रमेण मार्गपौषमाघमासेषु पूर्वस्यां । फाल्गुनचैत्रवैशाखेषु दक्षिणस्याम् । ज्येष्ठाषाढश्रावणेषु पश्चिमायाम् । भाद्राश्विनकार्तिकेषूत्तरस्यां कालवास: ।

सर्वदिग्गमननक्षत्राणि

अश्विनीमृगशिरापुष्यश्रवणनक्षत्राणि सर्वदिग्गमने शुभानि ।

दिक्शूलविचारस्तत्परिहारश्च

सोमे, शनिवासरे च पूर्वस्यां, वृहस्पतिवासरे दक्षिणस्यां, रविवासरे शुक्रवासरे च पश्चिमायां, मंगलवासरे बुधवासरे चोत्तरस्यां दिशि दिक् शूलत्वाद् गमनं निषिद्धम् । **परिहार:**–रव्यादिवासरेषु क्रमेण घृतपयोगुडतिलदधियवमाषान्नं भुक्त्वा शूलदोषोपशान्तये परमावश्यके गच्छेत् ।

विदिक्शूलविचार:

शनौ पूर्वे, चन्द्रेऽग्निकोणे, गुरौ याम्यां, बुधे नैर्ऋत्यां, सूर्ये प्रतीच्यां, शुक्रे वायुकोणे, उत्तरस्यां मंगले बुधे, ऐशान्यां बुधमन्दयोर्न गन्तव्यम् ।

लग्नचन्द्रयोर्वास:

मेषसिंहधनुराशिषु पूर्वस्यां, वृषकन्यामकरराशिषु दक्षिणस्यां, मिथुनतुलाकुम्भराशिषु पश्चिमायां, कर्कवृश्चिकमीनराशिषु चोत्तरस्यां लग्नचन्द्रयोर्वास: । सम्मुखदक्षिणलग्नचन्द्रयो: यात्रा शुभा । परं सर्वदिग्गमननक्षत्रेषु वामपृष्ठचन्द्रेऽपि यात्रा शुभा ।

चन्द्रविचार:

जन्मनामग्रामादिराशितोऽभीष्टदिनस्य चन्द्रं यावद्गणनीयम् । तत्र १ ।२ ।३ ।५ ।६ ।७ ।९ ।१० ।११ संख्याकश्चन्द्र: शुभप्रद: । ८ चन्द्र: मृत्युप्रद:। ४ कलहद: ।१२ हानिकारक: । तत्र दुष्टे चन्द्रे तद्दोषशान्त्यर्थमामतण्डुल-शंखदधिश्वेतवस्त्रादिदानं कार्यम् ।

द्वादशचन्द्रस्य विशेष:

आधाने सम्प्रदाने च विवादे राजविग्रहे । पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ: । अभिषेके निषेके च गृहे पुंसवनादिषु । यात्रायुद्धे विवादे च चन्द्रो द्वादशग: शुभ: ।

जन्मराशिनामराशिक्रोनविचारणीयविषया:

विवाहे सर्वमांगल्ये यात्रायां ग्रहगोचरे । जन्मराशिप्रधानत्वं नामराशिं न चिन्तयेत् ।। देशे ग्रामे गृहे युद्धे सेवायां व्यवहारके । नामराशिप्रधानत्वं जन्मराशिं न चिन्त्येत् ।। काकिण्यां वर्गशुद्धौ च वादे द्यूते स्वरोदये । मन्त्रे पुनर्भूवरणे नामराशे: प्रधानता ।।

जन्मनक्षत्रे त्याज्या:–जन्मनक्षत्रगश्चन्द्र: प्रशस्त: सर्वकर्मसु । क्षौरभैषज्यवादाध्वकर्त्तनेषु विवर्जयेत्। **जन्ममासे त्याज्या:**–क्षौरकर्म दीर्घयात्रा कर्णवेधश्च।

सिद्ध्यादियोगचक्र तिथिदिननक्षत्रवशेन

दिनानि	रविः	सोमः	मंगलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः
सिद्धियोगाः	३।८।१३	१।६।११	३।८।१३	२।७।१२	५।१०।१५	१।६।११	४।६।१४
अमृतयोगाः	५।१०।१५	५।१०।१५	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	१।६।११
सर्वार्थ सिद्धियोगाः	अश्वि.पुष्य ह.मू.	रो.मृ.पुष्य अनु.श्र.	अश्वि.	रो.मृ. ह.अनु.	अश्वि.पुन. पुष्य.अनु.रे.	अश्वि.पुनः अनु.श्र.रे	रो.स्वा.श्र.
मृत्युयोगाः	१।६।११	२।७।१२	१।६।११	३।८।१३	४।६।१४	२।७।१२	५।१०।१५
राज्यप्रदयोगः	xx	xx	४।६।१४	xx	xx	xx	४।६।१४
मध्यमयोगः	१२	११	१०	३	६	२	७

ताराचक्रम्

ताराः	जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेमः	प्रत्यरिः	साधकः	वधः	मित्रम्	अतिमित्रम्
नक्षत्राणि	१।१०।१९	२।११।२०	३।१२।२१	४।१३।२२	५।१४।२३	७।१६।२५	८।१७।२६	१।१८।२७	
फलानि	मध्यमम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	अशुभम्	शुभम्	शुभम्
दानानि	शाकम्	×	गुडम्	×	लवणम्	×	तिलाः	×	×

जन्मनामग्रामनक्षत्राद्वाऽभीष्टदिनावधि गणयित्वा नवभिर्हरेत्। शेषं तारा स्यात् । तत्र २।४।६।८।६ ताराः शुभदाः। १ तारा मध्यमा। ३।७ अशुभदा। विशेषः—पञ्चमतारा आवृत्तिवशेन धनदा १ सुखदा २ मृत्युदा च भवेत्तेन प्रत्यरितारायाः केवलं तृतीयावृत्तेस्तारा अशुभा, तत्र दानं कार्यम् ।

कालशूलम्—उषःकाले पूर्वस्यां, मध्याह्ने दक्षिणस्यां, सायंकाले (गोधूल्यां) पश्चिमायां, निशीथे चोत्तरस्यां न गच्छेत्, कालशूलदोषत्वात् ।

पञ्चक (भदवा) विचारः

धनिष्ठाशतभिषापूर्वभाद्रोत्तरभाद्ररेवतीनक्षत्राणि पञ्चकसंज्ञकानि । तत्र दक्षिणदिग्गमनगृहाच्छादनप्रेतदाहतृणकाष्ठदि-संग्रहशय्यावितान-निर्माणादिकं च त्येजत् । तत्रापवादः—वस्वादौ शतभिग्मध्ये पूर्वादौ चोत्तरान्तके। पञ्च पञ्च घटी त्याज्या रेवतीं सकलां त्यजेत् ।

दग्धतिथिमासान्तादिविचारः

मीने धनुषि स्थिते सूर्ये द्वितीया तिथिः, वृषे कुम्भे स्थिते सूर्ये चतुर्थी, मेषे कर्के स्थिते सूर्ये षष्ठी, मिथुने कन्यायां स्थिते सूर्येऽष्टमी, सिंहे वृश्चिके स्थिते सूर्ये दशमी, तुले मकरे व स्थिते सूर्ये द्वादशी तिथिर्दग्धा भवति। तत्र शुभकार्यं निषिद्धम्। एवमेव संक्रान्तिदिनं तत्पूर्वापरदिनञ्च (मासान्तमासादिसंज्ञकम्) यात्रादिसकलशुभकार्येषु त्याज्यम् ।

पुराणादिश्रवणमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पु. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. नक्षत्रेषु २।३।५।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु। शुक्लपक्षे। कृष्णे ५ यावत्। शुभलग्ने। लग्ने शुभयुग्दृष्टे वलाढ्ये, शुभैः १।४।५।७।९।१० स्थितैः पापै ३।६।११ स्थितैः उत्तरायणे, श्रा, आश्वि, कार्ति, मार्ग मासेषु शुभम् । तीर्थक्षेत्रे, देवालये, सिद्धिक्षेत्रे, पर्वविशेषे नवरात्रादौ च मुहूर्त्तं विनाऽपि शुभम् ।

इन्धनस्थापनमुहूर्त्तः

सूर्याक्रान्तनक्षत्रात् ६ नक्षत्रेषु शुभं, ततः ६ अशभं, ततः ४ शुभं, ततः ८ अशुभं, ततः ४ शुभम्।

नवान्नपार्वणमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. घ. श. रे. नक्षत्रेषु शुभम् । मूले नवान्नपार्वणं मध्यमम् । सु. चं. बु. वृ. वारेषु । शुक्लपक्षे। २।३।५।७।८।१०।१२।१५ तिथिषु। वृश्चिकस्य ३।२० अंशानन्तरं १३ अंशं यावदावश्यके २३ अंशं यावदपि । ततः मकरे ७ अंशानन्तरं कुम्भस्थे सूर्ये वा कार्यम् । २।३।४।६।७।६।१२ लग्नेषु शुभम् । नवान्नपार्वणे जन्मतारा—विशाखस्थसूर्य—कृष्णपक्षाष्टमचन्द—पूर्वात्रय मघाभरण्याश्लेषाऽऽर्द्रा नक्षत्र—सौरक्रमेणकार्तिक—पौष—चैत्रहरिशयननन्दात्रयोदाशीरिक्तामंगलशनिशुक्रदिनानि निषिद्धानि। अभावे कृष्णपक्षे ५ यावत् ग्राह्यः ।

कल्याणार्थं शान्तिमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३ ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत्। २।३।५।६।७।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। सु. चं. बु. वृ. शु. वारेषु, शुद्ध समये, आवश्यकेऽशुद्धेऽपि, चैत्रपौषमाद्रमलमास—क्षयमासरहिते शुभम्। शुभलग्ने, लग्नस्थे गुरौ, चतुर्थस्थे चन्द्रे, दशमस्थे सूर्ये, अष्टमे लग्ने च पापरहिते शान्तिः शुभा।

खलस्थपनमुहूर्त्तः

ग्रामसमीपे शुभस्थाने शुभतिथिदिननक्षत्रेषु शुभम् ।

धान्यच्छेदनमुहूर्त्तः

मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. पूभा. ह. कृ. ध. श्र. मृ. स्वा. म. उत्तरा ३. पूषा. भ. चि. पुष्य. नक्षत्रेषु. सू.चं.बु.वृ.शु. दिनेषु, १।२।३।५।७।१०। ११।१२।१३।१५ तिथिषु, २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् । अन्यान्यपि यवगोधूमादीनि एष्वेव छेद्यानि ।

मेधिरोपणमुहूर्त्तः

अश्वि. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनलग्नेषु व मेधिरोपणं शुभम् ।

वर्षेशवशेन मेधिविचारः

वर्षेशे सूर्ये वंशः, चन्द्रे शिम्बरः, मङ्गले कदम्बकम्, बुध उदुम्बरम्, गुरौ आम्रम, भृगुजे पलाशः, शनौ निम्बम् शुभम् ।

कणमर्दनमुहूर्त्तः

मघा, पूफ. उफ. रो. ज्ये. मू. अनु. श्र. रे. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु शुभम् ।

धान्यस्थापनमुहूर्त्तः

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, शुभतिथिदिनेयोः, २।३।५।८।६।१०।११।१२ लग्नेषु शुभम् ।

धान्यवृद्धिमुहूर्त्तः

अ. रो. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. स्वा. वि. ज्ये. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिदिनलग्नेषु धान्यवृद्धिः शुभा।

बीजस्थापनमुहूर्त्तः

रो. मृ. म. ह. स्वा. मृ. उषा. पूभा. रे. नक्षत्रेषु । चं. बु. वृ. शु. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे ५ यावत् । २।३।५।७।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु। २।५।८।११ लग्नेषु शुभम् ।

बीजवपनमुहूर्त्तः

अश्वि, रो. मृ. पुन. पुष्य. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. पुष्य. रे. नक्षत्रेषु २।३।५।८।१०।११।१२।१३।१५ तिथिषु, च. बु. वृ.शु. दिनेषु, शुभलग्नेषु, लग्ने शुभदृग्युते, शुभैः केन्द्रकोणगैः, पापैः त्रिषडायगैः शुभम्।

हलप्रवहणमुहूर्त्तः

अ.रो.मृ.पुन.म. उत्तरा ३. ह. चि. स्वा. वि. अनु. मू. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, चं. मं. बु. वृ. शु. वारेषु शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु, पापैः निर्बलैः, शुभैः सुबलिभिः, चन्द्रे जलचरराशिस्थे तन्नवांशे वा, गुरौ लग्नस्थे, शुक्रे विधौ च पुष्टे शुभम्।

धान्यरोपणमुहूर्त्तः

रोहिणी. उफ. वि. मू. श. पूभा. नक्षत्रेषु सू. चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिषु, शुभलग्नेषु च शुभम् ।

स्वामिसेवा (नौकरी) मुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुष्य. ह. चि. अनु. अभि. रे. नक्षत्रेषु, सू. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु, लग्ने शुभयुते, सूर्ये कुजे वा १०।११ स्थे, सेव्यसेवकयोर्योनिमैत्र्यां राशीशयोश्चापि मैत्र्यां सत्यां सेवारम्भः शुभः।

कोषागारादौ द्रव्यस्थापनमुहूर्त्तः

अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. श्र. ध. श. रे. नक्षत्रेषु, सू. मं. बु. शु. वारेषु शुद्धसमये, ३।५।८।१०।१३।१५ तिथिषु, शुभग्रहयुक्तलग्नेषु शुभम् ।

ऋणप्रदानमुहूर्त्तः (द्रव्यप्रयोगमूहूर्त्तः)

स्वा. पुन. मु. रे. चि. अनु. वि. पुष्य. श्र. ध. श. नक्षत्रेषु शुभतिथिषु १।४।७।१० लग्नेषु, लग्ने शुभयुग्दृष्टे, ५।८।६ ग्रहरहिते, चं. वृ. शु. श. वारेषु शुभम्।

ऋणदाने निषिद्धसमयः—बुधवासरः, भरणी, कृ., आर्द्रा, आश्ले., मघा, पूर्वा ३, चि., ज्ये. नक्षत्राणि, भद्रा पातयोगश्च ।

ऋणग्रहणे निषिद्धसमयः—रविभौमदिने। संक्रान्तिः। वृद्धियोगः। हस्तनक्षत्रम्। एषु ऋणार्पणं शुभम् ।

युद्धयात्रायां कुलाकुलचक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	तिथयः	दिनानि	फलानि
कुलः	पू.३. अश्वि. पुष्य. म.मू. श्र. कृ. ज्ये. वि. चि.	४।८।१२।१४	मं. शु.	स्थायिजयदः (मुद्दालह)
अकुलः	भर. स्वा. आश्ले. उ.रे.ह. रो. अनु. पुन. उत्तरां ३	१।३।५।७।६ ११।१३।१५	सू. च. वृ. श.	यायिजयदः (मुद्दई)
कुलाकुलः	आर्द्रा. मू. अभि. श.	२।६।१०	बुधः	उभयोः सन्धिः

नष्टवस्तुज्ञानाय चक्रम्

संज्ञा	नक्षत्राणि	लाभालाभः	नष्टवस्तुदिक्
अन्धाक्षः	रो. पुष्य. उफ. वि. पूषा. ध.रे.	शीघ्रलाभः	पूर्वस्याम्
मन्दाक्षः	मृ. आश्ले. ह. अनु. उषा. श. अश्वि	प्रयत्नल्लाभः	दक्षिणस्याम्
मध्याक्षः	आर्द्रा. म. चि. ज्ये. अभि. पूभा. भ.	दूरे श्रवण—मलाभश्च	पश्चिमायाम्
सुलोचनः	पुन. पूफ. स्वा. मू. श्र. उभा. कृ.	अलाभः	उत्तरस्याम्

प्रथमलग्नसारिणी— इष्टार्कराश्यंशतले घटीपलं स्वाभीष्टनाडीपलसंयुतञ्च ।
यद्राशिभागस्य तले स्थितं भवेत्तदेव लग्नं च कलानुपातात् ।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
३	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	१०	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
वृष	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
४	५०	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५६	९	१९	२९	३९	४९	५६	९	१९	३०	४०	५०	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	२१	३१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
५	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	३	१४	२६	३७	४९	००	१२	२३	३४	४६	५७	९	२०	३३	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२६	५२	१८	४४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
५	१४	२५	३७	४९	००	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५३	०५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	३४	०८	४२	१६	५०	२४	५८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८
५	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
५	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	००	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२२	३४	४५	५६	७
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१५	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
५	१९	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४३	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२
३८	८	२४	२०	५६	१२	२८	४४	००	३४	८	४२	१६	५०	२४	४८	३२	६	४०	१४	४८	२२	५६	३०	४	३८	१२	४६	२०	५४	२८
वृश्चिक	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
५	०४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६
४७	२	३६	१०	४४	१८	५२	२६	००	२६	५२	१८	२४	१०	३६	२	२८	५४	२०	४६	१२	३८	४	३०	५६	२२	४८	१४	४०	६	३२
धनु	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
५	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०
४३	५८	२४	५०	१६	४२	०८	३४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	६	१२
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
५	००	१०	२०	३०	४०	५०	००	११	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१७	२६	३४	४३	५१	५९	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५
३	१८	२४	३०	३६	४२	४८	५४	००	२२	४४	६	२८	५०	१२	३४	५६	१८	४०	०२	२४	४६	८	३०	५२	१४	३६	५८	२०	४२	४
कुम्भ	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४९	५६	३	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	१
११	२६	४८	१०	३२	५४	१६	३८	००	१६	३२	४८	०४	४०	३६	५२	८	५७	४०	५६	१२	५८	४०	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
३	९	१६	२३	३०	३८	४५	५२	००	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९
३८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

उदाहरण—श्रावणशुक्ल ५ गुरु को इष्टदण्डादि ३।५ है । इस दिन सूर्य के कर्क राशि के १७ अंश के नीचे दण्डादि २०।३०।४० में इष्टदण्डादि ३।५ जोड़ने से २३।३५।४० हुआ । यह दण्डादि सिंह राशि के ०२ अंश के आगे ०३ अंश के नीचे पड़ा । अतः उक्त समय ०३ अंश से सिंहलग्न हुआ । एवमेव सर्वत्र ज्ञातव्य है ।

दशमलग्नसारिणी—यत्सूर्यराश्यंशसमानकोष्ठे घट्यादिकं पूर्वनतेन हीनम् ।
प्रत्यग्नतेनाढ्यमियान् विशेषो मध्यस्य (दशमलग्नस्य) सिद्ध्यै गणकैः प्रदिष्टः ।।

अंश	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८
	३३	४२	५१	००	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृष	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३
	२७	३७	४७	५६	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मिथुन	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
कर्क	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
	७	१८	२९	३९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
सिंह	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
	१२	१२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२८	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	८	०६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	०	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	०८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	०४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
तुला	३३	३३	३३	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८
	३३	४२	५१	०	१०	१९	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७
२७८	८	२४	४६	५६	१२	२८	४४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
वृश्चिक	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३
	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५८	९	२०	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६	७	१८	२९	४०	५०	१	१२	२३	३३
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	४६	३२	१८	४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
धनु	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८
	४४	५५	६	१६	२७	३८	४९	००	१०	२१	३२	४३	५३	४	१५	२६	३६	४७	५८	९	१९	३०	४१	५२	३	१३	२४	३५	४६	५६
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	४६	३२	१८	०४	५०	३६	२२	८	५४	४०	२६	१२	५८	४४	३०	१६	२	४८	३४	२०	६	५२
मकर	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४
	७	१८	२९	२९	५०	१	१२	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	२
३२३	३८	२४	१०	५६	४२	२८	१४	००	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२६	२४	२२	२०	१८	१६
कुम्भ	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८
	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२२	३१	४०	४९	५९	०८	१७	२६	३६	४५	५४	३	१३	२२	३१	४१	५०	५९	८	१८	२७	३६	४५
२९९	१४	१२	१०	८	६	४	२	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२
मीन	५८	५९	५९	५९	५९	५९	५९	००	००	००	००	००	००	००	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३
	५५	४	१३	२२	३२	४१	५०	००	०९	१८	२७	३७	४६	५५	४	१४	२३	३२	४१	५१	००	९	१९	२८	३७	४६	५६	५	१४	२३
२७८	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	००	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२

नतकालसाधनम्—रात्रेः शेषमितं युतं दिनदलेनाह्नोः गतं शेषकं विश्लेष्यं खलु पूर्वपश्चिमनतं त्रिंशच्च्युतं चोन्नतम् ।।
यथा—श्रावणशुक्ल ५ गुरु को इष्टघटयादि ३।५ के समय दिनार्ध—इष्टकाल = १६।१६ — (३।५) = १३।११ = पूर्वनतटघटी।।

दशमलग्नोदाहरणम्—श्रावणशुक्ल ५ गुरु को इष्टघट्यादि ३।५ है । नतकालानयनविधि से इस काल का पूर्वनत १३।११ हुआ। इसे सूर्य के कर्कराशि के १७ अंश के नीचे दण्डादि २२।०२।४० में घटाया तो (२२।०२।४०)—(१३।११) = ८।५१।४० दण्डादि हुआ। यह फल दशमलग्नसारिणी में वृषराशि के २ अंश के आगे और ०३ अंश के नीचे पड़ा। अतः उक्त समय ०३ अंश से वृष दशमलग्न हुआ ।

इष्टिकारम्भमुहूर्तः—अश्वि. रो. मृग. पुष्य उत्तरा ३ ह. ज्ये. श्र. रे. नक्षत्रेषु, वृषसिंहवृश्चिककुम्भ लग्नेषु, रविगुरुशनिदिनेषु, शुभतिथिषु, चैत्रमाद्रपौष— मलमासक्षयमास—भिन्नसमये शुभः।

वृक्षादिरोपणमुहूर्तः—अश्वि. रो. मू. पुष्य उत्तरा ३. चि.वि.अनु.मू. अभि श. रे. नक्षत्रेषु, चं.बु. गु. दिनेषु, शुभतिथिषु च शुभम्।

कदलीरोपणम्—पञ्चक (ध.श.पू.भा.उभा.रे) रहित नक्षत्रेषु १।२।३।४।६ तिथिषु, शुभदिनेषु शुभम्।

●अग्निवासचक्रम्●

शुक्लपक्षे				कृष्णपक्षे				र.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.
१	५	९	१३	२	६	१०	१४	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.
२	६	१०	१४	३	७	११	३०	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.	भु.	भू.
३	७	११	१५	×	४	८	१२	दि.	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.
×	४	८	१२	१	५	९	१३	भू.	भु.	भु.	दि.	भू.	भु.	भु.

फलम्—भुवि सौख्यम्, दिवि प्राणनाशः, भूतले च धननाश इति ज्ञेयम् ।
विधिः—(शुक्लादितिथिसं + सूर्यादिदिनसं + १) ÷ ४ = ३, ० शेषे शुभः । १, २ अशुभः।
पार्थिवशिवपूजायां विहिततिथयः—
शुक्लपक्षे—२।५।६।९।१२।१३ कृष्णपक्षे—१।४।५।८।११।१२।३०।
विधिः—(शुक्लादितिथिसं × २ + ५) ÷ ७ = १।२।३ शेषे शुभम् । अन्यदशुभम् ।
१ शेषे कैलाशे, २ शेषे गौरिसन्निधौ, ३शेषे वृषारुढः शिवः अभीष्टदः स्यात्।

त्रिविधप्रवेशः—दिवा नृपप्रवेशः, निशि वधूप्रवेशः, दिवा च रात्रौ च गृहप्रवेशः शुभः।

विपणिमुहूर्त्तः—अश्वि. रे. पुष्य. ह. उत्तरा अनु. अभि. नक्षत्रेषु १।२।३।५।६।७।१०।११।१२।११।१३।१५ तिथिषु । सू.च.बु.वृ.शु.श. वारेषु। शुक्लपक्षे, कृष्णे १० यावत्। १।२।३।४।५।६।७।८।९।१०।१२ लग्नेषु, लग्ने चन्द्रशुक्रे, पापैः ८।२ रहितैः, शुभैः २।१०।११ स्थितैः शुभा ।

मीलचालनमुहूर्त्तः—भर. कृति, आश्ले, वि. पूर्वा३, नक्षत्रेषु २।३।५।७।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चं. बु. वृ. शु. दिनेषु, शुभैः १।२।४।५।७।१० स्थितैः, पापैः ३।६।११ स्थितैः, कुम्भं विना लग्नेषु शुभः।

वस्तूनां क्रयमुहूर्त्तः—शुभतिथिदिनलग्नेषु, अश्वि. चि. स्वा. श्र. श. रे. नक्षत्रेषु शुभः ।

भैषज्यभक्षणमुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. मू. अभि. श्र. ध. श. रो. नक्षत्रेषु, शुभतिथिषु, सू. च. बु. वृ. शु. दिनेषु, ३।६।९।१२ लग्नेषु, शुभैः ३।६।९।९२ राशिगतैः, लग्नात् ७।८।१२ ग्रहरहितेषु, औषधिभक्षणं शुभम् । जन्मनक्षत्रे भैषज्यभक्षणमशुभम् ।

रक्तमोक्षण (आपरेशन) मुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू.मं.वृ. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभम्।

चिकित्सामुहूर्त्तः—अश्वि. रो. मृ. पुष्य. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. अभि. श्र. श. नक्षत्रेषु, सू. चं. मं. बृ. शु. दिनेषु, शुभतिथिलग्नेषु शुभा ।

उग्रकर्ममुहूर्त्तः—पूर्वा ३, भ. मघा, मू. ज्ये. आश्ले. आर्द्रा. नक्षत्रेषु, मं. श. दिनेषु, १।८।१०।११ लग्नेषु, १।३।४।५।९।१०।११।१४ तिथिषु शुभम् ।

मोटरबससाइकिलयानादिचालनमुहूर्त्तः—अश्वि. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. ज्ये. रे. नक्षत्रेषु, च. मं. वृ. शु. श. दिनेषु १।२।३।५।६।७।८।१०।११।१३।१५ तिथिषु, चतुर्थेशे बलयुक्ते १।४।५।७।९।१० स्थिते, लग्नेशदशमेश—नवमेशैरपि १।४।५।७।९।१० गतैर्बलयुक्तैः, पापैः ३।६।११ स्थानस्थितैः यानादिचालनं शुभम् ।

राशीनां स्वामिचरादिसंज्ञाघातादिचक्रम्

राशि	मे	वृ	मि	क	सि	क	तु	वृ.	ध	म	कु	मी
पति	म	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
संज्ञा	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि	चर	स्थि	द्वि
प्रकृ	पित्त	वात	सम	कफ	पित्त	वा	स	क	पि	वा	सम	क
आकृ	ह्रस्व	ह्र	सम	सम	दीर्घ	दी	दी	दी	स	स	ह	स
जाति	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि	क्ष	वै	शू	वि
घामा	का	मार्ग	आषा	पौ	ज्ये.	भा.	मा.	आ.	श्रा.	वै.	चै.	फा
घाति	नन्दा	पूर्णा	भद्रा	भद्रा	जया	पूर्णा	रिक्ता	नन्दा	जया	रिक्ता	जया	पूर्णा
दि	र.	श.	चं.	बु.	श	श	बृ.	शु	शु	मं	वृ.	शु
नक्ष.	म.	ह.	स्वा.	अनु	मू.	श्र	श.	रे.	म.	रो.	आ.	श्ले
योग	वि	सु	प	व्या	धृ	शु.	शुक्ल	व्य	वज्र	वै	गं	वज्र
कर	बव	श	च	ना	बव	कौ	तै	ग	तै	श	वणि	वि
प्रहर	१	४	३	१	१	१	४	१	१	४	३	४
पु.च.	१	५	९	२	६	१०	३	७	४	८	११	१२
स्त्रीच	१	८	७	९	४	३	६	२	१०	११	५	१२

ग्रहाणामुच्चादिबोधकचक्रम्

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.	रा	के
उच्च	मे १०	वृ३	म२८	कं१५	क५	मी२७	तु २०	मि	ध
नीच	तु १०	वृश्चि३	क२८	मी१५	म५	कं२७	मे२०	ध	मि
मूत्रि	सि	वृष	मे	कं	ध	तु	कु	कु	सि
जातिः	क्ष	वै	क्ष	शू	ब्रा	ब्रा	चा	चा	चा
दिक्	पू	वा	द	उ	ई	अ	प	नै	नै
भाग्य	२२वर्ष	२४व	२८व	३२व	१६व	२५व	३६व	४२व	४८व
प्रकृतिः	पित्त	कफ	पित्त	सम	सम	वात	वात	वात	वात
पुसंज्ञा	पु	स्त्री	पु	नपुं	पु	स्त्री	नपुं	नपुं	पु
आकृति	ह्र	ह्र	ह्र	ह्र	दीर्घ	ह्र.	दी	दी	दी

होराचक्रम्

राशि	मे	वृ.	मि	क	सि	कं.	तु	वृ.	ध	म	कुं	मी
१५अं	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च
३०अं	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू	च	सू

द्रेष्काणचक्रम्

राशिः	मे	वृ	मि	क	सि	कं	तु	वृ	ध	म	कु	मी
१०अं	मं	शु.	बु	च	सु	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ
२०अं	सू	बु	शु	मं	वृ	श	श	वृ	म	शु	बु	च
३०अं	वृ	श	श	वृ	मं	शु	बु	च	सू	बु	शु	मं

वर्षाज्ञानाय सप्तनाडीचक्रम्

शनिः	रवि	भौम	गुरुः	शुक्रः	बुधः	चन्द्र	स्वामी
कृ.	रो.	मृ.	आ.	पुन.	पु.	आश्ले	नक्षत्र
वि.	स्वा.	चि.	ह.	उफ.	पूफ	म.	नक्षत्र
अनु	ज्ये.	मू.	पूषा	उषा	अभि.	श्र.	नक्षत्र
भ	अ.	रे.	उभा	पूभा.	श.	ध.	नक्षत्र
चण्डा	वाता	वह्नि	सौम्या	नीरा	जला	अमृता	संज्ञा

होरालग्नानयनम्—द्विघ्नेष्ट—नाड्यः पञ्चाप्ता यच्छेषञ्च पलीकृतम् । दशाप्तमंशास्ते योज्या रवौ होरोदयो भवेत् ।

त्रिविधायुर्बोधकचक्रम्

दीर्घायुः	मध्यमायुः	अल्पायुः
चरभे चरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	चरभे लग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः
स्थिरभेलग्नेशः द्विस्वेऽष्टमेशः	स्थिमेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः	स्थिरभेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः
द्विस्वेलग्नेशः स्थिरभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः द्विस्वभेऽष्टमेशः	द्विस्वभेलग्नेशः चरभेऽष्टमेशः

लग्नेशाष्टमेशयोरिव लग्नचन्द्राभ्यां (शनिचन्द्राभ्याम्) लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चायुर्निर्णयम् ।

ग्रहाणां धारणाय मणयः

सूर्यः	माणिक्य	गारनेट	विद्रुम
चन्द्रः	मुक्ता	मूनस्टोन	चांदी
कुजः	विद्रुम	मूंगा	मूंगा
बुधः	पन्ना	लीली	सोना
गुरु	पोखराज	सुनहला	मोती
शुक्रः	हीरा	स्फटिक	चांदी
शनिः	नीलमणि	यमुनियां	लौह
राहुः	गोमेद	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त
केतुः	लहसुनिया	लाजावर्त्त	लाजावर्त्त

नवमांशचक्रम्

राशि	मे.सि ध.	वृष कं.म	मि.तु कु.	क.वृ मी.
३/२०	म.	श.	शु.	च
६/४०	शु.	शं.	मं	सू.
१०/०	वु.	वृ.	वृ.	बु.
१३/२०	च	म.	श.	शु.
१६/४०	सू.	शु.	श.	म
२०/०	बु.	बु.	वृ.	वृ.
२३/२०	शु.	चं.	मं.	श.
२६/४०	म.	सू.	शु.	श.
३०/०	वृ.	बु.	बु.	वृ.

विषमराशौ त्रिंशांशचक्रम्		समराशौ त्रिंशांशचक्रम्	
अंशाः	मे.तु.मि. ध.सिं.कु.	अंशाः	वृ.क.के. वृ.म.मी.
५अं.	म	५अं	शु
१०अं	श	१२अं.	बु
१८अं	वृ.	२०अं	वृ.
२५अं	बु.	१५अं	श
३०अं	शु.	३०अं	मं.

आयुर्विचारः

लग्नसप्तमयोरन्यतरस्थिते चन्द्रे लग्नचन्द्राभ्यामन्यथा शनिचन्द्राभ्यां, लग्नेशाष्टमेशाभ्यां, लग्नहोरालग्नाभ्याञ्चेति प्रकारत्रयेणायुर्निर्णयम् । प्रकारत्रयेप्येकरूपायुष्यागतं तदेव ग्राह्यम्। विभेदे प्रकारद्वयागतायुर्ग्राह्यम्, विषमे जन्मलग्ने द्वितीयेशाष्टमेशयोर्यो बली, समे जन्मलग्ने द्वादशेशषष्ठेशयोर्यो बली तस्य केन्द्रे स्थित्या दीर्घायुः, पणफरे मध्यायुः, आपोक्लिमे चाल्पायुः। इत्थमेवात्मकारकवशेनापि। १, ८ ईशयोः कारकेण सहैक्ये योगे वा मध्यायुरेव। विषमे जन्मलग्ने कारकस्तृतीये, समे जन्मलग्ने कारको यदि चैकादशे भवेत्तर्हि कारकायुषि केन्द्रे दीर्घायुः पणफरे मध्यमायुरापोक्लिमे चाल्पायुः। यदि लग्नेशाष्टमेशदशमेशाः केन्द्रत्रिकोणलाभगास्तदा दीर्घायुर्योगः। यदि लग्नेशः सूर्यस्य मित्रन्तदा दीर्घायुर्योगः, समश्चेन्मध्यमायुर्योगः, शत्रुस्तदाऽल्पायुर्योगः। पूर्वोक्तचक्र द्वारा प्रकारत्रयेण दीर्घायुर्योगे प्राप्ते १२० वर्षाणि, प्रकारद्वयेन १०८ वर्षाणि, प्रकारेणैकेन ९६ वर्षाणि आयुः। एवमेव मध्यायुष्यपि प्रकारत्रयादिवशेन क्रमेश ८०, ७२, ६४, वर्षाण्यायुः। अल्पायुष्यपि ४०, ३६, ३२ वर्षाण्यायुरिति ।

आयुःस्थानमारकादिस्थानञ्च—अष्टमञ्च तृतीयञ्च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमञ्चैव मारकस्थानमुच्यते। क्वचित् षष्ठाष्टमव्ययेशदशास्वपि मारकसम्भवः। मारके मारकान्तरमशुभम्, परस्परं षष्ठाष्टमेशयोर्दशान्तर्दशा न शुभा, लग्नेशपञ्चमेशनवमेशानां दशा शुभा, त्रिषडायेशानां च पापाख्या। व्ययद्वितीयेशयोर्दशा स्थानान्तरानुगुण्येण साहचर्याद्वा फलदा। चतुर्थेशसप्तमेशदशमेशानां दशा मध्यफलदा स्थानान्तरवशेन शुभाशुभफलप्रदा च। अष्टमेशदशा पापफलदा, परं स्थानान्तरशुभाशुभवशेन शुभपरमाशुभफलदेति।।

द्वादशांशज्ञानम्—प्रत्येकस्मिन् राशौ १२ द्वादशांशेशास्तत्र प्रतिद्वादशांशमानं २।३० अंशात्मकं भवति। द्वादशांशेशाः स्वराशित एव भवन्ति ।

कारकग्रहाः—ग्रहेषु सर्वाधिकांशवानात्मकारकस्तन्न्यूनांशक्रमेणामात्य–भ्रातृमातृपितृपुत्रज्ञातिकारकाः ज्ञेयाः । अंशसाम्ये कलाधिक्यं, कलादिसाम्ये बलाधिक्यं ग्राह्यम्। **स्थिरकारकाः**—तन्वादिभावानां क्रमेणसूर्य–गुरु–कुज–चन्द्रगुरु–गुरु–भौम–शुक्र–शनि–गुरु–बुध–शुक्र–शनयः स्थिरकारकाः भवन्ति ।

स्वर्णादिचरणकजन्मज्ञानम्—जन्मकाले जन्मलग्नाच्चन्द्रे १।६।११ स्थिते स्वर्णपादे, २।५।९ स्थिते रजतपादे, ३।७।१० स्थिते ताम्रपादे, ४।८।१२ स्थिते च लौहपादे जन्म ज्ञेयम्।

आर्द्रादिद्वादशनक्षत्रेषु रजपादे, ज्येष्ठादिसप्तसु स्वर्णपादे, पूर्वभाद्रादिपञ्चसु ताम्रपादे, कृत्तिकादित्रिषु लौहपादे जन्म भवति। तेषां फलम्—स्वर्णपादेत्युत्कृष्टं, रजतपादे शोभनं, ताम्रपादे मध्यमं, लौहपादे च हीनफलमिति ।

श्रावणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, सवत २०६८, सन् १४१६ साल, दि. १६।७।२०११ ई. तः दि. ३०।७।११ ई. यावत्, पश्चिमे कालः
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः, ३तः पूर्वास्तः, अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः सौम्यगोलायने, २तो वर्षर्तुर्याम्यायनञ्च ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	१४।५६	दि. ११।१३	उ.षा. ११।३	दि. ६।४०	वि. ३०।२६	कौ. १४।५६	मकर	अहो.	२।२६।२४।४८	३३।४६	५।१५	६।४५	२५	३२	१६
२ र.	१५।४८	दि. ११।३४	श्र. १३।३६	दि. १०।४१	प्री. २७।००	ग. १५।४८	म. ४५।३०	रा. ११।२७	३।०।२१।४६	३३।४५	५।१५	६।४५	२६	१	१७
३ चं.	१७।५७	दि. १२।२६	ध. १७।२४	दि. १२।१३	आ. २८।२५	वि. १७।५७	कुम्भ	अहो.	३।१।१८।४४	३३।४४	५।१५	६।४५	२७	२	१८
४ म.	२१।१३	दि. १।४४	श. २२।१८	दि. २।१०	सौ. २८।४६	बा. २१।१३	कुम्भ	अहो.	३।२।१५।४१	३३।४३	५।१५	६।४५	२८	३	१९
५ बु.	२५।२२	दि. ३।२५	पू. २८।१	दि. ४।२८	शो. २६।४६	तै. २५।२२	कुं. ११।३५	दि. ६।२४	३।३।१२।३८	३३।४२	५।१६	६।४४	२९	४	२०
६ बृ.	३०।१२	दि. ५।२१	उ.भा. ३४।२२	सा. ७।१	अग. ३१।१६	व. ३०।१२	मीन	अहो.	३।४।६।३५	३३।४१	५।१६	६।४४	३०	५	२१
७. शु.	३५।१४	सा. ७।२२	रे. ४०।५६	रा. ६।३८	सु. ३३।००	वि. २।४३	मी. ४०।५६	रा. ६।३८	३।५।६।३२	३३।४०	५।१६	६।४४	३१	६	२२
८ श.	४०।६	रा. ६।२०	अ. ४७।१८	रा. १२।११	घृ. ३४।३४	बा. ७।४२	मेष	अहो	३।६।३।२६	३३।३८	५।१६	६।४४	१	७	२३
९ र.	४४।२४	रा. ११।०३	भ. ५२।५६	रा. २।२६	शू. ३५।४०	तै. १२।१७	मेष	अहो.	३।७।००।३३	३३।३५	५।१७	६।४३	२	८	२४
१० च.	४७।४६	रा. १२।२४	कृ. ५७।४७	रा. ४।२५	गं. ३६।७	व. १६।५	मे. ६।११	दि. ८।५८	३।७।५७।३७	३३।३२	५।१८	६।४२	३	९	२५
११ म.	५०।००	रा. १।१८	रो. ६०।००	अहो.	वृ. ३५।३६	ब. १८।५३	वृष	अहो.	३।८।५४।४१	३३।२९	५।१८	६।४२	४	१०	२६
१२. बु.	५१।२	रा. १।४४	रो. १।३०	दि. ५।५५	धु. ३४।१४	कौ. २०।३१	वृ. ३२।४४	सा. ६।२५	३।९।५१।४५	३३।२६	५।१९	६।४१	५	११	२७
१३ बृ.	५०।४४	रा. १।३७	मृ. ३।५८	दि. ६।५४	व्या. ३१।४६	ग. २०।५३	मिथुन	अहो.	३।१०।४८।४८	३३।२३	५।१९	६।४१	६	१२	२८
१४ शु	४६।१२	रा १।०१	आर्द्रा ५।०७	दि. ७।२३	ह. २८।२३	वि. १६।५८	मि. ५०।८	रा. १।२३	३।११।४५।५१	३३।२०	५।२०	६।४०	७	१३	२९
३० श.	४६।२८	रा. ११।५५	पुन. ५।८	दि. ७।२३	वज्रः २४।००	च. १७।५०	कर्क	अहो.	३।१२।४२।५४	३३।१८	५।२०	५।४०	८	१४	३०

मासान्तः, **अशून्यशयनव्रतं,** श्रावणे वर्जयेच्छाकम् । ×× मि. ४१ उपरि, म. ४६।५३ उ. ।

कर्के रविः २३।५७ मु ३० फलं साम्यं **याम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं८ मि. २६ उ. घं २ मि. ५० यावद्दिने, **पुण्याहः** याम्यायनारंभः, २३।५७ उ., पञ्चकारंभो दिवा घं. १० ××

पूर्वास्तः शुक्रः २४।४२ उ., मासादिः, वृश्चिके राहुर्वृषे केतुश्च ११।४१ उ., **श्रीगणाधिप** ४ व्रतं, सोमवासरव्रतं, म. १७।५७ या. (४) एकोदिष्टम् ।

पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे ।

पुष्ये रविः ५४।३५ पुंस्त्रीसूचंयोगो मिथुनलग्नं गजवाहनं नीरानाडीपतिः शुक्रस्तेन सुवृष्टियोगः, मौना ५ नाग ५ मनसादेवीपूजनमुत्थापनञ्च, **मधुश्रावणी** ×

द.ति. ३०।१२ या., म. ३०।१२ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम् ।

कर्के शुक्रः ४२।६, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. ६ मि. ३८ उ., म. २।४३ या., उत्तरयात्राष्टम्यां रेवत्यां ततः पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम् ।

मघायां सिंहे बुधः २६।१८, **इन्द्रसावर्णिमन्वादिः** पूर्वां विना यात्राश्विन्याम् ।

।।००।। × **पूजाकथारंभः,** द. ति. २५।२२ उ., पश्चिमयात्रा पञ्चम्यां, (५) एकोद्दिष्टम् ।

सोमवासरव्रतं, भ. १६।५ उ. ४७।४६ या., दक्षिणयात्रा रोहिण्याम् ।

कामदा ११ व्रतं सर्वेषां, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वादश्यां, वक्री बुधः ४८।७ ।

मिथुने कुजः २२।५६, दूर्वादलेन पारणं, पूर्वदक्षिण यात्रा रोहिण्यान्ततः उत्तरां विना यात्रा द्वादश्याम् ।

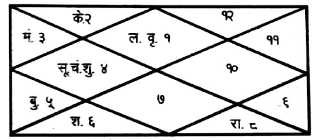
प्रदोष १३ व्रतं, भ. ५०।४४ उ., दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि ।

प्रदोष १४ व्रतं, भ. १६।५८ या., उत्तरयात्रा पुनर्वसौ चर्तुदश्याम् ।

श्रावणी ३०, स्नानदानादिः **देवसावर्णिमन्वादिः** पश्चिमास्तो बुधः ७।१०, पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि ।

३० शनौ बल्ली ८।३८।४१।४८

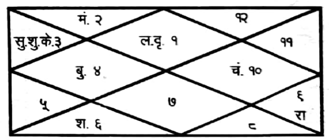
अयनांशाः २२।४१।३



ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।							दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्												
	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	१।२२।४२।१६	३।२५।२२।१६	०।१४।३२।३२	२।२२।४५।२२	५।१७।६।२२	२।०।४।३०	४६।५३	१।१२	३।०८	५।२१	७।३६	६।५५	१२।१०	१४।२७	१६।४४	१८।४६	२०।३५	२२।०६	२३।३५
२. र.	१।२३।२३।४८	३।२६।०३।४१	०।१४।४०।२८	२।२३।५८।४५	५।१७।१०।७	२।०।१।१६	४६।५२	१।०८	३।०४	५।१७	७।३५	६।५१	१२।०६	१४।२३	१६।४०	१८।४५	२०।३१	२२।०२	२३।३१
३ चं.	१।२४।५।१७	३।२६।४५।५	०।१४।४८।२४	२।२५।१२।८	५।१७।१३।५२	१।२६।५८।८	४६।५१	१।०४	३।००	५।१३	७।३१	६।४७	१२।०२	१४।१६	१६।३६	१८।४१	२०।२७	२१।५८	२३।२७
४ म.	१।२४।४६।४६	३।२७।२६।२६	०।१४।५६।१६	२।२६।२५।३१	५।१७।१७।३७	१।२६।५४।५७	४६।५०	१।००	२।५६	५।०६	७।२७	६।४३	११।५८	१४।१५	१६।३२	१८।३७	२०।२३	२१।५४	२३।२३
५ बु.	१।२५।२८।१४	४।२८।०७।५३	०।१५।४।१४	२।२७।३८।५४	५।१७।२१।२२	१।२६।५१।४६	४६।४९	०।५६	२।५२	५।०५	७।२३	६।३६	११।५४	१४।११	१६।२८	१८।३३	२०।१६	२१।५०	२३।१६
६ बृ.	१।२६।६।४२	४।२८।४६।१७	०।१५।१२।०६	२।२८।५२।१७	५।१७।२५।७	१।२६।४८।३५	४६।४९	०।५२	२।४८	५।०१	७।१६	६।३५	११।५०	१४।०७	१६।२४	१८।२६	२०।१५	२१।४६	२३।१५
७ शु.	१।२६।५१।१०	४।२६।३०।४१	०।१५।२०।४१	३।०।५।३६	५।१७।२८।५१	१।२६।४५।२५	४६।४९	०।४६	२।४५	४।५८	७।१६	६।३२	११।४७	१४।०४	१६।२१	१८।२६	२०।१२	२१।४३	२३।१२
८ श.	१।२७।३२।३८	४।०।१२।५	०।१५।२७।५६	३।१।१६।०१	५।१७।३२।३५	१।२६।४२।१५	४६।४९	०।४५	२।४१	४।५४	७।१२	६।२८	११।४३	१४।००	१६।१७	१८।२२	२०।०८	२१।३६	२३।०८
९ र.	१।२८।११।५६	४।०।२८।३७	०।१५।३४।०७	३।२।३२।३३	५।१७।३६।४६	१।२६।३६।४	४६।४७	०।४१	२।३७	४।५०	७।८	६।२४	११।३६	१३।५६	१६।१३	१८।१८	२०।०४	२१।३५	२३।०४
१० चं.	१।२८।५१।१४	४।०।४५।०६	०।१५।४०।१५	३।३।४६।४	५।१७।४०।५७	१।२६।३५।५३	४६।४५	०।३७	२।३३	४।४६	७।४	६।२०	११।३५	१३।५२	१६।०६	१८।१४	२०।००	२१।३१	२३।००
११ म.	१।२६।३०।३२	४।००।५०।५६	०।१५।४६।२३	३।४।५६।३५	५।१७।४५।८	१।२६।३२।४२	४६।४३	०।३३	२।२६	४।४२	७।००	६।१६	११।३१	१३।४८	१६।०५	१८।१०	१९।५६	२१।२७	२२।५६
१२ बु.	२।०।६।५०	४।०।५०।१६	०।१५।५२।३१	३।६।१३।०६	५।१७।४६।१६	१।२६।२६।३१	४६।४२	०।२६	२।२५	४।३८	६।५६	६।१२	११।२७	१३।४४	१६।०१	१८।०६	१९।५२	२१।२३	२२।५२
१३ बृ.	२।०।४६।०८	४।०।३७।८	०।१५।५८।३८	३।७।२६।३७	५।१७।५३।३०	१।२६।२६।२०	४६।४१	०।२५	२।२१	४।३४	६।५२	६।०८	११।२३	१३।४०	१५।५७	१८।०२	१९।४८	२१।१६	२२।४८
१४ शु.	२।१।२८।२५	४।०।२४।८	०।१६।४।४५	३।८।४०।८	५।१७।५७।४१	१।२६।२३।१०	४६।४०	०।२१	२।१७	४।३०	६।४८	६।०४	११।१६	१३।३६	१५।५३	१७।५८	१९।४४	२१।१५	२२।४४
१५ श.	२।२।१७।४२	४।०।१०।५१	०।१६।१०।५२	३।६।५३।३६	५।१८।०१।५२	१।२६।२०।००	४६।३६	०।१८	२।१४	४।२७	६।४५	६।०१	११।१६	१३।३३	१५।५०	१७।५५	१९।४१	२१।१२	२२।४१

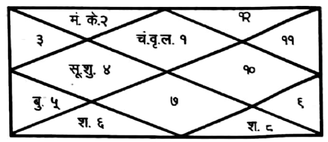
१ शनौ बल्ली ८।३८।४१।३४

अयनांशाः २२।४१।१



८ शनौ बल्ली ८।३८।४१।४१

अयनांशाः २२।४१।२



विविधविषयाः—श्रावणकृष्णपञ्चम्यां मनसादेव्या उत्थापनं पूजनञ्च कार्यम् । सोमवारव्रतं—सोमवारे व्रतं कार्यं श्रावणे वै यथाविधि । शक्तावुपोषणं कार्यमथवा निशिभोजनम् । **प्रदक्षिणविधि**—एकं चण्ड्यां रवौ सप्त त्रिर्दद्याच्च विनायके । चत्वारि केशवे दद्यात् शिवस्यार्द्धप्रदक्षिणम्। आसन्नप्रसवा नारी जलपूर्णघटं यथा। उद्वहन्ती शनैर्याति तथा कुर्यात्प्रदक्षिणाम् । मांसाभक्षणफलं महाभारते—मासि मास्यश्वमेधेन यो यजेत्तु शतं समाः । न खादति च यो मांसं सममेतद्युधिष्ठिर। यस्तु वर्षशतं पूर्णं तपस्तप्येत् सुदारुणम् । यश्च वै वर्जयेन्मांसं समौ तौ न च संशयः।। कस्यापि कृतव्रतस्योद्यापनावश्यकता, नन्दिपुराणे—कुर्यादुद्यापनं तस्य समाप्तौ यदुदीरितम्। उद्यापनं विना यतु तद्व्रतं निष्फलं भवेत् । श्रेष्ठव्रतानि—ब्रह्मचर्यं तथा शौचं सत्यमामिषवर्जनम्। व्रतेष्वेतानि चत्वारि वरीयानीति निश्चयः । **वृक्षारोपणमन्त्र**—वसुधेति च शीतेति पुण्यदेति धरेति च। नमस्ते सुभगे देवि द्रुमोऽयं वर्धतामिति।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ११ तो वक्री ३० तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितः शुक्रः ३ तः पूर्वास्तः ।

वातावरणम्—पक्षादितः षष्ठीं यावद्वायुमेघच्छायावृष्टयस्ततो द्वादशीं यावत्तापाग्निभयवायवस्ततः पक्षान्तं यावद्वृष्टियोगः ।

श्रावणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत २०६८, सन १४१६ साल, दि. ३१।७।११ ई. तः दि. १३।८।११ ई. या., पश्चिमे कालः
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः सौम्यगोलः, याम्यायनम् ।

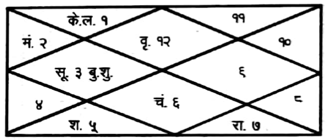
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	४२।४५	रा. १०।२७	पुष्य ३।५६	प्रा. ६।५५	सि. १८।४५	किं. १४।३७	कर्क	अहो.	३।१३।४०।६	३३।१५	५।२१	६।३६	६	१५	३१
२ चं.	३८।६	रा. ८।३८	आश्ले. १।५६	प्रा. ६।८	व्य. १२।४६	बा. १०।२७	क. १।५६	दि. ६।८	३।१४।३७।१८	३३।१२	५।२२	६।३८	१०	१६	१
३ मं.	३२।५३	सा. ६।३१	पू.फा. ५५।३१	रा. ३।२४	वरी. ६।१२	तै. ५।३१	सिंह	अहो.	३।१५।३४।२६	३३।६	५।२२	६।३८	११	१७	२
४ बु.	२७।७	दि. ४।१४	उ.फा. ५१।३५	रा. २।१	शि. ५१।३६	व. ०।००	सि. ६।३२	दि. ६।१२	३।१६।३१।४०	३३।६	५।२३	६।३७	१२	१८	३
५ बृ.	२१।४	दि. १।४६	ह. ४७।२६	रा. १२।२१	सि. ४३।५६	वा. २१।४	कन्या	अहो.	३।१७।२८।५१	३३।३	५।२३	६।३७	१३	१९	४
६ शु.	१४।४८	दि. ११।१६	चि. ४३।१५	रा १०।४२	सा. ३६।१६	तै. १४।४८	कं. १३।२०	दि. १०।४४	३।१८।२६।२	३३।००	५।२४	६।३६	१४	२०	५
७ श.	८।४२	दि. ८।५३	स्वा. ३६।१५	रा. ६।०६	शु.भ. २८।४[illegible]	व. ८।४२	तुला	अहो.	३।१९।२३।१३	३२।५८	५।२४	६।३६	१५	२१	६
८ र.	२।५२	प्रा. ६।३४	वि. ३५।४०	रा. ७।४१	शुक्ल. २१।३[illegible]	ब. २।५२	तु. २१।३४	दि. २।०३	३।२०।२०।३४	३२।५४	५।२५	६।३५	१६	२२	७
१० चं.	५२।४६	रा. २।३२	अनु. ३२।३७	सा. ६।२६	ब्र. १४।४४	तै. २५।६	वृश्चिक	अहो.	३।२१।१७।५५	३२।५१	५।२६	६।३४	१७	२३	८
११ मं.	४८।५४	रा. १।००	ज्ये. ३०।२८	सा. ५।३७	ऐ. ८।३३	व. २०।५०	वृ. ३०।२८	सा. ५।३७	३।२२।१५।१५	३२।४८	५।२६	६।३४	१८	२४	९
१२ बु.	४६।१	रा. ११।५१	मू. २६।७	सा. ५।०६	वै. ३।३	ब. १७।२८	धनु	अहो.	३।२३।१२।३५	३२।४५	५।२७	६।३३	१९	२५	१०
१३ बृ.	४४।१७	रा. ११।११	पू.षा. २८।५३	सा. ५।१	प्री. ५४।३७	कौ. १५।६	ध. ४४।७	रा. ११।७	३।२४।६।५५	३२।४२	५।२८	६।३२	२०	२६	११
१४ शु.	४३।४६	रा. १०।५८	उ.षा. २६।४६	सा. ५।२४	आयु. ५१।५३	ग. १४।०२	मकर	अहो.	३।२५।७।१५	३२।३६	५।२८	६।३२	२१	२७	१२
१५ श.	४४।३४	रा. ११।१६	श्र. ३२।३	सा. ६।१८	सौ. ५०।६	वि. १४।१०	मकर	अहो.	३।२६।४।३५	३२।३६	५।२६	६।३१	२२	२८	१३

दोलोत्सवारंभः, कर्के बुधः ३।११ । ● भद्रान्ते घं ११ मि. ६ उपरिदिने—भद्रायां द्वे न कर्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा××
मघामानं ५७।८, अगस्त ८, **सोमवासरव्रतं,** उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, चन्द्रदर्शनं मु ३० सौम्यशृंगफलं साम्यम् ।
परिघयोगमानं ५२।५३, **मधुश्रावणीव्रतं** पूजनञ्च, **श्रीगणेश** ४ व्रतं, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
आश्लेषायां रविः ५५।१७ स्त्रीस्त्रीसूचंयोगो मिथुनलग्नं शिखिवाहनं सौम्यानाडीपतिर्गुरुस्तेन वायुवृष्टियोगः, म. २७।७ या., **गृहप्रवेशो** ↗
नाग ५ **नागपूजनं महापद्मनामा नागराजःसितवर्णो** द्वारमुभयतो गोमयनिर्मिता नागा दूर्वासिन्दूरदुग्धलाजादिभिः पूज्याः, म. २१।४ ×
भ. १४।४८ या., द. ति. १४।४८ या., गृहप्रवेशः सप्तम्याम्, (६—७) एकोद्दिष्टम् ।
शीतला ७, **श्रीशीतलापूजनं,** गोस्वामितुलसीदासजयन्ती, म. ८।४२ उ. ३५।४७., **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम् ।
नवमीमानं ५४।३६, उत्तरयात्रा दशम्याम् ।↗रात्रौ घं. २ मि. १ उपरि घं. ३ मि.३० या., पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते ।
सोमवासरव्रतं, **गृहप्रवेशोऽनुराधायां,** पश्चिमोत्तरयात्रा ।× उ., **गृहप्रवेशः** पूर्वयात्रा च पञ्चम्याम्, द. ति. २१।४ उपरि।
पुत्रदा ११ व्रतं सर्वेषां, पञ्चदिनात्मकदोलोत्सवारंभः, म. २०।५० उ. ४८।५४ या., पूर्वयात्रा द्वादश्याम् । ××× भद्रान्ते रक्षिकाबन्धनं युक्तमेव । पञ्च +
विष्कंभयोगमानं ५५।२०, श्रीधर १२, दूर्वादलेन पारणं, **गृहारंभप्रवेशौ** मूले, पूर्वयात्रा द्वादश्याम् । **+ कारंभः** सायं घं ६ मि १८ उपरि ।
प्रदोष १३ व्रतं, **गृहप्रवेश** उत्तराषाढे त्रयोदश्यां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे । ×× श्रावणी नृपतीन् हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी इति कृत्यसारसमुच्चयस्थवचनेन ×××
प्रदोष १४ व्रतं, भ. ४३।४६ उ., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायाम् ।
श्रावणी १५ स्नानदानादिः, उपाकर्म, **संस्कृतदिवसमहोत्सवः,** दोलोत्सवान्तः, हयग्रीवावतारः, **गृहारंभः** पूर्णिमायां, म. १४।१० या., रक्षाबन्धनं ●

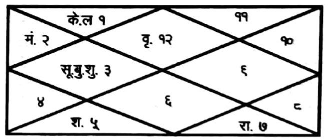
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	२।२।५७।५८	३।२६।३१।२८	०।१६।१६।११	३।११।०७।२०	५।१८।६।४७	१।२६।१६।४६	४६।३७	०।१४	२।१०	४।२३	६।४१	८।५७	११।१२	१३।२६	१५।४६	१७।५१	१६।३७	२१।०८	२२।३७
२ चं.	२।३।३८।१४	३।२८।५२।५	०।१६।२१।३०	३।१२।२१।१	५।१८।११।४२	१।२६।१३।३८	४६।३५	०।१०	२।०६	४।१६	६।३७	८।५३	११।०८	१३।२५	१५।४२	१७।४७	१६।३३	२१।०४	२२।३३
३ मं.	२।४।१८।३०	३।२८।१२।४३	०।१६।२६।४६	३।१३।३४।४२	५।१८।१६।३७	१।२६।१०।२७	४६।३३	०।०६	२।०२	४।१५	६।३३	८।४६	११।०४	१३।२१	१५।३८	१७।४३	१६।२६	२१।००	२२।२६
४ बु.	२।४।५८।४६	३।२७।३३।२१	०।१६।३३।८	३।१४।४८।२२	५।१८।२१।३२	१।२६।७।१६	४६।३२	०।०२	१।५८	४।११	६।२६	८।४५	११।००	१३।१७	१५।३४	१७।३६	१६।२५	२०।५६	२२।२५
५ बृ.	२।५।३६।१	३।२६।५३।५७	०।१६।३७।२७	३।१६।०२।०२	५।१८।२६।२७	१।२६।४।०५	४६।३१	२३।५८	१।५४	४।०७	६।२५	८।४१	१०।५६	१३।१३	१५।३०	१७।३५	१६।२१	२०।५२	२२।२१
६ शु.	२।६।१६।२६	३।२६।१४।३७	०।१६।४२।४५	३।१७।१५।४२	५।१८।३१।२२	१।२६।०।५५	४६।३०	२३।५४	१।५०	४।०३	६।२१	८।३७	१०।५२	१३।०६	१५।२६	१७।३१	१६।१७	२०।४८	२२।१७
७ श.	२।६।५६।३१	३।२५।३५।१५	०।१६।४८।०३	३।१८।२६।२२	५।१८।३६।१७	१।२८।५७।४५	४६।२६	२३।५१	१।४७	४।००	६।१८	८।३४	१०।४६	१३।०६	१५।२३	१७।२८	१६।१४	२०।४५	२२।१४
८ र.	२।७।३६।२४	३।२४।५२।५०	०।१६।५२।६	३।१६।४३।११	५।१८।४१।३	१।२८।५४।३४	४६।२७	२३।४७	१।४३	३।५६	६।१४	८।३०	१०।४५	१३।०२	१५।१६	१७।२४	१६।१०	२०।४१	२२।१०
१० चं.	२।८।१६।१७	३।२४।१०।२५	०।१६।५६।१५	३।२०।५७।००	५।१८।४५।४६	१।२८।५१।२३	४६।२५	२३।४३	१।३६	३।५२	६।१०	८।२६	१०।४१	१२।५८	१५।१५	१७।२०	१६।०६	२०।३७	२२।०६
११ मं.	२।८।५६।१०	३।२३।२८।०१	०।१७।०।२१	३।२२।१०।४८	५।१८।५०।३५	१।२८।४८।१२	४६।२३	२३।३६	१।३५	३।४८	६।०६	८।२२	१०।३७	१२।५४	१५।११	१७।१६	१६।०२	२०।३३	२२।०२
१२ बु.	२।६।३६।०३	३।२२।४५।३७	०।१७।४।२७	३।२३।२४।३६	५।१८।५५।२०	१।२८।४५।०१	४६।२१	२३।३५	१।३१	३।४४	६।०२	८।१८	१०।३३	१२।५०	१५।०७	१७।१२	१८।५८	२०।२६	२१।५८
१३ बृ.	२।१०।१८।५६	३।२२।०३।१३	०।१७।८।३३	३।२४।३८।२४	५।१६।०।०५	१।२८।४१।५०	४६।२०	२३।३१	१।२७	३।४०	५।५८	८।१४	१०।२६	१२।४६	१५।०३	१७।०८	१८।५४	२०।२५	२१।५४
१४ शु.	२।१०।५८।४६	३।२१।२०।४६	०।१७।१२।३८	३।२५।५२।१२	५।१६।४।५०	१।२८।३८।४०	४६।१६	२३।२७	१।२३	३।३६	५।५४	८।१०	१०।२५	१२।४२	१४।५६	१७।०४	१८।५०	२०।२१	२१।५०
१५ श.	२।११।३८।४२	३।२०।३८।२५	०।१७।१६।४३	३।२७।६।००	५।१६।६।३५	१।२८।३५।३०	४६।१८	२३।२४	१।२०	३।३३	५।५१	८।०७	१०।२२	१२।३६	१४।५६	१७।०१	१८।४७	२०।१८	२१।४७

७ शनौ बल्ली ८।३८।४१।५५
अयनांशाः २२।४१।४



१५ शनौ बल्ली ८।३८।४२।२
अयनांशाः २२।४१।५



विविधविषयाः—पञ्चम्यां **नागपूजनं**—श्रावणे मासि पञ्चम्यां कृष्णपक्षेऽथवा सिते। द्वारस्योभयतो लेख्या गोमयेन विषोल्वणाः।। पूजयेद्विधिवद्वीर दधिदूर्वांकुरैः कुशैः। गन्धपुष्पोपहारैश्च ब्राह्मणानाञ्च तर्पणैः ।। ये त्वस्यां पूजयन्तीह नागान् भक्तिपुरस्सराः। न तेषां सर्पतो वीर भयं भवति कुत्रचित्। पञ्चम्यां तिक्ताम्लरससेवनं पुष्टिकरम्। **शकुनम्**—श्रावणशुक्लपञ्चम्यां दक्षिणपश्चिमवायौ दुर्भिक्षमन्यथा सुभिक्षम्। नमसि शुक्लदलेऽचलसंज्ञके रवितिथावुदयो रविचन्द्रयोः। भवति चेज्जलदैरिह संवृता वसुमती जलदा बहुतोयदाः। **रक्षासूत्रबन्धनमन्त्रः**-येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वां प्रतिबध्नामि रक्षे माचल माचल। ग्रहयोगेन **वृष्टिविचारः**—बुधशुक्रमहीसूनुगुरवश्चैकराशिगाः। निःसंशयं तदा काले जायते वृष्टिरुत्तमा ।। समागमे ज्ञसितयोस्तथा चं गुरुशुक्रयोः । तथैव जीवबुधयोर्वृष्टिः स्यान्नात्र संशयः।। यदा भवन्ति सूर्यस्य ग्रहाः पृष्ठावलम्बिनः । पुरतो वा यदा यान्ति तदा त्वेकार्णवा मही ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजगुरुशनयः, वक्री पश्चिमास्तो बुधः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमीं यावद्वातमेघाडम्बरवृष्टयस्ततो द्वादशीं यावत्तापाग्निभयवायवस्ततः पक्षान्तं यावद्वृष्टियोगः ।

भाद्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. १४।८।११ ई. तः दि. २६।८।११ ई. या., पश्चिमेकालः, ४ त उत्तरे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः १४ तो वक्री, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः, अशुद्धः, वर्षर्तुः सौम्यगोलः, याम्यायनम् ।

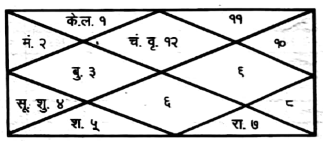
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः श्रा.	सौ.	अं.
१ र.	४६।४०	रा. १२।१०	ध. ३५।३४	रा. ७।४४	शो. ४६।२६	बा. १५।३७	म. ३।४६	दि. ७।२	३।२७।२।८	३२।३२	५।३०	६।३०	२३	२६	१४
२ चं.	४६।५२	रा. १।२७	श. ४०।११	रा. ६।३४	अगं. ४६।३४	तै. १८।१६	कुम्भ	अहो.	३।२७।५६।४१	३२।२६	५।३०	६।३०	२४	३०	१५
३ मं.	५४।४	रा. ३।०६	पू.भा. ४५।४४	रा. ११।४६	सु. ५०।२६	व. २१।५८	कु. २६।२१	सा. ५।१५	३।२८।५७।१४	३२।२६	५।३१	६।२६	२५	३१	१६
४ बु.	५८।५१	रा. ५।०३	उ.भा. ५१।५६	रा. २।१७	धृ. ५१।४७	ब. २६।२८	मीन	अहो.	३।२६।५४।४६	३२।२३	५।३१	६।२६	२६	३२	१७
५ बृ.	६०।००	अहोरात्र	रे. ५८।२८	रा. ४।५५	शू. ५३।२८	कौ. २६।२४	मी. ५८।२८	रा. ४।५५	४।०।५२।१८	३२।२०	५।३२	६।२८	२७	१	१८
५ शु.	३।५७	प्रा. ७।८	अ. ६०।००	अहोरात्र	गं. ५५।००	तै. ३।५७	मेष	अहो.	४।१।४६।५०	३२।१७	५।३३	६।२७	२८	२	१६
६ श.	८।५२	दि. ६।६	अ. ४।५१	प्रा. ७।३६	वृ. ५६।५	व. ८।५२	मेष	अहो.	४।२।४७।२२	३२।१४	५।३३	६।२७	२६	३	२०
७ र.	१३।१५	दि. १०।५२	भ. १०।४४	दि. ६।५२	ध्रु. ५६।३५	ब. १३।१५	मे. २७।०	दि. ४।२२	४।३।४५।६	३२।१०	५।३४	६।२६	३०	४	२१
८ चं.	१६।४४	दि. १२।१७	कृ. १५।४६	दि. ११।५३	व्या. ५६।१२	कौ. १६।४४	वृष	अहो.	४।४।४२।५०	३२।७	५।३५	६।२५	३१	५	२२
९ मं.	१९।३	दि. १।१२	रो. १९।४१	दि. १।२७	ह. ५५।००	ग. १९।३	वृ. ५१।४	रा. २।१	४।५।४०।३४	३२।४	५।३५	६।२५	१	६	२३
१० बु.	२०।१२	दि. १।४१	मृ. २२।२७	दि. २।३५	वज्र. ५२।४४	वि. २०।१२	मिथुन	अहो.	४।६।३८।१८	३२।१	५।३६	६।२४	२	७	२४
११ बृ.	२०।३	दि. १।३७	आर्द्रा. २३।५६	दि. ३।१०	सि. ४६।२६	बा. २०।३	मिथुन	अहो.	४।७।३६।०२	३१।५८	५।३६	६।२४	३	८	२५
१२ शु.	१८।४०	दि. १।०५	पुन. २४।१२	दि. ३।१८	व्य. ४५।१२	तै. १८।४०	मि. ६।८	दि. ६।१६	४।८।३३।४६	३१।५५	५।३७	६।२३	४	९	२६
१३ श.	१६।३	दि. १२।३	पुष्य २३।१८	दि. २।५७	वरी. ४०।६	व. १६।३	कर्क	अहो.	४।६।३१।३०	३१।५२	५।३८	६।२२	५	१०	२७
१४ र.	१२।२६	दि. १०।३६	आश्ले. २१।२५	दि. २।१२	प. ३४।१४	श. १२।२६	क. २१।२५	दि. २।१२	४।१०।२६।२७	३१।४८	५।३८	६।२२	६	११	२८
३० चं.	७।५६	दि. ८।५१	म. १८।४१	दि. १।०७	शि. २७।४१	ना. ७।५६	सिंह	अहो.	४।११।२७।२४	३१।४४	५।३६	६।२१	७	१२	२९

- १४ — दधि भाद्रपदे त्यजेत् ।
- १५ — पूर्वोदितो बुधः १७।३४, पञ्चषष्टिस्वातन्त्र्यदिवसः, राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, गृहारंभः, पश्चिमयात्रा तृतीयायाम् ।
- १६ — मघायां सिंहे शुक्रः ७।४१, **कज्जली ३** विशालाक्षीपूजनं दर्शनञ्च, भ. २१।५८ उ. ५४।४ या, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे ।
- १७ — मघायां सिंहे रविः ५१।३८ मु ४५ फलं सामर्घं पुंस्त्रीसूचंयोगो मिथुनलग्नं रासभवाहनं सौम्यनाडीपतिर्गुरुस्तेन वायुवृष्टियोगः, श्रीविनायक ४ व्रतं, बहुलापूजा, ××
- १८ — त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ० यावद्दिने, **पुण्याहः, पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. ४ मि. ५५ उ. ।
- १९ — मासादिः । ×× मार्गी बुधः ४६।३३, मासान्तः ।
- २० — हलधरषष्ठीव्रतं, भ. ८।५२ उ. ४१।०४ या., पूर्वां विना यात्राश्विन्याम् ।
- २१ — **रविव्रतं** मोहरात्रिर्निशीथे शक्तिपूजनं कृष्णजन्मोत्सवश्च, **जयन्तीव्रतम्** ।
- २२ — **श्रीकृष्णाष्टमीव्रतं** कृष्णपूजनोत्सवश्च, दक्षिणयात्राष्टम्यां रोहिण्यां, (९) एको. ।
- २३ — द. ति. १९।३ उ., भ. ४६।३८ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा नवम्याम् ।
- २४ — द. ति. २०।१२ या., भ. २०।१२ या. उत्तरां विना यात्रैकादश्यां मृगशिरसि, (१०) एको. ।
- २५ — **जया** ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ, (११) एको. ।
- २६ — कुष्माण्डेन वारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये (१२–१३) एको. ।
- २७ — द्वापरयुगादिः **प्रदोष** १४ व्रतं, दुर्भर १४ श्रीभैरवपूजनं, भ. १६।३ उ. ४४।१५ या., पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, (१४) एको. ।
- २८ — वक्री गुरुः ४४।११, **रविव्रतम्** ।
- २९ — भाद्री ३०, कुशी ३० स्नानदानादिः, **कुशोत्पाटनं, सोमवत्यमाव्रतं** घं. ८ मि. ५१ यावद्दिने, उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।

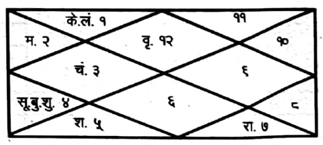
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	२।१२।१८।६	३।२०।२०।२०	०।१७।१६।०२	३।२८।१६।४६	५।१६।१६।४	१।२८।३२।१६	४६।१६	२३।२०	१।१६	३।२६	५।४७	८।०३	१०।१८	१२।३५	१४।५२	१६।५७	१८।४३	२०।१४	२१।४३
२ चं.	२।१२।५७।३०	३।२०।२।१५	०।१७।२१।२१	३।२६।३३।३७	५।१६।२२।३३	१।२८।२६।८	४६।१४	२३।१६	१।१२	३।२५	५।४३	७।५६	१०।१४	१२।३१	१४।४८	१६।५३	१८।३६	२०।१०	२१।३६
३ मं.	२।१३।३६।५३	३।१६।४४।१०	०।१७।२३।४०	४।००।४७।२५	५।१६।२६।०२	१।२८।२५।५७	४६।१२	२३।१२	१।०८	३।२१	५।३६	७।५५	१०।१०	१२।२७	१४।४४	१६।४६	१८।३५	२०।०६	२१।३५
४ बु.	२।१४।१६।१६	३।१६।३८।२२	०।१७।२५।५६	४।२।१।१३	५।१६।३५।३१	१।२८।२२।४६	४६।१०	२३।०८	१।०४	३।१७	५।३५	७।५१	१०।०६	१२।२३	१४।४०	१६।४५	१८।३१	२०।०२	२१।३१
५ बृ.	२।१४।५५।३६	३।१६।४१।१	०।१७।२८।१८	४।३।१५।०१	५।१६।४१।५६	१।२८।१६।३५	४६।६	२३।०५	१।०१	३।१४	५।३२	७।४८	१०।०३	१२।२०	१४।३७	१६।४२	१८।२८	१९।५६	२१।२८
५ शु.	२।१५।३५।२	३।१६।५०।१३	०।१७।३०।३६	४।४।२८।४६	५।१६।४८।२७	१।२८।१६।२४	४६।८	२३।०१	०।५७	३।१०	५।२८	७।४४	६।५६	१२।१६	१४।३३	१६।३८	१८।२४	१९।५५	२१।२४
६ श.	२१।१६।१४।२५	३।१६।५६।५६	०।१७।३२।५४	४।५।४२।३७	५।१६।५४।५५	१।२८।१३।१४	४६।७	२२।५७	०।५३	३।०६	५।२५	७।४०	६।५५	१२।१२	१४।२६	१६।३४	१८।२०	१९।५१	२१।२०
७ र.	२।१६।५३।२१	३।२०।३६।३४	०।१७।३३।५४	४।६।५६।४०	५।२०।१।४	१।२८।१०।३	४६।५	२२।५४	०।५०	३।०३	५।२१	७।३७	६।५२	१२।०६	१४।२६	१६।३१	१८।१७	१९।४८	२१।१७
८ चं.	२।१७।३२।१७	३।२१।१३।८	०।१७।३४।५४	४।८।१०।४३	५।२०।७।१३	१।२८।६।५२	४६।३	२२।५०	०।४६	२।५६	५।१७	७।३३	६।४८	१२।०५	१४।२२	१६।२७	१८।१३	१९।४४	२१।१३
९ मं.	२।१८।११।१३	३।२१।४६।४२	०।१७।३५।५४	४।६।२४।४६	५।२०।१३।२२	१।२८।३।४१	४६।१	२२।४६	०।४२	२।५५	५।१३	७।२६	६।४४	१२।०१	१४।१८	१६।२३	१८।०६	१९।४०	२१।०६
१० बु.	२।१८।५०।८	३।२२।२६।१६	०।१७।३६।५४	४।१०।३८।४६	५।२०।१६।३०	१।२८।००।३०	४५।५६	२२।४३	०।३६	२।५२	५।१०	७।२६	६।४१	११।५८	१४।१५	१६।२०	१८।०६	१९।३७	२१।०६
११ बृ.	२।१६।२६।३	३।२३।२।५०	०।१७।३७।५४	५।११।५२।५२	५।२०।२५।३८	१।२७।५७।१६	४५।५८	२२।३६	०।३५	२।४८	५।०६	७।२२	६।३७	११।५४	१४।११	१६।१६	१८।०२	१९।३३	२१।०२
१२ शु.	२।२०।७।५८	३।२३।३६।२४	०।१७।३८।५४	४।१३।६।५५	५।२०।३१।४६	१।२७।५४।६	४५।५७	२२।३५	०।३१	२।४४	५।०२	७।१८	६।३३	११।५०	१४।०७	१६।१२	१७।५८	१९।२६	२०।५८
१३ श.	२।२०।४६।५३	३।२४।१५।५८	०।१७।३६।५४	४।१४।२०।५८	५।२०।३७।५४	१।२७।५०।५६	४५।५६	२२।३२	०।२८	२।४१	४।५६	७।१५	६।३०	११।४७	१४।०४	१६।०६	१७।५५	१९।२६	२०।५५
१४ र.	२।२१।२५।५	३।२५।२२।५०	०।१७।४०।१३	४।१५।३४।५४	५।२०।४४।२०	१।२७।४७।४८	४५।५४	२२।२८	०।२४	२।३७	४।५५	७।११	६।२६	११।४३	१४।००	१६।०५	१७।५१	१९।२२	२०।५१
३० चं.	२।२२।३।१७	३।२६।२६।४२	०।१७।३६।३८	४।१६।४८।५०	५।२०।५०।४५	१।२७।४४।३७	४५।५२	२२।२४	०।२०	२।३३	४।५१	७।०७	६।२२	११।३६	१३।५६	१६।०१	१७।४७	१९।१८	२०।४७

६ शनौ बल्ली ८।३८।४२।६
अयनांशाः २२।४१।६



१३ शनौ बल्ली ८।३८।४२।१६
अयनांशाः २२।४१।७



विविधविषयाः—भाद्रकृष्णाष्टम्यां श्रीकृष्णजन्माष्टमीव्रतम्। तत्र निशीथव्यापिन्यां जयन्तीव्रतमुदयव्यापिन्यां कृष्णाष्टमीव्रतम्। व्रतमिदं त्रिजन्मपापनाशनम्। तस्मादिदं व्रतं सर्वैरवश्यमेव कार्यमिति। भाद्रामायां **कुशोत्पाटनमन्त्रः**—कुशाग्रे वसते रुद्रः कुशमध्ये तु केशवः। कुशमूले वसेद् ब्रह्मा कुशान्मे देहि मेदिनि ।। कुशोऽसि कुशपुत्रोऽसि ब्रह्मणा निर्मितः पुरा। देवपितृहितार्थाय कुशमुत्पाटयाम्यहम् ।। **वर्ज्यकुशाः**—चितिदर्भाः पथिदर्भा ये दर्भा यज्ञभूमिषु। स्तरणासनपिण्डेषु षट्कुशान् परिवर्जयेत्।। श्राद्धे निषिद्धवस्तूनि मात्स्ये—कुष्माण्डं महिषीक्षीरं बिल्वपत्रमगद्विजाः। श्राद्धकाले समुत्पन्ने पितरो यान्त्यनाश्रिताः । श्राद्धे प्रशस्तानि—उच्छिष्टं शिवनिर्माल्यं वान्तं च मृतकर्पटम्। श्राद्धे सप्तपवित्राणि दौहित्रः कुतुपस्तिलाः। **महिष्यादिप्रसवदोषः**—माघे बुधे च महिषी श्रावणे बडवा दिवा। सिंहे गावः प्रसूयन्ते स्वामिनो मृत्युदायकाः। अतस्तच्छान्तिर्विधेयेति ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, वक्री पश्चिमास्तो बुधः २ तः पूर्वोदितः ४ तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः १४ तो वक्री, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षादितश्चतुर्थीं यावन्मेघच्छायावायुवृष्टयस्ततो दशमीं यावत्तापमेघचारच्छिन्नवृष्टयस्ततः पक्षान्तं यावद्वायुमेघचारवृष्टयः ।

भाद्रशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. ३० ।८ ।११ ई. तः दि. १२ ।६ ।११ ई. या. उत्तरकालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ४ तः पश्चिमोदितः, अशुद्धः, वर्षर्तुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ मं.	२ ।४६	प्रा. ६ ।४८	पू.फा. १५ ।१८	दि. ११ ।४८	सि. २० ।३५	ब. २ ।४६	सिं. २९ ।२०	सा. ५ ।२४	४ ।१२ ।२५ ।२१	३१ ।४०	५ ।४०	६ ।२०	८	१३	३०
३ बु.	५१ ।२	रा. २ ।७	उ.फा. ११ ।२६	दि. १० ।१७	सा. १३ ।८	तै. २४ ।३	कन्या	अहो.	४ ।१३ ।२३ ।१८	३१ ।३६	५ ।४१	६ ।१६	६	१४	३१
४ बृ.	४४ ।४६	रा. ११ ।३६	ह. ७ ।१६	दि. ८ ।३८	शुभ. ५ ।२६	व. १७ ।५६	कं. ३५ ।१२	रा. ७ ।४७	४ ।१४ ।२१ ।१४	३१ ।३२	५ ।४२	६ ।१८	१०	१५	१
५ शु.	३८ ।४५	रा. ६ ।१३	चि. ३ ।५	दि. ६ ।५७	ब्र. ५० ।४	ब. ११ ।४७	तुला	अहो.	४ ।१५ ।१६ ।१०	३१ ।२८	५ ।४२	६ ।१८	११	१६	२
६ श.	३२ ।५८	सा. ६ ।५५	वि. ५५ ।१६	रा. ३ ।५०	ऐ. ४२ ।४३	कौ. ५ ।५२	तु. ४१ ।२२	रा. १० ।१२	४ ।१६ ।१७ ।६	३१ ।२४	५ ।४३	६ ।१७	१२	१७	३
७ र.	२७ ।३५	दि. ४ ।४६	अनु. ५२ ।४	रा. २ ।३४	वै. ३५ ।४५	ग. ० ।१७	वृश्चिक	अहो.	४ ।१७ ।१५ ।१७	३१ ।२०	५ ।४४	६ ।१६	१३	१८	४
८ चं.	२२ ।५३	दि. २ ।५४	ज्ये. ४६ ।४१	रा. १ ।३७	वि. २९ ।२१	ब. २२ ।५३	वृ. ४६ ।४१	रा. १ ।३७	४ ।१८ ।१३ ।२८	३१ ।१६	५ ।४५	६ ।१५	१४	१९	५
९ मं.	१९ ।१	दि. १ ।२३	मू. ४८ ।६	रा. १ ।००	प्री. २३ ।३६	कौ. १९ ।१	धनु	अहो.	४ ।१९ ।११ ।३६	३१ ।१२	५ ।४६	६ ।१४	१५	२०	६
१० बु.	१६ ।७	दि. १२ ।१४	पू.षा. ४७ ।३३	रा. १२ ।४८	आ. १८ ।४५	ग. १६ ।७	धनु.	अहो.	४ ।२० ।६ ।५०	३१ ।८	५ ।४६	६ ।१४	१६	२१	७
११ बृ.	१४ ।२२	दि. ११ ।३३	उ.षा. ४८ ।१२	रा. १ ।५	सौ. १४ ।४४	वि. १४ ।२२	ध. २ ।४३	दि. ६ ।५२	४ ।२१ ।८ ।१	३१ ।४	५ ।४७	६ ।१३	१७	२२	८
१२ शु.	१३ ।५०	दि. ११ ।२१	श्र. ५० ।७	रा. १ ।५२	शो. ११ ।४१	बा. १३ ।५०	मकर	अहो.	४ ।२२ ।६ ।१२	३१ ।००	५ ।४८	६ ।१२	१८	२३	९
१३ श.	१४ ।३७	दि. ११ ।४०	ध. ५३ ।१६	रा. ३ ।६	अति. ९ ।४१	तै. १४ ।३७	म. २१ ।४३	दि. २ ।३०	४ ।२३ ।४ ।२२	३० ।५६	५ ।४९	६ ।११	१९	२४	१०
१४ र.	१६ ।४५	दि. १२ ।३०	श. ५७ ।३७	रा. ४ ।५३	सु. ८ ।४२	व. १६ ।४५	कुम्भ	अहो.	४ ।२४ ।२ ।४८	३० ।५२	५ ।५०	६ ।१०	२०	२५	११
१५ चं.	१९ ।५८	दि. १ ।५०	पू.भा. ६० ।००	अहो.	धृ. ८ ।३५	ब. १९ ।५८	कु. ४६ ।३८	रा. १२ ।२६	४ ।२५ ।१ ।१४	३० ।४८	५ ।५०	६ ।१०	२१	२६	१२

३० — द्वितीयामानं ५४ ।१८, चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगंफलं समर्घम्, पूर्वयात्रा द्वितीयायां पूर्वफाल्गुन्याम् ।

३१ — **पूर्वफल्गुन्यां रविः** ४२ ।२३, स्त्रीस्त्रीसूसूयोगो वृषलग्नं मण्डूकवाहनं सौम्यानाडीपतिर्गुरुस्तेन खण्डवृष्टिवायुयोगः, **हरितालिका** (तीज) व्रत ●

१ — शुक्लयोगमानं ५२ ।१२, सितम्बर ६, मघायां सिंहे बुधः ५४ ।३६, पश्चिमोदितः शुक्रः १० ।३३, श्रीगणेश ४ व्रतं, **चतुर्थीचन्द्रपूजनं** (चौठचन्द्र), **श्रीगणेशपूजारम्भः** ×

२ — स्वातीमानं ५५ ।५५, ऋषिपञ्चमी, **सप्तर्षिपूजनं**, पञ्चगव्यप्राशनञ्च, दक्षिणयात्रा ।

३ — **याम्यामगस्त्योदयः**, लोलार्कषष्ठी, **श्रीसूर्यपूजनं**, पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायाम् । ● **रुद्रसावर्णिमन्वादिः** वराहावतारः ।

४ — **रविव्रतं**, भ. २७ ।३५ उ. ५५ ।१४ या., उत्तरयात्रा । × पश्चिमयात्रा पञ्चम्याम्, भ. १७ ।५६ उ. ४४ ।४६ या.

५ — **राधाष्टमी**, दूर्वाष्टमी, श्रीमहालक्ष्मीव्रतारम्भः पश्चिमोत्तरयात्राष्टम्याम् ।

६ — द. ति. १९ ।१ उ., पूर्वयात्रा नवम्याम् । ×× पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्यां श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा ।

७ — द. ति. १६ ।७ या., भ. ४४ ।४५ उ., पूर्वयात्रैकादश्यां पूर्वाषाढे. (१०—१०) एको. ।

८ — **कर्माधर्मा** ११ व्रतं सर्वेषां, श्रीहरेः पार्श्वपरिवर्त्तनं, भ. १४ ।२२ या., दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायाम् ।

९ — कन्यायां शुक्र २६ ।४१, **श्रीवामन १२**, कुष्माण्डेन पारणं, वामनावतारः, इन्द्रपूजारम्भः, प्रदोष १३ व्रतं, **पञ्चकारंभो** रात्रौ घ. १ मि. ५२ उ. ××

१० — **प्रदोष** १४ व्रतं, पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे धनिष्ठायाम् ।

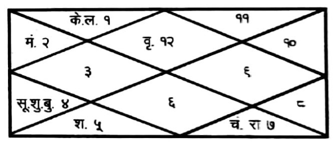
११ — कर्के कुजः २१ ।१४, **रविव्रतं**, अनन्त १४ **अनन्तपूजनं तड्डोरकधारणञ्च**, **श्रीगणेशविसर्जनं**, भ. १६ ।४५ उ. ४८ ।२२ या., (१५) एको. ।

१२ — भाद्री १५ स्नानदानादिः, **अगस्त्यार्घदानं**, श्रीशिवपूजनं, पश्चिमयात्रा कुमस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा ।

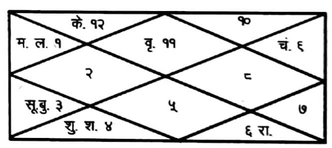
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	२ ।२२ ।४१ ।२६	३ ।२७ ।३६ ।३४	० ।१७ ।३६ ।३	४ ।१८ ।२ ।४६	५ ।२० ।५७ ।१०	१ ।२७ ।४१ ।२६	४५ ।५०	२२ ।२१	० ।१७	२ ।३०	४ ।४८	७ ।०४	६ ।१६	११ ।३६	१३ ।५३	१५ ।५८	१७ ।४४	१६ ।१५	२० ।४४
३ बु.	२ ।२३ ।१६ ।४०	३ ।२८ ।४३ ।२६	० ।१७ ।३८ ।३८	४ ।१६ ।१६ ।४२	५ ।२१ ।३ ।३५	१ ।२७ ।३८ ।१५	४५ ।४८	२२ ।१७	० ।१३	२ ।२६	४ ।४४	७ ।००	६ ।१५	११ ।३२	१३ ।४६	१५ ।५४	१७ ।४०	१६ ।११	२० ।४०
४ बृ.	२ ।२३ ।५७ ।५१	३ ।२६ ।५० ।१८	० ।१७ ।३७ ।५३	४ ।२० ।३० ।३८	५ ।२१ ।१० ।००	१ ।२७ ।३५ ।४	४५ ।४६	२२ ।१४	० ।१०	२ ।२३	४ ।४१	६ ।५७	६ ।१२	११ ।२६	१३ ।४६	१५ ।५१	१७ ।३७	१६ ।०८	२० ।३७
५ शु.	२ ।२४ ।३६ ।२	४ ।० ।५७ ।१०	० ।१७ ।३७ ।१८	४ ।२१ ।४४ ।३३	५ ।२१ ।१६ ।२५	१ ।२७ ।३१ ।५४	४५ ।४४	२२ ।१०	० ।०६	२ ।१६	४ ।३७	६ ।५३	६ ।०८	११ ।२५	१३ ।४२	१५ ।४७	१७ ।३३	१६ ।०४	२० ।३३
६ श.	२ ।२५ ।१४ ।१३	४ ।२ ।४ ।१	० ।१७ ।३६ ।४३	४ ।२२ ।५८ ।२८	५ ।२१ ।२२ ।५०	१ ।२७ ।२८ ।४४	४५ ।४२	२२ ।०६	० ।०२	२ ।१५	४ ।३३	६ ।४६	६ ।०४	११ ।२१	१३ ।३८	१५ ।४३	१७ ।२६	१६ ।००	२० ।२६
७ र.	२ ।२५ ।५१ ।५२	४ ।३ ।२६ ।५	० ।१७ ।३४ ।४१	४ ।२४ ।१२ ।३६	५ ।२१ ।२६ ।३१	१ ।२७ ।२५ ।३३	४५ ।४०	२२ ।०३	२३ ।५६	२ ।१२	४ ।३०	६ ।४६	६ ।०१	११ ।१८	१३ ।३५	१५ ।४०	१७ ।२६	१८ ।५७	२० ।२६
८ चं.	२ ।२६ ।२६ ।३१	४ ।४ ।५४ ।०६	० ।१७ ।३२ ।३६	४ ।२५ ।२६ ।४४	५ ।२१ ।३६ ।१२	१ ।२७ ।२२ ।२२	४५ ।३८	२१ ।५६	२३ ।५५	२ ।०८	४ ।२६	६ ।४२	८ ।५७	११ ।१४	१३ ।३१	१५ ।३६	१७ ।२२	१८ ।५३	२० ।२२
९ मं.	२ ।२७ ।०७ ।१०	४ ।६ ।१६ ।१३	० ।१७ ।३० ।३७	४ ।२६ ।४० ।५२	५ ।२१ ।४२ ।५३	१ ।२७ ।१९ ।११	४५ ।३६	२१ ।५५	२३ ।५१	२ ।०४	४ ।२२	६ ।३८	८ ।५३	११ ।१०	१३ ।२७	१५ ।३२	१७ ।१८	१८ ।४६	२० ।१८
१० बु.	२ ।२७ ।४४ ।४६	४ ।७ ।४४ ।१७	० ।१७ ।२८ ।३५	४ ।२७ ।५५ ।००	५ ।२१ ।४६ ।३४	१ ।२७ ।१६ ।००	४५ ।३४	२१ ।५२	२३ ।४८	२ ।०१	४ ।१६	६ ।३५	८ ।५०	११ ।०७	१३ ।२४	१५ ।२६	१७ ।१५	१८ ।४६	२० ।१५
११ बृ.	२ ।२८ ।२२ ।२८	४ ।६ ।६ ।२१	० ।१७ ।२६ ।३३	४ ।२६ ।६ ।८	५ ।२१ ।५६ ।१५	१ ।२७ ।१२ ।४६	४५ ।३२	२१ ।४८	२३ ।४४	१ ।५७	४ ।१५	६ ।३१	८ ।४६	११ ।०३	१३ ।२०	१५ ।२५	१७ ।११	१८ ।४२	२० ।११
१२ शु.	२ ।२६ ।०० ।७	४ ।१० ।३४ ।२४	० ।१७ ।२४ ।३१	५ ।० ।२३ ।१५	५ ।२२ ।२ ।५५	१ ।२७ ।६ ।३६	४५ ।३०	२१ ।४४	२३ ।४०	१ ।५३	४ ।११	६ ।२७	८ ।४२	१० ।५६	१३ ।१६	१५ ।२१	१७ ।०७	१८ ।३८	२० ।०७
१३ श.	२ ।२६ ।३७ ।४५	४ ।११ ।५६ ।२७	० ।१७ ।२२ ।२६	५ ।०१ ।३७ ।२२	५ ।२२ ।६ ।३५	१ ।२७ ।६ ।२६	४५ ।२८	२१ ।४१	२३ ।३७	१ ।५०	४ ।०८	६ ।२४	८ ।३६	१० ।५६	१३ ।१३	१५ ।१८	१७ ।०४	१८ ।३५	२० ।०४
१४ र.	३ ।० ।१५ ।२	४ ।१३ ।३५ ।५६	० ।१७ ।१६ ।०	५ ।२ ।५१ ।४०	५ ।२२ ।१६ ।४	१ ।२७ ।३ ।१८	४५ ।२६	२१ ।३७	२३ ।३३	१ ।४६	४ ।०४	६ ।२०	८ ।३५	१० ।५२	१३ ।०६	१५ ।१४	१७ ।००	१८ ।३१	२० ।००
१५ चं.	३ ।० ।५२ ।१६	४ ।१५ ।१२ ।३१	० ।१७ ।१५ ।३१	५ ।४ ।५ ।५८	५ ।२२ ।२२ ।३१	१ ।२७ ।०० ।७	४५ ।२४	२१ ।३३	२३ ।२६	१ ।४२	४ ।००	६ ।१६	८ ।३१	१० ।४८	१३ ।०५	१५ ।१०	१६ ।५६	१८ ।२७	१६ ।५६

६ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४२ ।२३
अयनांशाः २२ ।४१ ।८



१३ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४२ ।३०
अयनांशाः २२ ।४१ ।९



विविधविषयाः—चतुर्थ्यां सरोहिणीकचन्द्रपूजनं कुर्यात्फलादिकं गृहीत्वा चन्द्रञ्च पश्येत्तन्मन्त्र—सिंहः प्रसेनमवधीत् सिंहो जाम्बवता हतः । सुकुमारक मा रोदीस्तव ह्येष स्यमन्तकः। प्रार्थनामन्त्रश्च—दधि शंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसंभवम्। नमामि शशिनं भक्त्या शम्भोर्मुकुटभूषणम् । एकादश्यां विष्णोः **पार्श्वपरिवर्तनमन्त्रः**-प्राप्ते भाद्रपदे मासि एकादश्यां सितेऽहनि। कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्त्तते। वासुदेव जगन्नाथ प्राप्तेयं द्वादशी तव। पार्श्वं संपरिवर्तस्व सुखं स्वपिहि माधव। त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत्सुप्तं भवेदिदम्। विबुद्धे त्वयि बुध्येत जगदेतच्चराचरम्।। देवदेव जगन्नाथ योगिगम्य निरंजन। कटिदानं कुरुष्वाद्य मासि भाद्रपदे शुभे।। **अनन्तधारणमन्त्रः**-अनन्तसंसारमहासमुद्रे मग्नं समभ्युद्धर वासुदेव। अनन्तरूपे विनियोजयस्व ह्यनन्तरूपाय नमो नमस्ते।। **अगस्त्यार्घदानमन्त्राः**—कुम्भयोनिसमुत्पन्न मुनीनां मुनिसत्तम। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम् ।। शंखं पुष्पं फलं तोयं रत्नानि विविधानि च। उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्। काशपुष्पप्रतीकाश वह्निमारुतसंभव । उदयन्ते लंकाद्वारे अर्घोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। **प्रार्थनामन्त्रः**—आतापी भक्षितो येन वातापी च महाबलः। समुद्रः शोषितो येन स मेऽगस्त्यः प्रसीदतु ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणः पूर्वोदिताः कुजबुधशनयः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पूर्वास्तः शुक्रः ४ तः पश्चिमोदितः ।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोर्वृष्टिवातमेघचारादयस्तन्मध्यभागे तापवातच्छिन्न—वृष्टिमेघचारादयः ।

आश्विनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३३, संवत् २०६८, सन् १४१९ साल, दि. १३।९।११ ई. तः दि. २७।९।११ ई. या., उत्तरे कालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ५ तः शुद्धः, वर्षर्तुः, ५ तः शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम् ।

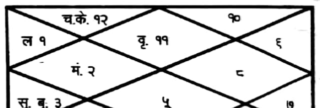
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ मं.	२४।६	दि. ३।३१	पू.भा. २।५८	दि. ७।२	शू. ६।१५	कौ. २४।६	मीन	अहो.	४।२५।५६।४०	३०।४४	५।५१	६।६	२२	२७	१३
२ बु.	२६।२	सा. ५।२६	उ.भा. ६।१	दि. ६।२८	ग. १०।२६	ग. २२।२	मीन	अहो.	४।२६।५८।६	३०।४०	५।५२	६।८	२३	२८	१४
३ बृ.	३४।१२	रा. ७।३४	रे. १५।३३	दि. १२।६	वृ. ११।५३	व. १।३७	मी. १५।३३	दि. १२।६	४।२७।५६।३२	३०।३६	५।५३	६।७	२४	२९	१५
४ शु.	३६।१४	रा. ६।३५	अ. २१।५९	दि. २।४१	घु. १३।२१	ब. ६।४३	मेष	अहो.	४।२८।५४।५८	३०।३३	५।५३	६।७	२५	३०	१६
५ श.	४३।४०	रा. ११।२२	भ. २७।५९	सा. ५।६	व्या. १४।२६	कौ. ११।२७	मे. ४४।१८	रा. ११।३७	४।२९।५३।२३	३०।३०	५।५४	६।६	२६	३१	१७
६ र.	४७।१८	रा. १२।५०	कृ. ३३।१६	सा. ७।१३	ह. १५।५	ग. १५।२६	वृष	अहो.	५।०।५२।५	३०।२६	५।५५	६।५	२७	१	१८
७ चं.	४६।४३	रा. १।४६	रो. ३७।२४	रा. ८।५४	वज्र. १४।५३	वि. १८।३१	वृष	अहो.	५।१।५०।४६	३०।२२	५।५६	६।४	२८	२	१९
८ मं.	५१।१	रा. २।२०	मृ. ४०।२८	रा. १०।७	सि. १३।५०	बा. २०।२२	वृ. ८।५६	दि. ६।३०	५।२।४९।२७	३०।१८	५।५६	६।४	२९	३	२०
९ बु.	५०।५६	रा. २।१९	आ. ४२।१४	रा. १०।५१	व्य. ११।४४	तै. २०।५८	मिथुन	अहो.	५।३।४८।८	३०।१४	५।५७	६।३	३०	४	२१
१० बृ.	४६।३६	रा. १।५०	पुन. ४२।४६	रा. ११।०४	वरी. ८।३८	व. २०।१८	मि. २७।३८	सा. ५।१	५।४।४६।४६	३०।१०	५।५८	६।२	३१	५	२२
११ शु.	४७।१०	रा. १२।५१	पुष्य ४२।६	रा. १०।४६	प. ४।३४	ब. १८।३०	कर्क.	अहो.	५।५।४५।३०	३०।६	५।५९	६।१	१	६	२३
१२ श.	४३।४०	रा. ११।२८	आश्ले. ४०।२५	रा. १०।१०	सि. ५३।४६	कौ. १५।१५	क. ४०।२५	रा. १०।१०	५।६।४४।११	३०।२	६।०	६।०	२	७	२४
१३ र.	३६।३८	रा. ९।५१	म. ३७।५४	रा. ९।१०	सा. ४७।२२	ग. ११।३६	सिंह	अहो.	५।७।४३।८	२९।५८	६।०	६।०	३	८	२५
१४ चं.	३४।१३	रा. ७।४२	पू.फ. ३४।४०	रा. ७।५३	शुभ. ४०।२०	वि. ६।५६	सिं. ४८।४४	रा. १।३१	५।८।४२।५	२९।५४	६।१	५।५६	४	९	२६
३० मं.	२८।३५	सा. ५।२८	उ.फ. ३०।५६	सा. ६।२४	शुक्ल. ३२।२५	च. १।२४	कन्या	अहो.	५।९।४१।२	२९।५०	६।२	५।५८	५	१०	२७

१३ — पितृपक्षीयपार्वणतर्पणारम्भः (१) एको. ।
१४ — **उत्तरफल्गुन्यां रविः** २६।४५ पुंस्त्रीसूचंयोगो मकरलग्नं वह्निनाडीपतिर्भौमस्तेन तापवातखण्डवृष्टियोगः, पश्चिमयात्रा द्वितीयायां रेवत्याम् ।
१५ — **पञ्चकान्तो** दिवा घं. १२ मि. ६ उ., इन्द्रविसर्जनं, श्रीएकदन्त ४ व्रतं, भ. १।३७ उ. ३४।१२ या., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां ततो दक्षिणां विना यात्रा तृतीयायाम् ।
१६ — पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम् ।
१७ — **कन्यायां रविः** ५२।०१ मु. ३० फलं साम्यं, मासान्तः, **शुद्धारंभः** ५२।१ उपरि ।
१८ — **पूर्वास्तो बुधः** ००।३५, **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घ. १२ मि. ० यावद्दिने, पुण्याहः, **श्रीविश्वकर्मार्चा**, भ. ४७।१८ उ. ।
१९ — मासादिः, स्त्रीणां **विशिष्टभोजनं** (ओठगन) रात्रौ घं. १ मि. ४६ या., द. ति. ४६।४३ उ., भ. १४।३१ या. ।
२० — श्रीमहालक्ष्मीव्रतं, **श्रीजीमूतवाहनव्रतं (जितिया)** द. ति. ५१।१ या. ।
२१ — कन्यायां बुधः ४१।८, पश्चिमास्तः शनि ८।५, श्रीमहालक्ष्मीजीमूतवाहनव्रतयोः पारणं, **मातृनवमी**, अन्वष्टकाश्राद्धं, पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम् ।
२२ — भ. २०।१८ उ. ४६।३६ या., पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये ।
२३ — शिवयोगमानं ५५।२, **इन्दिरा** ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये ।
२४ — गुडेन पारणम् । ● गंगायां यदि लभ्येत कोटिसूर्यग्रहैः समा ।।
२५ — **प्रदोष** १३ व्रतं, भं. ३६।३८ उ., पूर्वोत्तरयात्रा त्रयोदश्यां पूर्वफल्गुन्याम् ।
२६ — **प्रदोष** १४ व्रतं, शस्त्रादिहतानां श्राद्धम्, भ. ६।५६ या. । **पञ्चग्रहयोगफलम्**—एकराशौ यदा यान्ति चत्वारः पञ्च वा ग्रहाः । प्लावयन्ति महीं कृत्स्नां रुधिरेण जलेन वा ।।
२७ — **महालया** ३० स्नानदानादिः पितृपक्षीयपार्वणतर्पणान्तः, **भौमवती** ३० गंगास्नानं केटिसूर्यग्रहणसमफलदं—अमायां च यदा वारो भवेद्भूमिसुतस्य च ।●

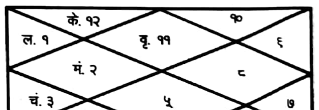
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	३।१।२६।३६	४।१६।४६।३	०।१७।१२।२	५।५।२०।१६	५।२२।२६।००	१।२६।५६।५६	४५।२२	२१।३०	२३।२६	१।३६	३।५७	६।१३	८।२८	१०।४५	१३।०२	१५।०७	१६।५३	१८।२४	१९।५३
२ बु.	३।२।६।५२	४।१८।२५।३५	०।१७।८।३३	५।६।३४।३४	५।२२।३५।२८	१।२६।५३।४५	४५।२०	२१।२६	२३।२२	१।३५	३।५३	६।९	८।२४	१०।४१	१२।५८	१५।०३	१६।४९	१८।२०	१९।४९
३ बृ.	३।२।४४।८	४।२०।२।०७	०।१७।५।४	५।७।४८।५२	५।२२।४१।५६	१।२६।५०।३४	४५।१८	२१।२२	२३।१८	१।३१	३।४९	६।५	८।२०	१०।३७	१२।५४	१४।५९	१६।४५	१८।१६	१९।४५
४ शु.	३।३।२१।२४	४।२१।३८।३६	०।१७।१।३५	५।९।३।०६	५।२२।४८।२४	१।२६।४७।२३	४५।१६	२१।१९	२३।१५	१।२८	३।४६	६।०२	८।१७	१०।३४	१२।५१	१४।५६	१६।४२	१८।१३	१९।४२
५ श.	३।३।५८।४०	४।२३।१५।१०	०।१६।५८।०७	५।१०।१७।२६	५।२२।५४।५२	१।२६।४४।१३	४५।१५	२१।१५	२३।११	१।२४	३।४२	५।५८	८।१३	१०।३०	१२।४७	१४।५२	१६।३८	१८।०९	१९।३८
६ र.	३।४।३५।८	४।२४।५८।५	०।१६।५३।२६	५।११।३१।४४	५।२३।२।१६	१।२६।४१।२	४५।१३	२१।११	२३।०७	१।२०	३।३८	५।५४	८।९	१०।२६	१२।४३	१४।४८	१६।३४	१८।०५	१९।३४
७ चं.	३।५।११।३६	४।२६।४१।०	०।१६।४८।४५	५।१२।४६।२	५।२३।९।४०	१।२६।३७।५१	४५।११	२१।०८	२३।०४	१।१७	३।३५	५।५१	८।६	१०।२३	१२।४०	१४।४५	१६।३१	१८।०२	१९।३१
८ मं.	३।५।४८।४	४।२८।२३।५५	०।१६।४४।५	५।१४।०।२०	५।२३।१७।४	१।२६।३४।४०	४५।९	२१।०४	२३।००	१।१३	३।३१	५।४७	८।२	१०।१९	१२।३६	१४।४१	१६।२७	१७।५८	१९।२७
९ बु.	३।६।२४।३२	५।०।६।५०	०।१६।३९।२५	५।१५।१४।३८	५।२३।२४।२८	१।२६।३१।२९	४५।७	२१।००	२२।५६	१।०९	३।२७	५।४३	७।५८	१०।१५	१२।३२	१४।३७	१६।२३	१७।५४	१९।२३
१० बृ.	३।७।०।५६	५।१।४६।४५	०।१६।३४।४५	५।१६।२८।५६	५।२३।३१।५२	१।२६।२८।१८	४५।५	२०।५७	२२।५३	१।०६	३।२४	५।४०	७।५५	१०।१२	१२।२९	१४।३४	१६।२०	१७।५१	१९।२०
११ शु.	३।७।३७।२६	५।३।३२।४०	०।१६।३०।५	५।१७।४३।१४	५।२३।३९।१५	१।२६।२५।८	४५।३	२०।५३	२२।४९	१।०२	३।२०	५।३६	७।५१	१०।०८	१२।२५	१४।३०	१६।१६	१७।४७	१९।१६
१२ श.	३।८।१३।५३	५।५।१५।३४	०।१६।२५।२५	५।१८।५७।३१	५।२३।४६।३८	१।२६।२१।५८	४५।१	२०।४९	२२।४५	०।५८	३।१६	५।३२	७।४७	१०।०४	१२।२१	१४।२६	१६।१२	१७।४३	१९।१२
१३ र.	३।८।४९।५२	५।७।१।२९	०।१६।१९।३०	५।२०।११।५६	५।२३।५४।४	१।२६।१८।४७	४४।५९	२०।४६	२२।४२	०।५५	३।१३	५।२९	७।४४	१०।०१	१२।१८	१४।२३	१६।०९	१७।४०	१९।०९
१४ चं.	३।९।२५।५०	५।८।४७।२४	०।१६।१३।३५	५।२१।२६।२१	५।२४।१।३०	१।२६।१५।३६	४४।५७	२०।४२	२२।३८	०।५१	३।०९	५।२५	७।४०	९।५७	१२।१४	१४।१९	१६।०५	१७।३६	१९।०५
३० मं.	३।१०।१।४८	५।१०।३३।१९	०।१६।७।४०	५।२२।४०।४६	५।२४।८।५६	१।२६।१२।२५	४४।५५	२०।३८	२२।३४	०।४७	३।०५	५।२१	७।३६	९।५३	१२।१०	१४।१५	१६।०१	१७।३२	१९।०१

५ शनौ बल्ली ८।३८।४२।३७
अयनांशाः २२।४१।१०



१२ शनौ बल्ली ८।३८।४२।४४
अयनांशाः २२।४१।११



विविधविषयाः—आश्विनकृष्णपक्षे प्रतिदिनं श्राद्धं कुर्यादिति प्रथमकल्पः । पंचमीमारभ्यामां यावदिति द्वितीयकल्पः । अष्टमीमारभ्यामां यावदिति तृतीयकल्पः । दशमीमारभ्यामां यावदिति चतुर्थकल्पस्तदभावे एकस्मिन्नपि दिने श्राद्धं कर्त्तव्यमेव । **हेमाद्रौ**—आषाढ्याः पंचमे पक्षे कन्यासंस्थे दिवाकरे । यो वै श्राद्धं नरः कुर्यादेकस्मिन्नपि वासरे । तस्य संवत्सरं यावत्सन्तृप्ताः पितरो ध्रुवम् ।। **श्राद्धकालः**—पूर्वाह्ने मातृकं श्राद्धमपराह्णे तु पैतृकम् । एकोद्दिष्टन्तु मध्याह्ने प्रातर्वृद्धिनिमित्तकम् ।। **जीमूतवाहनव्रतं** भविष्ये—इषे मास्यसिते पक्षे चाष्टमी या तिथिर्भवेत् । पुत्रसौभाग्यदा स्त्रीणां ख्याता सा जीवपुत्रिका । शालिवाहनराजस्य पुत्रो जीमूतवाहनः । तस्यां पूज्यः स नारीभिः पुत्रसौभाग्यलिप्सया । हस्तार्के **खञ्जनदर्शनमन्त्रः**—नीलग्रीवस्वरूपेण सर्वकामफलप्रद । पृथिव्यामवतीर्णोऽसि खञ्जरीट नमोऽस्तु ते ।। तद्दर्शनमाकाश—पूर्वपश्चिमोत्तरवायव्यादिक्षु शुभमन्यदिक्ष्वशुभम् । **पुनश्च**—अब्जेषु गोषु गंजवाजिमहोरगेषु राज्यप्रदः कुशलदः शुचिशाद्वलेषु । भस्मास्थिकेशतुषलोमनखेषु दृष्टो दुःखं ददाति बहुशः खलु खञ्जरीटः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गीपूर्वोदितोबुधः ६ तः पूर्वास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः ६ तः पश्चिमास्तः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे तापाधिक्यमेघचारच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातमेघच्छायाखण्डवृष्टयः ।

आश्विनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. २८।६।११ ई. तः दि. १२।१०।११ ई. या. उत्तरे कालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम् ।

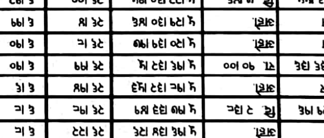
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	२२।३६	दि. ३।५	ह. २६।५०	दि. ४।४७	ब्र. २५।१५	ब. २२।३६	कं. ५४।४६	रा. ३।५६	५।१०।३६।५९	२६।४६	६।३	५।५७	६	११	२८
२ बृ.	१६।३०	दि. १२।४०	चि. २२।३७	दि. ३।०७	ऐ. १७।२७	कौ. १६।३०	तुला	अहो.	५।११।३८।५६	२६।४२	६।४	५।५६	७	१२	२९
३ शु.	१०।२७	दि. १०।१५	स्वा. १८।३१	दि. १।२८	वै. ६।४६	ग. १०।२७	तुला	अहो.	५।१२।३७।५३	२६।३८	६।४	५।५६	८	१३	३०
४ श.	४।४३	दि. ७।५८	वि. १४।४२	दि. १०।५८	वि. २।१५	वि. ४।४३	तु. ०।४०	प्रा. ६।२१	५।१३।३६।५०	२६।३४	६।५	५।५५	९	१४	१
६ र.	५४।४५	रा. ४।००	अनु. ११।२४	दि. १०।४०	आ. ४८।२९	कौ. २७।४	वृश्चिक	अहो.	५।१४।३६।३	२६।३०	६।६	५।५४	१०	१५	२
७ चं.	५०।५५	रा. २।२६	ज्ये. ८।४६	दि. ६।३७	सौ. ४२।३१	ग. २२।५०	वृ. ८।४६	दि. ६।३७	५।१५।३५।१६	२६।२६	६।७	५।५३	११	१६	३
८ मं.	४८।६	रा. १।२२	मू. ६।५८	दि. ८।५५	शो. ३७।२०	वि. १६।३१	धनु.	अहो.	५।१६।३४।२९	२६।२२	६।८	५।५२	१२	१७	४
९ बु.	४६।२३	रा. १२।४१	पू.षा. ६।१०	दि. ८।३६	अगं. ३२।५८	बा. १७।१५	ध. २१।१६	दि. २।३८	५।१७।३३।४१	२६।१८	६।८	५।५२	१३	१८	५
१० बृ.	४५।५३	रा. १२।३०	उ.षा. ६।३२	दि. ८।४६	सु. २९।३०	तै. १६।८	मकर	अहो.	५।१८।३२।५३	२६।१४	६।९	५।५१	१४	१९	६
११ शु.	४६।४४	रा. १२।५२	श्र. ८।१०	दि. ६।२६	धृ. २७।१५	व. १६।१९	म. ३९।३६	रा. १०।००	५।१९।३२।५	२६।११	६।१०	५।५०	१५	२०	७
१२ श.	४८।५५	रा. १।४४	ध. ११।२	दि. १०।३५	शू. २५।५७	ब. १७।५०	कुम्भ	अहो.	५।२०।३१।१७	२६।८	६।१०	५।५०	१६	२१	८
१३ र.	५२।१३	रा. ३।४	श. १५।३	दि. १२।१२	ग. २५।२९	कौ. २०।३४	कुम्भ	अहो.	५।२१।३०।४६	२६।४	६।११	५।४९	१७	२२	९
१४ चं.	५६।३१	रा. ४।५८	पू.भा. २०।१२	दि. २।१७	वृ. २५।४८	ग. २४।२२	कु. ३।५५	दि. ७।४६	५।२२।३०।१५	२६।००	६।१२	५।४८	१८	२३	१०
१५ मं.	६०।००	अहो.	उ.भा. २६।६	दि. ४।३६	ध्रु. २६।४४	वि. २८।५९	मीन	अहो	५।२३।२९।४३	२८।५६	६।१३	५।४७	१९	२४	११
१५ बु.	१।२६	दि. ६।४८	रे. ३२।३१	सा. ७।१४	व्या. २८।२	ब. १।२६	मी. ३२।३१	सा. ७।१४	५।२४।२९।११	२८।५२	६।१४	५।४६	२०	२५	१२

हस्ते रविः ४।१३ स्त्रीस्त्रीसूसूयोगो तुलालग्नमश्ववाहनं सौम्यानाडीपतिर्गुरुस्तेन खण्डवृष्टियोगः, शारदीयनवरात्रारम्भः **कलशस्थापनं** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः नवरात्रव्रतारंभः ●
चन्द्रदर्शनं १५ सौम्यशृंगं फलं महार्घं, **श्रीरेमन्तपूजा,** पश्चिमयात्रा, (२–३) एको. ।
दक्षिणयात्रा स्वात्यां, नवरात्रमध्ये प्रतिदिनं **कुमारीपूजनं** तदभावेऽष्टम्यामवश्यमेव कार्यं, म. ३७।३५ उ. ।
पंचमीमानं ५४।४०, प्रीतियोगमानं ५२।५०, अक्टूबर १०, म. ४।४३ या. ।
गजपूजा **विल्वाभिमन्त्रणञ्च,** उत्तरयात्रा सप्तम्याम् । ● नौकारूढाया देव्या आगमनफलं **सर्वसिद्धिप्रदं,** पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा ।
तुलायां शुक्रः ३८।४७, **पत्रिकाप्रवेशः** सरस्वत्या आवाहनं पूजनञ्च, म. ५०।५५ उ., द. ति. ५०।५५ उ. ।
दीक्षाग्रहणं, महाष्टमीव्रतं, महारात्रिर्निशापूजा, महाष्टमीनवम्योःसन्धौ चण्डिकार्चनं, म. १६।३१ या. द. ति. ४८।६ या., पूर्वयात्रा नवम्याम् ।
महानवमीव्रतं, त्रिशूलिनीपूजा, **दीक्षाग्रहणम्** । ●● नरवाहनाया देव्याः गमनफलं **शुभसौख्यकरं,** दक्षिणां विना यात्रा श्रवणायाम् ।
विजया १० अपराजितापूजा, **देवीविसर्जनं,** सरस्वतीविसर्जनं, **जयन्तीधरणं** नीलकण्ठदर्शनं, **यात्रा** सीमोल्लघनं, नवरात्रव्रतपारणं, दक्षसावर्णिमन्वादिः ●●
पाशांकुशा ११ व्रतं सर्वेषां, **पञ्चकारंभो** दिवा घं. ६ मि. २६ उ., म. १६।१६ उ. ४६।४४ या., पश्चिमां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ।
तुलायां बुधः ४४।१, श्रीपद्मनाभ १२, गुडेन पारणं, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
प्रदोषः १३ व्रतम् । + १५ स्नानदानादिः **कौमुदी (कोजागरा)** महोत्सवः, प्रदोषे घं. ७ मि. २३ यावद्रात्रौ **लक्ष्मीपूजनं,** आदिकविवाल्मीकिजयन्ती, पश्चिमयात्रा रेवत्याम् ।
प्रदोष १४ व्रतं, म. ५६।३१ उ. ।
त्र्यहोजुन्म दिनकृत्यं; **चित्रायां रविः** ३४।४० पुंस्त्रीसूचंयोगो वृषलग्नं शिखिवाहनवह्निनाडीपतिर्भौमस्तेन तापवायुखण्डवृष्टियोगः, म. २८।५६ या., आश्विनी +
पञ्चकान्तः सायं घं. ७ मि. १४ उपरि, पश्चिमयात्रा रेवत्यां ततः उत्तरां विना यात्राश्विन्याम् ।

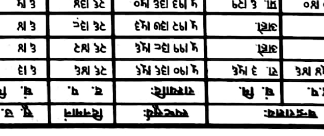
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	३।१०।३७।४६	५।१२।१९।१४	०।१६।१।४५	५।२३।५५।१०	५।२४।१६।२२	१।२६।६।१४	४४।५३	२०।३५	२२।३१	०।४४	३।०२	५।१८	७।३३	६।५०	१२।०७	१४।१२	१५।५८	१७।२९	१८।५८
२ बृ.	३।११।१३।४४	५।१४।५।६	०।१५।५५।५१	५।२५।६।३४	५।२४।२३।४८	१।२६।६।३	४४।५१	२०।३१	२२।२७	०।४०	२।५८	५।१४	७।२९	६।४६	१२।०३	१४।०८	१५।५४	१७।२५	१८।५४
३ शु.	३।११।४९।४२	५।१५।५१।४	०।१५।४९।५७	५।२६।२३।५८	५।२४।३१।१४	१।२६।२।५३	४४।४९	२०।२७	२२।२३	०।३६	२।५४	५।१०	७।२५	६।४२	११।५९	१४।०४	१५।५०	१७।२१	१८।५०
४ श.	३।१२।२५।४०	५।१७।३९।५८	०।१५।४४।३	५।२७।३८।२२	५।२४।३८।३९	१।२५।५९।४३	४४।४७	२०।२४	२२।२०	०।३३	२।५१	५।०७	७।२२	६।३९	११।५६	१४।०१	१५।४७	१७।१८	१८।४७
६ र.	३।१३।०।५५	५।१९।२३।१६	०।१५।३७।५	५।२८।५२।५२	५।२४।४६।२	१।२५।५६।३२	४४।४५	२०।२०	२२।१६	०।२९	२।४७	५।०३	७।१८	६।३५	११।५२	१३।५७	१५।४३	१७।१४	१८।४३
७ चं.	३।१३।३६।१०	५।२१।९।३४	०।१५।३०।५	६।०।७।२२	५।२४।५३।२५	१।२५।५३।२१	४४।४३	२०।१६	२२।१२	०।२५	२।४३	४।५९	७।१४	६।३१	११।४८	१३।५३	१५।३९	१७।१०	१८।३९
८ मं.	३।१४।११।२५	५।२२।५५।५२	०।१५।२३।०६	६।१।२१।५२	५।२५।०।४७	१।२५।५०।१०	४४।४१	२०।१३	२२।०९	०।२२	२।४०	४।५६	७।११	६।२८	११।४५	१३।५०	१५।३६	१७।०७	१८।३६
९ बु.	३।१४।४६।४०	५।२४।४१।१०	०।१५।१६।०६	६।२।३६।२१	५।२५।८।९	१।२५।४६।५९	४४।३९	२०।०९	२२।०५	०।१८	२।३६	४।५२	७।७	६।२४	११।४१	१३।४६	१५।३२	१७।०३	१८।३२
१० बृ.	३।१५।२१।५५	५।२६।२८।२७	०।१५।९।६	६।३।५०।५०	५।२५।१५।३१	१।२५।४३।४८	४४।३७	२०।०५	२२।०१	०।१४	२।३२	४।४८	७।३	६।२०	११।३७	१३।४२	१५।२८	१६।५९	१८।२८
११ शु.	३।१५।५७।१०	६।२८।१४।४४	०।१५।२।६	६।५।५।१९	५।२५।२२।५३	१।२५।४०।३८	४४।३५	२०।०२	२१।५८	०।११	२।२९	४।४५	७।००	६।१७	११।३४	१३।३९	१५।२५	१६।५६	१८।२५
१२ श.	३।१६।३२।२५	६।०।०१।०१	०।१४।५५।६	६।६।१९।४८	५।२५।३०।१५	१।२५।३७।२८	४४।३४	१९।५८	२१।५४	०।०७	२।२५	४।४१	६।५६	६।१३	११।३०	१३।३५	१५।२१	१६।५२	१८।२१
१३ र.	३।१७।७।४२	६।१।४४।२८	०।१४।४७।२७	६।७।३४।१९	५।२५।३७।४०	१।२५।३४।१७	४४।३२	१९।५४	२१।५०	०।०३	२।२१	४।३७	६।५२	६।०९	११।२६	१३।३१	१५।१७	१६।४८	१८।१७
१४ चं.	३।१७।४०।५६	६।३।२७।५५	०।१४।३९।४८	६।८।४८।५०	५।२५।४५।४	१।२५।३१।६	४४।३०	१९।५१	२१।४७	०।००	२।१८	४।३४	६।४९	६।०६	११।२३	१३।२८	१५।१४	१६।४५	१८।१४
१५ मं.	३।१८।१५।१५	६।५।११।२२	०।१४।३२।६	६।१०।३।२१	५।२५।५२।२८	१।२५।२७।५५	४४।२८	१९।४७	२१।४३	२३।५६	२।१४	४।३०	६।४५	६।०२	११।१९	१३।२४	१५।१०	१६।४१	१८।१०
१५ बु.	३।१८।४९।३१	६।६।५४।४९	०।१४।२४।३०	६।११।१७।५१	५।२५।५९।५२	१।२५।२४।४४	४४।२६	१९।४३	२१।३९	२३।५२	२।१०	४।२६	६।४१	८।५८	११।१५	१३।२०	१५।०६	१६।३७	१८।०६

४ शनौ बल्ली ८।३८।४२।५१
अयनांशाः २२।४१।१२



१२ शनौ बल्ली ८।३८।४२।५८
अयनांशाः २२।४१।२



विविधविषयाः—प्रतिपदि **कलशस्थापनं** ततो देवीपूजनपूर्वकनवदिनंयावच्छप्तशतीस्तोत्रवेदपुराणादिधर्मग्रन्थपाठः मन्त्रजपश्च कर्त्तव्यः । **दुर्गाऽऽगमनयानविचारः**—शशिसूर्ये गजारूढा शनिभौमे तुरंगमे । गुरौ शुक्रे च दोलायां बुधे नौका प्रकीर्त्तिता ।। **तत्फलम्**—गजे च जलदा देवी क्षत्रभंगस्तुरंगमे । नौकायां सर्वसिद्धिः स्याद्दोलायां मरणं ध्रुवम् ।। **विजयदशम्यां देव्या गमनयानफलं**—शशिसूर्यदिने यदि सा विजया महिषागमने रुजशोककरा, शनिभौमदिने यदि सा विजया चरणायुधयानकरी विकला । बुधशुक्रदिने यदि सा विजया गजवाहनगा शुभवृष्टिकरा, सुरराजगुरौ यदि सा विजया नरवाहनगा शुभसौख्यकरा । **दुर्गापाठमहत्त्वम्**—यथाश्वमेधः क्रतुराड् देवानां च यथा हरिः । स्तवानामपि सर्वेषां तथा सप्तशतीस्तवः । चण्ड्याः शतावृत्तिपाठात् सर्वा सिध्यन्ति सिद्धयः । **विल्वपत्रत्रोटनमन्त्रः**—अमृतोद्भव श्रीवृक्ष शंकरस्य सदा प्रिय । क्षमस्व शिवपूजार्थ तव पत्रं चिनोम्यहम् । **तुलसीपत्रत्रोटनमन्त्रः**—तुलस्यमृतजन्मा त्वं केशवस्य सदा प्रिया । क्षमस्व हरिपूजार्थं तव पत्रं चिनोम्यहम् ।। **नीलकण्ठदर्शनमन्त्रः**—नीलकण्ठाय भद्राय भद्ररूपाय ते नमः । भद्रत्वं देहि मे भद्रमाशां पूरय पूरय ।। **खञ्जनदर्शनमन्त्रः**—नारायणशरीरोत्थ संवत्सरशुभप्रद । शालग्रामशिलाकण्ठ खञ्जरीट नमोऽस्तुते ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गीः पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे तापमेघचारवायुच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरार्द्धभागे मेघच्छायावातवृष्टयः ।

कार्तिककृष्णपक्षः

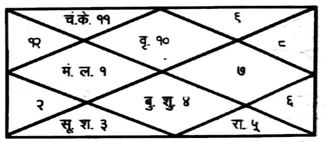
शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. १३ ।१० ।११ ई. तः दि. २६ ।१० ।११ ई. या. उत्तरेकालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शरदृतुः, सौम्यगोलः, याम्यायनम्, ६ तो याम्यगोलः ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
१ बृ.	६ ।४४	दि. ८ ।५६	अ. ३६ ।१	रा. ६ ।५०	ह. २६ ।२७	कौ. ६ ।४४	मेष	अहो.	५ ।२५ ।२८ ।३६	२८ ।४८	६ ।१४	५ ।४६	२१	२६	१३	दक्षिणां विना यात्राश्विन्यां, कार्तिके **यमुनास्नानं** महापुण्यप्रदं, कार्तिकं द्विदलं त्यजेत् ।
२ शु.	११ ।४६	दि. १० ।५६	भ. ४५ ।१०	रा. १२ ।१६	वज्र. ३० ।३८	ग. ११ ।४६	मेष	अहो.	५ ।२६ ।२८ ।७	२८ ।४४	६ ।१५	५ ।४५	२२	२७	१४	भ. ४४ ।६ उपरि । ● **पूर्णिमाऽक्षयनवमीसंक्रमणदिनानि** विशेषतः पुण्यप्रदानि, अशोकचन्दनषष्ठी, **कार्तिकव्रततुलसीव्रताकाशदीपदानव्रतारंभः** भ. २४ ।० उ. ५४ ।१ या. ।
३ श.	१६ ।२२	दि. १२ ।४६	कृ. ५० ।३८	रा. २ ।३१	सि. ३१ ।२१	वि. १६ ।२२	मे. १ ।३२	प्रा. ६ ।५३	५ ।२७ ।२७ ।३५	२८ ।४०	६ ।१६	५ ।४४	२३	२८	१५	**श्रीकृष्णपिंग ४ व्रतं,** करक ४, भ. १६ ।२२ या., दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, (३–४) एकोद्दिष्टम् ।
४ र.	२० ।६	दि. २ ।१६	रो. ५५ ।८	रा. ४ ।२०	व्य. ३१ ।२०	बा. २० ।६	वृष	अहो.	५ ।२८ ।२७ ।१६	२८ ।३६	६ ।१७	५ ।४३	२४	२६	१६	पूर्वदक्षिणयात्रा पञ्चम्यां रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा । ++ धन्वन्तरिर्महान् । पुरा समुद्रमथने समुत्तस्थौ महोदधेः ।।
५ चं.	२२ ।३७	दि. ३ ।२१	मृ. ५८ ।३१	रा. ५ ।४२	वरी. ३० ।२६	तै. २२ ।३७	वृ. २६ ।४४	सा. ५ ।२	५ ।२६ ।२७ ।३	२८ ।३२	६ ।१८	५ ।४२	२५	३०	१७	मासान्तः, (५) एकोद्दिष्टम् । × अद्यारभ्य मासं यावदर्द्धकुंभयोगस्तत्र प्रतिदिनं स्नानदानादिकमनन्तफलदं तत्राप्यष्टमीचतुर्दश्यामा ●
६ मं.	२४ ।००	दि. ३ ।५४	आर्द्रा ६० ।००	अहो.	प. २८ ।३४	व. २४ ।००	मिथुन	अहो.	६ ।०० ।२६ ।४७	२८ ।२८	६ ।१८	५ ।४२	२६	१	१८	**तुलायां रविः** १७ ।२० मु. १५ फलं महार्घं धान्यविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १ मि. १४ उपरिदिने, पुण्याहः, याम्यगोलारंभोऽर्द्धकुंभयोगारंभश्च १७ ।२० उ., **मिथिलायां सिमरियाधाम्नि** ×
७ बु.	२४ ।१	दि. ३ ।५५	आ. ०० ।३६	दि. ६ ।३३	शि. २५ ।४३	ब. २४ ।१	मि. ४६ ।१३	रा. १२ ।४८	६ ।१ ।२६ ।३१	२८ ।२४	६ ।१६	५ ।४१	२७	२	१६	पश्चिमोदितो बुधः ३० ।५३, मासादिः । ■ कार्तिकस्यासिते पक्षे स्वात्यां भौमे चतुर्दशी । मेषलग्नेऽञ्जनीगर्भात्स्वयं जातो हरः शिवः ।।
८ बृ.	२२ ।४६	दि. ३ ।२८	पुन. १ ।२५	दि. ६ ।५४	सि. २१ ।५२	कौ. २२ ।४६	कर्क	अहो.	६ ।२ ।२६ ।१५	२८ ।२०	६ ।२०	५ ।४०	२८	३	२०	पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्राष्टम्याम् ।
६ शु.	२० ।२३	दि. २ ।३०	पुष्य १ ।५	दि. ६ ।४७	सा. १७ ।४	ग. २० ।२३	क. ५६ ।३६	रा. ६ ।११	६ ।३ ।२५ ।५६	२८ ।१६	६ ।२१	५ ।३६	२६	४	२१	आश्लेषामानं ५८ ।३१, भ. ४८ ।४० उ. पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये । ■■ अकृतपितृपक्षपार्वणैरद्यावश्यमेव पार्वणं विधेयम् ।
१० श.	१६ ।५६	दि. १ ।८	म. ५७ ।२२	रा. ५ ।१६	शुभ. ११ ।२७	वि. १६ ।५६	सिंह	अहो.	६ ।४ ।२५ ।४२	२८ ।१२	६ ।२२	५ ।३८	३०	५	२२	भ. १६ ।५६ यावत् । ×× स्त्रीस्त्रीसूसूयोगः कन्यालग्नं महिषवाहनं सौम्यानाडीपतिर्गुरुस्तेन वातच्छिन्नवृष्टियोगः । **ब्रह्मवैवर्ते**—नारायणांशो भगवान् स्वयं ++
११ र.	१२ ।३६	दि. ११ ।२६	पू.फा. ५४ ।१६	रा. ४ ।४	शुक्ल. ५ ।१०	बा. १२ ।३६	सिंह	अहो.	६ ।५ ।२५ ।४२	२८ ।८	६ ।२२	५ ।३८	१	६	२३	ब्रह्मयोगमानं ५३ ।४, द.ति. १२ ।३६ उपरि, **रम्भा** ११ व्रतं सर्वेषां, (११–१२) एकोद्दिष्टम् ।
१२ चं.	७ ।३७	दि. ६ ।२६	उ.फा. ५० ।३७	रा. २ ।३८	ऐं. ५० ।५२	तै. ७ ।३७	सिं. ८ ।२१	दि. ६ ।४३	६ ।६ ।२५ ।४२	२८ ।४	६ ।२३	५ ।३७	२	७	२४	**श्रीधन्वन्तरिजयन्ती** (धनतेरस), दक्षिणयात्रा हस्ते, द. ति. ७ ।३७ या., गोवत्स १२, विल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, स्वात्यां रविः ५८ ।२० ××
१३ मं.	२ ।०६	दि. ७ ।१४	ह. ४६ ।३३	रा. १ ।०१	वै. ४३ ।११	व. २ ।६	कन्या	अहो.	६ ।७ ।२५ ।४२	२८ ।००	६ ।२४	५ ।३६	३	८	२५	चतुर्दशीमानं ५४ ।६, प्रदोष १४ व्रतं, हनुमज्जन्मोत्सवः, हनुमद्ध्वजदानं पूजनञ्च, भ. २ ।६ उ. २६ ।६ या., पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदशीचतुर्दश्योः, वायुपुराणे—■
३० बु.	५० ।८	रा. २ ।२८	चि. ४२ ।२०	रा. ११ ।२१	वि. ३५ ।२१	चं. २३ ।१०	कं. १४ ।२६	दि. १२ ।११	६ ।८ ।२५ ।४१	२७ ।५६	६ ।२५	५ ।३५	४	६	२६	कार्तिकी ३० स्नानदानादिः दीपावली, सुखरात्रिः प्रदोषे घं. ७ मि. ४ यावद्रात्रौ लक्ष्मीपूजनमुल्काभ्रमणं पितृविसर्जनञ्च, कालीपूजा, दक्षिणपश्चिमयात्रा प्रतिपदि ■■

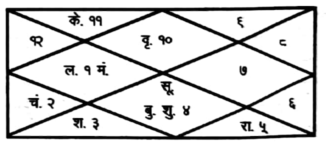
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बृ.	३ ।१६ ।२३ ।४७	६ ।८ ।३८ ।१५	० ।१४ ।१६ ।५१	६ ।१२ ।३२ ।२१	५ ।२६ ।७ ।१६	१ ।२५ ।२१ ।३३	४४ ।२४	१६ ।३६	२१ ।३५	२३ ।४८	२ ।०६	४ ।२२	६ ।३७	८ ।५४	११ ।११	१३ ।१६	१५ ।०२	१६ ।३३	१८ ।०२
२ शु.	३ ।१६ ।५८ ।३	६ ।१० ।२१ ।४१	११ ।१४ ।६ ।१३	६ ।१३ ।४६ ।५१	५ ।२६ ।१४ ।४०	१ ।२५ ।१८ ।२२	४४ ।२२	१६ ।३६	२१ ।३२	२३ ।४५	२ ।०३	४ ।१६	६ ।३४	८ ।५१	११ ।०८	१३ ।१३	१४ ।५६	१६ ।३०	१७ ।५६
३ श.	३ ।२० ।३२ ।१६	६ ।१२ ।५ ।०७	० ।१४ ।०१ ।३५	६ ।१५ ।०१ ।२१	५ ।२६ ।२२ ।४	१ ।२५ ।१५ ।१२	४४ ।२०	१६ ।३२	२१ ।२८	२३ ।४१	१ ।५६	४ ।१५	६ ।३०	८ ।४७	११ ।०४	१३ ।०६	१४ ।५५	१६ ।२६	१७ ।५५
४ र.	३ ।२१ ।५ ।५६	६ ।१३ ।४३ ।२१	० ।१३ ।५३ ।३८	६ ।१६ ।१५ ।५८	५ ।२६ ।२६ ।३१	१ ।२५ ।१२ ।०१	४४ ।१८	१६ ।२८	२१ ।२४	२३ ।३७	१ ।५५	४ ।११	६ ।२६	८ ।४३	११ ।००	१३ ।०५	१४ ।५१	१६ ।२२	१७ ।५१
५ चं.	३ ।२१ ।३६ ।३३	६ ।१५ ।२१ ।३५	० ।१३ ।४५ ।४१	६ ।१७ ।३० ।३५	५ ।२६ ।३६ ।५७	१ ।२५ ।०८ ।५०	४४ ।१६	१६ ।२५	२१ ।२१	२३ ।३४	१ ।५२	४ ।०८	६ ।२३	८ ।४०	१० ।५७	१३ ।०२	१४ ।४८	१६ ।१६	१७ ।४८
६ मं.	३ ।२२ ।१३ ।०६	६ ।१६ ।५६ ।४६	० ।१३ ।३७ ।४४	६ ।१८ ।४५ ।१२	५ ।२६ ।४४ ।२३	१ ।२५ ।५ ।३६	४४ ।१४	१६ ।२१	२१ ।१७	२३ ।३०	१ ।४८	४ ।०४	६ ।१६	८ ।३६	१० ।५३	१२ ।५८	१४ ।४४	१६ ।१५	१७ ।४४
७ बु.	३ ।२२ ।४६ ।४५	६ ।१८ ।३८ ।३	० ।१३ ।२६ ।४८	६ ।१६ ।५६ ।४६	५ ।२६ ।५१ ।४६	१ ।२५ ।२ ।२८	४४ ।१२	१६ ।१७	२१ ।१३	२३ ।२६	१ ।४४	४ ।००	६ ।१५	८ ।३२	१० ।४६	१२ ।५४	१४ ।४०	१६ ।११	१७ ।४०
८ बृ.	३ ।२३ ।२० ।२१	६ ।२० ।१६ ।१७	० ।१३ ।२१ ।५२	६ ।२१ ।१४ ।२६	५ ।२६ ।५६ ।२५	१ ।२४ ।५६ ।१७	४४ ।१०	१६ ।१३	२१ ।०६	२३ ।२२	१ ।४०	३ ।५६	६ ।११	८ ।२८	१० ।४५	१२ ।५०	१४ ।३६	१६ ।०७	१७ ।३६
६ शु.	३ ।२३ ।५३ ।५७	६ ।२१ ।५४ ।३१	० ।१३ ।१३ ।५६	६ ।२२ ।२६ ।०३	५ ।२७ ।६ ।४१	१ ।२४ ।५६ ।०७	४४ ।८	१६ ।०६	२१ ।०५	२३ ।१८	१ ।३६	३ ।५२	६ ।०७	८ ।२४	१० ।४१	१२ ।४६	१४ ।३२	१६ ।०३	१७ ।३२
१० श.	३ ।२४ ।२७ ।३३	६ ।२३ ।३२ ।४४	० ।१३ ।०६ ।००	६ ।२३ ।४३ ।३६	५ ।२७ ।१४ ।०७	१ ।२४ ।५२ ।५७	४४ ।६	१६ ।०५	२१ ।०१	२३ ।१४	१ ।३२	३ ।४८	६ ।०३	८ ।२०	१० ।३७	१२ ।४२	१४ ।२८	१५ ।५६	१७ ।२८
११ र.	३ ।२५ ।० ।१७	६ ।२५ ।०१ ।०६	० ।१२ ।५७ ।३६	६ ।२४ ।५८ ।१६	५ ।२७ ।२१ ।३६	१ ।२४ ।४६ ।४६	४४ ।४	१६ ।०१	२० ।५७	२३ ।१०	१ ।२८	३ ।४४	५ ।५६	८ ।१६	१० ।३३	१२ ।३८	१४ ।२४	१५ ।५५	१७ ।२४
१२ चं.	३ ।२५ ।३३ ।०१	६ ।२६ ।२६ ।३४	० ।१२ ।४६ ।१२	६ ।२६ ।१२ ।५६	५ ।२७ ।२६ ।५	१ ।२४ ।४६ ।३५	४४ ।२	१८ ।५७	२० ।५३	२३ ।०६	१ ।२४	३ ।४०	५ ।५५	८ ।१२	१० ।२६	१२ ।३४	१४ ।२०	१५ ।५१	१७ ।२०
१३ मं.	३ ।२६ ।५ ।४४	६ ।२७ ।५७ ।५६	० ।१२ ।४० ।४८	६ ।२७ ।२७ ।३६	५ ।२७ ।३६ ।३४	१ ।२४ ।४३ ।२४	४४ ।०	१८ ।५४	२० ।५०	२३ ।०३	१ ।२१	३ ।३७	५ ।५२	८ ।०६	१० ।२६	१२ ।३१	१४ ।१७	१५ ।४८	१७ ।१७
३० बु.	३ ।२६ ।३८ ।२७	६ ।२६ ।२६ ।२४	० ।१२ ।३२ ।२५	६ ।२८ ।४२ ।१६	५ ।२७ ।४४ ।०३	१ ।२४ ।४० ।१३	४३ ।५८	१८ ।५०	२० ।४६	२२ ।५६	१ ।१७	३ ।३३	५ ।४८	८ ।०५	१० ।२२	१२ ।२७	१४ ।१३	१५ ।४४	१७ ।१३

३ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४३ ।५
अयनांशाः २२ ।४१ ।१४



१० शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४३ ।१२
अयनांशाः २२ ।४१ ।१५



विविधविषयाः—कार्तिके सकलं मासं प्रातःस्नायी जितेन्द्रियः । जपन् हविष्यभुक् शान्तः सर्वपापैः प्रमुच्यते ।। प्रातः स्नानमन्त्रः—कार्तिकेऽहं करिष्यामि प्रातः स्नानं जनार्दन । प्रीत्यर्थं तव देवेश दामोदर मया सह ।। **धात्रीमाहात्म्यम्**—धात्रीच्छायां समाश्रित्य भुंक्ते योऽन्नं हि मानवः । ब्राह्मणान् भोजयित्वा तु वार्षिकं किल्विषं हरेत् ।। धात्रीफलविलिप्तांगो धात्रीफलविभूषितः । धात्रीफलकृताहारो नरो नारायणो भवेत् । **उल्काभ्रमणमन्त्रः**—शस्त्राशस्त्रहतानां च भूतानां भूतदर्शयोः । उज्ज्वलज्योतिषा देहं निर्दहे व्योमवह्निना ।। अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम । उज्ज्वलज्योतिषा दग्धास्ते यान्तु परमां गतिम् ।। यमलोकं परित्यज्य आगता ये महालये । उज्ज्वलज्योतिषा वर्त्म प्रपश्यन्तो व्रजन्तु ते ।। तुलासंक्रमणे **आकाशदीपदानफलम्**—तुलायां तिलतैलेन सायंकाले समागते । आकाशदीपं यो दद्यान्मासमेकं हरिं प्रति ।। महतीं श्रियमवाप्नोति रूपसौभाग्यसम्पदः । **दीपदानमन्त्रः**—दामोदराय नमसि तुलायां लोलया सह । प्रदीपं ते प्रयच्छामि नमोऽनन्ताय वेधसे ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ७ तः पश्चिमोदितः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः ।

वातावरणम्—पक्षादितः पञ्चमीं यावन्मेघचारवायुच्छिन्नवृष्टयस्तदुत्तरं मेघच्छायावातवृष्टयः ।

कार्त्तिकशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. २७ ।१० ।११ ई. तः दि. १० ।११ ।११ ई. या., उत्तरे कालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शरदृतुः, याम्यगोलः, याम्यायनम् ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः			कार्त्तिकशुक्लपक्षः
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
१ बृ.	४४ ।११	रा. १२ ।०६	स्वा. ३८ ।११	रा. ६ ।४२	प्री. २७ ।३२	किं. १७ ।१०	तुला	अहो. -	६ ।६ ।२५ ।४०	२७ ।५२	६ ।२६	५ ।३४	५	१०	२७	गोपूजा गोक्रीडा, गोवर्द्धनपूजनोत्सवः, वृषभे औषधिदानं, अन्नकूटः, बलिपूजा, अग्न्यादिदेवोत्थापनं, महाकविकालिदासजयन्ती, **उच्चैठग्रामे** तज्जन्मस्थले उज्जयिन्यां ×
२ शु.	३८ ।३२	रा. ६ ।५१	वि. ३४ ।१६	रा. ८ ।०८	आ. १६ ।५३	बा. ११ ।२२	तु. २० ।१५	दि. २ ।३२	६ ।१० ।२५ ।३६	२७ ।४६	६ ।२६	५ ।३४	६	११	२८	चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगफलं साम्यं, भ्रातृद्वितीया, यमद्वितीया, भगिनीगृहे भोजनं, यमुनास्नानं, श्रीचित्रगुप्तपूजा, उत्तरयात्रा तृतीयायान ।
३ श.	३३ ।१६	रा. ७ ।४७	अनु. ३० ।४७	रा. ६ ।४६	सौ. १२ ।३१	तै. ०५ ।५६	वृश्चिक	अहो.	६ ।११ ।२५ ।३८	२७ ।४६	६ ।२७	५ ।३३	७	१२	२६	कटुमहुली ३, पश्चिमोत्तरयात्रा, प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य निरामिषभोजनम । ×× ३१ ।१७ या., पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्याम् ।
४ र.	२८ ।४५	सा. ५ ।५८	ज्ये. २७ ।५७	सा. ५ ।३६	शो. ५ ।४३	व. १ ।२	वृ. २७ ।५७	सा. ५ ।३६	६ ।१२ ।२५ ।५२	२७ ।४२	६ ।२८	५ ।३२	८	१३	३०	अतिगण्डयोगमानं ५३ ।४६, **श्रीगणेश** ४ व्रतं, प्रतिहारषष्ठीव्रतस्य संयमः (नहा—खाइ), म. १ ।२ उ. २८ ।४५ या., पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्यान ।
५ चं.	२५ ।२	सा. ४ ।२६	मू. २५ ।५६	दि. ४ ।५२	सु. ५३ ।५८	बा. २५ ।२	धनु	अहो.	६ ।१३ ।२६ ।०६	२७ ।३६	६ ।२८	५ ।३२	६	१४	३१	प्रतिहारषष्ठीव्रतस्यैकमुक्तादिकं (खरना), उत्तरयात्रा । × कर्मस्थले च जयन्त्युत्सवः, वृश्चिके बुधः ६ ।४६, वृश्चिके शुक्रः ४६ ।२२, पश्चिमयात्रा स्वात्याम् ।
६ मं.	२२ ।१७	दि. ३ ।२४	पू.षा. २४ ।५३	दि. ४ ।२६	धृ. ४६ ।१७	तै. २२ ।१७	ध. ३६ ।५४	रा. १० ।२७	६ ।१४ ।२६ ।२०	२७ ।३६	६ ।२६	५ ।३१	१०	१५	१	नमम्बर ११, मघायां सिंहे कुजः ५६ ।४२, पूर्वोदितः शनिः ५५ ।१४, प्रतिहारषष्ठीव्रतं सायंकालिकार्घदानं, पूर्वयात्रा सप्तम्यां पूर्वाषाढे ।
७ बु.	२० ।४१	दि. २ ।४५	उ.षा. २४ ।५७	दि. ४ ।२८	शू. ४५ ।३३	व. २० ।४१	मकर	अहो.	६ ।१५ ।२६ ।३४	२७ ।३३	६ ।२६	५ ।३१	११	१६	२	प्रातःकालिकार्घदानं पारणञ्च, जगद्धात्रीपूजारंभः, सामापूजारंभः, गृहप्रवेशः सप्तम्यां, म. २० ।४१ उ. ५० ।२६ या. । १ हरक्षेत्रस्नानं, श्री हरिहरनाथपूजनदर्शनार २
८ बृ.	२० ।१७	दि. २ ।३७	श्र. २६ ।१४	दि. ५ ।००	ग. ४२ ।५०	ब. २० ।१७	म. ५७ ।३१	रा. ४ ।३०	६ ।१६ ।२६ ।४८	२७ ।३०	६ ।३०	५ ।३०	१२	१७	३	गोपाष्टमी, गवादीनां पूजनं, **पञ्चकारंभो** दिने घं ५ मि. ० उपरि, दक्षिणां विना यात्राष्टम्याम् ।२ दिकं, **सोनपुरमेलापकं**, पुष्करक्षेत्रस्नानदानादिकं, कौशि३
६ शु.	२१ ।१४	दि. ३ ।०१	ध. २८ ।४७	सा. ६ ।०२	वृ. ४१ ।२	कौ. २१ ।१४	कुम्भ	अहो.	६ ।१७ ।२७ ।२	२७ ।२७	६ ।३१	५ ।२६	१३	१८	४	**अक्षयनवमी,** सत्ययुगादिः, गंगास्नानदानादिः, **दीक्षाग्रहणं, गृहप्रवेशो दशम्यां,** धात्रीच्छायायां भोजनम् ।३ क्यां वराहक्षेत्रे स्नानादिकं, **गोशाला ४**
१० श.	२३ ।३०	दि. ३ ।५५	श. ३२ ।३४	रा. ७ ।३३	ध्रु. ४० ।१०	ग. २३ ।३०	कुम्भ	अहो.	६ ।१८ ।२७ ।१६	२७ ।२४	६ ।३१	५ ।२६	१४	१६	५	जगद्धात्रीविसर्जनं, **गृहारंभप्रवेशौ** शतभिषायां, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे, म. ५५ ।१२ उपरि । ४ घट्टे कमलायां **जीवछघट्टे** जीववत्सायां **ढेङमनियारीघट्टे ५**
११ र.	२६ ।५४	सा. ५ ।१८	पू.भा. ३७ ।२८	रा. ६ ।३१	व्या. ४० ।१३	वि. २६ ।५४	कु. २१ ।१५	दि. ३ ।२	६ ।१६ ।२७ ।४२	२७ ।२०	६ ।३२	५ ।२८	१५	२०	६	**देवोत्थान** ११ व्रतं सर्वेषां, ११ व्रतोद्यापनं, **देवादि** प्रतिष्ठा, भीष्मपञ्चकव्रतारंभः, म. २६ ।५४ या., द. ति. २६ ।५४ उपरि ।५ वाग्मत्याञ्च स्नानदानशिवार्चना ६
१२ चं.	३१ ।१७	रा. ७ ।४	उ.भा. ४३ ।१०	रा. ११ ।४६	ह. ४० ।५६	बा. ३१ ।१७	मीन	अहो.	६ ।२० ।२८ ।८	२७ ।१७	६ ।३३	५ ।२७	१६	२१	७	श्रीदामोदर १२, विल्वदलेन तुलसीदलेन वा पारणं, **तामसमन्वादिः,** चतुर्मास्यव्रतपारणं, **विशाखायां रविः** १५ ।४२, **गृहप्रवेशस्त्रयोदश्यां,** द. ति ××
१३ मं.	३६ ।१६	रा. ६ ।०३	रे. ४६ ।३०	रा. २ ।२१	वज्रः ४२ ।५	कौ. ३ ।४८	मी. ४६ ।३०	रा. २ ।२१	६ ।२१ ।२८ ।३४	२७ ।१४	६ ।३३	५ ।२७	१७	२२	८	प्रदोष १३ व्रतं, **विद्यापतिस्मृतिदिवसः, पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. २ मि २१ उ., बाबासाहेबरामदास **परमहंसस्य** २२२ स्मृतिदिवसः, पश्चिम यात्रा रेवत्या तत उत्तरां विना यात्राश्विन्याम् ।७ र्कजयन्ती, म. १४ ।१५ या. ।
१४ बु.	४१ ।३६	रा. ११ ।१४	अ. ५६ ।४	रा. ५ ।००	सि. ४३ ।२७	ग. ८ ।५८	मेष	अहो.	६ ।२२ ।२६ ।००	२७ ।११	६ ।३४	५ ।२६	१८	२३	६	प्रदोष १४ व्रतं, वैकुण्ठ १४, श्रीकाशीविश्वनाथप्रतिष्ठादिनं, म. ४१ ।३६ उ., **गृहप्रवेश** उत्तरां विना यात्रा च पूर्णिमायामश्विन्याम् । ६ दिकं **गुरुनानकजयन्ती, श्रीनिम्बा ७**
१५ बृ.	४६ ।५१	रा. १ ।१८	भ. ६० ।००	अहो.	व्य. ४४ ।४२	वि. १४ ।१५	मेष	अहो.	६ ।२३ ।२६ ।२५	२७ ।८	६ ।३४	५ ।२६	१६	२४	१०	कार्तिकी १५ स्नानदानादिः, कार्तिकेयावतारः, **श्रीकार्तिकेयपूजनं** औत्तममन्वादिः, **सामाविसर्जनं,** सर्वदेवदेव्युत्थापनं, **भीष्मपञ्चकव्रतान्तः,** हरि १

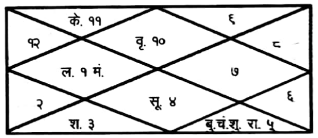
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ बृ.	३ ।२७ ।११ ।१०	७ ।० ।५४ ।४६	० ।१२ ।२४ ।०२	६ ।२६ ।५६ ।५८	५ ।२७ ।५१ ।३२	१ ।२४ ।३७ ।२
२ शु	३ ।२७ ।४३ ।५३	७ ।२ ।२३ ।१४	० ।१२ ।१५ ।३६	७ ।१ ।११ ।३७	५ ।२७ ।५६ ।०१	१ ।२४ ।३३ ।५२
३ श.	३ ।२८ ।१६ ।३६	७ ।३ ।५१ ।३६	० ।१२ ।०७ ।१६	७ ।२ ।२६ ।१६	५ ।२८ ।६ ।२६	१ ।२४ ।३० ।४२
४ र.	३ ।२८ ।४८ ।१६	७ ।५ ।४ ।५६	० ।११ ।५६ ।१०	७ ।३ ।४० ।५२	५ ।२८ ।१३ ।५१	१ ।२४ ।२७ ।३१
५ चं	३ ।२६ ।१६ ।५६	७ ।६ ।१८ ।१६	० ।११ ।५१ ।०५	७ ।४ ।५५ ।२८	५ ।२८ ।२१ ।१३	१ ।२४ ।२४ ।२०
६ म.	३ ।२६ ।५१ ।३६	७ ।७ ।३१ ।३८	० ।११ ।४३ ।०	७ ।६ ।१० ।०४	५ ।२८ ।२८ ।३५	१ ।२४ ।२१ ।०६
७ बु.	४ ।० ।२३ ।१६	७ ।८ ।४४ ।५७	० ।११ ।३४ ।५५	७ ।७ ।२४ ।४०	५ ।२८ ।३५ ।५७	१ ।२४ ।१७ ।५८
८ बृ.	४ ।० ।५४ ।५६	७ ।६ ।५८ ।१६	० ।११ ।३६ ।५०	७ ।८ ।३६ ।१६	५ ।२८ ।४३ ।१६	१ ।२४ ।१४ ।४७
६ शु	४ ।१ ।२६ ।३५	७ ।११ ।११ ।३५	० ।११ ।१८ ।४५	७ ।६ ।५३ ।५२	५ ।२८ ।५० ।४१	१ ।२४ ।११ ।३७
१० श.	४ ।१ ।५८ ।१४	७ ।१२ ।२४ ।५४	० ।११ ।१० ।४०	७ ।११ ।८ ।२७	५ ।२८ ।५८ ।०२	१ ।२४ ।०८ ।२७
११ र.	४ ।२ ।२८ ।४५	७ ।१३ ।१२ ।४४	० ।११ ।२ ।४४	७ ।१२ ।२३ ।१४	५ ।२६ ।५ ।०	१ ।२४ ।५ ।१६
१२ चं.	४ ।२ ।५६ ।१६	७ ।१४ ।० ।३४	२ ।१० ।५४ ।४८	७ ।१३ ।३८ ।०१	५ ।२६ ।११ ।५८	१ ।२४ ।२ ।०५
१३ म.	४ ।३ ।२६ ।४७	७ ।१४ ।४८ ।२४	० ।१० ।४६ ।५२	७ ।१४ ।५२ ।४७	५ ।२६ ।१८ ।५६	१ ।२३ ।५८ ।५४
१४ बु.	४ ।४ ।० ।१८	७ ।१५ ।३६ ।१४	० ।१० ।३८ ।५६	७ ।१६ ।७ ।३३	५ ।२६ ।२५ ।५४	१ ।२३ ।५५ ।४३
१५ बृ.	४ ।४ ।३० ।४८	७ ।१६ ।२४ ।०३	० ।१० ।३१ ।००	७ ।१७ ।२२ ।१६	५ ।२६ ।३२ ।५२	१ ।२३ ।५२ ।३२

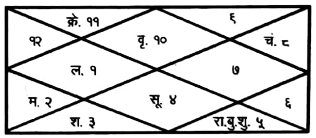
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बृ.	४३ ।५६	१८ ।४६	२० ।४२	२२ ।५५	१ ।१३	३ ।२६	५ ।४४	८ ।०१	१० ।१८	१२ ।२३	१४ ।०६	१५ ।४०	१७ ।०६
२ शु	४३ ।५४	१८ ।४२	२० ।३८	२२ ।५१	१ ।०६	३ ।२५	५ ।४०	७ ।५७	१० ।१४	१२ ।१६	१४ ।०५	१५ ।३६	१७ ।०५
३ श.	४३ ।५३	१८ ।३८	२० ।३४	२२ ।४७	१ ।०५	३ ।२१	५ ।३६	७ ।५३	१० ।१०	१२ ।१५	१४ ।०१	१५ ।३२	१७ ।०१
४ र.	४३ ।५१	१८ ।३४	२० ।३०	२२ ।४३	१ ।०१	३ ।१७	५ ।३२	७ ।४६	१० ।०६	१२ ।११	१३ ।५७	१५ ।२८	१६ ।५७
५ चं	४३ ।४६	१८ ।३०	२० ।२६	२२ ।३६	० ।५७	३ ।१३	५ ।२८	७ ।४५	१० ।०२	१२ ।०७	१३ ।५३	१५ ।२४	१६ ।५३
६ म.	४३ ।४७	१८ ।२६	२० ।२२	२२ ।३५	० ।५३	३ ।०६	५ ।२४	७ ।४१	६ ।५८	१२ ।०३	१३ ।४६	१५ ।२०	१६ ।४६
७ बु.	४३ ।४५	१८ ।२३	२० ।१६	२२ ।३२	० ।५०	३ ।०६	५ ।२१	७ ।३८	'६ ।५५	१२ ।००	१३ ।४६	१५ ।१७	१६ ।४६
८ बृ.	४३ ।४४	१८ ।१६	२० ।१५	२२ ।२८	० ।४६	३ ।०२	५ ।१७	७ ।३४	६ ।५१	११ ।५६	१३ ।४२	१५ ।१३	१६ ।४२
६ शु	४३ ।४३	१८ ।१५	२० ।११	२२ ।२४	० ।४२	२ ।५८	५ ।१३	७ ।३०	६ ।४७	११ ।५२	१३ ।३८	१५ ।०६	१६ ।३८
१० श.	४३ ।४२	१८ ।११	२० ।०७	२२ ।२०	० ।३८	२ ।५४	५ ।०६	७ ।२६	६ ।४३	११ ।४८	१३ ।३४	१५ ।०५	१६ ।३४
११ र.	४३ ।४०	१८ ।०७	२० ।०३	२२ ।१६	० ।३४	२ ।५०	५ ।०५	७ ।२२	६ ।३६	११ ।४४	१३ ।३०	१५ ।०१	१६ ।३०
१२ चं.	४३ ।३८	१८ ।०३	१६ ।५६	२२ ।१२	० ।३०	२ ।४६	५ ।०१	७ ।१८	६ ।३५	११ ।४०	१३ ।२६	१४ ।५७	१६ ।२६
१३ म.	४३ ।३६	१७ ।५६	१६ ।५५	२२ ।०८	० ।२६	२ ।४२	४ ।५७	७ ।१४	६ ।३१	११ ।३६	१३ ।२२	१४ ।५३	१६ ।२२
१४ बु.	४३ ।३४	१७ ।५६	१६ ।५२	२२ ।०५	० ।२३	२ ।३६	४ ।५४	७ ।११	६ ।२८	११ ।३३	१३ ।१६	१४ ।५०	१६ ।१६
१५ बृ.	४३ ।३३	१७ ।५२	१६ ।४८	२२ ।०१	० ।१६	२ ।३५	४ ।५०	७ ।०७	६ ।२४	११ ।२६	१३ ।१५	१४ ।४६	१६ ।१५

३ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४३ ।१६
अयनांशाः २२ ।४१ ।१६



१० शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४३ ।२६
अयनांशाः २२ ।४१ ।१७



विविधविषयाः—कार्त्तिकशुक्लप्रतिपदि प्रातर्गोवर्द्धनपूजा कार्या। तत्र गोमयेन गोवर्द्धनमूर्ति निर्माय पीतपुष्पाक्षतादिभिः पूजयेत्, गाश्च पूजयेत्। **गोवर्द्धनपूजनमन्त्रः** गोवर्द्धनधराधार गोकुलत्राणकारक। कृष्णवाहुकृतच्छाय गवां कोटिप्रदो भव। **गोपूजनमन्त्रः**—लक्ष्मीर्या लोकपालानां धेनूरूपेण संस्थिता। घृतं वहति यज्ञार्थं सा मे पापं व्यपोहतु। अग्रतः सन्तु मे गावो गावो मे सन्तु पृष्ठतः। गावो मे हृदये सन्तु गवां मध्ये वसाम्यहम्। भ्रातृद्वितीयायां भगिनीपठनीयमन्त्रः—भ्रातस्तवानुजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। कनिष्ठभ्रातरि सति—भ्रातस्तवाग्रजाताहं भुंक्ष्व भक्तमिदं शुभम्। प्रीतये यमराजस्य यमुनाया विशेषतः। एकादश्यां **विष्णूत्थापनमन्त्रः**—ब्रह्मेन्द्ररुद्रैरभिवन्द्यमानो भवानृषिर्वन्दितवन्दनीयः। प्राप्ता तवेयं किल कौमुदाख्या जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ। मेघा गता निर्मलपूर्णचन्द्र—शारद्यपुष्पाणि मनोहराणि। अहं ददानीति च पुण्यहेतोर्जागृष्व जागृष्व च लोकनाथ।। उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते। त्वया चोत्थीयमानेन प्रोत्थितं भुवनत्रयम् ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, मार्गी पश्चिमास्तः शनिः ६ तः पूर्वोदितः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे खण्डवृष्टियोगस्तदुत्तरार्द्धभागे वायुचारतापमेघचारादयः।

अग्रहायणकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. ११।११।११ ई. या. उत्तरेकालः, ७ तः पूर्व कालः । वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शरदृतुः, ७ तो हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने ।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.
१ शु.	५१।२६	रा. ३।११	भ. २।२२	दि. ७।३२	वरी. ४५।२६	बा. १६।१०	मे. १८।४७	दि. २।०६	६।२४।२६।५०	२७।०५	६।३५	५।२५	२०	२५	११
२ श.	५५।१५	रा. ४।४२	कृ. ८।००	दि. ६।४८	प. ४५।४१	तै. २३।२२	वृष	अहो	६।२५।३०।१५	२७।२	६।३६	५।२४	२१	२६	१२
३ र.	५७।४६	रा. ५।४४	रो. १२।४५	दि. ११।४२	शि. ४४।५६	व. २६।३२	वृ. ४४।३५	रा. १२।१६	६।२६।३०।५५	२६।५८	६।३६	५।२४	२२	२७	१३
४ चं.	५६।१५	रा. ६।१६	मृ. १६।२५	दि. १।११	सि. ४३।२६	ब. २८।३२	मिथुन	अहो.	६।२७।३१।३५	२६।५५	६।३७	५।२३	२३	२८	१४
५ मं.	५६।१६	रा. ६।२२	आ. १८।५०	दि. २।१०	सा. ४०।५१	कौ. २६।१७	मिथुन	अहो.	६।२८।३२।१५	२६।५२	६।३८	५।२२	२४	२६	१५
६ बु.	५८।६	रा. ५।५४	पुन. १६।५५	दि. २।३६	शुभः ३७।१७	ग. २८।४४	मि. ४।३६	दि. ८।३०	६।२६।३२।५५	२६।४६	६।३८	५।२२	२५	३०	१६
७ बृ.	५५।४५	रा. ४।५७	पुष्य १६।५१	दि. २।३५	शुक्ल. ३२।४४	वि. २६।५७	कर्क	अहो.	७।०।३३।३४	२६।४६	६।३६	५।२१	२६	१	१७
८ शु.	५२।२१	रा. ३।३५	आश्ले. १८।३६	दि. २।०५	ब्र. २७।२१	बा. २४।०३	क. १८।३६	दि. २।०५	७।१।३४।१३	२६।४३	६।३६	५।२१	२७	२	१८
९ श.	४८।५	रा. १।५४	म. १६।३३	दि. १।१७	ऐ. २१।१४	तै. २०।१३	सिंह	अहो.	७।२।३४।५२	२६।४०	६।४०	५।२०	२८	३	१९
१० र.	४३।५	रा. ११।५५	पूफा. १३।३६	दि. १२।०६	बै. १४।२६	व. १५।३५	सिं. २७।४६	सा. ५।४७	७।३।३५।४३	२६।३७	६।४१	५।१६	२९	४	२०
११ चं.	३७।३५	रा. ६।४३	उफा. १०।६	दि. १०।४३	वि. ७।८	ब. १०।२०	कन्या	अहो.	७।४।३६।३४	२६।३४	६।४१	५।१६	३०	५	२१
१२ मं.	३१।४७	रा. ७।२५	ह. ६।६	दि. ६।१०	आ. ५१।४१	कौ. ४।४१	क. ३४।४	रा. ८।२०	७।५।३७।२५	२६।३१	६।४२	५।१८	१	६	२२
१३ बु.	२५।४६	सा. ५।०	चि. १।५६	दि. ७।३०	सौ. ४३।४५	व. २५।४६	तुला	अहो.	७।६।३८।१६	२६।२८	६।४२	५।१८	२	७	२३
१४ बृ.	१६।५८	दि. २।४२	वि. ५३।४४	रा. ४।१३	शो. ३५।५८	श. १६।५८	तु. ३६।४६	रा. १०।३७	७।७।३६।७	२६।२५	६।४३	५।१७	३	८	२४
३० शु.	१४।२२	दि. १२।२६	अनु ५०।६	रा. २।४८	अंग. २८।२०	ना. १४।२२	वृश्चिक	अहो.	७।८।३६।५८	२६।२२	६।४४	५।१६	४	६	२५

।।००।।
गृहारंभो दक्षिणयात्रा च रोहिण्याम् ।
भ. २६।३२ उ. ५७।४६ या., पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा तृतीयायाम् ।
तुलायां शनिः ५१।४२, **श्रीगजानन** ४ व्रतं, चतुर्थ्यां पञ्चम्यां वा मेघदर्शनं वर्षतो वृष्टिप्रदं स्यात् ।
वीडपञ्चमी, मनसादेवीशयनं **श्रीविषहरापूजनं,** पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ पञ्चम्याम् ।
मासान्तः, **कार्तिकव्रताकाशदीपदानव्रततुलसीव्रतोद्यापनानि,** म. ५८।६ उपरि । × म. २६।५७ या. ।
वृश्चिके रविः १०।११ मु. ३० फलं साम्यं **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. ७ मि. ३१ उ. घं. १ मि ५५ यावद्दिने, **पुण्याहः, अर्द्धकुंभयोगसमाप्तिः** घं. १० मि. ४३ उपरि दिने, ×
वक्री बुधः ३।४१, मासादिः, **कालभैरवाष्टमी,** निशीथे कालभैरवावतारः, शाकाष्टका, **महाराजाधिराज-कामेश्वरसिंहजयन्ती** ।
अन्वष्टकानवमी, द. ति. ४८।५ उ., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्यां नवम्याम् ।
अनुराधायां रविः २७।४८, मूले धनुषि शुक्रः ५२।१४, **विवाह** एकादश्यां, द. ति. ४३।५ या., म. १५।४५ उ. ४३।५ या. ।
प्रीतियोगमानं ५२।२०, पश्चिमास्तो बुधः ३०।३६, **विवाहो दिवारात्रौ, उत्पन्ना** ११ व्रत सर्वेषां, दक्षिणयात्रैकादश्यां हस्ते ।
गोमूत्रेण पारणं, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततः पश्चिमदक्षिणयात्रा।
स्वातीमानं ५५।४८, **प्रदोष १३-१४ व्रतं, विवाहस्त्रयोदश्यां,** म. २५।४६ उ. ५२।५२ या. ।
।।००।।
मार्गी ३० स्नानदानादिः, **विवाहः** प्रतिपद्यनुराधायां, उत्तरयात्रा प्रतिपदि, (३०—१) एकोद्दिष्टम् ।

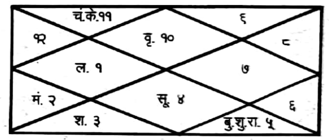
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ शु.	४।५।०१।१८	७।१७।११।५२	०।१०।२३।४	७।१८।३७।०५	५।२६।४०।५०	१।२३।४६।२१
२ श.	४।५।३१।४८	७।१७।५६।४१	०।१०।१५।०६	७।१६।५१।५१	५।२६।४६।४७	१।२३।४६।११
३ र.	४।६।०।५६	७।१८।१७।३१	०।१०।७।४०	७।२१।६।२६	५।२६।५२।५८	१।२३।४३।०
४ चं.	४।६।३०।४	७।१८।३५।२१	०।१०।०।११	७।२२।२१।०७	५।२६।५६।०६	१।२३।३६।४६
५ मं.	४।६।५६।१२	७।१८।५३।११	०।६।५२।४३	७।२३।३५।४५	६।०।५।२०	१।२३।३६।३८
६ बु.	४।७।२८।२०	७।१६।११।०१	०।६।४५।१५	७।२४।५०।२३	६।०।११।३०	१।२३।३३।२७
७ बृ.	४।७।५७।२८	७।१६।२८।५२	०।६।३७।४७	७।२६।०५।०१	६।०।१७।४०	१।२३।३०।१६
८ शु.	४।८।२६।३६	७।१६।२३।३२	०।६।३०।१६	७।२७।१६।३६	६।०।२३।५०	१।२३।२७।०६
९ श.	४।८।५५।४४	७।१६।१६।५६	०।६।२२।५१	७।२८।३४।१७	६।०।३०।०	१।२३।२३।५६
१० र.	४।६।२३।२५	७।१८।४६।५८	०।६।१६।१३	७।२६।४८।५१	६।०।३६।२४	१।२३।२०।४५
११ चं.	४।६।५१।०६	७।१८।२०।०	०।६।६।३६	८।१।३।२५	६।०।४२।४८	१।२३।१७।३४
१२ मं.	४।१०।१८।४७	७।१७।५०।२	०।६।२।५६	८।२।१७।५६	६।०।४६।१२	१।२३।१४।२३
१३ बु.	४।१०।४६।२७	७।१७।२०।०५	०।८।५६।२२	८।३।३२।३२	६।०।५५।३६	१।२३।११।१२
१४ बृ.	४।११।१४।०७	७।१६।५०।८	०।८।४६।४५	८।४।४७।०५	६।१।२।००	१।२३।०८।१
३० शु.	४।११।४१।४७	७।१६।२०।११	०।८।४३।०८	८।६।०१।३८	६।१।८।२४	१।२३।४।५१

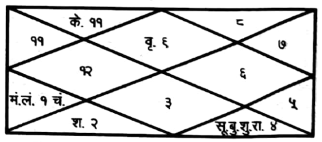
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	४३।३२	१७।४८	१६।४४	२१।५७	०।१५	२।३१	४।४६	७।०३	६।२०	११।२५	१३।११	१४।४२	१६।११
२ श.	४३।३१	१७।४४	१६।४०	२१।५३	०।११	२।२७	४।४२	६।५६	६।१६	११।२१	१३।०७	१४।३८	१६।०७
३ र.	४३।२६	१७।४०	१६।३६	२१।४६	०।०७	२।२३	४।३८	६।५५	६।१२	११।१७	१३।०३	१४।३४	१६।०३
४ चं.	४३।२७	१७।३६	१६।३२	२१।४५	०।०३	२।१६	४।३४	६।५१	६।०८	११।१३	१२।५६	१४।३०	१५।५६
५ मं.	४३।२५	१७।३२	१६।२८	२१।४१	२३।५६	२।१५	४।३०	६।४७	६।०४	११।०६	१२।५५	१४।२६	१५।५५
६ बु.	४३।२३	१७।२६	१६।२५	२१।३८	२३।५६	२।१२	४।२७	६।४४	६।०१	११।०६	१२।५२	१४।२३	१५।५२
७ बृ.	४३।२२	१७।२५	१६।२१	२१।३४	२३।५२	२।०८	४।२३	६।४०	८।५७	११।०२	१२।४८	१४।१६	१५।४८
८ शु.	४३।२१	१७।२१	१६।१७	२१।३०	२३।४८	२।०४	४।१६	६।३६	८।५३	१०।५८	१२।४४	१४।१५	१५।४४
९ श.	४३।२०	१७।१७	१६।१३	२१।२६	२३।४४	२।००	४।१५	६।३२	८।४६	१०।५४	१२।४०	१४।११	१५।४०
१० र.	४३।१८	१७।१२	१६।०८	२१।२१	२३।३६	१।५५	४।१०	६।२७	८।४४	१०।४६	१२।३५	१४।०६	१५।३५
११ चं.	४३।१६	१७।०८	१६।०४	२१।१७	२३।३५	१।५१	४।०६	६।२३	८।४०	१०।४५	१२।३१	१४।०२	१५।३१
१२ मं.	४३।१४	१७।०४	१६।००	२१।१३	२३।३१	१।४७	४।०२	६।१६	८।३६	१०।४१	१२।२७	१३।५८	१५।२७
१३ बु.	४३।१३	१६।५६	१८।५५	२१।०८	२३।२६	१।४२	३।५७	६।१४	८।३१	१०।३६	१२।२२	१३।५३	१५।२२
१४ बृ.	४३।१२	१६।५५	१८।५१	२१।०४	२३।२२	१।३८	३।५३	६।१०	८।२७	१०।३२	१२।१८	१३।४६	१५।१८
३० शु.	४३।११	१६।५१	१८।४७	२१।००	२३।१८	१।३४	३।४६	६।०६	८।२३	१०।२८	१२।१४	१३।४५	१५।१४

२ शनौ बल्ली ८।३८।४३।३३
अयनांशाः २२।४१।१८



६ शनौ बल्ली ८।३८।४३।४०
अयनांशाः २२।४१।१६



विविधविषयाः—मार्गकृष्णाष्टम्यां श्रीकालभैरवोत्पत्तिदिनमतस्तद् दिने तत्पूजनमुपवासश्च कार्यः। **पंचोपचारपूजनं**—गन्धः पुष्पं च धूपश्च दीपो नैवेद्यमेव च। पंचोपचाराः कथिता देवानां प्रीतिहेतवः। **षोडशोपचारपूजा**—आसनं स्वागतं चार्घ्यं पाद्यमाचमनं तथा। मधुपर्काचमनस्नानवसनाभरणानि च। गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यं चन्दनं तथा। **पंचगव्यम्**—गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिः कुशोदकम्। पञ्चगव्यमिदं प्रोक्तं महापातकनाशनम्। **पञ्चामृतम्**—शर्करा मधु दुग्धं च घृतं दधि समांशकम्। पंचामृतमिदं प्रोक्तं देहशुद्धौ विधीयते। **पंचरत्नानि**—वज्रमौक्तिकवैदूर्य—पुष्परागेन्द्रनीलकम्। पंचरत्नमिदं प्रोक्तं मन्त्रैः कुम्भेषु निःक्षिपेत्। **पंचपल्लवाः**—अश्वत्थोदुम्बरप्लक्षचूतन्यग्रोधपल्लवाः। पंचपल्लव इत्युक्तः सर्वकर्मसु शोभनः। **सप्तधान्यम्**—यवगोधूमधान्यानि तिलाः कंकुस्तथैव च। श्यामकं चणकं चैव सप्तधान्यमुदाहृतम्। **सर्वौषधिः**—मुरा मांसी वचा कुष्ठं शैलेयं रजनीद्वयम्। शुण्ठी चम्पकमुस्तं च सर्वौषधिगणः स्मृतः। सर्वौषधीनामभावे तु दद्यादेकां शतावरीम्।
ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ८ तो वक्री ११ तः पश्चिमास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।
वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः मेघच्छायावायुचारतापादयस्तन्मध्यभागे वायुशीतच्छिन्नमन्दवृष्टयः ।

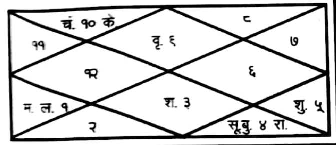
अग्रहायणशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. २६ ।११ ।११ ई. तः दि. १० ।१२ ।११ ई. या., पूर्वे कालः । वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदित शुक्रः, शुद्धः, हेमन्तर्तुः, यान्यगोलायने ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
१ श.	६ ।१५	दि. १० ।२६	ज्ये. ४७ ।७	रा. १ ।३५	सु. २१ ।२४	ब. ६ ।१५	वृ. ४७ ।७	रा. १ ।३५	७ ।६ ।४० ।४८	२६ ।२०	६ ।४४	५ ।१६	५	१०	२६	चन्द्रदर्शनं मु. १५ सौम्यशृंगफलं महार्घम्, श्रीहरिशो व्रतं, पश्चिमोत्तरयात्रा ज्येष्ठायां ततः उत्तरयात्रा ।
२ र.	४ ।४७	दि. ८ ।३६	मू. ४४ ।५८	रा. १२ ।४३	धृ. १४ ।५४	कौ. ४ ।४७	धनु	अहो.	७ ।१० ।४१ ।५०	२६ ।१८	६ ।४४	५ ।१६	६	११	२७	**विवाहो मूले, नवान्नपार्वणं, षाण्मासिकरविव्रतारंभः**, द्विरागमनं मूले, पूर्वोत्तरयात्रा ।
३ चं.	१ ।६	दि. ७ ।१३	पू.षा. ४३ ।३८	रा. १२ ।१२	शू. ६ ।५	ग. १ ।०६	ध. ५८ ।३५	रा. ६ ।११	७ ।११ ।४२ ।५२	२६ ।१७	६ ।४५	५ ।१५	७	१२	२८	चतुर्थीमानम् ५७ ।२३, **श्रीगणेश** ४ व्रतं, द्विरागमनं पञ्चम्यां, म. २६ ।५१ उ. ५७ ।२३ या., उत्तरयात्रा तृतीयायाम् ।
५ मं.	५७ ।४	रा. ५ ।३५	उ.षा. ४३ ।२४	रा. १२ ।०७	ग. ४ ।६	ब. २७ ।४४	मकर	अहो.	७ ।१२ ।४३ ।५४	२६ ।१६	६ ।४५	५ ।१५	८	१३	२९	वृद्धियोगमानं ५५ ।५१, **विवाहपञ्चमी** श्रीसीतारामविवाहोत्सवः, **जनकपुरे श्रीसीतारामदर्शनं**, गोस्वामी **श्रीलक्ष्मीनाथपरमहंसस्य** २१८ ×
६ बु.	५६ ।४६	रा. ५ ।२६	श्र. ४४ ।२१	रा. १२ ।२६	धृ. ५६ ।४८	कौ. २६ ।५७	मकर	अहो.	७ ।१३ ।४४ ।५६	२६ ।१५	६ ।४५	५ ।१५	९	१४	३०	**विवाहो** दिवारात्रौ, **पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. १२ मि. २६ उ., स्कन्दषष्ठीव्रतं, चम्पकषष्ठी, **द्विरागमनं**, कर्णवेधः उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा ।
७ बृ.	५७ ।५५	रा. ५ ।५५	ध. ४६ ।३७	रा. १ ।२४	व्या. ५४ ।३७	ग. २७ ।२२	म. १५ ।२६	दि. १२ ।५७	७ ।१४ ।४५ ।५८	२६ ।१४	६ ।४५	५ ।१५	१०	१५	१	दिसम्बर १२, **विवाहो** घनिष्ठायां, **नवान्नपार्वणं**, द्विरागमनं, गृहप्रवेशः, **मुण्डनं**, कर्णवेधः, म. ५७ ।५५ उ., पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा घनिष्ठायाम् ।
८ शु.	६० ।००	अहो.	श. ५० ।७	रा. २ ।४८	ह. ५३ ।३०	वि. २६ ।६	कुम्भ	अहो.	७ ।१५ ।४७ ।०	२६ ।१३	६ ।४५	५ ।१५	११	१६	२	त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, द्विरागमनं शतभिषायां, भ. २६ ।६ या. । × जयन्त्युत्सवः १३६ स्मृतिदिवसश्च, उत्तरां विना यात्रा श्रवणायां पञ्चम्याम् ।
८ श.	० ।१७	दि. ६ ।५३	पू.भा. ५४ ।४६	रा. ४ ।४०	वज्र. ५३ ।१४	ब. ० ।१७	कु. ३८ ।३७	रा. १० ।१३	७ ।१६ ।४८ ।१	२६ ।१२	६ ।४६	५ ।१४	१२	१७	३	**ज्येष्ठायां रविः** ३५ ।१३, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे ।
९ र.	३ ।४८	दि. ८ ।१७	उ.भा. ६० ।०	अहो.	सि. ५३ ।४२	कौ. ३ ।४८	मीन	अहो.	७ ।१७ ।४९ ।११	२६ ।१०	६ ।४६	५ ।१४	१३	१८	४	द. ति. ३ ।४८ उ. ।
१० चं.	८ ।१८	दि. १० ।५	उ.भा. ० ।१८	दि. ६ ।५३	व्य. ५४ ।४४	ग. ८ ।१८	मीन	अहो.	७ ।१८ ।५० ।२०	२६ ।८	६ ।४६	५ ।१४	१४	१९	५	**विवाह** एकादश्यां, द. ति. ८ ।१८ या., द्विरागमनं मुण्डनं कर्णवेधश्च एकादश्यां, म. ४० ।५३ उ., पश्चिमोत्तरयात्रैकादश्याम् ।
११ मं.	१३ ।२७	दि. १२ ।१०	रे. ६ ।३०	दि. ९ ।२३	वरी. ५६ ।४	वि. १३ ।२७	मी. ६ ।३०	दि. ६ ।३०	७ ।१९ ।५१ ।२६	२६ ।०६	६ ।४७	५ ।१३	१५	२०	६	**मोक्षदा** ११ व्रतं सर्वेषां, **गीताजयन्ती, पञ्चकान्तो** दिवा घं. ६ मि. २३ उ., म. १३ ।२७ या., उत्तरां विनायात्रा द्वादश्यां (१२) एको. ।
१२ बु.	१८ ।५४	दि. २ ।२१	अ. १३ ।०१	दि. ११ ।५६	परि. ५७ ।२०	बा. १८ ।५४	मेष	अहो.	७ ।२० ।५२ ।३८	२६ ।०५	६ ।४७	५ ।१३	१६	२१	७	**पूर्वोदितो बुधः** ३६ ।६, कुजवेधाद्विवाहो नैवाश्विन्यां, **केशव १२,** गोमूत्रेण पारणं प्रदोष १३ व्रतं **द्विरागमनं** कर्णवेध उत्तरां विना यात्रा चाश्विन्याम् ।
१३ बृ.	२४ ।६	दि. ४ ।२७	भ. १९ ।२३	दि. २ ।३२	शि. ५८ ।१८	तै. २४ ।६	मे. ३५ ।५१	रा. ६ ।०७	७ ।२१ ।५३ ।४७	२६ ।४	६ ।४७	५ ।१३	१७	२२	८	(१३) एकोदिष्टम् ।
१४ शु.	२८ ।४८	सा. ६ ।१८	कृ. २५ ।१६	सा. ४ ।५३	सि. ५८ ।४३	व. २८ ।४८	वृष	अहो.	७ ।२२ ।५४ ।५६	२६ ।०३	६ ।४७	५ ।१३	१८	२३	९	**विवाहः** पूर्णिमायां, प्रदोष १४ व्रतं, **द्विरागमनं** पूर्णिमायां, भ. २८ ।४८ उ., पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्याम् ।
१५ श.	३२ ।३५	रा. ७ ।५०	रो. ३० ।१७	सा. ६ ।५५	सा. ५८ ।१८	वि. ० ।४२	वृष	अहो.	७ ।२३ ।५६ ।५	२६ ।२	६ ।४८	५ ।१२	१९	२४	१०	मार्गी १५ स्नानदानादिः, **दत्तात्रेयावतारः** क्षेत्रस्नानं, श्रीहरिहरनाथपूजनदर्शनादिकम्, म. ०० ।४२ या., पूर्वां विना यात्रा प्रतिपदि ।

१५ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४४ ।१

अयनांशाः २२ ।४१ ।२२

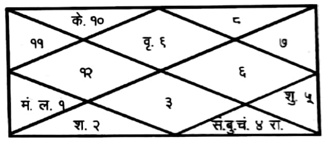


मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	४ ।१२ ।०६ ।२७	७ ।१५ ।५० ।१४	० ।८ ।३६ ।३१	८ ।७ ।१६ ।११	६ ।१ ।१४ ।४७	१ ।२३ ।१ ।४१	४३ ।१०	१६ ।४६	१८ ।४२	२० ।५५	२३ ।१३	१ ।२६	३ ।४४	६ ।०१	८ ।१८	१० ।२३	१२ ।०६	१३ ।४०	१५ ।०६
२ र.	४ ।१२ ।३५ ।३६	७ ।१५ ।१ ।५६	० ।८ ।३१ ।०१	८ ।८ ।३० ।४२	६ ।१ ।२१ ।०	१ ।२२ ।५८ ।३०	४३ ।६	१६ ।४२	१८ ।३८	२० ।५१	२३ ।०६	१ ।२५	३ ।४०	५ ।५७	८ ।१४	१० ।१६	१२ ।०५	१३ ।३६	१५ ।०५
३ चं.	४ ।१३ ।०१ ।४५	७ ।१४ ।१३ ।४४	० ।८ ।२५ ।३१	८ ।९ ।४५ ।१२	६ ।१ ।२७ ।१३	१ ।२२ ।५५ ।१६	४३ ।८	१६ ।३८	१८ ।३४	२० ।४७	२३ ।०५	१ ।२१	३ ।३६	५ ।५३	८ ।१०	१० ।१५	१२ ।०१	१३ ।३२	१५ ।०१
५ मं.	४ ।१३ ।२७ ।५३	७ ।१३ ।२५ ।२६	० ।८ ।२० ।०२	८ ।१० ।५६ ।४२	६ ।१ ।३३ ।२६	१ ।२२ ।५२ ।८	४३ ।७	१६ ।३३	१८ ।२६	२० ।४२	२३ ।००	१ ।१६	३ ।३१	५ ।४८	८ ।५	१० ।१०	११ ।५६	१३ ।२७	१४ ।५६
६ बु.	४ ।१३ ।५४ ।१	७ ।१२ ।३७ ।१४	० ।८ ।१४ ।३३	८ ।१२ ।१४ ।१२	६ ।१ ।३६ ।३८	१ ।२२ ।४८ ।५७	४३ ।६	१६ ।२६	१८ ।२५	२० ।३८	२२ ।५६	१ ।१२	३ ।२७	५ ।४४	८ ।१	१० ।६	११ ।५२	१३ ।२३	१४ ।५२
७ बृ.	४ ।१४ ।२० ।०६	७ ।११ ।४८ ।५६	० ।८ ।९ ।४	८ ।१३ ।२८ ।४२	६ ।१ ।४५ ।५०	१ ।२२ ।४५ ।४६	४३ ।६	१६ ।२५	१८ ।२१	२० ।३४	२२ ।५२	१ ।०८	३ ।२३	५ ।४०	७ ।५७	१० ।२	११ ।४८	१३ ।१९	१४ ।४८
८ शु.	४ ।१४ ।४६ ।१७	७ ।११ ।० ।४४	० ।८ ।३ ।३५	८ ।१४ ।४३ ।१२	६ ।१ ।५२ ।०२	१ ।२२ ।४२ ।३६	४३ ।६	१६ ।२०	१८ ।१६	२० ।२६	२२ ।४७	१ ।०३	३ ।१८	५ ।३५	७ ।५२	६ ।५७	११ ।४३	१३ ।१४	१४ ।४३
८ श.	४ ।१५ ।१२ ।२५	७ ।१० ।१२ ।२६	० ।७ ।५८ ।०६	८ ।१५ ।५७ ।४२	६ ।१ ।५८ ।१४	१ ।२२ ।३६ ।३६	४३ ।६	१६ ।१६	१८ ।१२	२० ।२५	२२ ।४३	० ।५६	३ ।१४	५ ।३१	७ ।४८	६ ।५३	११ ।३६	१३ ।१०	१४ ।३६
९ र.	४ ।१५ ।३६ ।१०	७ ।९ ।४६ ।४०	० ।७ ।५३ ।३७	८ ।१७ ।११ ।५८	६ ।२ ।४ ।३५	१ ।२२ ।३६ ।१५	४३ ।५	१६ ।१२	१८ ।०८	२० ।२१	२२ ।३६	० ।५५	३ ।१०	५ ।२७	७ ।४४	६ ।४६	११ ।३५	१३ ।०६	१४ ।३५
१० चं.	४ ।१५ ।५६ ।५५	७ ।९ ।२६ ।५१	० ।७ ।४६ ।८	८ ।१८ ।२६ ।१४	६ ।२ ।१० ।५६	१ ।२२ ।३३ ।०४	४३ ।४	१६ ।०७	१८ ।०३	२० ।१६	२२ ।३४	० ।५०	३ ।०५	५ ।२२	७ ।३६	६ ।४४	११ ।३०	१३ ।०१	१४ ।३०
११ मं.	४ ।१६ ।२३ ।४०	७ ।९ ।४ ।०३	० ।७ ।४४ ।४०	८ ।१९ ।४० ।३०	६ ।२ ।१७ ।१७	१ ।२२ ।२९ ।५३	४३ ।३	१६ ।०३	१७ ।५६	२० ।१२	२२ ।३०	० ।४६	३ ।०१	५ ।१८	७ ।३५	६ ।४०	११ ।२६	१२ ।५७	१४ ।२६
१२ बु.	४ ।१६ ।४७ ।२५	७ ।८ ।४१ ।१५	० ।७ ।४० ।१२	८ ।२० ।५४ ।४६	६ ।२ ।२३ ।३८	१ ।२२ ।२६ ।४२	४३ ।२	१५ ।५६	१७ ।५५	२० ।०८	२२ ।२६	० ।४२	२ ।५७	५ ।१४	७ ।३१	६ ।३६	११ ।२२	१२ ।५३	१४ ।२२
१३ बृ.	४ ।१७ ।११ ।१०	७ ।८ ।१८ ।२७	० ।७ ।३५ ।४४	८ ।२२ ।६ ।२	६ ।२ ।२६ ।५६	१ ।२२ ।२३ ।३१	४३ ।१	१५ ।५४	१७ ।५०	२० ।०३	२२ ।२१	० ।३७	२ ।५२	५ ।०६	७ ।२६	६ ।३१	११ ।१७	१२ ।४८	१४ ।१७
१४ शु.	४ ।१७ ।३४ ।५५	७ ।७ ।५५ ।३६	० ।७ ।३१ ।१६	८ ।२३ ।२३ ।१८	६ ।२ ।३६ ।२०	१ ।२२ ।२० ।२०	४३ ।१	१५ ।५०	१७ ।४६	१६ ।५६	२२ ।१७	० ।३३	२ ।४८	५ ।०५	७ ।२२	६ ।२७	११ ।१३	१२ ।४४	१४ ।१३
१५ श.	४ ।१७ ।५८ ।३६	७ ।७ ।३२ ।५१	० ।७ ।२६ ।४८	८ ।२४ ।३७ ।३३	६ ।२ ।४२ ।४१	१ ।२२ ।१७ ।१०	४३ ।१	१५ ।४६	१७ ।४२	१६ ।५५	२२ ।१३	० ।२६	२ ।४४	५ ।०१	७ ।१८	६ ।२३	११ ।०६	१२ ।४०	१४ ।०६

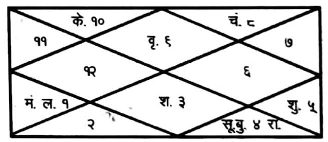
१ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४३ ।४७

अयनांशाः २२ ।४१ ।२०



८ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४३ ।५४

अयनांशाः २२ ।४१ ।२१



विविधविषयाः—रविवासरे **त्याज्यवस्तूनि**—क्षारं तैलं जलं चोष्णमामिषं निशि भोजनम्। रतिः स्नानं च मध्याह्ने रवौ सप्त विवर्जयेत्। मार्गादिमासे **रविव्रतभक्ष्याणि**—पत्रत्रित्वं तुलस्यास्त्रिपलमथ घृतं मार्गशीर्षादिमक्ष्यं मुष्टीनां त्रिस्तिलानां त्रिपदधि तथा दुग्धकं गोमयं च। त्रित्वं तोयांजलीनां त्रिमरीचकमथो त्रिःपलाशक्तवः स्युर्गोमूत्रं शर्करां सद्धविरिति विधिना भानुवारे क्रमेण ।। रात्रौ **लग्नज्ञानम्**—ध्रुवं परितो रक्तवर्णा शूलिनी श्वेतवर्णा चैकान्या तारा मेषान्मीनं यावद्भ्रमति। तत्र ध्रुवात्पश्चिमे मेषवृषौ, वायुकोणे मिथुनं, उत्तरस्यां कर्कसिंहौ, ईशाने कन्या, पूर्वस्यां तुलवृश्चिकौ, अग्निकोणे धनुः दक्षिणस्यां मकरकुम्भौ, नैर्ऋत्यां च मीनराशिर्वर्त्तते। यदा यत्र रक्तवर्णा शूलिनी तारका तदैव लग्नं तदानीमिति। **चन्द्रोदयास्तसाधनम्**—तिथिगुणितं रजनीपरिमाणं यमरहितं सहितं सितपक्षे। वाणशशाङ्कविभाजितलब्धं भवति विधूदयमस्तमयं च। यथा—मार्गशुक्लपञ्चम्यां कुजे रात्रिमानं ३३ ।४४ तदोक्तरीत्या (३३ ।४४) × ५ = १६८ ।४०, १६८ ।४० + २ ।० = १७० ।४०, १७० ।४० ÷ १५ = ११ ।२५ दण्डादि । सूर्यास्त (५ ।१५) माने यथोक्तफलस्य (११ ।२५) घण्टामिण्टात्मकमान (४ ।३४) योजनेन घं. ९ मि० ४९ चन्द्रास्तमानमेवं कृष्णपक्षे चन्द्रोदयमानमिति।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, वक्री पश्चिमास्तो बुधः, १२ तः पूर्वोदितः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम्—पक्षादिभागे शीतहिमपातवायवस्तदुत्तरार्द्धभागे वायुशीतवृद्धि-मेघचारादयः।

पौषकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. ११।१२।११ ई. तः दि. २४।१२।११ ई. या., पूर्व कालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ६तोऽशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
१ र.	३५।१२	रा. ८।५३	मृ. ३४।१०	रा. ८।२८	शुभः ५७। ४	बा. ३।५४	वृ. २।१४	दि. ७।४२	७।२४।५७।२२	२६।००	६।४८	५।१२	२०	२५	११	मार्गी बुधः ३।५५, **विवाहो** मृगशिरसि, पौषे **कौशिकीस्नानं** महापुण्यप्रदम् ।
२ च.	३६।३७	रा. ६।२७	आ. ३६।५४	रा. ६।३४	शुक्ल. ५४।४८	तै. ५।५५	मिथुन	अहो.	७।२५।५८।३६	२५।५८	६।४८	५।१२	२१	२६	१२	**द्विरागमनं** पुनर्वसौ, दक्षिणपश्चिमयात्रा पुनर्वसौ ।
३ मं.	३६।४१	रा. ६।२६	पुन. ३८।२२	रा. १०।१०	ब्र. ५१।३०	व. ६।३६	मि. २३।००	दि. ४।०१	७।२६।५९।५६	२५।५६	६।४६	५।११	२२	२७	१३	भ. ६।३६ उ. ३६।४१ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा पुनर्वसौ ततः उत्तरां विना यात्रा पुष्ये ।
४ बु.	३५।३०	रा. ६।०१	पुष्य. ३८।३५	रा. १०।१५	ऐ. ४७।१५	ब. ६।६	कर्क	अहो.	७।२८।०१।१३	२५।५५	६।४६	५।११	२३	२८	१४	**श्रीलम्बोदर** ४ व्रतं, **द्विरागमनं** पञ्चम्यां पुष्ये, उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्यां पुष्ये ।
५ बृ.	३३।६	रा. ८।०३	आश्ले. ३७।४०	रा. ६।५३	वै. ४२।६	कौ. ४।१८	क. ३७।४०	रा. ६।५३	७।२६।२।२६	२५।५४	६।४६	५।११	२४	२६	१५	मकरे शुक्रः ३।३, मासान्तः ।
६ शु.	२६।४३	रा. ६।४२	म. ३५।४७	रा. ६।०८	वि. ३६।११	ग. १।२५	सिंह	अहो.	८।०।३।४५	२५।५३	६।४६	५।११	२५	१	१६	**मूले धनुषि रविः** ३६।१६ मु. ३० फलं साम्यं **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ० उपरिदिने, **पुण्याहः, अशुद्धारम्भः** ३६।१६ उपरि ×
७ श.	२५।२७	सा. ५।०१	पू.फा. ३३।३	रा. ८।०३	प्री. २६।३४	ब. २५।२७	सि. ४७।१३	रा. १।३६	८।१।५।१	२५।५२	६।५०	५।१०	२६	२	१७	मासादिः, सप्तम्यां मेघदर्शने सत्यार्द्रायां श्रावण्याञ्च सुवृष्टिः । × भ. २६।४३ उ. ५६।३५ या.
८ र.	२०।२६	दि. ३।०२	उ.फा. २६।४१	रा. ६।४२	आ. २२।२३	कौ. २०।२६	कन्या	अहो.	८।२।६।२३	२५।५१	६।५०	५।१०	२७	३	१८	**अपूपाष्टका, शकुनम्**—पौषादितो मासचतष्टयेषु यस्यां तिथौ तोयधरो हि दृश्यः । तत्सप्तमे मासि तिथौ च तस्यां वृष्टिः प्रवाच्या नियमेन विज्ञैः ।
६ चं.	१५।००	दि. १२।५०	ह. २५।५१	सा. ५।१०	सौ. १४।५०	ग. १५।००	क. ५३।४८	रा. ४।२१	८।३।७।४५	२५।५०	६।५०	५।१०	२८	४	१६	अन्वष्टका, भ. ४२।७ उ., दक्षिणयात्रा दशम्यां कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा, (६—१०) एको ।
१० मं.	६।१४	दि. १०।३२	चि. २१।४६	दि. ३।३२	शो. ७।१	वि. ६।१४	तुला	अहो.	८।४।६।०७	२५।४६	६।५०	५।१०	२६	५	२०	अतिगण्डयोगमानं ५२।२, भ. ६।१४ या., पश्चिमदक्षिणयात्रा दशम्याम् ।
११ बु.	३।१८	दि. ८।०६	स्वा. १७।३२	दि. १।५१	सु. ५१।१४	बा. ३।१८	तु. ५६।३०	रा. ६।३८	८।५।१०।२६	२५।४८	६।५०	५।१०	३०	६	२१	द्वादशीमानं ५४।१०, **सफला** ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम् ।
१३ बृ.	५१।५६	रा. ३।३७	वि. १३।३०	दि. १२।१५	धृ. ४३।३५	ग. २४।४२	वृश्चिक	अहो.	८।६।११।५०	२५।४७	६।५१	५।६	१	७	२२	**गोमयेन पारणं, प्रदोष** १३ व्रतं, भ. ५१।५६ उ., पश्चिमोत्तरयात्रानुराधायां त्रयोदश्याम् ।
१४ शु.	४६।५५	रा. १।३७	अनु. ६।४६	दि. १०।४७	शू. ३६।१७	वि. १८।५५	वृश्चिक	अहो.	८।७।१३।११	२५।४६	६।५१	५।६	२	८	२३	**प्रदोष १४** व्रतं, भ. १८।५५ या., उत्तरयात्रा चतुर्दश्याम् । ×× उत्तरयात्रा प्रतिपदि ।
३० श.	४२।३३	रा. ११।५२	ज्ये. ६।४०	दि. ६।३१	ग. २६।३४	चं. १४।४४	वृ. ६।४०	दि. ६।३१	८।८।१४।३२	२५।४६	६।५१	५।६	३	६	२४	**पौषी** ३० स्नानदानादिः **दशतारकारम्भो** दिवा घं. ६ मि. ३१ उ., दशतारकेषु वाताभ्रगर्जनतड्दिुदकशीतादिभिरग्रिमवर्षस्य वृष्टिविचारो विधेयः ××

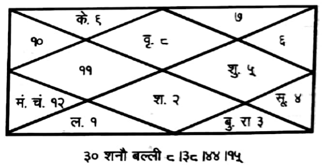
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ र	४।१८।२०।२४	७।७।३७।१५	०।७।२३।५७	८।२५।५१।५६	६।२।४७।२६	१।२२।१३।५६
२ चं.	४।१८।४२।६	७।७।५८।५३	०।७।२१।०६	८।२७।६।१६	६।२।५२।१०	१।२२।१०।४८
३ मं	४।१६।३।५४	७।८।२०।३१	०।७।१८।१५	८।२८।२०।४२	६।२।५६।५४	१।२२।०७।३७
४ बु.	४।१६।२५।३८	७।८।४२।१०	०।७।१५।२४	८।२६।३५।०५	६।३।१।३८	१।२२।४।२६
५ बृ.	४।१६।४७।२२	७।६।३।४६	०।७।१२।३३	६।०।४६।२८	६।३।६।२२	१।२२।१।१५
६ शु	४।२०।६।६	७।६।२५।२८	०।७।६।४३	६।२।३।५१	६।३।११।०६	१।२१।५८।५
७ श.	४।२०।३०।५०	७।६।४७।०७	०।७।६।५३	६।३।१८।१३	६।३।१५।५०	१।२१।५४।५५
८ र.	४।२०।४६।३४	७।१०।४१।८	०।७।५।२४	६।४।३२।१२	६।३।२०।३७	१।२१।५१।४४
६ चं	४।२१।८।१८	७।११।३५।६	०।७।३।५५	६।५।४६।११	६।३।२५।२४	१।२१।४८।३३
१० मं.	४।२१।२७।२	७।१२।२६।१०	०।७।२।२७	६।७।००।१०	६।३।३०।११	१।२१।४५।२२
११ बु	४।२१।४५।४६	७।१३।२३।१०	०।७।०।५६	६।८।१४।०६	६।३।३४।५८	१।२१।४२।११
१३ बृ.	४।२२।४।३०	७।१४।१७।१०	०।६।५६।३१	६।६।२८।८	६।३।३६।४५	१।२१।३६।०
१४ शु.	४।२२।२३।१४	७।१५।११।१०	०।६।५८।०३	६।१०।४२।६	६।३।४४।३२	१।२१।३५।५०
३० श.	४।२२।४१।५७	७।१६।५।१०	०।६।५६।३५	६।११।५६।०४	६।०३।४६।१८	१।२१।३२।४०

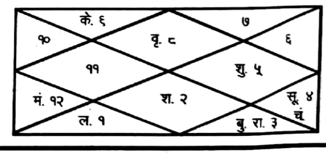
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र	४३।००	१५।४२	१७।३८	१६।५१	२२।०६	०।२५	२।४०	४।५७	७।१४	६।१६	११।०५	१२।३६	१४।०५
२ चं.	४२।५६	१५।३७	१७।३३	१६।४६	२२।०४	०।२०	२।३५	४।५२	७।६	६।१४	११।००	१२।३१	१४।००
३ मं	४२।५८	१५।३३	१७।२६	१६।४२	२२।००	०।१६	२।३१	४।४८	७।५	६।१०	१०।५६	१२।२७	१३।५६
४ बु.	४२।५७	१५।२६	१७।२५	१६।३८	२१।५६	०।१२	२।२७	४।४४	७।०१	६।०६	१०।५२	१२।२३	१३।५२
५ बृ.	४२।५६	१५।२४	१७।२०	१६।३३	२१।५१	०।०७	२।२२	४।३६	६।५६	६।०१	१०।४७	१२।१८	१३।४७
६ शु	४२।५६	१५।२०	१७।१६	१६।२६	२१।४७	०।०३	२।१८	४।३५	६।५२	८।५७	१०।४३	१२।१४	१३।४३
७ श.	४२।५६	१५।१६	१७।१२	१६।२५	३१।४३	२३।५६	२।१४	४।३१	६।४८	८।५३	१०।३६	१२।१०	१३।३६
८ र.	४२।५५	१५।११	१७।०७	१६।२०	२०।३८	२३।५४	२।०६	४।२६	६।४३	८।४८	१०।३४	१२।०५	१३।३४
६ चं	४२।५४	१५।०७	१७।०३	१६।१६	२१।३४	२३।५०	२।०५	४।२२	६।३६	८।४४	१०।३०	१२।०१	१३।३०
१० मं.	४२।५३	१५।०३	१६।५६	१६।१२	२१।३०	२३।४६	२।०१	४।१८	६।३५	८।४०	१०।२६	११।५७	१३।२६
११ बु	४२।५३	१४।५८	१६।५४	१६।०७	२१।२५	२३।४१	१।५६	४।१३	६।३०	८।३५	१०।२१	११।५२	१३।२१
१३ बृ.	४२।५३	१४।५४	१६।५०	१६।०३	२१।२१	२३।३७	१।५२	४।०६	६।२६	८।३१	१०।१७	११।४८	१३।१७
१४ शु.	४२।५३	१४।४६	१६।४५	१८।५८	२१।१६	२३।३२	१।४७	४।०४	६।२१	८।२६	१०।१२	११।४३	१३।१२
३० श.	४२।५३	१४।४५	१६।४१	१८।५४	२१।१२	२३।२८	१।४३	४।००	६।१७	८।२२	१०।०८	११।३६	१३।०८

७ शनौ बल्ली ८।३८।४४।८
अयनांशाः २२।४१।२३



३० शनौ बल्ली ८।३८।४४।१५
अयनांशाः २२।४१।२४



विविधविषयाः—दशतारकविचार—पौषे मूलभरण्यन्तं चन्द्रचारेण गर्भति। आर्द्रादितो विशाखान्तं सूर्यचारेण वर्षति।। एवं चैत्रे तथा ज्येष्ठे शुक्ल पक्षे प्रयत्नतः। आर्द्रादिदशताराणां ज्ञात्वां गर्भं वदेत्फलम्। **गर्भपुष्टिविचारः**—वाताभ्रगर्जत्तडितोदकानि हिमप्रपातः करकावघातः। अकालसन्ध्यापरिवेषणञ्च नवप्रकारैः प्रभवन्ति गर्भाः।। तत्र पुष्टे गर्भे सुवृष्टिः समे मध्यमा वृष्टिर्हीने चाल्पा वृष्टिरिति। **गोचरशन्यादि-विचारः**—द्विजन्मनि पंचम—सप्तमगाश्चतुराष्टकद्वादशधर्मयुताः। धनधान्य हिरण्यविनाशकरा रविराहुशनैश्चरभूमिसुता। **शनेर्विशेषः**—यदि स्वजन्मराशितः शनिराशिसंचारकाले चन्द्रो निम्नलिखितस्थानेषु भवेत्तदा तस्य निम्नलिखितानि पदानि भवेयुः—जन्मांगरुद्रेषु सुवर्णपादं द्विपञ्चनन्दैः रजतस्य पादम्। त्रिसप्तदिक् ताम्रपदं वदन्ति वेदाष्टसूर्येष्विह लौहपादम्। तत्फलम्—लौहे वित्तविनाशः स्यात्सर्वसौख्यञ्च काञ्चने। ताम्रे च समता ज्ञेया सौभाग्यं राजते भवेत्।। अनिष्टफलदायकशनेर्जपः कार्यः लौहञ्च धार्यम्। शनावश्वत्थमूले जलादिभिः पूजनं शनिस्तवश्च पठितव्यः । **शनिस्तवः**—पिप्पलाद उवाच—नमस्ते कोणसंस्थाय पिंगलाक्षाय ते नमः। नमस्ते बभ्रुरुपाय कृष्णाय च नमोस्तु ते।। नमस्ते रौद्रदेहाय नमस्ते चान्तकाय च। नमस्ते यमसंज्ञाय नमस्ते सौरये विभौ।। नमसते मन्दसंज्ञाय शनैश्चर नमोऽस्तुते। प्रसादं कुरु देवेश दीनस्य प्रणतस्य मे ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, वक्री पश्चिमोदितो बुधः १ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षार्द्धभागे तापवातहिमपातशीतादयस्तदुत्तरार्द्धभागे वातहिमपात—शीतवृद्धयः।

पौषशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. २५।१२।११ ई. तः दि. ६।१।१२ ई. या., पूर्व कालः ।
वक्री पूर्वोदितो गुरुः ४ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने ।

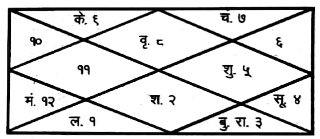
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ र.	३६।२	रा. १०।२८	मू. ४।२१	दि. ८।३५	वृ. २३।२८	कि. १०।४८	धनु	अहो.	८।६।१५।५७	२५।४७	६।५१	५।६	४	१०	२५
२ चं.	३६।३०	रा. ६।२६	पू.षा. २।४८	दि. ७।५७	ध्रु. १८।६	बा. ७।४६	ध. १७।४१	दि. १।५४	८।१०।१७।२२	२५।४८	६।५०	५।१०	५	११	२६
३ मं.	३५।१०	रा. ८।५४	उ.षा. २।१६	दि. ७।४६	व्या. १३।४०	तै. ५।५०	मकर	अहो.	८।११।१८।४७	२५।४६	६।५०	५।१०	६	१२	२७
४ बु.	३५।५	रा. ८।५२	श्र. ३।२	दि. ८।०३	ह. १०।११	व. ४।७	म. ३४।१	रा. ८।२६	८।१२।२०।१२	२५।५०	६।५०	५।१०	७	१३	२८
५ बृ.	३६।१८	रा. ६।२१	ध. ५।०	दि. ८।५०	व. ७।४१	ब. ५।४२	कुम्भ	अहो.	८।१३।२१।३७	२५।५१	६।५०	५।१०	८	१४	२६
६ शु.	३८।५०	रा. १०।२२	श. ८।१६	दि. १०।०८	सि. ६।१४	कौ. ७।३४	कु. ५६।३४	रा. ५।२८	८।१४।२३।२	२५।५२	६।५०	५।१०	६	१५	३०
७ श.	४२।३०	रा. ११।४६	पू.भा. १२।४०	दि. ११।५३	व्य. ५।३७	ग. १०।४०	मीन	अहो.	८।१५।२४।२७	२५।५४	६।४६	५।११	१०	१६	३१
८ र.	४७।४	रा. १।३६	उ.भा. १८।४	दि. २।०३	व. ५।५२	वि. १४।४७	मीन	अहो.	८।१६।२५।५३	२५।५६	६।४६	५।११	११	१७	१
६ चं.	५२।१८	रा. ३।४३	रे. २४।११	दि. ४।२८	परि. ६।४५	बा. १६।४१	मी. २४।११	दि. ४।२८	८।१७।२७।१६	२५।५८	६।४८	५।१२	१२	१८	२
१० मं.	५७।४५	रा. ५।५४	अ. ३०।४२	सा. ७।०५	शि. ७।५८	तै. २५।२	मेष	अहो.	८।१८।२८।४५	२६।०	६।४८	५।१२	१३	१६	३
११ बु.	६०।००	अहो.	भ. ३७।१०	रा. ६।४०	सि. ६।१६	व. ३०।२३	मे. ५३।४१	रा. ४।२८	८।१६।३०।११	२६।१	६।४८	५।१२	१४	२०	४
११ बृ.	३।००	दि. ८।०	कृ. ४३।१३	रा. १२।०५	सा. १०।२६	वि. ३।००	वृष	अहो	८।२०।३१।३६	२६।२	६।४८	५।१२	१५	२१	५
१२ शु.	७।३६	दि. ६।४६	रो. ४८।३१	रा. २।११	शुभ. ११।३	बा. ७।३६	वृष	अहो.	८।२१।३३।०१	२६।३	६।४७	५।१३	१६	२२	६
१३ श.	११।१८	दि. ११।१८	मृ. ५२।४२	रा. ३।५२	शुक्ल. १०।५८	तै. ११।१८	वृ. २०।३७	दि. ३।२	८।२२।३४।२६	२६।४	६।४७	५।१३	१७	२३	७
१४ र.	१३।५२	दि. १२।२०	आर्द्रा ५५।४५	रा. ५।५	ब्र. १०।००	व. १३।५२	•मिथुन	अहो.	८।२३।३५।५०	२६।६	६।४७	५।१३	१८	२४	८
१५ चं.	१५।१०	दि. १२।५०	पुन. ५७।३२	रा. ५।४७	ऐ. ८।४	ब. १५।१०	मि. ४२।६	रा. ११।३६	८।२४।३७।१४	२६।८	६।४६	५।१४	१६	२५	६

२५ — द. ति. ३६।३ उ. ।
२६ — चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगं फलं समर्घम्, द. ति. ३६।३० या. ।
२७ — उत्तरां विना यात्रा श्रवणायाम् । × **कौशिकीस्नानं** तन्मन्त्रश्च–गाधिराजसुते देवि विश्वामित्रमुनेः श्वसः । ऋचीकभार्ये सत्यार्ये पापं मे हर **कौशिकि** ।।
२८ — मार्गी गुरुः ३१।३५, श्रीगणेश ४ व्रतं, **पञ्चकारम्भो** दिवा घं. ८ मि. ३ उ., भ. ४।७ उ. ३५।५ या., पश्चिमयात्रा पंचम्याम् ।
२६ — **पूर्वाषाढे रविः** ४१।२२, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
३० — ।।००।।
३१ — पश्चिमोत्तरयात्रा पूर्वभाद्रे, **गुरुगोविन्दसिंहजयन्ती,** भ० ४२।३० उ० ।
१ — १ **जनवरी** २०१२ ई०, भ. १४।४७ या., उत्तरयात्रा रेवत्यामष्टम्याम् ।
२ — **पञ्चकान्तो** घं. ४ मि. २८ उपरि दिने, पूर्वां विना यात्रा दशम्याम् ।
३ — मूले धनुषि बुधः ५८।५०, कर्म १०, **श्रीविश्वकर्मार्चा,** दशतारकान्तो घं. ७ मि. ५ उ. सायम्, उत्तरां विना यात्राश्विन्याम् ।
४ — त्र्यहो जन्मदिनकृत्यम्, **धर्मसावर्णिमन्वादिः** , भ. ३०।२३ उ. ।
५ — **पुत्रदा** ११ व्रतं सर्वेषां, भ. ३।०० या., पूर्वयात्रा रोहिण्याम् ।
६ — गोमयेन पारणं, **नारायण १२ प्रदोष** १३ व्रतं, पूर्वदक्षिणयात्रा त्रयोदश्यां रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रा ।
७ — **प्रदोष** १४ व्रतं, पूर्वां विना यात्रा मृगशिरसि ।
८ — कुंभे शुक्रः २७।३०, भ. १३।५२ उ. ४४।३१ या., दक्षिणयांत्रा पुनर्वसौ (१५) एको. ।
६ — पूर्वास्तो बुधः ३७।४३, **पौषी** १५ स्नानदानादिः, पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये, (१) एको. ×

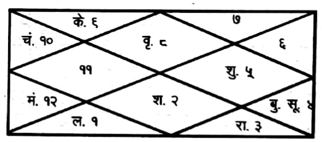
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	४।२२।५७।४३	७।१७।२१।५५	०।६।५६।२२	६।१३।६।४७	६।३।५३।२७	१।२१।२६।२६	४२।५४	१४।४१	१६।३७	१८।५०	२१।०८	२३।२४	१।३६	३।५६	६।१३	८।१८	१०।०४	११।३५	१३।०४
२ चं.	४।२३।१३।२६	७।१८।३८।४०	०।६।५६।१०	६।१४।२३।३०	६।३।५७।३६	१।२१।२६।१८	४२।५५	१४।३६	१६।३२	१८।४५	२१।०३	२३।१६	१।३४	३।५१	६।०८	८।१३	६।५६	११।३०	१२।५६
३ मं.	४।२३।२६।१५	७।१६।५५।२५	०।६।५५।५८	६।१५।३७।१२	६।४।१।४५	१।२१।२३।७	४२।५६	१४।३२	१६।२८	१८।४१	२०।५६	२३।१५	१।३०	३।४७	६।०४	८।६	६।५५	११।२६	१२।५५
४ बु.	४।२३।४५।१	७।२१।१२।१०	०।६।५५।४६	६।१६।५०।५४	६।४।५।५४	१।२१।१६।५६	४२।५७	१४।२८	१६।२४	१८।३७	२२।५५	२३।११	१।२६	३।४३	६।००	८।५	६।५१	११।२२	१२।५१
५ बृ.	४।२४।०।४७	७।२२।२८।५५	०।६।५६।१२	६।१८।४।३६	६।४।१०।०३	१।२१।१६।४५	४२।५७	१४।२३	१६।१६	१८।३२	२२।५०	२३।०६	१।२१	३।३८	५।५५	८।०	६।४६	११।१७	१२।४६
६ शु.	४।२४।१६।३३	७।२३।४५।३६	०।६।५६।३८	६।१६।१८।१८	६।४।१४।१२	१।२१।१३।३५	४२।५७	१४।१६	१६।१५	१८।२८	२०।४६	२३।०२	१।१७	३।३४	५।५१	७।५६	६।४२	११।१३	१२।४२
७ श.	४।२४।३२।१६	७।२५।२।२३	०।६।५७।०४	६।२०।३२।०	६।४।१८।२०	१।२१।१०।२५	४२।५७	१४।१५	१६।११	१८।२४	२०।४२	२२।५८	१।१३	३।३०	५।४७	७।५२	६।३८	११।०६	१२।३८
८ र.	४।२४।४४।१०	७।२६।३३।३४	०।६।५८।३५	६।२१।४५।४७	६।४।२१।५८	१।२१।७।१५	४२।५८	१४।१०	१६।०६	१८।१६	२०।३७	२२।५३	१।०८	३।२५	५।४२	७।४७	६।३३	११।०४	१२।३३
६ च.	४।२४।५६।०१	७।२८।४।४५	०।७।०।६	६।२२।५८।३४	६।४।२५।३६	१।२१।४।३	४२।५६	१४।०६	१६।०२	१८।१५	२०।३३	२२।४६	१।०४	३।२१	५।३८	७।४३	६।२६	११।००	१२।२६
१० म.	४।२५।७।५१	७।२६।३५।५६	०।७।१।३६	६।२४।११।५१	६।४।२६।१४	१।२१।०।५२	४३।०	१४।०१	१५।५७	१८।१०	२०।२८	२२।४४	०।५६	३।१६	५।३३	७।३८	६।२४	१०।५५	१२।२४
११ बु.	४।२५।१६।४१	८।१।७।७	०।७।३।६	६।२५।२५।८	६।४।३२।५२	१।२०।५७।४१	४३।१	१३।५७	१५।५३	१८।०६	२०।२४	२२।४०	०।५५	३।१२	५।२६	७।३४	६।२०	१०।५१	१२।२०
११ बृ.	४।२५।३१।३१	८।२।३८।१८	०।७।४।३६	६।२६।३८।२४	६।४।३६।३०	१।२०।५४।३०	४३।२	१३।५२	१५।४८	१८।०१	२०।१६	२२।३५	०।५०	३।०७	५।२४	७।२६	६।१५	१०।४६	१२।१५
१२ शु.	४।२५।४३।२१	८।४।६।२६	०।७।६।६	६।२७।५१।४०	६।४।४०।७	१।२०।५१।१६	४३।२	१३।४८	१५।४४	१७।५७	२०।१५	२२।३१	०।४६	३।०३	५।२०	७।२५	६।११	१०।४२	१२।११
१३ श.	४।२५।५५।११	८।५।४०।३६	०।७।७।३६	६।२६।४।५६	६।४।४३।४४	१।२०।४८।६	४३।२	१३।४३	१५।३६	१७।५२	२०।१०	२२।२६	०।४१	२।५८	५।१५	७।२०	६।०६	१०।३७	१२।०६
१४ र.	४।२६।२।३१	८।७।२०।२०	०।७।१०।२३	१०।०।१७।३७	६।४।४६।३४	१।२०।४४।५८	४३।३	१३।३६	१५।३५	१७।४८	२०।०६	२२।२२	०।३७	२।५४	५।११	७।१६	६।०२	१०।३३	१२।०२
१५ च.	४।२६।६।५१	८।६।०।१	०।७।१३।१०	१०।१।३०।१८	६।४।४६।२३	१।२०।४१।४७	४३।४	१३।३४	१५।३०	१७।४३	२०।०१	२२।१७	०।३२	२।४६	५।०६	७।११	८।५७	१०।२८	११।५७

७ शनौ बल्ली ८।३८।४४।२२
अयनांशाः २२।४१।२५



१३ शनौ बल्ली ८।३८।४४।२६
अयनांशाः २२।४१।२६



विविधविषयाः–वैष्णवानामेकादशीव्रतनिर्णयः–दशमी पञ्चपंचाशद् घटिका चेत्प्रदृश्यते। तर्हि चैकादशी त्याज्या द्वादशीं समुपोषयेत् ।। दशमीपलमात्रेण त्याज्या चैकादशी तिथिः। मदिराविन्दुपातेन त्याज्यो गंगाघटो यथा। **नारदपुराणे**–क्षये वाप्यथवा वृद्धौ सम्प्राप्ते वा दिनत्रये। उपोष्या द्वादशी तत्र त्रयोदश्यान्तु पारणम्।। **कौर्मे**–तिथिक्षये तु सम्प्राप्ते उपोष्या द्वादशी भवेत्। दशमीशेषसंयुक्तां न कुर्वीत कदाचन।। **भविष्ये**–दशमीशेषसंयुक्तो यदि स्यादरुणोदयः। वैष्णवेन न कर्त्तव्यं तद्दिनैकादशीव्रतम्। अरुणोदयवेधस्तु वैष्णवेषु प्रकीर्त्तितः।। **अरुणोदयकालो ब्रह्मवैवर्ते**–चतस्रो घटिकाः प्रातररुणोदय उच्यते। यतीनां स्नानकालोऽयं गंगाम्भः सदृशं फलम्।। एकादश्यां **त्याज्यवस्तूनि**–कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवं तथा। शाकं मधु परान्नञ्च पुनर्भोजनमैथुने।। केषामन्नं परान्नं नेत्याह–गुर्वन्नं मातुलान्नं च श्वसुरान्न तथैव चं । पितुः पौत्रस्य चैवान्नं न परान्नमिति स्मृतिः।। **स्वपवित्रवस्तूनि**–आसन वसनं शय्या जायाऽपत्यं कमण्डलुः। आत्मनः शुचिरेतानि न परेषां कदाचन।। **अशक्तादिषु विशेषमाह कात्यायनः**–अशक्तौ निर्जने देशे मृते जाते च सूतके। जपेच्च मानसीं सन्ध्यां कुशवारिविवर्जिताम् ।।

ग्रहस्थितिः–मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः १५ तः पूर्वास्तः, वक्री पूर्वोदितो गुरुः ४ तो मार्गी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः।

वातावरणम्–पक्षस्यपूर्वार्द्धे शीतवृद्धिहिमोपलपातमेघचारच्छिन्नमन्दवृष्टयः तदुत्तरार्द्धभागे शीतवृद्धिहिमवातचारादयः ।

माघकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. १० ।१ ।१२ ई. तः दि. २३ ।१ ।१२ ई. या., पूर्वे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ५ तः शुद्धः, हेमन्तर्तुः, याम्यगोलायने, ५ तः शिशिरर्तुस्सौम्यायनञ्च ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ मं.	१५ ।८	दि. १२ ।४६	पुष्य ५८ ।५	रा. ६ ।००	वै. ५ ।६	कौ. १५ ।८	कर्क	अहो.	८ ।२५ ।३८ ।३८	२६ ।१०	६ ।४६	५ ।१४	२०	२६	१०
२ बु.	१३ ।५२	दि. १२ ।१६	आश्ले. ५७ ।२५	रा. ५ ।४४	वि. १ ।१४	ग. १३ ।५२	क. ५७ ।२५	रा. ५ ।४४	८ ।२६ ।४० ।२	२६ ।११	६ ।४६	५ ।१४	२१	२७	११
३ बृ.	११ ।२४	दि. ११ ।२०	म. ५५ ।४४	रा. ५ ।४	आ. ५० ।४२	वि. ११ ।२४	सिंह	अहो.	८ ।२७ ।४१ ।२६	२६ ।१२	६ ।४६	५ ।१४	२२	२८	१२
४ शु.	७ ।५७	दि. ६ ।५६	पूफा. ५३ ।१५	रा. ४ ।०३	सौ. ४४ ।२१	बा. ७ ।५७	सिंह	अहो.	८ ।२८ ।४२ ।५०	२६ ।१३	६ ।४५	५ ।१५	२३	२९	१३
५ श.	३ ।३८	दि. ८ ।२२	उफा. ५० ।००	रा. २ ।४५	शो. ३७ ।२४	तै. ३ ।३८	सिं. ७ ।२६	दि. ६ ।४३	८ ।२९ ।४४ ।१३	२६ ।१४	६ ।४५	५ ।१५	२४	३०	१४
७ र.	५३ ।८	रा. ४ ।००	ह. ४६ ।१८	रा. १ ।१६	अगं. २६ ।५६	वि. २५ ।५३	कन्या	अहो.	९ ।० ।४५ ।३३	२६ ।१६	६ ।४५	५ ।१५	२५	१	१५
८ चं.	४७ ।२०	रा. १ ।४०	चि. ४२ ।१५	रा. ११ ।३८	सु. २२ ।११	बा. २० ।१४	क. १४ ।१६	दि. १२ ।२६	९ ।१ ।४६ ।५३	२६ ।१८	६ ।४४	५ ।१६	२६	२	१६
९ मं.	४१ ।२७	रा. ११ ।१६	स्वा. ३८ ।४	रा. ९ ।५८	धृ. १४ ।१६	तै. १४ ।२४	तुला	अहो.	९ ।२ ।४८ ।१३	२६ ।२०	६ ।४४	५ ।१६	२७	३	१७
१० बु.	३५ ।४०	रा. ६ ।००	वि. ३४ ।००	रा. ८ ।२०	शू. ६ ।२६	व. ८ ।३४	तु. २० ।१	दि. २ ।४४	९ ।३ ।४९ ।३२	२६ ।२१	६ ।४४	५ ।१६	२८	४	१८
११ बृ.	३० ।१२	सा. ६ ।४६	अ. ३० ।१२	सा. ६ ।४६	वृ. ५१ ।१८	ब. २ ।५६	वृश्चिक	अहो.	९ ।४ ।५० ।५१	२६ ।२२	६ ।४४	५ ।१६	२९	५	१९
१२ शु.	२५ ।१३	दि. ४ ।४८	ज्ये. २६ ।५८	सा. ५ ।३०	ध्रु. ४४ ।२५	तै. २५ ।१३	वृ. २६ ।५८	सा. ५ ।३०	९ ।५ ।५२ ।१०	२६ ।२३	६ ।४३	५ ।१७	३०	६	२०
१३ श.	२० ।५८	दि. ३ ।०६	मू. २४ ।२४	दि. ४ ।२६	व्या. ३८ ।८	व. २० ।५८	धनु	अहो.	९ ।६ ।५३ ।२६	२६ ।२४	६ ।४३	५ ।१७	१	७	२१
१४ र.	१७ ।३२	दि. १ ।४४	पूषा. २२ ।४१	दि. ३ ।४७	ह. ३२ ।३३	श. १७ ।३२	ध. ३७ ।३०	रा. ६ ।४३	९ ।७ ।५४ ।४३	२६ ।२७	६ ।४३	५ ।१७	२	८	२२
३० चं.	१५ ।८	दि. १२ ।४५	उषा. २१ ।५६	दि. ३ ।३०	ब. २७ ।४६	ना. १५ ।८	मकर	अहो.	९ ।८ ।५५ ।५७	२६ ।३०	६ ।४२	५ ।१८	३	९	२३

लक्ष्मणसंवत् ६०३ प्रारंभ, माघे **कमलास्नानं** महापुण्यप्रदम्, द. ति. १५ ।८ उ., (२) एको. ।
प्रीतियोगमानं ५५ ।८, **उत्तराषाढे रविः** ४२ ।४, द. ति. १३ ।५२ या., म. ४२ ।३८ उ., (३) एको. ।
श्रीभालचन्द्र ४ व्रतं, **गणेशावतारः**, श्रीगणेशपूजनं, म. ११ ।२४ या. ।
पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
षष्ठीमानं ५५ ।००, **मकरे रविः** ५८ ।३३ मु ३० फलं साम्यं, मासान्तः, सौम्यायनारंभः ५८ ।३३ उ., **शुद्धारंभः** ५८ ।३३ उपरि, म. ५८ ।३८ उ. ।
सौम्यायनसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. १२ मि. ० यावद्दिने, **पुण्याहः**, तिलसंक्रान्तिः, माघस्नानारंभः प्रयागे कल्पवासारंभः, श्रीरामानन्दाचार्यजयन्ती, म. २५ ।५३ या. ।
मासादिः, अपूपाष्टका । ×× कलियुगादिः, कलिगताब्दाः ५११३, कलिभोग्याब्दाः, ४२६८८७, सृष्टिगताब्दाः १९७२९४९११३ ×××
अन्वष्टका, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम् । × **सहस्राश्वमेधसमफलदं**, म., २० ।५८ उ. ४६ ।१५ या. ।
गण्डयोगमानं ५२ ।१७, **विवाहोऽनुराधायां**, भ. ८ ।३४ उ. ३५ ।४० या., पश्चिमयात्रानुराधायाम् ।
षट्तिला ११ व्रतं सर्वेषां, द. ति. ३० ।१२ उ., **विवाहोऽनुराधायां**, पश्चिमोत्तरयात्रैकादश्यां । ××× सृष्टिभोग्याब्दाः २३४७०५०८८७ ।
गोदुग्धेन पारणं, प्रदोष १३ व्रतं, द. ति. २५ ।१३ या., **विवाहो मूले**, उत्तरयात्रा त्रयोदश्यां ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा मूले ।
वक्री कुजः ४८ ।३६, मकरे बुधः ५६ ।३६, **प्रदोष** १४ व्रतं, नक्तव्रतं, **नरकनिवारण** १४ व्रतं प्रदोषः घं. ६ मि. ५३ यावद्रात्रौ शिवार्चनं×
।।००।।
माघी ३० मौनी ३० स्नानदानादिः **विवाहः** सायं घं. ५ मि. ८ उपरि, (३०—१) एको., **सोमवत्यमाव्रतं** दिवा घं. १२ मि. ४५ या., पूर्वां विना यात्रा श्रवणायां ××

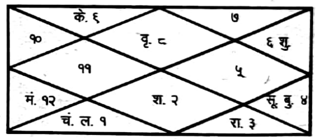
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ मं.	४ ।२६ ।१७ ।१०	८ ।१० ।३६ ।४२	० ।७ ।१५ ।५६	१० ।२ ।४२ ।५६	६ ।४ ।५२ ।१२	१ ।२० ।३८ ।३६
२ बु.	४ ।२६ ।२४ ।२६	८ ।१२ ।१६ ।२३	० ।७ ।१८ ।४२	१० ।३ ।५५ ।३६	६ ।४ ।५५ ।०१	१ ।२० ।३५ ।२५
३ बृ.	४ ।२६ ।३१ ।४८	८ ।१३ ।५६ ।४	० ।७ ।२१ ।२८	१० ।५ ।८ ।१६	६ ।४ ।५७ ।५०	१ ।२० ।३२ ।१४
४ शु.	४ ।२६ ।३६ ।०७	८ ।१५ ।३८ ।४४	० ।७ ।२४ ।१४	१० ।६ ।२० ।५६	६ ।५ ।० ।३६	१ ।२० ।२९ ।४
५ श.	४ ।२६ ।४६ ।२६	८ ।१७ ।१८ ।२४	० ।७ ।२७ ।००	१० ।७ ।३३ ।३६	६ ।५ ।३ ।२८	१ ।२० ।२५ ।५४
७ र.	४ ।२६ ।४९ ।२१	८ ।१९ ।३ ।०१	० ।७ ।३१ ।३३	१० ।८ ।४६ ।१	६ ।५ ।५ ।३४	१ ।२० ।२२ ।४३
८ चं.	४ ।२६ ।५२ ।१५	८ ।२० ।४७ ।३८	० ।७ ।३६ ।०६	१० ।९ ।५८ ।२३	६ ।५ ।७ ।४०	१ ।२० ।१९ ।३२
९ मं.	४ ।२६ ।५५ ।०९	८ ।२२ ।३२ ।१५	० ।७ ।४० ।३६	१० ।११ ।१० ।४५	६ ।५ ।९ ।४६	१ ।२० ।१६ ।२१
१० बु.	४ ।२६ ।५८ ।०३	८ ।२४ ।१६ ।५२	० ।७ ।४५ ।१२	१० ।१२ ।२३ ।०७	६ ।५ ।११ ।५२	१ ।२० ।१३ ।१०
११ बृ.	४ ।२७ ।० ।५७	८ ।२६ ।१ ।२९	० ।७ ।४९ ।४४	१० ।१३ ।३५ ।२९	६ ।५ ।१३ ।५८	१ ।२० ।९ ।५९
१२ शु.	४ ।२७ ।२ ।४५	८ ।२७ ।४६ ।५	० ।७ ।५४ ।१६	१० ।१४ ।४७ ।५०	६ ।५ ।१६ ।४	१ ।२० ।६ ।४९
१३ श.	४ ।२७ ।३ ।१८	८ ।२९ ।३० ।४१	० ।७ ।५८ ।४८	१० ।१६ ।० ।११	६ ।५ ।१८ ।०९	१ ।२० ।३ ।३९
१४ र.	४ ।२७ ।३ ।०७	९ ।१ ।१७ ।३८	० ।८ ।४ ।२४	१० ।१७ ।११ ।३०	६ ।५ ।१९ ।३०	१ ।२० ।० ।२८
३० चं.	४ ।२७ ।१ ।४५	९ ।३ ।४ ।३४	० ।८ ।१० ।००	१० ।१८ ।२२ ।४९	६ ।५ ।२० ।५१	१ ।१९ ।५७ ।१७

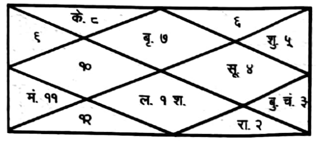
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	४३ ।५	१३ ।३०	१५ ।२६	१७ ।३६	१९ ।५७	२२ ।१३	० ।२८	२ ।४५	५ ।०२	७ ।७	८ ।५३	१० ।२४	११ ।५३
२ बु.	४३ ।६	१३ ।२६	१५ ।२२	१७ ।३५	१९ ।५३	२२ ।०६	० ।२४	२ ।४१	४ ।५८	७ ।३	८ ।४९	१० ।२०	११ ।४९
३ बृ.	४३ ।७	१३ ।२१	१५ ।१७	१७ ।३०	१९ ।४८	२२ ।०४	० ।१९	२ ।३६	४ ।५३	६ ।५८	८ ।४४	१० ।१५	११ ।४४
४ शु.	४३ ।७	१३ ।१७	१५ ।१३	१७ ।२६	१९ ।४४	२२ ।००	० ।१५	२ ।३२	४ ।४९	६ ।५४	८ ।४०	१० ।११	११ ।४०
५ श.	४३ ।७	१३ ।१२	१५ ।०८	१७ ।२१	१९ ।३९	२१ ।५५	० ।१०	२ ।२७	४ ।४४	६ ।४९	८ ।३५	१० ।६	११ ।३५
७ र.	४३ ।८	१३ ।०८	१५ ।०४	१७ ।१७	१९ ।३५	२१ ।५१	० ।०६	२ ।२३	४ ।४०	६ ।४५	८ ।३१	१० ।२	११ ।३१
८ चं.	४३ ।९	१३ ।०४	१५ ।००	१७ ।१३	१९ ।३१	२१ ।४७	० ।०२	२ ।१९	४ ।३६	६ ।४१	८ ।२७	९ ।५८	११ ।२७
९ मं.	४३ ।१०	१२ ।५६	१४ ।५५	१७ ।०८	१९ ।२६	२१ ।४२	२३ ।५७	२ ।१४	४ ।३१	६ ।३६	८ ।२२	९ ।५३	११ ।२२
१० बु.	४३ ।११	१२ ।५५	१४ ।५१	१७ ।०४	१९ ।२२	२१ ।३८	२३ ।५३	२ ।१०	४ ।२७	६ ।३२	८ ।१८	९ ।४९	११ ।१८
११ बृ.	४३ ।१२	१२ ।५१	१४ ।४७	१७ ।००	१९ ।१८	२१ ।३४	२३ ।४९	२ ।०६	४ ।२३	६ ।२८	८ ।१४	९ ।४५	११ ।१४
१२ शु.	४३ ।१२	१२ ।४७	१४ ।४३	१६ ।५६	१९ ।१४	२१ ।३०	२३ ।४५	२ ।०२	४ ।१९	६ ।२४	८ ।१०	९ ।४१	११ ।१०
१३ श.	४३ ।१२	१२ ।४३	१४ ।३९	१६ ।५२	१९ ।१०	२१ ।२६	२३ ।४१	१ ।५८	४ ।१५	६ ।२०	८ ।०६	९ ।३७	११ ।०६
१४ र.	४३ ।१४	१२ ।३९	१४ ।३५	१६ ।४८	१९ ।०६	२१ ।२२	२३ ।३७	१ ।५४	४ ।११	६ ।१६	८ ।२	९ ।३३	११ ।०२
३० चं.	४३ ।१६	१२ ।३४	१४ ।३०	१६ ।४३	१९ ।०१	२१ ।१७	२३ ।३२	१ ।४९	४ ।०६	६ ।११	७ ।५७	९ ।२८	१० ।५७

५ शनौ बल्ली ८ ।४८ ।४४ ।३६
अयनांशाः २२ ।४१ ।२७



१३ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४४ ।४३
अयनांशाः २२ ।४१ ।२८



विविधविषयाः—माघे प्रातः **स्नानफलम्**—यो माघमास्युषसि सूर्यकरान्विताभ्रे स्नानं समाचरति चारुनदीप्रवाहे। उद्धृत्य सप्तपुरुषान् पितृमातृवंश्यान् स्वर्गं प्रयात्यमरदेहधरो नरोऽसौ।। मकरार्के **प्रातः स्नानमन्त्रः**—मकरस्थे रवौ माघे गोविन्दाच्युत माधव। प्रातः स्नानेन मे देव यथोक्तफलदो भव।। दुःखदारिद्र्यनाशाय श्रीविष्णोस्तोषणाय च। प्रातः स्नानं करोम्यद्य माघे पापविनाशनम्।। माघे कुत्रापि **स्नानफलम्**—स्वर्गलोके चिरं वासो येषां मनसि वर्त्तते। यत्र क्वापि जले तैस्तु स्नातव्यं मृगभास्करे। चतुर्थ्यां **गणेशोत्पत्तिः**—सर्वदेवमयः साक्षात्सर्वमंगलकारकः। माघकृष्णचतुर्थ्यान्तु प्रादुर्भूतो गणाधिपः।। तत्र गणेशं यथोपचारैः संपूज्य रात्रौ व्रतपूर्वकं जागरणं कृत्वा प्रातर्ब्राह्मणान् भोजयेत्, मोदकादिकं च दद्यात्। चतुर्दश्यां **नरकनिवारणचतुर्दशीव्रतम्**—चतुर्दशीसमं नास्ति व्रतं पापक्षयापहम्। यत्कृत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते नात्र संशयः।। अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च। प्राप्नोति तत्फलं सर्वं नात्र कार्या विचारणा।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः १३ तो वक्री, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गिणौ पूर्वोदितौ गुरुशनी, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे शीतवृद्धिहिमपातवायवस्तदुत्तरार्द्धभागे मन्दवायु—मेघच्छायाशीतादयः ।

माघशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. २४।१।१२ ई. तः दि. ७।२।१२ ई. या., पूर्व कालः । मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोल, सौम्यायनम् ।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ मं.	१३।५५	दि. १२।१५	श्र. २२।२७	दि. ३।४०	सि. २४।००	ब. १३।५५	म. ५३।१६	रा. ४।०१	६।६।५७।११	२६।३३	६।४१	५।१६	४	१०	२४
२ बु.	१३।५८	दि. १२।१६	ध. २४।१०	दि. ४।२१	व्य. २१।१३	कौ. १३।५८	कुम्भ	अहो.	६।१०।५८।२५	२६।३६	६।४१	५।१६	५	११	२५
३ बृ.	१५।२२	दि. १२।४६	श. २७।६	सा. ५।३२	व. १६।२५	ग. १५।२२	कुम्भ	अहो.	६।११।५६।३८	२६।३६	६।४०	५।२०	६	१२	२६
४ शु.	१७।५७	दि. १।५१	पू.भा. ३१।१७	रा. ७।११	प. १८।३४	वि. १७।५७	कु. १५।१५	दि. १२।४६	६।१३।०।५१	२६।४२	६।४०	५।२०	७	१३	२७
५ श.	२१।४४	दि. ३।२१	उ.भा. ३६।३१	रा. ६।१५	शि. १८।३५	बा. २१।४४	मीन	अहो.	६।१४।२।४	२६।४६	६।३६	५।२१	८	१४	२८
६ र.	२६।२३	सा. ५।११	रे. ४२।२६	रा. ११।३८	सि. १६।१६	तै. २६।२३	मी. ४२।२६	रा. ११।३८	६।१५।३।१०	२६।५०	६।३८	५।२२	६	१५	२६
७ चं.	३१।४०	रा. ७।१७	अ. ४८।५७	रा. २।१२	सा. २०।३०	ब. ३१।४०	मेष	अहो.	६।१६।४।१६	२६।५३	६।३७	५।२३	१०	१६	३०
८ मं.	३७।८	रा. ६।२८	भ. ५५।२६	रा. ४।४६	शुभ २१।५४	वि. ४।२४	मेष	अहो.	६।१७।५।२२	२६।५६	६।३७	५।२३	११	१७	३१
६ बु.	४२।२०	रा. ११।३२	कृ. ६०।००	अहो.	शुक्ल २३।१०	बा. ६।४४	मे. १२।०२	दि. ११।२५	६।१८।६।२८	२६।५६	६।३६	५।२४	१२	१८	१
१० बृ.	४६।५३	रा. १।२१	कृ. १।४०	दि. ७।१६	ब्र. २३।५८	तै. १४।३७	वृष	अहो.	६।१६।७।३३	२७।२	६।३६	५।२४	१३	१६	२
११ शु.	५०।२७	रा. २।४६	रो. ७।८	दि. ६।२६	ऐं. २४।१३	व. १८।४०	वृ. ३६।२२	रा. १०।२०	६।२०।८।३८	२७।५	६।३५	५।२५	१४	२०	३
१२ श.	५२।५३	रा. ३।४३	मृ. ११।३५	दि. ११।१२	वै. २३।३३	ब. २१।४०	मिथुन	अहो.	६।२१।६।४३	२७।८	६।३४	५।२६	१५	२१	४
१३ र.	५४।०१	रा. ४।१०	आ. १४।५६	दि. १२।३२	वि. २२।४	कौ. २३।२७	मिथुन	अहो.	६।२२।१०।४०	२७।१२	६।३४	५।२६	१६	२२	५
१४ चं.	५३।५०	रा. ४।५	पुन. १७।००	दि. १।२१	प्री. १६।३०	ग. २३।५६	मि. १।२६	प्रा. ७।६	६।२३।११।३७	२७।१६	६।३३	५।२७	१७	२३	६
१५ मं.	५२।२४	रा. ३।३०	पुष्य १७।४८	दि. १।३६	आ. १५।५६	वि. २३।०७	कर्क	अहो.	६।२४।१२।३४	२७।२०	६।३२	५।२८	१८	२४	७

श्रवणायां रविः ४६।४, चन्द्रदर्शनं मु. ३० सौम्यशृंगफलं समर्घं, शिशिरनवरात्रारंभः **कलशस्थापनं** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, **पञ्चकारंभो** दिने घं. ३ मि. ४० उ. × पश्चिमयात्रा द्वितीयायां, **विवाहो** धनिष्ठायां, देवादिप्रतिष्ठा, **मुण्डनं** कर्णवेधः वापीकूपखननं (३) एको. ।

श्रीगणेश ४ व्रतं, **त्रिषष्टिगणतन्त्रदिवसः** राष्ट्रियध्वजोत्तोलनपूर्वकराष्ट्रगानं, देवादिप्रतिष्ठा मुण्डनञ्च तृतीयायाम् बदरी३, कुन्दकुसुमे ××

विवाह उत्तरभाद्रे, भ. १७।५७ या., उत्तरयात्रा मीनगतचन्द्रे पूर्वभाद्रे । ×× पार्वतीपूजनं, भ. ४६।४० उ., तडागकूपखननं तृतीयायां (४) एको. ।

वसन्तपञ्चमी **श्रीसरस्वतीपूजनं** पश्चिमोत्तराभिमुखहलप्रवाहः दीक्षाग्रहणं, पश्चिमोत्तरयात्रा रेवत्यां, (५) एको., ■ अष्टम्यामश्विन्याम् ।

विवाहो दिवा घं. २ मि. ४८ उपरि रात्रौ घं. ११ मि. ३८ या., कुजवेधाद्विवाहो नैवाश्विन्यां, देवादिप्रतिष्ठा, उत्तरयात्रा सप्तम्यां रेवत्यां ततः **पश्चिमां** ×××

ब्रह्मसावर्णिमन्वादिः, **अचला** ७ अरुणोदये स्नानं सूर्यग्रहणसमं गंगायां शतसूर्यग्रहणसमं प्रयागे च कोटिसूर्यग्रहणसमफलदं, कुजवेधाद्विवाहो ।○

भीष्माष्टमी, भीष्मतर्पणं दीक्षाग्रहणं, भ. ४।२४ या. । × उत्तरां विना यात्रा द्वितीयायां श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमयात्रा, (२) एको ।

फरवरी२, दीक्षाग्रहणं । ♐ भ. १८।४० उ. ५०।२७ या., तडागकूपवापीखननं, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां ततः पश्चिमां विना यात्रैकादश्याम् ।

मीने शुक्रः ४१।१६, **उपनयनं, विवाहो** रोहिण्यां, देवादिप्रतिष्ठा तडागकूपवापीखननं पूर्वयात्रा च रोहिण्याम् ।

भैमी ११ व्रतं सर्वेषां, **उपनयनं,** एकादशी व्रतोद्यापनं, द. ति. ५०।२७ उ., **विवाह** एकादश्यां, देवादिप्रतिष्ठा, मुण्डनं कर्णवेधश्च मृगशिरसि ♐

श्रीमाधव १२ गोदुग्धेन पारणं, द. ति., ५२।५३ या. । ○ नैवाश्विन्यां देवादिप्रतिष्ठा, **मुण्डनं,** कर्णवेधः, भ. ३१।४० उ., पूर्वां विना यात्रा ■

प्रदोष १३ व्रतं, दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ त्रयोदश्याम् ।××× विना यात्राश्विन्यां, **पञ्चकान्तो** रात्रौ घं. ११ मि. ३८ उपरि ।

धनिष्ठायां रविः ५१।५३, प्रदोष १४ व्रतं, भ. ५३।५० उ., पूर्वां विना यात्रा पूर्णिमायाम् ।❖ भ. २३।७ या., वक्री शनिः १५।६ ।

माघी १५ स्नानदानादि, गोशालाघट्टे **कमलायां** जीवछघट्टे **जीववत्सायाञ्च** स्नानदानशिवार्चनादिकं, **श्रीरविदासजयन्ती,** उत्तरां विना यात्रा पुष्ये, ❖

मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

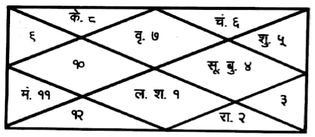
ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ मं.	४।२६।५८।२८	६।४।५१।३०	०।८।१५।३६	१०।१६।३४।८	६।५।२२।१२	१।१६।५४।६
२ बु.	४।२६।५५।११	६।६।३८।२६	०।८।२१।१२	१०।२०।४५।२७	६।५।२३।३३	१।१६।५०।५५
३ बृ.	४।२६।५१।५३	६।८।२५।२२	०।८।२६।४८	१०।२१।५६।४६	६।५।२४।५४	१।१६।४७।४४
४ शु.	४।२६।४८।३५	६।१०।१२।१८	०।८।३२।२३	१०।२३।८।५	६।५।२६।१५	१।१६।४४।३४
५ श.	४।२६।४५।१७	६।११।५६।१४	०।८।३७।५८	१०।२४।१६।२३	६।५।२७।३५	१।१६।४१।२४
६ र.	४।२६।३६।४३	६।१३।५५।२०	०।८।४४।४६	१०।२५।३०।२४	६।५।२८।३०	१।१६।३८।१३
७ चं.	४।२६।२८।०६	६।१५।३१।२६	०।८।५१।४०	१०।२६।४१।२५	६।५।२६।२५	१।१६।३५।०२
८ मं.	४।२६।१६।३५	६।१७।१७।३२	०।८।५८।३१	१०।२७।५२।२६	६।५।३०।२०	१।१६।३१।५१
६ बु.	४।२६।११।०१	६।१६।०३।३८	०।६।०५।२२	१०।२६।३।२७	६।५।३१।१५	१।१६।२८।४०
१० बृ.	४।२६।२।२८	६।२०।४६।४४	०।६।१२।१३	११।०।१४।२८	६।५।३२।०६	१।१६।२५।२६
११ शु.	४।२५।५३।५५	६।२२।३५।५०	०।६।१६।४	११।१।२५।२६	६।५।३३।०३	१।१६।२२।१६
१२ श.	४।२५।४५।२२	६।२४।२१।५६	०।६।२५।५४	११।२।३६।२६	६।५।३३।५७	१।१६।१६।०६
१३ र.	४।२५।३१।३०	६।२६।४।२२	०।६।३३।५८	११।३।४६।३२	६।५।३४।१२	१।१६।१५।५८
१४ चं.	४।२५।१७।३६	६।२७।४६।४८	०।६।४२।०२	११।४।५६।३५	६।५।३४।१६	१।१६।१२।४७
१५ मं.	४।२५।३।४८	६।२६।२६।१४	०।६।५०।५	११।६।६।३८	६।५।३४।१४	१।१६।६।३६

दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	४३।१८	१२।३०	१४।२६	१६।३६	१८।५७	२१।१३	२३।२८	१।४५	४।०२	६।०७	७।५३	६।२४	१०।५३
२ बु.	४३।२०	१२।२६	१४।२२	१६।३५	१८।५३	२१।०६	२३।२४	१।४१	३।५८	६।०३	७।४६	६।२०	१०।४६
३ बृ.	४३।२१	१२।२२	१४।१८	१६।३१	१८।४६	२१।०५	२३।२०	१।३७	३।५४	५।५६	७।४५	६।१६	१०।४५
४ शु.	४३।२२	१२।१८	१४।१४	१६।२७	१८।४५	२१।०१	२३।१६	१।३३	३।५०	५।५५	७।४१	६।१२	१०।४१
५ श.	४३।२३	१२।१४	१४।१०	१६।२३	१८।४१	२०।५७	२३।१२	१।२६	३।४६	५।५१	७।३७	६।०८	१०।३७
६ र.	४३।२५	१२।०६	१४।०५	१६।१८	१८।३६	२०।५२	२३।०७	१।२४	३।४१	५।४६	७।३२	६।०३	१०।३२
७ चं.	४३।२७	१२।०५	१४।०१	१६।१४	१८।३२	२०।४८	२३।०३	१।२०	३।३७	५।४२	७।२८	८।५६	१०।२८
८ मं.	४३।२६	१२।०१	१३।५७	१६।१०	१८।२८	२०।४४	२२।५६	१।१६	३।३३	५।३८	७।२४	८।५५	१०।२४
६ बु.	४३।३१	११।५७	१३।५३	१६।०६	१८।२४	२०।४०	२२।५५	१।१२	३।२६	५।३४	७।२०	८।५१	१०।२०
१० बृ.	४३।३२	११।५३	१३।४६	१६।०२	१८।२०	२०।३६	२२।५१	१।०८	३।२५	५।३०	७।१६	८।४७	१०।१६
११ शु.	४३।३३	११।४६	१३।४५	१५।५८	१८।१६	२०।३२	२२।४७	१।०४	३।२१	५।२६	७।१२	८।४३	१०।१२
१२ श.	४३।३४	११।४५	१३।४१	१५।५४	१८।१२	२०।२८	२२।४३	१।००	३।१७	५।२२	७।८	८।३६	१०।०८
१३ र.	४३।३६	११।४०	१३।३६	१५।४६	१८।०७	२०।२३	२२।३८	०।५५	३।१२	५।१७	७।३	८।३४	१०।०३
१४ चं.	४३।३८	११।३६	१३।३२	१५।४५	१८।०३	२०।१६	२२।३४	०।५१	३।०८	५।१३	६।५६	८।३०	६।५६
१५ मं.	४३।४०	११।३२	१३।२८	१५।४१	१७।५६	२०।१५	२२।३०	०।४७	३।०४	५।०६	६।५५	८।२६	६।५५

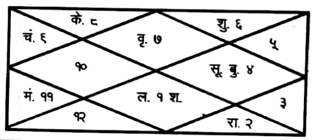
५ शनौ बल्ली ८।३८।४४।५०

अयनांशाः २२।४१।२६



१२ शनौ बल्ली ८।३८।४४।५७

अयनांशाः २२।४१।३०



विविधविषयाः—अचलासप्तम्यां सप्तार्कवदरीपत्राणि शिरसि निधाय मौनी सन् स्नायात्तत्र स्नानमन्त्रः—यद्यज्जन्मकृतं पापं मया सप्तसु जन्मसु। तन्मे रोगञ्च शोकञ्च माकरी हन्तु सप्तमी।। एतज्जन्मकृतं पापं यच्च जन्मान्तरार्जितम्। मनोवाक्कायजं यच्च ज्ञाताज्ञातञ्च यत्पुनः।। इति सप्तविधं पापं स्नानान्मे सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि हर माकरि सप्तमि।। ततः सूर्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः—सप्तसप्तेरहः प्रीते सप्तलोकप्रदीपन। सप्तमीसहितो देव गृहाणार्घ्यं दिवाकर।। ततः प्रणमेच्च **तन्मन्त्रः**—जननी सर्वलोकानां सप्तमी सप्तसप्तिके। सप्तव्याहृतिके देवि नमस्ते सूर्यमूर्त्तये।। ततो दानादिकं कुर्यात्। अष्टम्यां **भीष्मतर्पणमन्त्रः**—वैयाघ्रपादगोत्राय सांकृतिप्रवराय च। अपुत्राय ददाम्येतत्सलिलं भीष्मवर्मणे। वसूनामवताराय शन्तनोरात्मजाय च। अर्घ्यं ददामि भीष्माय आबालब्रह्मचारिणे।। भीष्मः शान्तनवो वीरः सत्यवादी जितेन्द्रियः। आभिरद्भिरवाप्नोतु पुत्रपौत्रोचितां क्रियाम्।। अनेन सन्ततिलाभः संवत्सरकृतपापक्षयश्च। इदं जीवत्पित्रापि कर्त्तव्यम् ।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदित शुक्रः, मार्गी पूर्वोदितः शनिः १५ तो वक्री।

वातावरणम्—पक्षस्याद्यन्तभागयोः हिमपातशीतवृद्धिवायुचारादयस्तन्मध्यभागे तापवायुमेघचारादयः।

फाल्गुनकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. ८।०२।१२ ई. तः दि. २१।०२।१२ ई. या., पूर्व कालः, ६तो दक्षिणेकालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः सौम्यायनम् ।

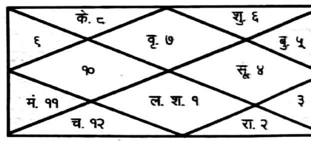
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	४६।४६	रा. २।२७	आश्ले. १७।२५	दि. १।२६	सौ. ११।२७	बा. २१।७	क. १७।२५	दि. १।२६	६।२५।१३।३१	२७।२३	६।३१	५।२६	१९	२५	८
२ बृ.	४६।१३	रा. १।००	म. १५।५६	दि. १२।५३	शो. ६।६	तै. १८।१	सिंह	अहो.	६।२६।१४।२८	२७।२६	६।३१	५।२६	२०	२६	९
३ शु.	४१।४६	रा. ११।१४	पू.फा. १३।४१	दि. ११।५८	अगं. १।००	व. १४।१	सिं. २७।५५	सा. ५।४०	६।२७।१५।२५	२७।२९	६।३०	५।३०	२१	२७	१०
४ श.	३६।४७	रा. ६।१३	उ.फा. १०।३६	दि. १०।४४	घृ. ४५।५७	ब. ६।१८	कन्या	अहो.	६।२८।१६।२२	२७।३२	६।३०	५।३०	२२	२८	११
५ र.	३१।११	रा. ६।५७	ह. ७।१	दि. ६।१७	शू. ३८।१६	कौ. ३।५६	कं. ३५।०२	रा. ८।३०	६।२९।१७।८	२७।३६	६।२९	५।३१	२३	२९	१२
६ चं.	२५।२१	दि. ४।३६	चि. ३।२	दि. ७।४१	गं. ३०।३३	व. २५।२१	तुला	अहो.	१०।०।१७।५३	२७।३६	६।२८	५।३२	२४	१	१३
७ मं.	१९।२७	दि. २।१५	वि. ५४।४६	रा. ४।२२	वृ. २२।४०	ब. १९।२७	तु. ४०।४७	रा. १०।५१	१०।१।१८।३८	२७।४२	६।२८	५।३२	२५	२	१४
८ बु.	१३।४२	दि. ११।५६	अ. ५०।५६	रा. २।४६	धु. १४।५६	कौ. १३।४२	वृश्चिक	अहो.	१०।२।१९।२३	२७।४५	६।२७	५।३३	२६	३	१५
९ बृ.	८।१५	दि. ९।४४	ज्ये. ४७।३३	रा १।२७	व्या. ७।२९	ग. ८।१५	वृ. ४७।३३	रा. १।२७	१०।३।२०।८	२७।४८	६।२६	५।३४	२७	४	१६
१० शु.	३।२०	दि. ७।४६	मू. ४४।४८	रा. १२।२१	ह. ००।२६	वि. ३।२०	धनु	अहो.	१०।४।२०।५३	२७।५१	६।२६	५।३४	२८	५	१७
१२ श.	५५।४२	रा. ४।४२	पूषा. ४२।५८	रा. ११।३६	सि. ४८।१३	कौ. २७।२४	ध. ५७।४४	रा. ५।३१	१०।५।२१।३८	२७।५४	६।२५	५।३५	२९	६	१८
१३ र.	५३।२१	रा. ३।४४	उषा. ४२।१	रा. ११।१२	व्य. ४३।१६	ग. २४।३२	मकर	अहो.	१०।६।२२।१२	२७।५८	६।२४	५।३६	३०	७	१९
१४ चं.	५२।१४	रा. ३।१८	श्र. ४२।१३	रा. ११।१७	व. ३६।११	वि. २२।४८	मकर	अहो.	१०।७।२२।४६	२८।२	६।२४	५।३६	१	८	२०
३० मं.	५२।२१	रा. ३।१९	ध. ४३।३६	रा. ११।५१	प. ३६।६	च. २२।१८	म. १२।५६	दि. ११।३३	१०।८।२३।२०	२८।६	६।२३	५।३७	२	९	२१

कुंभे बुधः १।४१, फाल्गुने **वाङ्मतीस्नानं** महापुण्यप्रदं, **विवाहो** मघायाम् ।
विवाहो मघायां, पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
सुकर्मायोगमानं ५२।१५, पश्चिमोदितो बुधः १६।३, **विवाहस्तृतीयायामुत्तरफल्गुन्यां,** म. १४।१ उ. ४१।४६ या., पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
श्रीहेरम्ब ४ व्रतं, दक्षिणयात्रा चतुर्थ्यां हस्ते ।
मासान्तः । × श्रवणायां, म. ५३।२१ उपरि ।
स्वातीमानं ५५।४८, **कुंभे रविः** २५।५० मु. १५ फलं महार्घं **विष्णुपदीसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १ मि. ३६ उपरि दिने, **पुण्याहः,** म. २५।२१ उ., ५२।२४ या।
मासादिः । ×× **विवाहोत्सवः,** श्रीरावणेश्वरवैद्यनाथसिंहेश्वरनाथयोः प्रतिष्ठादिनं, **सिंहेश्वरमेलापकः, पञ्चकारंभो** रात्रौ घं. ११ मि. १७ उ., म. २२।४८ या. ।
शाकाष्टका, अन्वष्टका, विवाहोऽष्टम्याम्, (८—९) एकोद्दिष्टम् ।
विवाहो मूले, म. ३५।४८ उ., पश्चिमोत्तरयात्रा दशम्यां ज्येष्ठायां ततः पूर्वोत्तरयात्रा मूले ।
एकादशीमानाम् ५५।४६, वज्रयोगमानं ५३।३२, **विजया** ११ व्रतं स्मार्तानां, **विवाहो मूले,** म. ३।२० या., पूर्वोत्तरयात्रा दशम्येकादश्योः ।
गोदध्ना पारणं, वैष्णवानां विजया ११ व्रतं, उत्तरयात्रा पूर्वाषाढे ।
प्रदोष १३ व्रतं, **विवाहः** सायं घं. ५ मि. ६ यावत्ततः केतुवेधाद्विवाहो मध्यमो रात्रौ घं. १२ मि ४८ यावत्ततो विवाहस्त्रयोदश्यां, पश्चिमां विना यात्रा त्रयोदश्यां ×
शतभिषायां रविः १।३७, **प्रदोष** १४ व्रतं, नक्तव्रतं, **महाशिवरात्रिव्रतं** प्रदोषे घं. ७ मि. १२ यावद्रात्रौ शिवार्चनं सहस्राश्वमेधसमफलदं, श्रीशिवदर्शनं, **श्रीगौरीशंकर** ××
फाल्गुनी ३० गोसहस्रिका ३० स्नानदानादिः, **भौमामायां** गंगास्नानं कोटिसूर्यग्रहणसमफलदम् ।

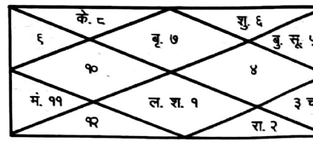
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	४।२४।४६।५७	१०।१।११।४०	०।९।५८।८	११।७।१६।४१	६।५।३३।४३	१।१९।६।२५	४३।४२	११।२८	१३।२४	१५।३७	१७।५५	२०।११	२२।२६	०।४३	३।००	५।०५	६।५१	८।२२	६।५१
२ बृ.	४।२४।३६।६	१०।२।५४।६	०।१०।६।११	११।८।२६।४३	६।५।३२।५६	१।१९।३।१४	४३।४४	११।२४	१३।२०	१५।३३	१७।५१	२०।०७	२२।२२	०।३९	२।५६	५।०१	६।४७	८।१८	६।४७
३ शु.	४।२४।२२।१५	१०।४।३६।३१	०।१०।१४।१४	११।९।३६।४५	६।५।३२।९	१।१९।०।०३	४३।४५	११।२०	१३।१६	१५।२९	१७।४७	२०।०३	२२।१८	०।३५	२।५२	४।५७	६।४३	८।१४	६।४३
४ श.	४।२४।८।२४	१०।६।१८।५६	०।१०।२२।१७	११।१०।४६।४७	६।५।३१।२१	१।१८।५६।५३	४३।४६	११।१५	१३।११	१५।२४	१७।४२	१९।५८	२२।१३	०।३०	२।४७	४।५२	६।३८	८।०९	६।३८
५ र.	४।२३।५०।०४	१०।७।५४।३२	०।१०।३१।१८	११।११।५५।५८	६।५।३०।३७	१।१८।५३।४२	४३।४८	११।११	१३।०७	१५।२०	१७।३८	१९।५४	२२।०९	०।२६	२।४३	४।४८	६।३४	८।०५	६।३४
६ चं.	४।२३।३१।४५	१०।९।३०।०७	०।१०।४०।१९	११।१३।५।८	६।५।२९।५३	१।१८।५०।३१	४३।५०	११।०७	१३।०३	१५।१९	१७।३४	१९।५०	२२।०५	०।२२	२।३९	४।४४	६।३०	८।०१	६।३०
७ मं.	४।२३।१३।२९	१०।११।५।४२	०।१०।४९।२०	११।१४।१४।१८	६।५।२९।९	१।१८।४७।२०	४३।५२	११।०३	१२।५९	१५।१२	१७।३०	१९।४६	२२।०१	०।१८	२।३५	४।४०	६।२६	७।५७	६।२६
८ बु.	४।२२।५५।७	१०।१२।४१।१७	०।१०।५८।२१	११।१५।२३।२८	६।५।२८।२४	१।१८।४४।९	४३।५४	१०।५९	१२।५५	१५।०८	१७।२६	१९।४२	२१।५७	०।१४	२।३१	४।३६	६।२२	७।५३	६।२२
९ बृ.	४।२२।३६।४८	१०।१४।१६।५२	०।११।७।२२	११।१६।३२।३८	६।५।२७।३९	१।१८।४०।५८	४३।५५	१०।५५	१२।५१	१५।०४	१७।२२	१९।३८	२१।५३	०।१०	२।२७	४।३२	६।१८	७।४९	६।१८
१० शु.	४।२२।१८।२९	१०।१५।५२।२७	०।११।१६।२३	११।१७।४१।४८	६।५।२६।५४	१।१८।३७।४८	४३।५६	१०।५२	१२।४८	१५।०१	१७।१९	१९।३५	२१।५०	०।०७	२।२४	४।२९	६।१५	७।४६	६।१५
१२ श.	४।२२।०।१०	१०।१७।२८।२	०।११।२५।२४	११।१८।५०।५८	६।५।२६।९	१।१८।३४।३८	४३।५७	१०।४८	१२।४४	१४।५७	१७।१५	१९।३१	२१।४६	०।०३	२।२०	४।२५	६।११	७।४२	६।११
१३ र.	४।२१।३८।२१	१०।१८।५१।२८	०।११।३५।१९	११।१९।५८।४८	६।५।२४।३०	१।१८।३१।२७	४३।५९	१०।४४	१२।४०	१४।५३	१७।११	१९।२७	२१।४२	२३।५९	२।१६	४।२१	६।०७	७।३८	६।०७
१४ चं.	४।२१।१९।३२	१०।२०।१४।५४	०।११।४५।१४	११।२१।६।३८	६।५।२२।५१	१।१८।२८।१९	४४।१	१०।४०	१२।३६	१४।४९	१७।०७	१९।२३	२१।३८	२३।५५	२।१२	४।१७	६।०३	७।३४	६।०३
३० मं.	४।२०।५४।४३	१०।२१।३८।२०	०।११।५५।९	११।२२।१४।२८	६।५।२१।१२	१।१८।२५।५	४४।३	१०।३६	१२।३२	१४।५५	१७।०३	१९।१९	२१।३४	२३।५१	२।०८	४।१३	५।५९	७।३०	८।५९

४ शनौ बल्ली ८।३८।४५।४
अयनांशाः २२।४१।३१



१२ शनौ बल्ली ८।३८।४५।११
अयनांशाः २२।४१।३२



विविधविषयाः—माघफाल्गुनकृष्णचतुर्दश्यां शिवरात्रिव्रतं तन्माहात्म्यञ्च **ब्रह्माद्रिखण्डे**— माघफाल्गुनयोर्मध्ये कृष्णा या च चतुर्दशी । दत्ते शिवः फलं यस्मात्तेन सर्वसुरासुरैः ।। शिवरात्रिरिति ख्याता मत्कलेव पृथक् स्थिता ।। तथा च उपवासं करिष्यन्ति जागरणेन समन्वितम् । यथोक्तशास्त्रमार्गेण तेषां मोक्षो न संशयः ।। वर्षे वर्षे महादेवि नित्यं भक्त्या प्रपूजयेत् । अर्णवो यदि वा सूर्यश्छाद्यते हिमवानपि ।। चलन्त्येते कदाचिद्वै निश्चलं च शिवव्रतम् ।। **गंगासागरसंगमस्नानमन्त्रः**— त्वमग्निर्द्विपदां नाथ रेतोधाः कामदीपन । प्रधानः सर्वभूतानां जीवानां प्रभुरव्ययः । अमृतस्यारणिस्त्वं हि देवयोनिरपांपते । वृजिनं हर मे सर्वं तीर्थराज नमोऽस्तुते । **गंगास्नानमन्त्रः**—ब्रह्मस्वरूपे हे गंगे स्नानमाचर्यते मया । त्वदीये निर्मले तोये यथोक्तफलदा भव । गंगामाहात्म्यं, विष्णुपुराणे—गंगा गंगेति यन्नाम योजनानां शतैरपि । स्थितैरुच्चरितं हन्ति पापं जन्मत्रयार्जितम् । पुनश्च इदं हि गाङ्गं त्यजतामिहाङ्गं पुनर्न चाङ्गं यदि वापि चाङ्गम् । याने विहङ्गं शयने भुजंगं करे स्थाङ्गं चरणेऽपि गाङ्गम् ।

ग्रहस्थितिः—वक्रिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ३ तः पश्चिमोदितः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः हिमोपलपातच्छिन्नमन्दवृष्टि—शीतादयस्तन्मध्यभागे मेघचारवाततापादयः ।

फाल्गुनशुक्लपक्षः

शकाब्दः १९३३, संवत् २०६८, सन् १४१९ साल, दि. २२।२।१२ ई. तः दि. ८।३।१२ ई. या., दक्षिणे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

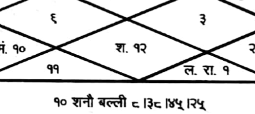
तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ बु.	५३।५०	रा. ३।५४	श. ४६।२१	रा. १२।५४	शि. ३४।२	किं. २३।०६	कुम्भ	अहो.	१०।६।२३।५४	२८।१०	६।२२	५।३८	३	१०	२२
२ बृ.	५६।२६	रा. ४।५७	पू.भा. ५०।१४	रा. २।२७	सि. ३३।१	बा. २५।१०	कु. ३४।१५	रा. ८।०३	१०।१०।२४।२७	२८।१४	६।२१	५।३६	४	११	२३
३ शु.	६०।००	अहो.	उ.भा. ५५।१५	रा. ४।२७	सा. ३२।५१	तै. २८।१६	मीन	अहो.	१०।११।२५।००	२८।१७	६।२१	५।३६	५	१२	२४
३ श.	००।१८	दि. ६।२७	रे. ६०।००	अहो.	शुभः ३३।२५	ग. ००।१८	मीन	अहो.	१०।१२।२५।३३	२८।२०	६।२०	५।४०	६	१३	२५
४ र.	४।५७	दि. ८।१८	रे. १।६	दि. ६।४५	शुक्ल. ३४।३३	वि. ०४।५७	मी. १।६	दि. ६।४५	१०।१३।२५।५४	२८।२४	६।१६	५।४१	७	१४	२६
५ चं.	१०।१२	दि. १०।२३	अ. ७।३१	दि. ६।१८	ब्र. ३५।५६	बा. १०।१२	मेष	अहो.	१०।१४।२६।१५	२८।२८	६।१८	५।४२	८	१५	२७
६ मं.	१५।३८	दि. १२।३३	भ. १४।५	दि. ११।५६	ऐ. ३७।२४	तै. १५।३८	मे. ३०।३६	सा. ६।३४	१०।१५।२६।३६	२८।३२	६।१८	५।४२	९	१६	२८
७ बु.	२०।४४	दि. २।३५	कृ. २०।२५	दि. २।२७	वै. ३८।२८	व. २०।४४	वृष	अहो.	१०।१६।२६।५७	२८।३६	६।१७	५।४३	१०	१७	२९
८ बृ.	२५।१०	दि. ४।२०	रो. २६।४	दि. ४।४२	वि. ३८।५८	ब. २५।१०	वृ. ५८।२६	रा. ५।३८	१०।१७।२७।१८	२८।४०	६।१६	५।४४	११	१८	१
९ शु.	२८।३८	सा. ५।४२	मृ. ३०।४७	सा. ६।३४	प्री. ३८।४०	कौ. २८।३८	मिथुन	अहो.	१०।१८।२७।३६	२८।४४	६।१५	५।४५	१२	१९	२
१० श.	३०।५८	रा. ६।३७	आ. ३४।२४	रा. ८।००	आ. ३७।३६	ग. ३०।५८	मिथुन	अहो.	१०।१९।२७।५६	२८।४८	६।१४	५।४६	१३	२०	३
११ र.	३१।५६	रा. ७।००	पुन. ३६।४७	रा. ८।५७	सौ. ३५।१६	व. १।२७	मि. २१।१२	दि. २।४३	१०।२०।२८।६	२८।५२	६।१४	५।४६	१४	२१	४
१२ च.	३१।३४	रा. ६।५१	पुष्य ३७।५०	रा. ६।२१	शो. ३२।७	व. १।४५	कर्क	अहो.	१०।२१।२८।१३	२८।५६	६।१३	५।४७	१५	२२	५
१३ मं.	२६।५६	सा. ६।१२	आश्ले. ३७।४३	रा. ६।१७	अग. २७।५०	कौ. ०।४७	क. ३७।४३	रा. ६।१७	१०।२२।२८।२०	२९।००	६।१२	५।४८	१६	२३	६
१४ बु.	२७।१६	दि. ५।५	म. ३६।२६	रा. ८।४७	सु. २२।५४	व. २७।१६	सिंह	अहो.	१०।२३।२८।२७	२९।४	६।११	५।४९	१७	२४	७
१५ बृ.	२३।३४	दि. ३।३६	पूफा. ३४।२६	रा. ७।५६	घृ. १७।२	ब. २३।३४	सिं. ४८।४२	रा. १।३६	१०।२४।२८।३४	२९।८	६।१०	५।५०	१८	२५	८

कल्याणेश्वराज्जनकपुरपरिक्रमारंभः, श्रीरामकृष्णजयन्ती, **द्विरागमनं** शतभिषायां, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे ।
चन्द्रदर्शनं मु. ३० समशृंगफलं साम्यं, विवाह उत्तरभाद्रे, द्विरागमनमुत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा कुंभस्थे चन्द्रे तत उत्तरपश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे ।
त्र्यहोजन्मदिनकृत्यं, **उपनयनं, विवाहो** दिवारात्रौ, **द्विरागमनं,** देवादिप्रतिष्ठा, तडागकूपखननं, उत्तरयात्रा रेवत्याम् ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, द. ति. ०।१८ उ., म. ३२।३८ उ. । × पूर्वफल्गुन्यां, श्रीचैतन्यमहाप्रभुजयन्ती । (??) पञ्चम्यां म. ४।५७ या., पश्चिमां विना **यात्रा पञ्चम्याम्**।
पञ्चकान्तो दिवा घं. ६ मि. ४५ उ., द. ति. ४।५७ या., **उपनयनं** पञ्चम्यां, कुजवेधाद्विवाहो नैवाश्विन्यां, **द्विरागमनं** पञ्चम्यां देवदिप्रतिष्ठा (??)
द्विरागमनं **देवादिप्रतिष्ठा मुण्डनं कर्णवेधः** पूर्वां विना यात्रा चाश्विन्याम् ।
मीने **बुधः** २४।१३, अश्विन्यां मेषे शुक्र ३६।४८, (७) एको. । ■ **गृहारंभप्रवेशौ** पुष्ये, पूर्वां विना यात्रा त्रयोदश्यां पुष्ये ।
विवाहो रोहिण्यां, **द्विरागमनं** सप्तम्यां रोहिण्यां, म. २०।४४ उ. ५२।५७ या., **गृहारंभप्रवेशौ** पूर्वदक्षिणयात्रा च सप्तम्यां रोहिण्याम् ।
मार्च ३, विवाहोऽष्टम्यां, द्विरागमनमष्टम्यां, **देवादिप्रतिष्ठा,** पूर्वयात्राष्टम्यां, (८) एको. ।❖ ततः पश्चिमां विना यात्रा ।
द्विरागमनं गृहप्रवेशश्च दशम्यां मृगशिरसि, पश्चिमां विना यात्रा मृगशिरसि ।
गृहप्रवेशः पुनर्वसौ, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ । ↗ द्विरागमनं द्वादश्यां, देवादिप्रतिष्ठा, म. १।२७ उ. ३१।५६ या., उत्तरयात्रा द्वादश्यां पुनर्वसौ ।❖
पूर्वभाद्रे रविः १६।२३, **आमलकी** ११ व्रतं, सर्वेषां, जनकपुरस्यान्तर्गृहीयपरिक्रमारंभः क्षत्रियवैश्ययोरुपनयनं, **एकादशीव्रतोद्यापनं** ↗
श्रीगोविन्द १२ गोदध्ना पारणं, समुद्रस्नानं, **श्रीजगन्नाथदर्शनं,** प्रदोष १३ व्रतं, **द्विरागमनं** त्रयोदश्यां पुष्ये, देवादिप्रतिष्ठा, **कर्णवेधः,** तडागखननं, ■
प्रदोष १४ व्रतम् । ×× नैर्ऋत्ययोर्दुर्भिक्षं पश्चिमे वृष्टिः वायव्ये वायुवृद्धिरुत्तरैशान्योः सुभिक्षं निर्वातसमयो राज्ञो हानिकरः ।
भ. २७।१६ उ. ५५।२५ या., पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्यां, **होलिकादाहो रात्र्यन्ते** घं. ४ मि. २१ उपरि, होलिकादाहे पूर्ववायौ राजाप्रजासुखमग्निकोणेऽग्निभयं **दक्षिण**—××
फाल्गुनी १५ स्नानदानादिः, सावर्णिमन्वादिः, **कुलदेवताभ्यः सिन्दूरार्पणं** (पातरिदान), जनकपुरपरिक्रमासमाप्तिः, **विवाह** उत्तरफल्गुन्यां, पूर्वोत्तरयात्रा ×

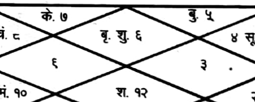
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	४।२०।३२।५४	१०।२३।१।४६	०।१२।५।०३	११।२३।२२।१८	६।५।१९।३३	१।१८।२१।५४	४४।५	१०।३३	१२।२६	१४।४२	१७।००	१९।१६	२१।३१	२३।४८	२।०५	४।१०	५।५६	७।२७	८।५६
२ बृ.	४।२०।११।५	१०।२४।२५।१२	०।१२।१४।५७	११।२४।३०।८	६।५।१७।५४	१।१८।१८।४३	४४।७	१०।२९	१२।२५	१४।३८	१६।५६	१९।१२	२१।२७	२३।४४	२।०१	४।०६	५।५२	७।२३	८।५२
३ शु.	४।१९।४९।१६	१०।२५।४८।३८	०।१२।२४।५१	११।२५।३६।५७	६।५।१५।१६	१।१८।१५।३३	४४।९	१०।२५	१२।२१	१४।३४	१६।५२	१९।०८	२१।२३	२३।४०	१।५७	४।०२	५।४८	७।१९	८।४८
३ श.	४।१९।२७।२७	१०।२७।१२।०३	०।१२।३४।४५	११।२६।४५।४६	६।५।१४।३८	१।१८।१२।२३	४४।१०	१०।२१	१२।१७	१४।३०	१६।४८	१९।०४	२१।१९	२३।३६	१।५३	३।५८	५।४४	७।१५	८।४४
४ र.	४।१९।३।५७	१०।२८।१५।०२	०।१२।४५।२७	११।२७।५२।१०	६।५।१२।१५	१।१८।९।१२	४४।१२	१०।१८	१२।१४	१४।२७	१६।४५	१९।०१	२१।१६	२३।३३	१।५०	३।५५	५।४१	७।१२	८।४१
५ च.	४।१८।४०।२७	१०।२९।१८।१	०।१२।५६।०९	११।२८।५८।३३	६।५।९।५२	१।१८।६।०१	४४।१४	१०।१४	१२।१०	१४।२३	१६।४१	१८।५७	२१।१२	२३।२९	१।४६	३।५१	५।३७	७।८	८।३७
६ मं.	४।१८।१६।५७	११।०।२१।१	०।१३।६।५१	०।००।४।५६	६।५।७।२६	१।१८।२।५०	४४।१६	१०।१०	१२।०६	१४।१९	१६।३७	१८।५३	२१।०८	२३।२५	१।४२	३।४७	५।३३	७।४	८।३३
७ बु.	४।१७।५३।२७	११।१।२४।१	०।१३।१७।२३	०।१।११।१९	६।५।५।६	१।१७।५९।३९	४४।१८	१०।६	१२।०२	१४।१५	१६।३३	१८।४९	२१।०४	२३।२१	१।३८	३।४३	५।२९	७।००	८।२९
८ बृ.	४।१७।२९।५७	११।२।२७।१	०।१३।२८।१५	०।२।१७।४२	६।५।२।४४	१।१७।५६।२८	४४।२०	१०।३	११।५६	१४।१२	१६।३०	१८।४६	२१।०१	२३।१८	१।३५	३।४०	५।२६	६।५७	८।२६
९ शु.	४।१७।६।२७	११।३।३०।१	०।१३।३८।५६	०।३।२४।०५	६।५।००।२२	१।१७।५३।१८	४४।२२	९।५९	११।५५	१४।०८	१६।२६	१८।४२	२०।५७	२३।१४	१।३१	३।३६	५।२२	६।५३	८।२२
१० श.	४।१६।४२।५७	११।४।३३।१	०।१३।४९।३७	०।४।३०।२८	६।४।५८।००	१।१७।५०।८	४४।२४	९।५५	११।५१	१४।०४	१६।२२	१८।३८	२०।५३	२३।१०	१।२७	३।३२	५।१८	६।४९	८।१८
११ र.	४।१६।२०।८	११।५।४।८	०।१४।१।०७	०।५।३५।१८	६।४।५५।१	१।१७।४६।५७	४४।२६	९।५१	११।४७	१४।००	१६।१८	१८।३४	२०।४९	२३।०६	१।२३	३।२८	५।१४	६।४५	८।१४
१२ च.	४।१५।५७।१६	११।५।३५।१५	०।१४।१२।३७	०।६।४०।८	६।४।५२।२	१।१७।४३।४६	४४।२८	९।४७	११।४३	१३।५६	१६।१४	१८।३०	२०।४५	२३।०२	१।१९	३।२४	५।१०	६।४१	८।१०
१३ मं.	४।१५।३४।३०	११।६।६।२२	०।१४।२४।०७	०।७।४४।५७	६।४।४७।०३	१।१७।४०।३५	४४।३०	९।४४	११।४०	१३।५३	१६।११	१८।२७	२०।४२	२२।५९	१।१६	३।२१	५।०७	६।३८	८।०७
१४ बु.	४।१५।११।४२	११।६।३७।२९	०।१४।३५।३७	०।८।४९।४६	६।४।४५।४	१।१७।३७।२४	४४।३२	९।४०	११।३६	१३।४९	१६।०७	१८।२३	२०।३८	२२।५५	१।१२	३।१७	५।०३	६।३४	८।०३
१५ बृ.	४।१४।४८।५४	११।७।८।३६	०।१४।४७।६	०।९।५४।३५	६।४।४३।५	१।१७।३४।१३	४४।३४	९।३६	११।३२	१३।४५	१६।०३	१८।१९	२०।३४	२२।५१	१।०८	३।१३	४।५६	६।३०	७।५६

३ शनौ बल्ली ८।३८।४५।१८
अयनांशाः २२।४१।३३



१० शनौ बल्ली ८।३८।४५।२५
अयनांशाः २२।४१।३४



विविधविषयाः—फाल्गुनपूर्णिमायां **होलिकादाहः**—तत्राग्नौ विधिवद्घुत्वा काममन्त्रं विवर्जयेत्। घृतैः किलकिलाशब्दैस्तालशब्दैर्मनोरमैः । तमग्निं त्रिः परिक्रम्य गायन्ति च हसन्ति च। जल्पन्ति **स्वेच्छया** लोके होलिकाख्यातमागतः। अस्यां काष्ठादिकनेकत्रीकृत्य होलिकां **ध्यायेत्तन्मन्त्रः**—असृमयावसन्तप्तैः कृत्वा त्वं होलि वालिश। अतस्त्वां पूजयिष्यामि भूते भूतिप्रदा भव। ततो होलिकायै नमः इति पञ्चोपचारैः सम्पूज्य प्रदीपयेत्। **तत्प्रदीपनमन्त्रः**—दीपयाम्यत्र ते घोरां चिति राक्षसि ते नमः। हिताय सर्वजगतः प्रीतये पार्वतीपतेः। ततः परदिने **होलिकाभस्म-धारणमन्त्रः**—वन्दितासि सुरेन्द्रेण ब्रह्माच्युतशिवादिभिः। अतस्त्वं पाहि नो भीतेर्भूषिता भूतिदा भव। प्रयागे **केशवपनफलम्**— किं गयापिण्डदानेन काश्यां वा मरणेन किम्। किं कुरुक्षेत्रदानेन प्रयागे मुण्डनं यदि। केशानां यावतीसंख्या छिन्नानां जाह्नवीजले। तावद्वर्षसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते। **स्थानविशेषमहत्वम्**—प्रयागे वपनं कुर्याद् गयायां पिण्डपातनम्। दानं दद्यात् कुरुक्षेत्रे वाराणस्यां तनुं त्यजेत्। **सुवर्णपवित्रीमहत्वम्**—अन्यानि च पवित्राणि कुशदूर्वात्मकानि च। स्वर्णात्मकपवित्रस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।। अभावे रजतादीनामपि।

ग्रहस्थिति—वक्रिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गिणौ पश्चिमोदितौ, बुधशुक्रौ, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धे तापमेघचारवायवस्तदुत्तरार्द्धभागे झंझावात—हिमोपलपातादयः।

चैत्रकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३३, संवत् २०६८, सन् १४१६ साल, दि. ६ ।०३ ।१२ ई. तः दि. २२ ।०३ ।१२ ई. या., दक्षिणे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, शिशिरर्तुः, ७तो वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ शु.	१६ ।१	दि. १ ।४६	उ.फा. ३१ ।३०	सा. ६ ।४६	शू. १० ।३२	कौ. १६ ।१	कन्या	अहो.	१० ।२५ ।२८ ।४०	२६ ।१२	६ ।१०	५ ।५०	१९	२६	६
२ श.	१३ ।५३	दि. ११ ।४२	ह. २७ ।५६	दि. ५ ।२१	गं. ३ ।२६	ग. १३ ।५३	कं. ५६ ।०१	रा. ४ ।३३	१० ।२६ ।२८ ।४६	२६ ।१६	६ ।९	५ ।५१	२०	२७	१०
३ र.	८ ।१२	दि. ६ ।२५	चि. २४ ।२	दि. ३ ।४५	ध्रु. ४८ ।२०	वि. ८ ।१२	तुला	अहो.	१० ।२७ ।२८ ।३८	२६ ।२०	६ ।८	५ ।५२	२१	२८	११
४ चं.	२ ।१७	दि. ७ ।०२	स्वा. १९ ।५५	दि. २ ।०५	व्या. ४० ।३२	बा. २ ।१७	तुला	अहो.	१० ।२८ ।२८ ।३०	२६ ।२४	६ ।७	५ ।५३	२२	२९	१२
६ मं.	५० ।२८	रा. २ ।१७	वि. १५ ।४६	दि. १२ ।२६	ह. ३२ ।४६	ग. २३ ।२६	तु. १ ।५०	प्रा. ०६ ।५०	१० ।२९ ।२८ ।२२	२६ ।२८	६ ।६	५ ।५४	२३	३०	१३
७ बु.	४४ ।५७	रा. १२ ।५	अनु. ११ ।५४	दि. १० ।५२	व. २५ ।२०	वि. १७ ।४३	वृश्चिक	अहो.	११ ।०० ।२८ ।१४	२६ ।३२	६ ।६	५ ।५४	२४	१	१४
८ बृ.	४० ।१	रा. १० ।५	ज्ये. ८ ।२३	दि. ९ ।२६	सि. १८ ।१२	बा. १२ ।२९	वृ. ८ ।२३	दि. ९ ।२६	११ ।१ ।२८ ।६	२६ ।३६	६ ।५	५ ।५५	२५	२	१५
९ शु.	३५ ।४९	रा. ८ ।२४	मू. ५ ।२९	दि. ८ ।१६	व्य. ११ ।३७	तै. ७ ।५५	धनु.	अहो.	११ ।२ ।२७ ।५७	२६ ।४०	६ ।४	५ ।५६	२६	३	१६
१० श.	३२ ।२८	रा. ७ ।०२	पू.षा. ३ ।२९	दि. ७ ।२७	वरी. ५ ।४२	व. ४ ।०६	ध. १८ ।२६	दि. १ ।२५	११ ।३ ।२७ ।४८	२६ ।४४	६ ।३	५ ।५७	२७	४	१७
११ र.	३० ।७	सा. ६ ।५	उ.षा. २ ।१८	दि. ६ ।५७	प. ० ।३४	ब. १ ।१८	मकर	अहो.	११ ।४ ।२७ ।२५	२६ ।४८	६ ।२	५ ।५८	२८	५	१८
१२ चं.	२८ ।५९	सा. ५ ।३८	श्र. २ ।१५	दि. ६ ।५६	सि. ५२ ।५९	तै. २८ ।५९	म. ३२ ।४९	सा. ७ ।१०	११ ।५ ।२७ ।०२	२६ ।५२	६ ।२	५ ।५८	२९	६	१९
१३ म.	२६ ।५	सा. ५ ।३६	ध. ३ ।२२	दि. ७ ।२२	सा. ५० ।४२	व. २६ ।५	कुम्भ	अहो.	११ ।६ ।२६ ।३६	२६ ।५६	६ ।१	५ ।५९	३०	७	२०
१४ बु.	३० ।३३	सा. ६ ।१३	श. ५ ।४९	दि. ८ ।२०	शुभ. ४६ ।२८	श. ३० ।३३	कु. ५३ ।३७	रा. ३ ।२७	११ ।७ ।२६ ।१६	३० ।००	६ ।००	६ ।००	१	८	२१
३० बृ.	३३ ।११	रा. ७ ।१५	पू.भा. ६ ।३२	दि. ६ ।४८	शुक्ल. ४६ ।३	च. १ ।५२	मीन	अहो.	११ ।८ ।२५ ।५२	३० ।४	५ ।५६	६ ।१	२	६	२२

होली, होलिकाभस्मधरणं सचैलस्नानं, **सप्तडोरकबन्धनं, चैत्रे लक्ष्मणास्नानं** महापुण्यप्रदं, **विवाह** उत्तरफल्गुन्यां ततो ××

वृद्धियोगमानं ५२ ।३४, चैत्रे मेघाच्छन्नत्वं शोभनम्, भ. ४१ ।३३ उ., गृहारंभः, दक्षिणयात्रा, (२—३) एको ।

द. ति. ८ ।१२ उ., सूर्यवेधाद्विवाहो नैव तृतीयाम्, **द्विरागमनं** तृतीयायां, भ. ८ ।१२ या., दक्षिणयात्राया तृतीयायाम् ।

पंचमीमानं ५४ ।७, वक्री बुधः १४ ।४०, द. ति. २ ।१७ या., **विवाहः द्विरागमनं मुण्डनं** गृहारंभः पश्चिमदक्षिणयात्रा **कर्णवेधश्च** पंचम्यां स्वात्याम्।

मासान्तः, भ. ५० ।२८ उ. । ×× **बुधवेधाद्विवाहो** मध्यमो हस्ते, **द्विरागमनं** प्रतिपदि, **गृहारंभो** द्वितीयायाम् ।

मीनेरविः १६ ।२८ मु. १५ फलं महार्घं **षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ४१ उपरि दिने, **पुण्याहः,** भ. १७ ।४३ या. ।

पश्चिमास्तो बुधः ६ ।२१, मासादिः ।

पूर्वोत्तरयात्रा ।

उत्तरभाद्रे रविः ३७ ।३, भ. ४ ।६ उ. ३२ ।२८ या. ।

शिवयोगमानं ५५ ।४२, **पापमोचिनी** ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमां विना यात्रा द्वादश्याम् ।

गोघृतेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **पञ्चकारंभो** दिवा घं. ६ मि. ५६ उ०, पश्चिमयात्रा कुंभगते चन्द्रे ।

प्रदोष १४ व्रतं, वारुणी १३, **वारुणीयोगो** दिवा घं. ७ मि. २२ उ. घं. ५ मि. ३६ या. गंगास्नानं कोटिसूर्यग्रहणसमफलदम्, पश्चिमयात्रा धनिष्ठायां ×

।।००।।

चैत्री ३० स्नानदानादिः, **विक्रमसंवत्** २०६६ प्रारंभोऽमान्तात् । × २६ ।५ उ., ५६ ।४६ या. ।

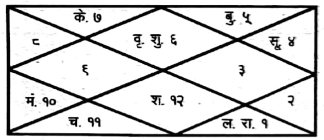
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ शु.	४ ।१४ ।२६ ।०६	११ ।७ ।३६ ।४३	० ।१४ ।५८ ।३५	० ।१० ।५६ ।२४	६ ।४ ।४० ।०६	१ ।१७ ।३१ ।०२
२ श.	४ ।१४ ।३ ।१८	११ ।८ ।१० ।५०	० ।१५ ।१० ।०४	० ।१२ ।४ ।१३	६ ।४ ।३७ ।०७	१ ।१७ ।२७ ।५२
३ र.	४ ।१३ ।४२ ।५२	११ ।८ ।१७ ।१६	० ।१५ ।२२ ।१४	० ।१३ ।६ ।५१	६ ।४ ।३३ ।३८	१ ।१७ ।२४ ।४१
४ चं.	४ ।१३ ।२२ ।२६	११ ।८ ।१७ ।१४	० ।१५ ।३४ ।२४	० ।१४ ।०६ ।२६	६ ।४ ।३० ।०६	१ ।१७ ।२१ ।३०
६ मं.	४ ।१३ ।२ ।००	११ ।७ ।५८ ।५२	० ।१५ ।४६ ।३४	० ।१५ ।१२ ।६	६ ।४ ।२६ ।४०	१ ।१७ ।१८ ।१६
७ बु.	४ ।१२ ।४१ ।३४	११ ।७ ।४० ।३०	० ।१५ ।५८ ।४४	० ।१६ ।१४ ।४३	६ ।४ ।२३ ।१२	१ ।१७ ।१५ ।८
८ बृ.	४ ।१२ ।२१ ।८	११ ।७ ।२२ ।८	० ।१६ ।१० ।५४	० ।१७ ।१७ ।२०	६ ।४ ।१९ ।४४	१ ।१७ ।११ ।५७
९ शु.	४ ।१२ ।० ।४२	११ ।७ ।३ ।४६	० ।१६ ।२३ ।०३	० ।१८ ।१९ ।५७	६ ।४ ।१६ ।१६	१ ।१७ ।८ ।४७
१० श.	४ ।११ ।४० ।१७	११ ।६ ।४५ ।२३	० ।१६ ।३५ ।१२	० ।१९ ।२२ ।३४	६ ।४ ।१२ ।४८	१ ।१७ ।५ ।३७
११ र.	४ ।११ ।२४ ।०४	११ ।६ ।० ।१५	० ।१६ ।४७ ।४६	० ।२० ।२२ ।३१	६ ।४ ।८ ।४३	१ ।१७ ।२ ।२६
१२ चं.	४ ।११ ।७ ।५१	११ ।५ ।१५ ।०७	० ।१७ ।० ।२०	० ।२१ ।२२ ।२७	६ ।४ ।४ ।३८	१ ।१६ ।५६ ।१५
१३ मं.	४ ।१० ।५१ ।३८	११ ।४ ।२९ ।५९	० ।१७ ।१२ ।५४	० ।२२ ।२२ ।२३	६ ।४ ।० ।३३	१ ।१६ ।५६ ।४
१४ बु.	४ ।१० ।३५ ।२५	११ ।३ ।४४ ।५१	० ।१७ ।२५ ।२८	० ।२३ ।२२ ।१९	६ ।३ ।५६ ।२८	१ ।१६ ।५२ ।५३
३० बृ.	४ ।१० ।१९ ।१३	११ ।२ ।५९ ।४३	० ।१७ ।३८ ।०२	० ।२४ ।२२ ।१५	६ ।३ ।५२ ।२४	१ ।१६ ।४९ ।४२

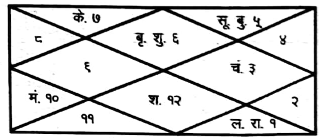
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	४४ ।३६	६ ।३२	११ ।२८	१३ ।४१	१५ ।५९	१८ ।१५	२० ।३०	२२ ।४७	१ ।०४	३ ।०६	४ ।५५	६ ।२६	७ ।५५
२ श.	४४ ।३८	६ ।२८	११ ।२४	१३ ।३७	१५ ।५५	१८ ।११	२० ।२६	२२ ।४३	१ ।००	३ ।०५	४ ।५१	६ ।२२	७ ।५१
३ र.	४४ ।४०	६ ।२५	११ ।२१	१३ ।३४	१५ ।५२	१८ ।०८	२० ।२३	२२ ।४०	० ।५७	३ ।०२	४ ।४८	६ ।१९	७ ।४८
४ चं.	४४ ।४२	६ ।२१	११ ।१७	१३ ।३०	१५ ।४८	१८ ।०४	२० ।१९	२२ ।३६	० ।५३	२ ।५८	४ ।४४	६ ।१५	७ ।४४
६ मं.	४४ ।४४	६ ।१७	११ ।१३	१३ ।२६	१५ ।४४	१८ ।००	२० ।१५	२२ ।३२	० ।४९	२ ।५४	४ ।४०	६ ।११	७ ।४०
७ बु.	४४ ।४६	६ ।१३	११ ।०९	१३ ।२२	१५ ।४०	१७ ।५६	२० ।११	२२ ।२८	० ।४५	२ ।५०	४ ।३६	६ ।७	७ ।३६
८ बृ.	४४ ।४८	६ ।१०	११ ।०६	१३ ।१९	१५ ।३७	१७ ।५३	२० ।०८	२२ ।२५	० ।४२	२ ।४७	४ ।३३	६ ।०४	७ ।३३
९ शु.	४४ ।५०	६ ।०६	११ ।०२	१३ ।१५	१५ ।३३	१७ ।४९	२० ।०४	२२ ।२१	० ।३८	२ ।४३	४ ।२९	६ ।००	७ ।२९
१० श.	४४ ।५२	६ ।०२	१० ।५८	१५ ।११	१५ ।२९	१७ ।४५	२० ।००	२२ ।१७	० ।३४	२ ।३९	४ ।२५	५ ।५६	७ ।२५
११ र.	४४ ।५४	८ ।५८	१० ।५४	१३ ।०७	१५ ।२५	१७ ।४१	१९ ।५६	२२ ।१३	० ।३०	२ ।३५	४ ।२१	५ ।५२	७ ।२१
१२ चं.	४४ ।५६	८ ।५५	१० ।५१	१३ ।०४	१५ ।२२	१७ ।३८	१९ ।५३	२२ ।१०	० ।२७	२ ।३२	४ ।१८	५ ।४९	७ ।१८
१३ मं.	४४ ।५८	८ ।५१	१० ।४७	१३ ।००	१५ ।१८	१७ ।३४	१९ ।४९	२२ ।०६	० ।२३	२ ।२८	४ ।१४	५ ।४५	७ ।१४
१४ बु.	४५ ।००	८ ।४७	१० ।४३	१२ ।५६	१५ ।१४	१७ ।३०	१९ ।४५	२२ ।०२	० ।१९	२ ।२४	४ ।१०	५ ।४१	७ ।१०
३० बृ.	४५ ।०२	८ ।४३	१० ।३९	१२ ।५२	१५ ।१०	१७ ।२६	१९ ।४१	२१ ।५८	० ।१५	२ ।२०	४ ।०६	५ ।३७	७ ।०६

३ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४५ ।३२
अयनांशाः २२ ।४१ ।३५



१० शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४५ ।३६
अयनांशाः २२ ।४१ ।३६



विविधविषयाः—दिक्क्रमेण प्रहरार्द्धवशेन च **छिक्काफलं,** मुहूर्त्तगणपतौ— मृत्युर्वह्निभयं हानिस्तुष्टिर्द्रव्यागमः सुखम्। क्लोशोऽर्थागमनं प्रोक्तं दिक्षु छिक्काफलं क्रमात्।। गोक्षुतस्य दोषाधिक्यनुक्तं **नारदेन**—सर्वदिक्षु क्षुतं नेष्टं गोक्षुतं मरणप्रदम्। अफलं तत्क्षुतं वाच्यमन्यपीनसकेतवः।। केतवः—कपटः पीनसो—मुहुर्नासाश्रावी। **रत्नावलीरत्नकलापयोः**-प्रागन्यपुंसः पुरतोऽपरस्तात् पुनः पुनर्वा तत एव जातम्। वृद्धाच्छिशोर्वा कफतो हठाद्वा जातं क्षुतं केऽपि वदन्त्यसत्यम्।। यात्रायां क्षुतमवश्यं वर्जनीयम्। **रत्नकलापे**—अग्रे क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः पश्चात्क्षुतं चेच्छकुनैः किमन्यैः। जातानजाताञ्छकुनानि हन्ति क्षुतप्रदेनात्र वदन्ति तज्ज्ञाः। शुभक्षुतम्, सर्वशाकुने—औषधे च नवारोहे विवादे शयनेऽशने । विद्यारम्भे बीजवापे क्षुतं सप्तसु शोभनम्। क्षुतादिषु **कर्त्तव्यमाह**—छिक्कापतनजृम्भासु जीवोत्तिष्ठांगुली— ध्वनिः। गुरावपि च कर्त्तव्या अकृत्वा ब्रह्महा भवेत् ।। **होमविधौ विशेषः**— विवाहयात्राव्रतगोचरेषु चूडोपनीतिग्रहणे युगादौ। दुर्गाविधाने च सुतप्रसूतौ नैवाग्निचक्रं परिचिन्तनीयम्।। **प्रतिष्ठाप्रकाशे**—दुर्गाहोमविधौ विवाहसमये सीमन्तपुत्रोत्सवे गर्भाधानविधौ च वास्तुसमये विष्णोः प्रतिष्ठादिषु। मौञ्जीबन्धनवैश्वदेवकरणे संस्कारनैमित्तिके होमे नित्यभवे न दोषकथनं चक्रं च वह्नेरपि ।।

ग्रहस्थितिः—वक्रिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः ४ तो वक्री ८ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे तापमेघचारवायवस्तदुत्तरार्द्धभागे तापवृद्धि—वाताग्निभयमेघचारादयः।

चैत्रशुक्लपक्षः

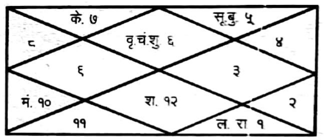
शकाब्दः १६३३, संवत् २०६६, सन् १४१६ साल, दि. २३।०३।१२ ई. तः दि. ६।४।१२ ई. या., दक्षिणे कालः । मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः, याम्यगोलः, सौम्यायनम् ।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	सौ.	अं.	
१ शु.	३६।५७	रा. ८।४५	उ.भा. १४।१६	दि. ११।४२	ब्र. ४६।३३	किं. ५।४	मीन.	अहो.	११।६।२५।२८	३०।८	५।५८	६।२	३	१०	२३	वासन्तनवरात्रारंभः **कलशस्थापनं**, श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, नवरात्रव्रतारंभः, द. ति. ३६।५७ उ., उत्तरयात्रा रेवत्यां प्रतिपदि ।
२ श.	४१।३५	रा. १०।३६	रे. २०।१	दि. १।५८	ऐं. ५०।३६	बा. ६।१६	मी. २०।१	दि. १।५८	११।१०।२५।४	३०।१२	५।५८	६।२	४	११	२४	चन्द्रदर्शनं ३० समशृंगफलसाम्यं, **श्रीरेमन्तपूजा**, द. ति. ४१।३५ या., पूर्वां विना यात्रा तृतीयायाम् ।
३ र.	४६।४६	रा. १२।३६	अ. २६।२०	दि. ४।२६	वै. ५२।२	तै. १४।११	मेष	अहो.	११।११।२४।२५	३०।१६	५।५७	६।३	५	१२	२५	श्रीगौरी ३ व्रतं **स्वायंभुवमन्वादिः, पश्चिमां विना यात्राश्विन्याम् ।**
४ चं.	५२।६	रा. २।४६	भ. ३२।५८	सा. ७।०७	वि. ५३।३४	व. १६।२६	मे. ४६।३४	रा. १।४६	११।१२।२३।४६	३०।२०	५।५६	६।४	६	१३	२६	श्रीगणेश ४ व्रतं, भ. १६।२६ उ. ५२।६ या । × पश्चिमदक्षिणयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा ।
५ मं.	५७।३	रा. ४।४४	कृ. ३६।२२	रा. ६।४०	प्री. ५४।४७	ब. २४।३५	वृष	अहो.	११।१३।२३।७	३०।२४	५।५५	६।५	७	१४	२७	कुंभे बुधः १६।३१, **मीनावतारः**, श्रीरामराज्याभिषेकमहोत्सवः, पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां पञ्चम्याम् ।
६ बु.	६०।००	अहो.	रो. ४५।१२	रा. ११।५६	आ. ५५।३५	कौ. २६।१३	वृष	अहो.	११।१४।२२।२८	३०।२८	५।५४	६।६	८	१५	२८	वृषे शुक्रः ३४।१६, श्रीसूर्यषष्ठीव्रतस्यैकभुक्तादिकं (खरना) पूर्वदक्षिणयात्रा रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा ।
९ बृ.	१।२३	दि. ६।२७	मृ. ५०।१०	रा. १।५८	सौ. ५५।३७	तै. १।२३	वृ. १७।४१	दि. १२।५८	११।१५।२१।४६	३०।३२	५।५४	६।६	९	१६	२९	**श्रीसूर्यषष्ठीव्रतं**, सायंकालिकार्घदानं, गजपूजा, **विल्वाभिमन्त्रणं**, दक्षिणां विना यात्रा मृगशिरसि ।
७ शु.	४।४१	दि. ७।४५	आ. ५४।२	रा. ३।३०	शो. ५४।४५	व. ४।४१	मिथुन	अहो.	११।१६।२१।१०	३०।३६	५।५३	६।७	१०	१७	३०	प्रातःकालिकार्घदानं पारणं च, पत्रिकाप्रवेशः, निशापूजा, म. ४।४१ उ. ३५।४७ या., दक्षिणयात्रा पुनर्वसौ ।
८ श.	६।५३	दि. ८।३७	पुन. ५६।४०	रा. ४।३२	अ. ५२।५५	ब. ६।५३	मि. ४१।१	रा. १०।१६	११।१७।२०।३१	३०।४०	५।५२	६।८	११	१८	३१	**रेवत्यां रविः** ४।२०, पूर्वोदितो बुधः १८।१०, **महाष्टमीव्रतं**, दीक्षाग्रहणं, **अशोकाष्टमी**, अशोककलिकापानं, **ब्रह्मपुत्रस्नानं** ×
९ र.	७।४५	दि. ८।५७	पुष्य ५८।२	रा. ५।४	सु. ५०।४	कौ. ७।४५	कर्क	अहो.	११।१८।१९।३७	३०।४४	५।५१	६।९	१२	१९	१	अप्रील ४, **महानवमीव्रतं**, दीक्षाग्रहणं, **त्रिशूलिनीपूजा**, रामावतारः, **श्रीरामनवमीव्रतं**, हनुमद्ध्वजदानं, अयोध्यायां श्रीसीतारामदर्शनं ××
१० चं.	७।१८	दि. ८।४५	आश्ले. ५८।११	रा. ५।०६	धृ. ४६।१२	ग. ७।१८	क. ५८।११	रा. ५।०६	११।१९।१८।४२	३०।४८	५।५०	६।१०	१३	२०	२	मार्गी बुधः ४७।३७, **विजया** १०, अपराजितापूजा, देवीविसर्जनं, जयन्तीधारणं, नवरात्रव्रतपारणं, नीलकण्ठखञ्जनादिदर्शनं यात्रा, **उपनयनं**, ○
११ मं.	५।३५	दि. ८।०४	म. ५७।६	रा. ४।४२	शू. ४०।२६	वि. ५।३५	सिंह	अहो.	११।२०।१७।४७	३०।५२	५।५०	६।१०	१४	२१	३	**कामदा** ११ व्रतं सर्वेषां, भ. ५।३५ या., पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् । ○ भ. ३६।२७ उ. । (●) **श्रीमहावीर** (२६११)**जयन्ती** ।
१२ बु.	२।४५	दि. ६।५५	पूफा. ५५।१७	रा. ३।५६	ग. ३५।५०	बा. २।४५	सिंह	अहो.	११।२१।१६।५२	३०।५६	५।४९	६।११	१५	२२	४	त्रयोदशी मानं ५६।११, श्रीविष्णु १२, **गोघृतेन** पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **चैत्रावली**, मदन १३, गोष्ठे सत्संगारंभः, **श्रीमदनपूजनं**, पूर्वयात्रा द्वादशयां (●)
१४ बृ.	५४।१८	रा. ३।३१	उफा. ५२।३२	रा. २।४९	वृ. २९।३६	ग. २६।३७	सि. ६।३६	दि. ६।३८	११।२२।१५।५७	३१।००	५।४८	६।१२	१६	२३	५	मदनभञ्जिका १४, **प्रदोष** १४ व्रतं, भ. ५४।१८ उ., पूर्वयात्रा पूर्णिमायाम् ।×× **उपनयनं** दशम्यां, पश्चिमां विना यात्रा दशम्यां पुष्ये ।
१५ शु.	४९।२	रा. १।२४	ह. ४९।५	रा. १।२५	धु. २२।४५	वि. २१।४०	कन्या	अहो.	११।२३।१५।०२	३१।०४	५।४७	६।१३	१७	२४	६	**चैत्री** १५ स्नानदानादिः, **स्वारोचिषमन्वादिः**, भ. २१।४० या., पूर्वदक्षिणयात्रा ।

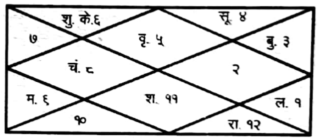
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ शु.	४।१०।३।०१	११।२।१४।३६	०।१७।५०।३६	०।२५।२२।११	६।३।४८।२०	१।१६।४६।३२	४५।४	८।४०	१०।३६	१२।४६	१५।०७	१७।२३	१९।३८	२१।५५	०।१२	२।१७	४।०३	५।३४	७।३
२ श.	४।६।४६।४६	११।१।२६।२६	०।१८।०३।०६	०।२६।२२।०७	६।३।४४।१६	१।१६।४३।२२	४५।६	८।३६	१०।३२	१२।४५	१५।०३	१७।१९	१९।३४	२१।५१	०।०८	२।१३	३।५९	५।३०	६।५९
३ र.	४।६।३५।०३	११।०।५४।४२	०।१८।१६।२५	०।२७।१६।११	६।३।३६।५६	१।१६।४०।११	४५।८	८।३२	१०।२८	१२।४१	१४।५६	१७।१५	१९।३०	२१।४७	०।०४	२।०९	३।५५	५।२६	६।५५
४ चं.	४।६।२३।१८	११।०।१६।५५	०।१८।२६।४१	०।२८।१६।१५	६।३।३५।४२	१।१६।३७।००	४५।१०	८।२८	१०।२४	१२।३७	१४।५५	१७।११	१९।२६	२१।४३	०।००	२।०५	३।५१	५।२२	६।५१
५ मं.	४।६।११।३३	१०।२९।४५।८	०।१८।४२।५७	०।२९।१३।१९	६।३।३१।२५	१।१६।३३।४९	४५।१२	८।२५	१०।२१	१२।३४	१४।५२	१७।०८	१९।२२	२१।४०	२३।५७	२।०२	३।४८	५।१९	६।४८
६ बु.	४।८।५९।४८	१०।२९।१०।२२	०।१८।५६।१३	१।०।१०।२३	६।३।२७।०८	१।१६।३०।३८	४५।१४	८।२१	१०।१७	१२।३०	१४।४८	१७।०४	१९।१९	२१।३६	२३।५३	१।५८	३।४४	५।१५	६।४४
९ बृ.	४।८।४८।०३	१०।२८।३५।३६	०।१९।९।२९	१।१।७।२७	६।३।२२।५१	१।१६।२७।२७	४५।१६	८।१७	१०।१३	१२।२६	१४।४४	१७।००	१९।१५	२१।३२	२३।४९	१।५४	३।४०	५।११	६।४०
७ शु.	४।८।३६।१८	१०।२८।०।५०	०।१९।२२।४५	१।२।४।३०	६।३।१८।३४	१।१६।२४।१७	४५।१८	८।१३	१०।९	१२।२२	१४।४०	१६।५६	१९।११	२१।२८	२३।४५	१।५०	३।३६	५।०७	६।३६
८ श.	४।८।२४।३३	१०।२७।२६।४	०।१९।३६।०१	१।३।१।३३	६।३।१४।१७	१।१६।२१।६	४५।२०	८।१०	१०।६	१२।१९	१४।३७	१६।५३	१९।०८	२१।२५	२३।४२	१।४७	३।३३	५।०४	६।३३
९ र.	४।८।१२।१०	१०।२७।१४।३२	०।१९।४९।३१	१।३।५४।०३	६।३।९।२८	१।१६।१७।५६	४५।२२	८।०६	१०।२	१२।१५	१४।३३	१६।४९	१९।०४	२१।२१	२३।३८	१।४३	३।२९	५।००	६।२९
१० चं.	४।८।११।४८	१०।२७।८।२८	०।२०।३।००	१।४।४६।३३	६।३।४।३९	१।१६।१४।४५	४५।२४	८।०२	९।५८	१२।११	१४।२९	१६।४५	१९।००	२१।१७	२३।३४	१।३९	३।२५	४।५६	६।२५
११ मं.	४।८।५।२६	१०।२७।८।५५	०।२०।१६।२६	१।५।३९।०३	६।२।५६।५०	१।१६।११।३४	४५।२६	७।५८	९।५४	१२।०७	१४।२५	१६।४१	१८।५६	२१।१३	२३।३०	१।३५	३।२१	४।५२	६।२१
१२ बु.	४।७।५९।४	१०।२७।१५।८	०।२०।२९।५८	१०।६।३१।३३	६।२।५५।०१	१।१६।८।२३	४५।२८	७।५५	९।५१	१२।०४	१४।२२	१६।३८	१८।५३	२१।१०	२३।२७	१।३२	३।१८	४।४९	६।१८
१४ बृ.	४।७।५२।४२	१०।२७।३५।२०	०।२०।४३।२७	१।७।२४।०३	६।२।५०।१२	१।१६।५।१२	४५।३०	७।५१	९।४७	१२।००	१४।१८	१६।३४	१८।४९	२१।०६	२३।२३	१।२८	३।१४	४।४५	६।१४
१५ शु.	४।७।४६।२०	१०।२७।५५।३३	०।२०।५६।५६	१।८।१६।३३	६।२।४५।२३	१।१६।२।०१	४५।३२	७।४७	९।४३	११।५६	१४।१४	१६।३०	१८।४५	२१।०२	२३।१९	१।२४	३।१०	४।४१	६।१०

२ शनौ बल्ली ८।३८।४५।४६
अयनांशाः २२।४१।३७



८ शनौ बल्ली ८।३८।४५।५३
अयनांशाः २२।४१।३८



विविधविषयाः—चैत्रशुक्लप्रतिपत्तो नवमीं यावद् दुर्गापूजनोत्सवस्तत्र घटे यन्त्रे चित्रे प्रतिमायां वा देवीं पूजयेत्सप्तशतीपाठादिकं च कुर्यात्। चैत्रशुक्लाष्टम्यामशोक–कलिकापानमन्त्रः—त्वामशोककरामीष्ट मधुमाससमुद्भव। पिवामि शोकसन्तप्तो नानशोकं सदा कुरु।। एतत्पानफलं, **लिंगपुराणे**—अशोककलिका ह्यष्टौ ये पिवन्ति पुनर्वसौ । चैत्रे मासि सिताष्टम्यां न ते शोकमवाप्नुयुः । **ब्रह्मपुत्रस्नानमन्त्रः**—ब्रह्मपुत्र महामाग शन्तनोः कुलसम्भव। अमोघागर्भसंभूत पापं लौहित्य मे हर।। चैत्रशुक्लनवम्यां रामनवमीव्रतन्तत्राङ्गदेवतापूजनपूर्वकं **श्रीरामं** सम्पूज्यार्घ्यं दद्यात्तन्मन्त्रः— दशाननवधार्थाय धर्मसंस्थापनाय च। राक्षसानां विनाशाय दैत्यानां निधनाय च।। परित्राणाय साधूनां जातो रामः स्वयं हरिः। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं भ्रातृभिः सहितोऽनघ।। ततः परदिने इदं विष्णुरिति मन्त्रेण जुहुयाद् ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। मिथिलामाहात्म्यं, वृहद्विष्णुपुराणे—मिथिलां ये नमस्यन्ति देशान्तरगता अपि। तेषां मुक्तिश्च मुक्तिश्च जायते नात्र संशयः।। मिथिलावासमासाद्य जीन्मुक्तो भवेन्नरः। देहान्ते राघवं प्राप्य तद्भक्तैः सह मोदते।। चक्षूरक्षार्थं पठनीयमन्त्रः—शार्यातिञ्च सुकन्यां च च्यवनं शक्रमश्विनौ। भोजनान्ते स्मरेन्नित्यं तस्य चक्षुर्नहीयते।

ग्रहस्थितिः—वक्रिणौ पूर्वोदितौ कुजशनी, वक्री पश्चिमोदितो बुधः ८ तः पूर्वोदितः १० तो मार्गी, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ।

वातावरणम्—पक्षस्य पूर्वार्द्धभागे तापाग्निभयवायवस्तदुत्तरार्द्धभागे मेघचारताप–झंझावातादयः ।

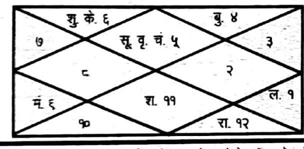
वैशाखकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३३, ७तः १६३४, संवत् २०६६, सन् १४१६ साल, दि. ७।०४।१२ ई. तः दि. २१।४।१२ ई. या., दक्षिणे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, वसन्तर्तुः याम्यगोलः सौम्यायनम्, ७तः सौम्यगोलः ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ श.	४३।१६	रा. ११।०४	चि. ४५।१४	रा. ११।५२	व्या. १५।२५	बा. १६।६	कं. १७।१०	दि. १२।३८	११।२४।१४।७	३१।८	५।४६	६।१४	१८	२५	७
२ र.	३७।१८	रा. ८।४१	स्वा. ४१।१०	रा. १०।१४	ह. ७।५१	तै. १०।१७	तुला	अहो.	११।२५।१२।५७	३१।१२	५।४६	६।१४	१९	२६	८
३ चं.	३१।१४	सा. ६।१५	वि. ३७।००	रा. ८।३३	व. ००।६	व. ४।१६	तु. २३।२	दि. २।५८	११।२६।११।४७	३१।१६	५।४५	६।१५	२०	२७	९
४ मं.	२५।१६	दि. ३।५२	अनु. ३३।००	सा. ६।५६	व्य. ४४।५४	वा. २५।१६	वृश्चिक	अहो.	११।२७।१०।३७	३१।२०	५।४४	६।१६	२१	२८	१०
५ बु.	१९।४६	दि. १।३७	ज्ये. २६।२५	दि. ५।२६	वरी. ३७।४३	तै. १९।४६	वृ. २६।२५	दि. ५।२६	११।२८।६।२६	३१।२४	५।४३	६।१७	२२	२९	११
६ बृ.	१४।४५	दि. ११।३६	मू. २६।२३	दि. ४।१५	प. ३१।१	व. १४।४५	धनु.	अहो.	११।२९।८।१५	३१।२८	५।४२	६।१८	२३	३०	१२
७ शु.	१०।३२	दि. ६।५५	पू.षा. २४।१०	दि. ३।२२	शि. २५।१	ब. १०।३२	ध. ३८।४६	रा. ६।१४	०।०।७।४	३१।३२	५।४२	६।१८	२४	१	१३
८ श.	७।६	दि. ८।३१	उ.षा. २२।४५	दि. २।४७	सिं. १६।४५	कौ. ७।६	मकर	अहो.	०।१।५।५३	३१।३६	५।४१	६।१९	२५	२	१४
९ र.	४।४२	दि. ७।३३	श्र. २२।२७	दि. २।३६	सा. १५।१८	ग. ४।४२	म. ५२।५४	रा. २।५०	०।२।४।२७	३१।४०	५।४०	६।२०	२६	३	१५
१० चं.	३।३०	दि. ७।३	ध. २३।२१	दि. २।५६	शुभः ११।५१	वि. ३।३०	कुम्भ	अहो.	०।३।३।०१	३१।४४	५।३६	६।२१	२७	४	१६
११ मं.	३।३४	दि. ७।०४	श. २५।३०	दि. ३।५०	शुक्ल. ६।२३	बा. ३।३४	कुम्भ	अहो.	०।४।१।३५	३१।४८	५।३८	६।२२	२८	५	१७
१२ बु.	४।५७	दि. ७।३७	पू.भा. २८।५६	दि. ५।१२	ब्र. ८।००	तै. ४।५७	कु. १३।५	दि. १०।५२	०।५।०।०६	३१।५२	५।३८	५।२२	२९	६	१८
१३ बृ.	७।३१	दि. ८।३७	उ.भा. ३३।२६	सा. ७।०१	ऐं. ७।२६	व. ७।३१	मीन	अहो.	०।५।५८।४३	३१।५६	५।३७	६।२३	३०	७	१९
१४ शु.	११।१२	दि. १०।०५	रे. ३६।४	रा. ६।१४	वै. ७।४८	श. ११।१२	मी. ३६।४	रा. ६।१४	०।६।५७।१७	३१।५६	५।३६	६।२४	३१	८	२०
३० श.	१५।४७	दि. ११।५५	अ. ४५।१६	प्रा. ११।४२	वि. ८।४६	ना. १५।४७	मेष	अहो.	०।७।५५।५०	३२।२	५।३६	६।२४	१	९	२१

द. ति. ४३।१६ उ., दक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणपश्चिमयात्रा प्रतिपदि, वैशाखे तैलं त्यजेत् ।
द. ति. ३७।१८ या., दक्षिणयात्रा तृतीयायां स्वात्याम् ।
सिद्धियोगमानं ५२।२०, मीने बुधः ५८।१०, **श्रीवक्रतुण्ड** ४ व्रतं, भ. ४।१६ उ. ३१।१४ या. ।
पश्चिमयात्रा । × सौम्यगोलारम्भश्च ३८।३३ उ., हनुमद्ध्वजदानं, **आर्यभटजयन्ती**, वैशाखस्नानारंभः, **हरिद्वारे** कल्पवासारंभः, सतुआइन ××
पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा मूले । ×× **सोपकरणवारिपूर्णघटदानं**, प्रपागलन्तिकादानं, **नववर्षारंभः**, शर्करा ७ ।
मासान्तः, **कोकिलाषष्ठी**, भ. १४।४५ उ. ४२।३६ या., (६–७) एको. ।
अश्विन्यां मेषे रविः ३८।३३ मु. ४५ फलं समर्घं **यवविषुवसंक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ० उपरि दिने, **पुण्याहः**, १६३४ शकाब्दारंभः ×
मार्गी कुजः ४६।१०, मासादिः, जूडिशीतल, पर्युषितान्नभक्षणं, तुलस्यश्वत्थाम्रादिवृक्षसेचनम् । ❖ दशम्यां श्रवणायां ततः पूर्वयात्रा मकरस्थे चन्द्रे ।
पञ्चकारंभो दिवा घं. २ मि. ३६ उ., **विवाहो** धनिष्ठायां, (श्रवणायां कुजवेधाद्विवाहो नैव) भ. ३४।०६ उ., पश्चिमां विना यात्रा ❖
विवाहो धनिष्ठायां, भ. ३।३० या., पश्चिमयात्रा धनिष्ठायाम् ।
वरुथिनी ११ व्रतं सर्वेषां, **श्रीवल्लभाचार्यजयन्ती**, पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रे ।
कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **विवाह** उत्तरभाद्रे, पश्चिमयात्रा द्वादश्याम् ।
प्रदोष १४ व्रतं, **विवाहस्त्रयोदश्यां**, भ. ७।३१ उ. ३६।२२ या. ।
पञ्चकान्तो रात्रौ घं. ६ मि. १४ उ., उत्तरयात्रा चतुर्दश्याम् ।
वैशाखी ३० स्नानदानादिः, पूर्वां विना यात्रा प्रतिपद्यश्विन्यां, (१) एको. ।

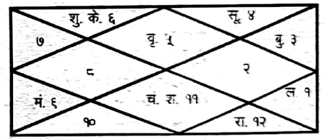
३० शनौ बल्ली ८।३८।४६।१४
अयनांशाः २२।४१।४१



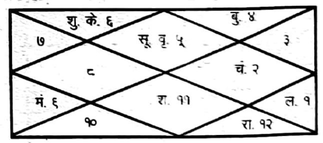
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयप्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ श.	४।७।३६।५८	१०।२८।१५।४६	०।२१।१०।२५	१।६।६।०३	६।२।४०।३४	१।१५।५८।५१	४५।३४	७।४३	६।३६	११।५२	१४।१०	१६।२६	१८।४१	२०।५८	२३।१५	१।२०	३।०६	४।३७	६।०६
२ र.	४।७।३८।५६	१०।२६।०३।०१	०।२१।२४।१८	१।०६।५६।४६	६।०२।३५।४५	१।१५।५५।४०	४५।३६	७।३६	६।३५	११।४८	१४।०६	१६।२२	१८।३७	२०।५४	२३।११	१।१६	३।०२	४।३३	६।०२
३ चं.	४।७।३८।००	१०।२६।५०।१६	०।२१।३८।११	१।१०।४४।२८	६।२।३०।५६	१।१५।५२।२६	४५।३८	७।३६	६।३२	११।४५	१४।०३	१६।१६	१८।३४	२०।५१	२३।०८	१।१३	२।५६	४।३०	५।५६
४ मं.	४।७।३७।०१	११।०।३७।३१	०।२१।५२।०४	१।११।३२।१०	६।२।२६।०७	१।१५।४६।१८	४५।४०	७।३२	६।२८	११।४१	१३।५६	१६।१५	१८।३०	२०।४७	२३।०४	१।०६	२।५५	४।२६	५।५५
५ बु.	४।७।३६।०२	११।१।२४।४६	०।२२।५।५७	१।१२।१६।५२	६।२।२१।१८	१।१५।४६।०७	४५।४२	७।२८	६।२४	११।३७	१३।५५	१६।११	१८।२६	२०।४३	२३।००	१।०५	२।५१	४।२२	५।५१
६ बृ.	४।७।३५।०३	११।२।११।००	०।२२।१६।५०	१।१३।०७।३४	६।२।१६।२६	१।१५।४२।५६	४५।४४	७।२५	६।२१	११।३४	१३।५२	१६।०८	१८।२३	२०।४०	२२।५७	१।०२	२।४८	४।१६	५।४८
७ शु.	४।७।३४।०५	११।२।५६।१४	०।२२।३३।४३	१।१३।५५।१६	६।२।११।४०	१।१५।३६।४६	४५।४६	७।२१	६।१७	११।३०	१३।४८	१६।०४	१८।१६	२०।३६	२२।५३	०।५८	२।४४	४।१५	५।४४
८ श.	४।७।३३।०७	११।३।४६।२८	०।२२।४७।३६	१।१४।४२।५८	६।०२।६।५१	१।१५।३६।३६	४५।४८	७।१७	६।१३	११।२६	१३।४४	१६।००	१८।१५	२०।३२	२२।४६	०।५४	२।४०	४।११	५।४०
९ र.	४।७।३५।४७	११।५।१।५१	०।२३।१।४२	१।१५।२३।८	६।२।२।६	१।१५।३३।२५	४५।५०	७।१३	६।०६	११।२२	१३।४०	१५।५६	१८।११	२०।२८	२२।४५	०।५०	२।३६	४।०७	५।३६
१० चं.	४।७।४०।५	११।६।१७।१४	०।२३।१५।४८	१।१६।०३।१८	६।१।५७।२७	१।१५।३०।१४	४५।५२	७।०६	६।०५	११।१८	१३।३६	१५।५२	१८।०७	२०।२४	२२।४१	०।४६	२।३२	४।०३	५।३२
११ मं.	४।७।४४।२३	११।७।३२।३७	०।२३।२६।५४	१।१६।४३।२८	६।०१।५२।४५	१।१५।२७।०३	४५।५४	७।०६	६।०२	११।१५	१३।३३	१५।४६	१८।०४	२०।२१	२२।३८	०।४३	२।२६	४।००	५।२६
१२ बु.	४।७।४८।४१	११।८।४८।००	०।२३।४४।००	१।१७।२३।३८	६।१।४८।०३	१।१५।२३।५२	४५।५६	७।२	८।५८	११।११	१३।२६	१५।४५	१८।००	२०।१७	२२।३४	०।३६	२।२५	३।५६	५।२५
१३ बृ.	४।७।५२।५८	११।१०।३।२३	०।२३।५८।०५	१।१८।०३।४८	६।१।४३।२१	१।१५।२०।४१	४५।५८	६।५८	८।५४	११।०७	१३।२५	१५।४१	१७।५६	२०।१३	२२।३०	०।३५	२।२१	३।५२	५।२१
१४ शु.	४।७।५७।१५	११।११।१८।४६	०।२४।१२।१०	१।१८।४३।५८	६।१।३८।३६	१।१५।१७।३१	४६।००	६।५४	८।५०	११।०३	१३।२१	१५।३७	१७।५२	२०।०६	२२।२६	०।३१	२।१७	३।४८	५।१७
३० श.	४।८।०१।३२	११।१२।३४।८	०।२४।२६।१५	१।१६।२४।०८	६।१।३३।५७	१।१५।१४।२१	४६।१	६।५०	८।४६	१०।५६	१३।१७	१५।३३	१७।४८	२०।०५	२२।२२	०।२७	२।१३	३।४४	५।१३

१ शनौ बल्ली ८।३८।४६।००
अयनांशाः २२।४१।३६



८ शनौ बल्ली ८।३८।४६।७
अयनांशाः २२।४१।४०



विविधविषयाः—वैशाखे प्रातः **स्नानमन्त्रः**—वैशाखे सकलं मासं मेषसंक्रमणे रवेः। प्रातः सनियमं स्नास्ये प्रीयतां मधुसूदन।। मधुहन्तुः प्रसादेन ब्राह्मणानामनुग्रहात्। निर्विघ्नमस्तु मे पुण्यं वैशाखस्नानमन्वहम्।। माधवे मेषगे भानौ मुरारे मधुसूदन। प्रातः स्नानेन मे देव फलदो भव पापहन्।। प्रातः स्नानस्य **समयः**—उत्तमं तु सनक्षत्रं मध्यमं लुप्ततारकम्। सवितर्युदिते भूप ततो हीनं प्रकीर्तितम्। वैशाखे **त्याज्यवस्तूनि**—कांस्यं मांसं मसूरान्नं चणकं कोद्रवन्तथा। शाकं मधु परान्नं च पुनर्भोजनमैथुने ।। वैशाखे **दानवस्तूनि, स्कान्दे**—प्रपा कार्या च वैशाखे देवे देया गलन्तिका। उपानद्व्यजनं छत्रं सूक्ष्मवासांसि चन्दनम्। जलपात्राणि देयानि तथापूपगृहाणि च। **तिथितत्वे**—ददाति यो हि मेषादौ सक्तूनम्बुघटान्वितान्। पितृनुद्दिश्य विप्रेभ्यः सर्वपापैः प्रमुच्यते। मासविशेषे स्नानम्—कौशिकीं माघवे स्नायान्माघे वै कमलान्तथा। दुग्धां विल्ववर्त्तीं मार्गे कार्तिके यामुनीं तथा। भूयसी गैरिका चैत्रं आश्विने फलदा मता। इच्छावती तथा पौषे चैत्रे वै लक्ष्मणा शुभा। वाङ्मती फाल्गुने शस्ता गण्डकी चापि कार्तिके। मलमासे विशेषेण गैरिका फलदायिनी।। गंगा तु सर्वदेति।

ग्रहस्थितिः—वक्री पूर्वोदितः कुजः ८ तो मार्गी, मार्गिणौ पूर्वोदितौ बुधगुरू, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

वातावरणम्—पक्षस्याद्यन्तभागयोः तापाग्निभयवाय्वभ्रचारादयस्तन्मध्यभागे तापवाताग्निकोपझंझावातादयः।

वैशाखशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३४, संवत् २०६६, सन् १४१६ साल, दि. २२।०४।१२ ई. तः दि. ६।५।१२ ई. या., दक्षिण कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ६ तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, शुद्धः, ६ तोऽशुद्धः, वसन्तर्तुः सौम्यगोलायने ।

तिथयः दिनानि	तिथयः द. प.	तिथयः घं. मि.	नक्षत्राणि द. प.	नक्षत्राणि घं. मि.	योगाः द. प.	करणानि द. प.	चन्द्रराशयः रा.द.प.	चन्द्रराशयः घं. मि.	स्पष्टसूर्यः राश्यादिः	दिनमानं द. प.	सू. उ. घं. मि.	सू. अ. घं. मि.	दिनांकाः रा.	दिनांकाः सौ.	दिनांकाः अं.
१ र.	२० ।५४	दि. १ ।५७	म. ५१ ।५०	रा. २ ।१६	प्री. १० ।१५	ब. २० ।५४	मेष	अहो.	० ।८ ।५४ ।६	३२ ।६	५ ।३५	६ ।२५	२	१०	२२
२ चं.	२६ ।६	दि. ४ ।००	कृ. ५८ ।१६	रा. ४ ।५४	आ. ११ ।५१	कौ. २६ ।०६	मे. ८ ।२७	दि. ८ ।५७	० ।६ ।५२ ।२८	३२ ।६	५ ।३४	६ ।२६	३	११	२३
३ मं.	३१ ।२	सा. ५ ।५६	रो. ६० ।००	अहो:	सौ. १३ ।१८	ग. ३१ ।०२	वृष	अहो.	० ।१० ।५० ।४७	३२ ।१२	५ ।३४	६ ।२६	४	१२	२४
४ बु.	३५ ।१६	रा. ७ ।३६	रो. ४ ।१६	दि. ७ ।१७	शो. १४ ।१६	व. ३ ।०६	वृ. ३६ ।५५	रा. ०८ ।१६	० ।११ ।४६ ।५	३२ ।१५	५ ।३३	६ ।२७	५	१३	२५
५ बृ.	३८ ।३८	रा. ८ ।५६	मृ. ६ ।३१	दि. ६ ।२०	अग. १४ ।३४	ब. ६ ।५७	मिथुन	अहो.	० ।१२ ।४७ ।२३	३२ ।१८	५ ।३२	६ ।२८	६	१४	२६
६ शु.	४० ।३६	रा. ६ ।४६	आ. १३ ।३६	दि. १० ।५८	सु. १३ ।५६	कौ. ६ ।३७	मिथुन	अहो.	. ।१३ ।४५ ।४१	३२ ।२१	५ ।३२	६ ।२८	७	१५	२७
७ श.	४१ ।२०	रा. १० ।०३	पुन. १६ ।३३	दि. १२ ।०८	धृ. १२ ।२७	ग. १० ।५८	मि. ० ।४६	प्रा. ५ ।५१	० ।१४ ।४३ ।५६	३२ ।२४	५ ।३१	६ ।२६	८	१६	२८
८ र.	४० ।४४	रा. ६ ।४८	पुष्य १८ ।१३	दि. १२ ।४७	शू. ६ ।५५	वि. ११ ।२	कर्क	अहो.	० ।१५ ।४२ ।०३	३२ ।२८	५ ।३०	६ ।३०	६	१७	२६
६ च.	३८ ।५६	रा. ६ ।०४	आश्ले. १८ ।३६	दि. १२ ।५८	ग. ६ ।२२	बा. ६ ।५०	क. १८ ।३६	दि. १२ ।५८	० ।१६ ।४० ।०७	३२ ।३१	५ ।३०	६ ।३०	१०	१८	३०
१० मं.	३६ ।१	रा. ७ ।५३	म. १७ ।५५	दि. १२ ।३६	वृ. १ ।५३	तै. ७ ।२६	सिंह	अहो.	० ।१७ ।३८ ।११	३२ ।३४	५ ।२६	६ ।३१	११	१६	१
११ बु.	३२ ।८	सा. ६ ।२०	पू.फा. १६ ।६	दि. ११ ।५७	व्या. ५० ।२६	व. ४ ।०५	सिं. ३० ।३०	सा. ५ ।४१	० ।१८ ।३६ ।१५	३२ ।३७	५ ।२६	६ ।३१	१२	२०	२
१२ बृ.	२७ ।२६	दि. ४ ।२६	उ.फा. १३ ।३४	दि. १० ।५४	ह. ४३ ।४८	बा. २७ ।२६	कन्या	अहो.	० ।१६ ।३४ ।१८	३२ ।४०	५ ।२८	६ ।३२	१३	२१	३
१३ शु.	२२ ।६	दि . २ ।१७	ह. १० ।१८	दि. ६ ।३४	व. ३६ ।३५	तै. २२ ।६	क. ३८ ।२५	रा. ८ ।४६	० ।२० ।३२ ।२१	३२ ।४३	५ ।२७	६ ।३३	१४	२२	४
१४ श.	१६ ।१८	दि. ११ ।५८	चि० ६ ।३२	दि. ८ ।०४	सि. २६ ।७	व. १६ ।१८	तुला	अहो.	० ।२१ ।३० ।२४	३२ ।४६	५ ।२७	६ ।३३	१५	२३	५
१५ र.	१० ।१४	दि. ६ ।३२	स्वा. १२ ।२७	दि. ६ ।२५	व्य. २१ ।२८	ब. १० ।१४	तु. ४४ ।१८	रा. ११ ।०६	० ।२२ ।२२ ।१६	३२ ।५०	५ ।२६	६ ।३४	१६	२४	६

- चन्द्रदर्शनं मु. १५ याम्यशृंगफलं महार्घं, श्रीशिवाजीजयन्ती । ● **मैथिलीदिवसः**, दीक्षाग्रहणम् ।
- **द्विरागमनं** रोहिण्यां, दक्षिणयात्रा रोहिण्यां, (२) एको. । × पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पूर्वां विना यात्रा पुष्ये ।
- **अक्षयतृतीया** त्रेतायुगादिः, **परशुरामावतारः**, श्रीपरशुरामजयन्ती, पूर्वदक्षिणयात्रा । ×× श्रीसीतारामपूजनदर्शनादिकं, **हनुमद्ध्वजदानं** ●
- **विवाहः** पञ्चम्यां, **द्विरागमनं** पञ्चम्यां, भ. ३ ।६ उ. ३५ ।१६ या., उत्तरां विना यात्रा पञ्चम्याम् ।
- **श्रीशङ्कराचार्यस्य** २५१६ जयन्तीमहोत्सवः, द. ति. ३८ ।३८ उ., **उपनयनं, विवाहो** द्विरागमनं देवादिप्रतिष्ठा मुण्डनं कर्णवेधो दक्षिणां विना यात्रा च **मृगशिरसि** ।
- **भरण्यां रविः** १६ ।४५, द. ति. ४० ।३६ या., **क्षीणोगुरुरशुद्धारंभश्च** १६ ।२१ उपरि, **गृहप्रवेशः** सप्तम्याम् ।
- जह्नु ७ जह्नुमुनेः कर्णरन्ध्राद्गंगायाः प्राकट्यं, गंगास्नानदानादिः, भ. ४१ ।२० उ., **गृहारम्भः** पुनर्वसौ, **गृहप्रवेशः** सप्तम्यां ×
- **षाण्मासिकरविव्रतविसर्गः, द्विरागमनं** पुष्ये, भ. ११ ।२ या., पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये।
- **पश्चिमास्तो गुरुः** १६ ।२१, **श्रीजानकीनवमीव्रतं**, भूगर्भाज्जगज्जनन्या जानक्याः प्रादुर्भावः, **सीतामह्यां पुण्यारण्ये** तत्प्रादुर्भावस्थले ××
- ध्रुवयोगमानं ५४ ।३८, मई ५, श्रीजानकीनवमीव्रतस्य पारणं, पूर्वयात्रा दशम्यां पूर्वफल्गुन्याम् ।**A** पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
- अश्विन्यां मेषे बुधः ३७ ।५५, **विजया** ११ व्रतं सर्वेषां, **द्विरागमनमुत्तरफल्गुन्यां**, भ. ४ ।५ उ. ३२ ।८ या., **गृहारम्भप्रवेशावुत्तरफल्गुन्यां, A**
- **मधुसूदन** १२ कुशोदकेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **द्विरागमनं, गृहारंभ** उत्तरफल्गुन्यां, **गृहप्रवेशः**, पूर्वयात्रा हस्ते ।
- पूर्वास्तो बुधः ४१ ।६, **प्रदोष** १४ व्रतं, नरसिंह १४ व्रतं प्रदोषः घं. ८ मि. ६ यावद्रात्रौ, **नरसिंहावतारः**, श्रीनरसिंहपूजनदर्शनादिकं, द्विरागमनं मुण्डनं **गृहप्रवेशश्च** त्रयोदश्यां ☐
- भ. १६ ।१८ उ. ४३ ।१६ या., **गृहारंभः** पूर्णिमायां, पश्चिमदक्षिणयात्रा चतुर्दश्यां, (१४–१५) एको., ☐ **गृहारंभश्चित्रायां** त्रयोदश्यां, पूर्वदक्षिणयात्रा कन्यास्थे चन्द्रे ततो दक्षिणयात्रा ।
- विशाखामानं ५५ ।४६, **वैशाखी** १५ स्नानदानादि, **कच्छपावतारः**, बुद्धावतारः, **श्रीबुद्धजयन्ती**, दक्षिणयात्रा **द्विरागमनं** पूर्णिमायाम् ।

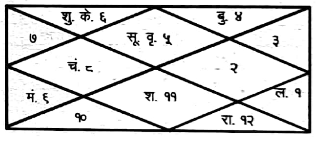
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः
१ र.	४ ।८ ।१० ।२६	११ ।१४ ।६ ।३१	० ।२४ ।४० ।२८	१ ।१६ ।५५ ।३१	६ ।१ ।२६ ।१३	१ ।१५ ।११ ।१०
२ चं.	४ ।८ ।१६ ।२०	११ ।१५ ।३८ ।५४	० ।२४ ।५४ ।४१	१ ।२० ।२६ ।५४	६ ।१ ।२४ ।२६	१ ।१५ ।०७ ।५६
३ मं.	४ ।८ ।२८ ।१४	११ ।१७ ।११ ।१७	० ।२५ ।८ ।५३	१ ।२० ।५८ ।१७	६ ।१ ।१६ ।४६	१ ।१५ ।४ ।४८
४ बु.	४ ।८ ।३७ ।०८	११ ।१८ ।४३ ।४०	० ।२५ ।२३ ।०५	१ ।२१ ।२६ ।४०	६ ।१ ।१५ ।०३	१ ।१५ ।१ ।३७
५ बृ.	४ ।८ ।४६ ।०२	११ ।२० ।१६ ।३	० ।२५ ।३७ ।१७	१ ।२२ ।०१ ।०३	६ ।०१ ।१० ।२०	१ ।१४ ।५८ ।२६
६ शु.	४ ।८ ।५४ ।५६	११ ।२१ ।४८ ।२६	० ।२५ ।५१ ।२६	१ ।२२ ।३२ ।२६	६ ।०१ ।५ ।३७	१ ।१४ ।५५ ।१६
७ श.	४ ।६ ।०३ ।४६	११ ।२३ ।२० ।४६	० ।२६ ।०५ ।४१	१ ।२३ ।०३ ।४६	६ ।१ ।० ।५४	१ ।१४ ।५२ ।०६
८ र.	४ ।६ ।१६ ।३६	११ ।२५ ।४ ।१४	० ।२६ ।२० ।१०	१ ।२३ ।२२ ।३८	६ ।० ।५६ ।११	१ ।१४ ।४८ ।५५
६ च.	४ ।६ ।२६ ।२२	११ ।२६ ।४७ ।३६	० ।२६ ।३४ ।३६	१ ।२३ ।४१ ।२६	६ ।० ।५१ ।२८	१ ।१४ ।४५ ।४४
१० मं.	४ ।६ ।४२ ।०८	११ ।२८ ।३१ ।०४	० ।२६ ।४६ ।०८	१ ।२४ ।० ।१४	६ ।० ।४६ ।४५	१ ।१४ ।४२ ।३३
११ बु.	४ ।६ ।५४ ।५४	० ।० ।१४ ।२६	० ।२७ ।०३ ।३७	१ ।२४ ।१६ ।०२	६ ।० ।४२ ।०२	१ ।१४ ।३६ ।२२
१२ बृ.	४ ।१० ।०७ ।५०	० ।१ ।५७ ।५४	० ।२७ ।१८ ।०५	१ ।२४ ।३७ ।५०	६ ।० ।३७ ।२०	१ ।१४ ।३६ ।११
१३ शु.	४ ।१० ।२० ।२६	० ।३ ।४१ ।१६	० ।२७ ।३२ ।३३	१ ।२४ ।५६ ।३८	६ ।० ।३२ ।३८	१ ।१४ ।३३ ।०
१४ श.	४ ।१० ।३३ ।१२	० ।५ ।२४ ।४४	० ।२७ ।४७ ।०१	१ ।२५ ।१५ ।२६	६ ।० ।२७ ।५६	१ ।१४ ।२६ ।५०
१५ र.	४ ।१० ।४६ ।४५	० ।७ ।१४ ।५६	० ।२८ ।०१ ।१६	१ ।२५ ।१६ ।५६	६ ।० ।२३ ।३६	१ ।१४ ।२६ ।३६

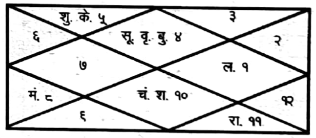
दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ र.	४६ ।३	६ ।४७	८ ।४३	१० ।५६	१३ ।१४	१५ ।३०	१७ ।४५	२० ।०२	२२ ।१६	० ।२४	२ ।१०	३ ।४१	५ ।१०
२ चं.	४५ ।५	६ ।४३	८ ।३६	१० ।५२	१३ ।१०	१५ ।२६	१७ ।४१	१६ ।५८	२२ ।१५	० ।२०	२ ।०६	३ ।३७	५ ।०६
३ मं.	४६ ।७	६ ।३६	८ ।३५	१० ।४८	१३ ।०६	१५ ।२२	१७ ।३७	१६ ।५४	२२ ।११	० ।१६	२ ।०२	३ ।३३	५ ।०२
४ बु.	४६ ।६	६ ।३५	८ ।३१	१० ।४४	१३ ।०२	१५ ।१८	१७ ।३३	१६ ।५०	२२ ।०७	० ।१२	१ ।५८	३ ।२६	४ ।५८
५ बृ.	४६ ।१०	६ ।३१	८ ।२७	१० ।४०	१२ ।५८	१५ ।१४	१७ ।२६	१६ ।४६	२२ ।०३	० ।०८	१ ।५४	३ ।२५	४ ।५५
६ शु.	४६ ।११	६ ।२८	८ ।२४	१० ।३७	१२ ।५५	१५ ।११	१७ ।२६	१६ ।४३	२२ ।००	० ।०५	१ ।५१	३ ।२२	४ ।५१
७ श.	४६ ।१२	६ ।२४	८ ।२०	१० ।३३	१२ ।५१	१५ ।०७	१७ ।२२	१६ ।३६	२१ ।५६	० ।०१	१ ।४७	३ ।१८	४ ।४७
८ र.	४६ ।१४	६ ।२०	८ ।१६	१० ।२६	१२ ।४७	१५ ।०३	१७ ।१८	१६ ।३५	२१ ।५२	२३ ।५७	१ ।४३	३ ।१४	४ ।४३
६ च.	४६ ।१६	६ ।१६	८ ।१२	१० ।२५	१२ ।४३	१४ ।५६	१७ ।१४	१६ ।३१	२१ ।४८	२३ ।५३	१ ।३६	३ ।१०	४ ।३६
१० मं.	४६ ।१८	६ ।१२	८ ।०८	१० ।२१	१२ ।३६	१४ ।५५	१७ ।१०	१६ ।२७	२१ ।४४	२३ ।४६	१ ।३५	३ ।०६	४ ।३५
११ बु.	४६ ।२०	६ ।०६	८ ।०५	१० ।१८	१२ ।३६	१४ ।५२	१७ ।०७	१६ ।२४	२१ ।४१	२३ ।४६	१ ।३२	३ ।०३	४ ।३२
१२ बृ.	४६ ।२१	६ ।०५	८ ।०१	१० ।१४	१२ ।३२	१४ ।४८	१७ ।०३	१६ ।२०	२१ ।३७	२३ ।४२	१ ।२८	२ ।५६	४ ।२८
१३ शु.	४६ ।२२	६ ।१	७ ।५७	१० ।१०	१२ ।२८	१४ ।४४	१६ ।५६	१६ ।१६	२१ ।३३	२३ ।३८	१ ।२४	२ ।५५	४ ।२४
१४ श.	४६ ।२३	५ ।५७	७ ।५३	१० ।०६	१२ ।२४	१४ ।४०	१६ ।५५	१६ ।१२	२१ ।२६	२३ ।३४	१ ।२०	२ ।५१	४ ।२०
१५ र.	४६ ।२५	५ ।५३	७ ।४६	१० ।०२	१२ ।२०	१४ ।३६	१६ ।५१	१६ ।०८	२१ ।२५	२३ ।३०	१ ।१६	२ ।४७	४ ।१६

७ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४६ ।२१
अयनांशाः २२ ।४१ ।४२



१४ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४६ ।२८
अयनांशाः २२ ।४१ ।४३



विविधविषयाः—वैशाखशुक्लतृतीयायां **परशुरामार्घ्यदानमन्त्रः**—जामदग्न्य महावीर क्षत्रियान्तकर प्रभो। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं कृपया परमेश्वर। वैशाखशुक्लनवम्यां **जानकीनवमीव्रतं**—वैशाखस्य सिते पक्षे नवम्यां सोमवासरे। प्रादुर्बभूव लोकानां हिताय जनकात्मजा।। तत्र जानकीं संपूज्य प्रणमेत्तन्मन्त्रः—दशाननविनाशाय जाता धरणिसंभवा । मैथिली शीलसंपन्ना पातु नः पतिदेवता। **मूलवासः**—स्वर्गे शुचिप्रौष्ठपदेषमाघे भूमौ नभः कार्त्तिकचैत्रपौषे। मूलं ह्यधस्तात्तु तपस्यमार्ग– वैशाखशुक्रेष्वशुभं च तत्र। **अभुक्तमूलविचारः**— अश्विनीमघमूलादौ त्रिवेदनवनाडिकाः। रेवतीसर्पशक्रान्ते मासरुद्ररसाः क्रमात्।। तस्मादेषूत्पन्नानां शान्तिः कार्या। मूलोत्पन्नानां विशेषण, यतोहि—मूलाद्यपादजो हन्ति पितरञ्च द्वितीयजम्। मातरञ्च तृतीयेऽर्थं शुभदस्तु तुरीयजः। सा शान्तिः जन्मानन्तरमग्रिममूलादिनक्षत्रेषु कार्या। **मूलवृक्षविचारः**—मूलस्तम्भस्त्वचा शाखा पत्रं पुष्पं फलं शिखा। मुनयोऽष्टौ दिशा रुद्राः सूर्याः पञ्चाब्धयोऽग्नयः । मूले मूलविनाशः स्यात्स्तम्भे वंशविनाशनम्। त्वचि मातुर्भवेत्कलेशः शाखायां मातुलस्य च। पत्रे राज्यं विजानीयात्पुष्पे मन्त्रिपदं स्मृतम्। फले च विपुला लक्ष्मीः शिखायामल्पजीवितम्। त्रीतरशान्तिरपि विधेया। तत्र सजातीयापत्यत्रयानन्तरं विजातीयापत्यप्रसवस्त्रीतरः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वोदितो बुधः १३ तः पूर्वास्तः, मार्गी पूर्वोदितो गुरुः ६तः पश्चिमास्तः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोर्वायुचारतापवृद्धिवह्निभयादयस्तन्मध्यभागे मेघवायुचारतापझंझावातोपलपातादयः ।

ज्येष्ठकृष्णपक्षः

शकाब्दः १६३४, संवत् २०६६, सन् १४१६ साल, दि. ७।०५।१२ ई. तः दि. २०।०५।१२ ई. या., दक्षिणे कालः, ६तः पश्चिमे कालः ।
मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ७ तो वक्री, अशुद्धः, वसन्तर्तुः, ६ तो ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने ।

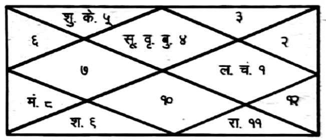
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः			
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.	
१ चं.	४।८	दि. ७।४	अनु. ५४।१४	रा. ३।०७	वरी. १३।४७	कौ. ४।०८	वृश्चिक	अहो.	०।२३।२१।८	३२।५३	५।२५	६।३५	१७	२५	७	द्वितीयामानं ५४।३, ज्येष्ठे वृन्ताकं त्यजेत्, **द्विरागमनं** प्रतिपदि, **गृहारम्भो** द्वितीयायां, पश्चिमोत्तरयात्रा प्रतिपदि ।
३ मं.	५२।३२	रा. २।२६	ज्ये. ५०।३०	रा. १।३७	प. ६।१६	व. २५।२२	वृ. ५०।३०	रा. १।३७	०।२४।२०।००	३२।५६	५।२५	६।३५	१८	२६	८	शिवयोगमानं ५२।४३, भ. २५।२२ उ. ५२।३२ या., पश्चिमयात्रा ज्येष्ठायां ततः पूर्वयात्रा ।
४ बु.	४७।२७	रा. १२।२३	मू. ४७।१९	रा. १२।२०	सि. ५२।१६	ब. २०।००	धनु	अहो.	०।२५।१८।५२	३२।५६	५।२४	६।३६	१९	२७	९	**श्रीआखुरथ** ४ व्रतं, पूर्वयात्रा पञ्चम्याम् ।
५ बृ.	४३।५	रा. १०।३८	पू.षा. ४४।५४	रा. ११।२२	सा. ४६।११	कौ. १५।१६	ध. ५६।३०	रा. ५।१२	०।२६।१७।४४	३३।०२	५।२४	६।३६	२०	२८	१०	द. ति. ४३।५ उ., पूर्वोत्तरयात्रा पञ्चम्याम्।
६ शु.	३९।३६	रा. ६।१३	उ.षा. ४३।१८	रा. १०।४२	शुभः ४०।४६	ग. ११।२१	मकर	अहो.	०।२७।१६।३६	३३।०५	५।२३	६।३७	२१	२९	११	**कृतिकायां रविः** ६।१४, द. ति. ३६।३६ या., भ. ३६।३६ उ. ।
७ श.	३७।५	रा. ८।०८	श्र. ४२।४४	रा. १०।२८	शुक्ल. ३६।११	वि. ८।२१	मकर	अहो.	०।२८।१५।२८	३३।०८	५।२२	६।३८	२२	३०	१२	वक्री शुक्रः ४६।४२, वक्रगत्या कन्यायां शनिः १४।२१, **पञ्चकारम्भो** रात्रौ घं. १० मि. २८ उ., भ. ८।२१ या. ×
८ र.	३५।४८	दि. ७।४१	ध. ४३।२३	रा. १०।४३	ब्र. ३२।३४	बा. ६।२७	म. १३।०४	दि. १०।३६	०।२९।१३।६	३३।११	५।२२	६।३८	२३	३१	१३	मासान्तः । × पूर्वां विनायात्रा श्रवणायाम् ।
९ चं.	३५।४४	रा. ७।३९	श. ४५।१७	रा. ११।२८	ऐं. २९।५८	तै. ५।४६	कुम्भ	अहो.	१।०।१०।४४	३३।१४	५।२१	६।३९	२४	१	१४	**वृषे रविः** ३५।२८ मु. १५ फलं महार्घं विष्णुपदी **संक्रान्तिपुण्यकालो** घं. १२ मि. ० उपरिदिने, **पुण्याहः**, वैशाखस्नानसमाप्तिः ××
१० मं.	३७।२	रा. ८।१०	पू.भा. ४८।२८	रा. १२।४४	वै. २८।२२	व. ६।२३	कुं. ३२।४१	सा. ६।२५	१।१।८।२२	३३।१७	५।२१	६।३९	२५	२	१५	**वृषे गुरुः** ६।७, मासादिः भ. ६।२३ उ. ३७।२ या. । ×× हरिद्वारे कल्पवाससमाप्तिः ।
११ बु.	३९।२८	रा. ६।०७	उ.भा. ५२।४४	रा. २।२६	वि. २७।४३	ब. ८।१५	मीन	अहो.	१।२।६।००	३३।२०	५।२०	६।४०	२६	३	१६	**अपरा** ११ व्रतं सर्वेषां, पश्चिमयात्रा रेवत्याम्।
१२ बृ.	४३।६	रा. १०।३३	रे. ५८।६	रा. ४।३३	प्री. २७।५८	कौ. ११।१७	मी. ५८।६	रा. ४।३३	१।३।३।३८	३३।२३	५।१९	६।४१	२७	४	१७	तिलेन पारणं, **पञ्चकान्ती** रात्रौ घं. ४ मि. ३३ उ., पश्चिमोत्तर यात्रा ।
१३ शु.	४७।३३	रा. १२।२०	अ. ६०।००	अहो.	आ. २८।५८	ग. १५।२०	मेष	अहो.	१।४।१।१५	३३।२६	५।१९	६।४१	२८	५	१८	वृषे बुधः ५८।२६, **प्रदोष** १३ व्रतं, भ. ४७।३३ उ., पश्चिमां विना यात्रा ।
१४ श.	५२।३१	रा. २।१८	अ. ४।१०	दि. ६।५८	सौ. ३०।२३	वि. २०।०२	मेष	अहो.	१।४।५८।५२	३३।२८	५।१८	६।४२	२९	६	१९	**प्रदोष** १४ व्रतं, भ. २०।२ या।
३० र.	५७।४२	रा. ४।२३	भ. १०।४६	दि. ६।३६	शो. ३२।४	च. २५।०७	मे. २७।२४	दि. ४।१६	१।५।५६।१९	३३।३०	५।१८	६।४२	३०	७	२०	**ज्यैष्ठी** ३० स्नानदानादिः, **वटसावित्रीव्रतम्**।

षडग्रहयोगफलम्—ग्रहाणामेकस्मिन् यदि भवति षण्णां निवसतिस्तदा गोलो योगः प्रलयपदमिन्द्रोऽपिलभते। भवेल्लोको रङ्कस्त्यजति खलु पुत्रं च जननी प्रजानां नाशः स्याच्चलति वसुधा शुष्यति नदी ।।

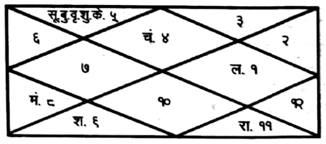
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ चं.	४।११।६।१८	०।६।०५।१४	०।२८।१५।३१	१।२५।२४।३२	६।०।१९।१६	१।१४।२३।२८	४६।२७	५।५०	७।४६	६।५६	१२।१७	१४।३३	१६।४८	१६।०५	२१।२२	२३।२७	१।१३	२।४४	४।१३
३ मं.	४।११।२२।५१	०।१०।५५।२८	०।२८।२९।४६	१।२५।२९।०५	६।०।१४।५७	१।१४।२०।१७	४६।२९	५।४६	७।४२	६।५५	१२।१३	१४।२९	१६।४४	१९।०१	२१।१८	२३।२३	१।०६	२।४०	४।०६
४ बु.	४।११।३९।२४	०।१२।४५।४२	०।२८।४४।०१	१।२५।३३।३८	६।०।१०।३८	१।१४।१७।०६	४६।३१	५।४२	७।३८	६।५१	१२।०९	१४।२५	१६।४०	१८।५७	२१।१४	२३।१९	१।०५	२।३६	४।०५
५ बृ.	४।११।५५।५७	०।१४।३५।५६	०।२८।५८।१५	१।२५।३८।१२	६।०।६।१९	१।१४।१३।५५	४६।३२	५।३८	७।३४	६।४७	१२।०५	१४।२१	१६।३६	१८।५३	२१।१०	२३।१५	१।०१	२।३२	४।०१
६ शु.	४।१२।१२।३०	०।१६।२६।१०	०।२९।१२।२९	१।२५।४२।४६	६।०।२।००	१।१४।१०।४५	४६।३३	५।३४	७।३०	६।४३	१२।०१	१४।१७	१६।३२	१८।४९	२१।०६	२३।११	०।५७	२।२८	३।५७
७ श.	४।१२।२९।२	०।१८।१६।२४	०।२९।२६।४३	१।२५।४७।२०	५।२९।५७।४१	१।१४।०७।३५	४६।३४	५।३०	७।२६	६।३९	११।५७	१४।१३	१६।२८	१८।४५	२१।०२	२३।०७	०।५३	२।२४	३।५३
८ र.	४।१२।४८।४५	०।२०।०६।५६	०।२९।४१।०२	१।२५।३९।५४	५।२९।५३।३६	१।१४।०४।२४	४६।३६	५।२७	७।२३	६।३६	११।५४	१४।१०	१६।२५	१८।४२	२०।५९	२३।०४	०।५०	२।२१	३।५०
९ चं.	४।१३।८।२८	०।२२।३।३४	०।२९।५५।२१	१।२५।२७।१२	५।२९।४९।३१	१।१४।१।१३	४६।३८	५।२३	७।१९	६।३२	११।५०	१४।०६	१६।२१	१८।३८	२०।५५	२३।००	०।४६	२।१७	३।४६
१० मं.	४।१३।२८।११	०।२३।५७।८	१।०।०९।४०	१।२५।१४।२९	५।२९।४५।२९	१।१३।५८।०२	४६।४०	५।१९	७।१५	६।२८	११।४६	१४।०२	१६।१७	१८।३४	२०।५१	२२।५६	०।४२	२।१३	३।४२
११ बु.	४।१३।४७।५४	०।२५।५०।४२	१।०।२३।५९	१।२५।०१।४६	५।२९।४१।२१	१।१३।५४।५१	४६।४१	५।१५	७।११	६।२४	११।४२	१३।५८	१६।१३	१८।३०	२०।४७	२२।५२	०।३८	२।०९	३।३८
१२ बृ.	४।१४।०७।३७	०।२७।४४।१६	१।०।३७।१७	१।२४।४९।०३	५।२९।३७।१६	१।१३।५१।४०	४६।४२	५।११	७।०७	६।२०	११।३८	१३।५४	१६।०९	१८।२६	२०।४३	२२।४८	०।३४	२।०५	३।३४
१३ शु.	४।१४।२७।१९	०।२९।३७।५०	१।०।५१।३५	१।२४।३६।२०	५।२९।३३।११	१।१३।४८।३०	४६।४३	५।०७	७।०३	६।१६	११।३४	१३।५०	१६।०५	१८।२२	२०।३९	२२।४४	०।३०	२।०१	३।३०
१४ श.	४।१४।४७।१	१।०१।३१।२४	१।०१।०६।५३	१।२४।२३।३७	५।२९।२९।०६	१।१३।४५।२०	४६।४४	५।०३	६।५९	६।१२	११।३०	१३।४६	१६।०१	१८।१८	२०।३५	२२।४०	०।२६	१।५७	३।२६
३० र.	४।१५।०६।२४	१।३।२५।५६	१।०१।२१।१२	१।२३।५३।०२	५।२९।२५।४३	१।१३।४२।०६	४६।४५	४।५९	६।५५	६।०८	११।२६	१३।४२	१५।५७	१८।१४	२०।३१	२२।३६	०।२२	१।५३	३।२२

७ शनौ बल्ली ८।३८।४६।३५
अयनांशाः २२।४१।४४



१४ शनौ बल्ली ८।३८।४६।४२
अयनांशाः २२।४१।४५



विविधविषयाः—अमायां **वटसावित्रीव्रतम्**—अमायाञ्च तथा ज्येष्ठे वटमूले महासती। त्रिरात्रोपोषिता नारी विधानेन प्रपूजयेत्।। सावित्रीप्रतिमां कुर्यात्सौवर्णीं वापि मृण्मयीम्। सप्तधान्येन संयुक्तां सावित्रीप्रतिमां शुभाम्।। सार्द्धं सत्यवता साध्वीं फलनैवेद्यदीपकैः । सावित्र्याख्यानकञ्चापि वाचयित्वा द्विजोत्तमैरिति विधिपूर्वकं सम्पूज्य ब्राह्मणाय **दद्यात्तन्मन्त्रः**—सावित्रीयं मया दत्ता सहिरण्या महासती। ब्रह्मणः प्रीणनार्थाय ब्राह्मणः प्रतिगृह्यताम्।। **कतिचिन्नियमाः**—समित्पुष्पकुशादीनि ब्राह्मणः स्वयमाहरेत्। शूद्रानीतैः क्रयक्रीतैः कर्म कुर्वन् पतत्यधः ।। सन्तानप्रदसन्तानगोपालमन्त्रः—देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः।। इति मन्त्रस्य संपादलक्षसंख्यकजपः, तिलपायसघृतैस्तद्दशांशहोमः, तद्दशांशतर्पणं, तद्दशांशमार्जनं, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्च कारयेत्। काशीमाहात्म्यं, स्कान्दे काशीखण्डे—कैलाशादधिका काशी काशी सर्वप्रकाशिका। कैलाशे शंकरोऽप्येकः काश्यां सर्वेऽपि शंकराः।। अन्यानि मुक्तिक्षेत्राणि काशीप्राप्तकरणानि चं । काशीं प्राप्य विमुच्येत नान्यथा तीर्थकोटिभिः ।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, मार्गी पश्चिमोदितः शुक्रः ७ तो वक्री, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोः तापवृद्ध्यग्निभयमेघचारादयस्तन्मध्यभागे तापाग्निभय झंझावातादयः ।

ज्येष्ठशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३४, संवत् २०६६, सन् १४१६ साल, दि. २१।०५।१२ ई. तः दि. ४।०६।१२ ई. या., पश्चिमे कालः । मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः, ८ तः पूर्वोदितः, वक्री पश्चिमोदितः, शुक्रः ७ तः पश्चिमास्तः १५ तः पूर्वोदितः, अशुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने ।

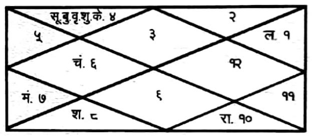
<table>
<tr><th>तिथयः</th><th colspan="2">तिथयः</th><th colspan="2">नक्षत्राणि</th><th>योगाः</th><th>करणानि</th><th colspan="2">चन्द्रराशयः</th><th>स्पष्टसूर्यः</th><th>दिनमानं</th><th>सू. उ.</th><th>सू. अ.</th><th colspan="3">दिनांकाः</th></tr>
<tr><th>दिनानि</th><th>द. प.</th><th>घं. मि.</th><th>द. प.</th><th>घं. मि.</th><th>द. प.</th><th>द. प.</th><th>रा.व.प.</th><th>घं. मि.</th><th>राश्यादिः</th><th>द. प.</th><th>घं. मि.</th><th>घं. मि.</th><th>रा.</th><th>सौ.</th><th>अं.</th></tr>
<tr><td>१ च.</td><td>६० |००</td><td>अहो.</td><td>कृ. १७ |१७</td><td>दि. १२ |१३</td><td>आं ३३ |३६</td><td>किं. ३० |७</td><td>वृष</td><td>अहो.</td><td>१ |६ |५३ |४६</td><td>३३ |३२</td><td>५ |१८</td><td>६ |४२</td><td>३१</td><td>८</td><td>२१</td></tr>
<tr><td>१ मं.</td><td>२ |३१</td><td>दि ६ |१७</td><td>रो. २३ |२४</td><td>दि. २ |३६</td><td>सु. ३४ |४७</td><td>ब. २ |३१</td><td>वृ. ५६ |०६</td><td>रा. ३ |४३</td><td>१ |७ |५१ |१३</td><td>३३ |३४</td><td>५ |१७</td><td>६ |४३</td><td>१</td><td>६</td><td>२२</td></tr>
<tr><td>२ बु.</td><td>६ |४३</td><td>दि. ७ |५८</td><td>मृ. २८ |४८</td><td>दि. ४ |४८</td><td>धृ. ३५ |१८</td><td>कौ. ६ |४३</td><td>मिथुन</td><td>अहो.</td><td>१ |८ |४८ |४०</td><td>३३ |३६</td><td>५ |१७</td><td>६ |४३</td><td>२</td><td>१०</td><td>२३</td></tr>
<tr><td>३ बृ.</td><td>६ |५१</td><td>दि. ६ |१२</td><td>आ. ३३ |६</td><td>सा. ६ |३२</td><td>शू. ३४ |५७</td><td>ग. ६ |५१</td><td>मिथुन</td><td>अहो.</td><td>१ |९ |४६ |६</td><td>३३ |३८</td><td>५ |१६</td><td>६ |४४</td><td>३</td><td>११</td><td>२४</td></tr>
<tr><td>४ शु.</td><td>११ |५५</td><td>दि. १० |०२</td><td>पुन. ३६ |२१</td><td>रा. ७ |४८</td><td>गं. ३३ |४५</td><td>वि. ११ |५५</td><td>मि. २० |३३</td><td>दि. १ |२६</td><td>१ |१० |४३ |३२</td><td>३३ |४०</td><td>५ |१६</td><td>६ |४४</td><td>४</td><td>१२</td><td>२५</td></tr>
<tr><td>५ श.</td><td>१२ |४१</td><td>दि. १० |२०</td><td>पुष्य ३८ |१८</td><td>रा. ८ |३१</td><td>वृ. ३१ |२८</td><td>बा. १२ |४१</td><td>कर्क</td><td>अहो.</td><td>१ |११ |४० |५८</td><td>३३ |४२</td><td>५ |१६</td><td>६ |४४</td><td>५</td><td>१३</td><td>२६</td></tr>
<tr><td>६ र.</td><td>१२ |७</td><td>दि. १० |०६</td><td>आश्ले. ३८ |५८</td><td>रा. ८ |५०</td><td>ध्रु. २८ |१३</td><td>तै. १२ |७</td><td>क. ३८ |५८</td><td>रा. ८ |५०</td><td>१ |१२ |३८ |१४</td><td>३३ |४४</td><td>५ |१५</td><td>६ |४५</td><td>६</td><td>१४</td><td>२७</td></tr>
<tr><td>७ चं.</td><td>१० |१७</td><td>दि. ६ |२२</td><td>म. ३८ |२७</td><td>रा. ८ |३८</td><td>व्या. २३ |५७</td><td>व. १० |१७</td><td>सिंह</td><td>अहो</td><td>१ |१३ |३५ |३०</td><td>३३ |४५</td><td>५ |१५</td><td>६ |४५</td><td>७</td><td>१५</td><td>२८</td></tr>
<tr><td>८ मं.</td><td>७ |२०</td><td>दि. ८ |११</td><td>पू.फा. ३६ |५४</td><td>रा. ८ |०१</td><td>ह. १८ |५२</td><td>ब. ७ |२०</td><td>सिं. ५१ |१८</td><td>रा. १ |४६</td><td>१ |१४ |३२ |४५</td><td>३३ |४६</td><td>५ |१५</td><td>६ |४५</td><td>८</td><td>१६</td><td>२९</td></tr>
<tr><td>९ बु.</td><td>३ |२५</td><td>दि. ६ |३७</td><td>उ.फा. ३४ |३२</td><td>सा. ७ |०४</td><td>वज्र. १२ |५६</td><td>कौ. ३ |२५</td><td>कन्या</td><td>अहो.</td><td>१ |१५ |३० |००</td><td>३३ |४७</td><td>५ |१५</td><td>६ |४५</td><td>९</td><td>१७</td><td>३०</td></tr>
<tr><td>११ बृ.</td><td>५३ |१६</td><td>रा. २ |३२</td><td>ह. ३१ |२२</td><td>सा. ५ |४७</td><td>सि. ६ |२६</td><td>व. २५ |५८</td><td>कं. ५६ |३२</td><td>रा. ५ |०३</td><td>१ |१६ |२७ |१५</td><td>३३ |४८</td><td>५ |१४</td><td>६ |४६</td><td>१०</td><td>१८</td><td>३१</td></tr>
<tr><td>१२ शु.</td><td>४७ |२४</td><td>रा. १२ |१२</td><td>चि. २७ |४१</td><td>दि. ४ |१८</td><td>व. ५२ |३</td><td>ब. २० |२०</td><td>तुला</td><td>अहो.</td><td>१ |१७ |२४ |३०</td><td>३३ |४९</td><td>५ |१४</td><td>६ |४६</td><td>११</td><td>१९</td><td>१</td></tr>
<tr><td>१३ श.</td><td>४१ |१७</td><td>रा. ६ |४५</td><td>स्वा. २३ |३८</td><td>दि. २ |४१</td><td>परि. ४४ |२८</td><td>कौ. १४ |२०</td><td>तुला</td><td>अहो.</td><td>१ |१८ |२१ |४५</td><td>३३ |५०</td><td>५ |१४</td><td>६ |४६</td><td>१२</td><td>२०</td><td>२</td></tr>
<tr><td>१४ र.</td><td>३५ |६</td><td>सा. ७ |१६</td><td>वि. १६ |२६</td><td>दि. १ |०२</td><td>शि. ३६ |४८</td><td>ग. ८ |११</td><td>तु. ५ |३०</td><td>दि. ७ |२६</td><td>१ |१९ |१८ |५३</td><td>३३ |५२</td><td>५ |१४</td><td>६ |४६</td><td>१३</td><td>२१</td><td>३</td></tr>
<tr><td>१५ च.</td><td>२६ |१</td><td>दि. ४ |४६</td><td>अनु. १५ |२२</td><td>दि. ११ |२२</td><td>सि. २६ |१७</td><td>वि. २ |०३</td><td>वृश्चिक</td><td>अहो.</td><td>१ |२० |१६ |१</td><td>३३ |५४</td><td>५ |१३</td><td>६ |४७</td><td>१४</td><td>२२</td><td>४</td></tr>
</table>

दक्षिणयात्रा रोहिण्याम् ।
चन्द्रदर्शनं मु. ३० समशृंगफलं साम्यं, पूर्वदक्षिणयात्रा द्वितीयायां रोहिण्यां तत उत्तरां विना यात्रा मृगशिरसि ।
रंभा ३ पञ्चाग्निव्रतं, महाराणाप्रतापजयन्ती, **मुण्डनं** मृगशिरसि, उत्तरां विना यात्रा द्वितीयायाम् ।
श्रीगणेश ४ व्रतं, द. ति. ६ |५१ उ., भ. ४० |५३ उ., ।
रोहिण्यां रविः १ |२०, द. ति. ११ |५५ या., **क्षीणः शुक्रः** ४३ |२८ उपरि, **मुण्डनं** पञ्चम्यां, भ. ११ |५५ या., दक्षिणयात्रा पञ्चम्यां ×
पूर्वां विना यात्रा षष्ठ्यां पुष्ये । × मिथुनस्थे चन्द्रे तत उत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततः पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये ।
|००||
पश्चिमास्तः शुक्रः ४३ |२८, भ. १० |१७ उ. ३८ |४६ या., उत्तरयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् ।
पूर्वोदितो गुरुः ४३ |२७, **नैर्ऋत्यामगस्त्यास्तः**, पूर्वयात्रा पूर्वफल्गुन्याम् । ×× पूर्वदक्षिणयात्रा हस्ते ।
दशमीमानं ५५ |१५, **गंगादशहरा**, गंगास्नानदानादिः, पृथिव्यां गंगावतरणं, श्रीरामेश्वरप्रतिष्ठादिनं तद्दर्शनं पूजनञ्च, ××
व्यतिपातयोगमानं ५२ |५७, **निर्जला** ११ व्रतं स्मार्त्तानां, मुण्डनं, भ. २५ |५८ उ. ५३ |१६ या., पूर्वयात्रा ।
जून ६, त्रिविक्रम १२ तिलेन पारणं, **निर्जला** ११ व्रतं वैष्णवानां, **पुष्टो गुरुः** ४३ |२७ उपरि, दक्षिणयात्रा त्रयोदश्याम् ।
प्रदोष १३ व्रतं, पश्चिमदक्षिणयात्रा स्वात्याम् ।
मिथुने बुधः ५४ |२४, चम्पक १४ **प्रदोष** १४ व्रतं, भ. ३५ |६ उ., उत्तरयात्रा पूर्णिमायाम् ।
पूर्वोदितः शुक्रः २० |५१, ज्यैष्ठी १५ स्नानदानादिः, **सांप्रतिकवैवस्वतमन्वादिः**, श्रीकवीरजयन्ती, भ. २ |३ या., पश्चिमोत्तरयात्रा ।

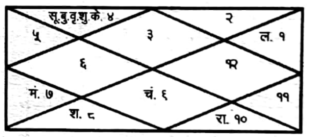
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

<table>
<tr><th>ति. दि.</th><th>मंगल</th><th>बुधः</th><th>गुरुः</th><th>शुक्रः</th><th>शनिः</th><th>केतुः</th><th>मिश्रमानं</th><th>मे.अं.</th><th>वृ. अं.</th><th>मि. अं.</th><th>क. अं.</th><th>सि. अं.</th><th>कं. अं.</th><th>तु. अं.</th><th>वृ. अं.</th><th>ध. अं.</th><th>म. अं.</th><th>कु. अं.</th><th>मी. अं.</th></tr>
<tr><td>१ चं</td><td>४ |१५ |३१ |४६</td><td>१ |५ |२० |२८</td><td>१ |१ |३५ |३०</td><td>१ |२३ |२२ |२७</td><td>५ |२६ |२२ |२०</td><td>१ |१३ |३८ |५८</td><td>४६ |४६</td><td>४ |५५</td><td>६ |५१</td><td>६ |०४</td><td>११ |२२</td><td>१३ |३८</td><td>१५ |५३</td><td>१८ |१०</td><td>२० |२७</td><td>२२ |३२</td><td>० |१८</td><td>१ |४६</td><td>३ |१८</td></tr>
<tr><td>१ मं.</td><td>४ |१५ |५४ |०८</td><td>१ |०७ |१५ |००</td><td>१ |१ |४६ |४८</td><td>१ |२२ |५१ |५२</td><td>५ |२६ |१८ |५७</td><td>१ |१३ |३५ |४७</td><td>४६ |४७</td><td>४ |५१</td><td>६ |४७</td><td>६ |००</td><td>११ |१८</td><td>१३ |३४</td><td>१५ |४६</td><td>१८ |०६</td><td>२० |२३</td><td>२२ |२८</td><td>० |१४</td><td>१ |४५</td><td>३ |१४</td></tr>
<tr><td>२ बु.</td><td>४ |१६ |१६ |३०</td><td>१ |६ |६ |३१</td><td>१ |०२ |०४ |०६</td><td>१ |२२ |२१ |१०</td><td>५ |२६ |१५ |३४</td><td>१ |१३ |३२ |३६</td><td>४६ |४८</td><td>४ |४७</td><td>६ |४३</td><td>८ |५६</td><td>११ |१४</td><td>१३ |३०</td><td>१५ |४५</td><td>१८ |०२</td><td>२० |१६</td><td>२२ |२४</td><td>० |१०</td><td>१ |४१</td><td>३ |१०</td></tr>
<tr><td>३ बृ.</td><td>४ |१६ |३८ |५२</td><td>१ |११ |०४ |०२</td><td>१ |२ |१८ |२४</td><td>१ |२१ |५० |४२</td><td>५ |२६ |१२ |११</td><td>१ |१३ |२६ |५५</td><td>४६ |४६</td><td>४ |४३</td><td>६ |३६</td><td>८ |५२</td><td>११ |१०</td><td>१३ |२६</td><td>१५ |४१</td><td>१७ |५८</td><td>२० |१५</td><td>२२ |२०</td><td>० |०६</td><td>१ |३७</td><td>३ |०६</td></tr>
<tr><td>४ शु</td><td>४ |१७ |०१ |१४</td><td>१ |१२ |५८ |३३</td><td>१ |२ |३२ |४२</td><td>१ |२१ |२० |०७</td><td>५ |२६ |८ |४८</td><td>१ |१३ |२६ |१५</td><td>४६ |५०</td><td>४ |३६</td><td>६ |३५</td><td>८ |४८</td><td>११ |०६</td><td>१३ |२२</td><td>१५ |३७</td><td>१७ |५४</td><td>२० |११</td><td>२२ |१६</td><td>० |०२</td><td>१ |३३</td><td>३ |०२</td></tr>
<tr><td>५ श.</td><td>४ |१७ |२३ |३६</td><td>१ |१४ |५३ |०४</td><td>१ |०२ |४७ |००</td><td>१ |२० |४६ |३२</td><td>५ |२६ |५ |२५</td><td>१ |१३ |२३ |०५</td><td>४६ |५१</td><td>४ |३५</td><td>६ |३१</td><td>८ |४४</td><td>११ |०२</td><td>१३ |१८</td><td>१५ |३३</td><td>१७ |५०</td><td>२० |०७</td><td>२२ |१२</td><td>२३ |५८</td><td>१ |२६</td><td>२ |५८</td></tr>
<tr><td>६ र.</td><td>४ |१७ |४८ |०७</td><td>१ |१६ |४५ |२२</td><td>१ |३ |१ |२४</td><td>१ |२० |०६ |४५</td><td>५ |२६ |०२ |१५</td><td>१ |१३ |१६ |५४</td><td>४६ |५२</td><td>४ |३१</td><td>६ |२७</td><td>८ |४०</td><td>१० |५८</td><td>१३ |१४</td><td>१५ |२६</td><td>१७ |४६</td><td>२० |०३</td><td>२२ |०८</td><td>२३ |५४</td><td>१ |२५</td><td>२ |५४</td></tr>
<tr><td>७ चं.</td><td>४ |१८ |१२ |३७</td><td>१ |१८ |३७ |४०</td><td>१ |३ |१५ |४७</td><td>१ |१६ |२६ |५८</td><td>५ |२८ |५६ |०५</td><td>१ |१३ |१६ |४३</td><td>४६ |५३</td><td>४ |२७</td><td>६ |२३</td><td>८ |३६</td><td>१० |५४</td><td>१३ |१०</td><td>१५ |२५</td><td>१७ |४२</td><td>१९ |५६</td><td>२२ |०४</td><td>२३ |५०</td><td>१ |२१</td><td>२ |५०</td></tr>
<tr><td>८ मं.</td><td>४ |१८ |३७ |०७</td><td>१ |२० |२६ |५८</td><td>१ |३ |३० |१०</td><td>१ |१८ |५० |११</td><td>५ |२८ |५५ |५५</td><td>१ |१३ |१३ |३२</td><td>४६ |५४</td><td>४ |२३</td><td>६ |१६</td><td>८ |३२</td><td>१० |५०</td><td>१३ |०६</td><td>१५ |२१</td><td>१७ |३८</td><td>१९ |५५</td><td>२२ |००</td><td>२३ |४६</td><td>१ |१७</td><td>२ |४६</td></tr>
<tr><td>९ बु.</td><td>४ |१९ |०१ |३७</td><td>१ |२२ |२२ |१६</td><td>१ |३ |४४ |३३</td><td>१ |१८ |१० |२४</td><td>५ |२८ |५२ |४६</td><td>१ |१३ |१० |२१</td><td>४६ |५५</td><td>४ |१६</td><td>६ |१५</td><td>८ |२८</td><td>१० |४६</td><td>१३ |०२</td><td>१५ |१७</td><td>१७ |३४</td><td>१९ |५१</td><td>२१ |५६</td><td>२३ |४२</td><td>१ |१३</td><td>२ |४२</td></tr>
<tr><td>११ बृ.</td><td>४ |१९ |२६ |०७</td><td>१ |२४ |१४ |३३</td><td>१ |३ |५८ |५६</td><td>१ |१७ |३० |३७</td><td>५ |२८ |४६ |३७</td><td>१ |१३ |०७ |१०</td><td>४६ |५५</td><td>४ |१५</td><td>६ |११</td><td>८ |२४</td><td>१० |४२</td><td>१२ |५८</td><td>१५ |१३</td><td>१७ |३०</td><td>१९ |४७</td><td>२१ |५२</td><td>२३ |३८</td><td>१ |०६</td><td>२ |३८</td></tr>
<tr><td>१२ शु.</td><td>४ |१९ |५० |३७</td><td>१ |२६ |६ |५०</td><td>१ |४ |१३ |१६</td><td>१ |१६ |५० |५१</td><td>५ |२८ |४६ |२८</td><td>१ |१३ |०३ |५६</td><td>४६ |५५</td><td>४ |११</td><td>६ |०७</td><td>८ |२०</td><td>१० |३८</td><td>१२ |५४</td><td>१५ |०६</td><td>१७ |२६</td><td>१९ |४३</td><td>२१ |४८</td><td>२३ |३४</td><td>१ |०५</td><td>२ |३४</td></tr>
<tr><td>१३ श.</td><td>४ |२० |१५ |०७</td><td>१ |२७ |५६ |०७</td><td>१ |४ |२७ |४२</td><td>१ |१६ |११ |०५</td><td>५ |२८ |४३ |१६</td><td>१ |१३ |०० |४६</td><td>४६ |५५</td><td>४ |०७</td><td>६ |०३</td><td>८ |१६</td><td>१० |३४</td><td>१२ |५०</td><td>१५ |०५</td><td>१७ |२२</td><td>१९ |३६</td><td>२१ |४४</td><td>२३ |३०</td><td>१ |०१</td><td>२ |३०</td></tr>
<tr><td>१४ र.</td><td>४ |२० |४१ |५६</td><td>१ |२६ |४६ |३७</td><td>१ |४ |४१ |५३</td><td>१ |१५ |३४ |०२</td><td>५ |२८ |४१ |११</td><td>१ |१२ |५७ |३८</td><td>४६ |५६</td><td>४ |०३</td><td>५ |५६</td><td>८ |१२</td><td>१० |३०</td><td>१२ |४६</td><td>१५ |०१</td><td>१७ |१८</td><td>१९ |३५</td><td>२१ |४०</td><td>२३ |२६</td><td>० |५७</td><td>२ |२६</td></tr>
<tr><td>१५ चं.</td><td>४ |२१ |०८ |५१</td><td>२ |१ |३४ |०७</td><td>१ |४ |५६ |०३</td><td>१ |१४ |५६ |५६</td><td>५ |२८ |३६ |०३</td><td>१ |१२ |५४ |२७</td><td>४६ |५७</td><td>३ |५६</td><td>५ |५५</td><td>८ |०८</td><td>१० |२६</td><td>१२ |४२</td><td>१४ |५७</td><td>१७ |१४</td><td>१९ |३१</td><td>२१ |३६</td><td>२३ |२२</td><td>० |५३</td><td>२ |२२</td></tr>
</table>

५ शनौ बल्ली ८ |३८ |४६ |४६
अयनांशाः २२ |४१ |४६



१३ शनौ बल्ली ८ |३८ |४६ |५६
अयनांशाः २३ |४१ |४७



विविधविषयाः—ज्येष्ठमासे दानवस्तूनि, वामनपुराणे—उदक्कुम्भं जलं धेनुस्तालवृन्तं सचन्दनम्। त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं प्रदद्यात् ज्येष्ठमासि च ।। **गंगादशहरा,** वाराहे—दशमीशुक्लपक्षे तु ज्येष्ठे मासि कुजेऽहनि। अवतीर्णा ह्यतः स्वर्गाद्धस्तर्क्षे च सरिद्वरा।। हरते दशपापानि तस्माद्दशहरा स्मृता। **दशहरायां** दशयोगा स्कान्दे—ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी बुधहस्तयोः। व्यतीपाते गरानन्दे कन्याचन्द्रे वृषे रवौ। दशयोगे नर स्नात्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। कुजबुधयोरत्र कल्पभेदेन व्यवस्था ज्ञेया। योगाधिक्ये फलाधिक्याद्यत्रैव योगबाहुल्यं तत्रैवेयं ग्राह्या। ज्येष्ठस्य मलमासत्वे द्वितीयज्येष्ठशुक्लदशम्यामेव गंगादशहरा। **दशपापानि**—पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वतः। असम्बद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम्।। अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः। परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं तथा। परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिन्तनम्। वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम्।। एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि। दशापापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता।।

ग्रहस्थितिः—मार्गी पूर्वोदितः कुजः, मार्गी पूर्वास्तो बुधः, मार्गी पश्चिमास्तो गुरुः ८ तः पूर्वोदितः, वक्री पश्चिमोदितः शुक्रः ७ तः पश्चिमास्तः १५ तः पूर्वोदितः, वक्री पूर्वोदितः शनिः ।

वातावरणम्—पक्षाद्यन्तभागयोस्तापग्निभयवाय्वभ्रचारादयस्तन्मध्ये तापाग्निकोप—झंझावातादयः ।

आषाढकृष्णपक्षः

शकाब्दः १९३४, संवत् २०६९, सन् १४१९ साल, दि. ५।०६।१२ ई. तः दि. १९।०६।१२ ई. या., पश्चिमे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः, अशुद्धः, ३ तः शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने ।

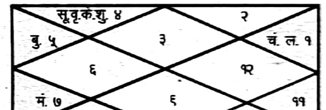
तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ मं.	२३।१८	दि. २।३२	ज्ये. ११।३४	दि. ६।५१	सा. २२।१	कौ. २३।१८	वृ. ११।३४	दि. ६।५१	१।२१।१३।०६	३३।५६	५।१३	६।४७	१५	२३	५
२ बु.	१८।७	दि. १२।२८	मू. ८।१९	दि. ८।३१	शुभः १५।१३	ग. १८।७	धनु	अहो.	१।२२।१०।१७	३३।५७	५।१३	६।४७	१६	२४	६
३ बृ.	१३।३८	दि. १०।३६	पू.षा. ५।३७	दि. ७।२७	शुक्लः ६।१	वि. १३।३८	ध. २०।११	दि. १।१९	१।२३।७।२५	३३।५८	५।१२	६।४८	१७	२५	७
४ शु.	१०।१	दि. ६।१२	उ.षा. ३।४६	दि. ६।४४	ब्र. ३।२६	बा. १०।१	मकर	अहो.	१।२४।४।३३	३३।५९	५।१२	६।४८	१८	२६	८
५ श.	७।२६	दि. ८।१०	श्र. ३।२	दि. ६।२५	वै. ५४।५६	तै. ७।२६	म. ३३।१३	सा. ६।२६	१।२५।१।४०	३४।००	५।१२	६।४८	१९	२७	९
६ र.	६।४	दि. ७।३८	ध. ३।२३	दि. ६।३३	वि. ५२।११	व. ६।०४	कुम्भ	अहो.	१।२५।५८।४१	३४।२	५।१२	६।४८	२०	२८	१०
७ चं.	५।५४	दि. ७।३३	श. ४।५६	दि. ७।११	प्री. ५०।२४	ब. ५।५४	कु. ५२।३६	रा. २।१५	१।२६।५५।४२	३४।३	५।११	६।४९	२१	२९	११
८ मं.	७।४	दि. ८।०१	पू.भा. ७।५२	दि. ८।२०	आ. ४६।३८	कौ. ७।०४	मीन	अहो.	१।२७।५२।४२	३४।४	५।११	६।४९	२२	३०	१२
९ बु.	९।२३	दि. ८।५६	उ.भा. ११।५३	दि. ९।५६	सौ. ४६।४५	ग. ९।२३	मीन	अहो.	१।२८।४९।४२	३४।५	५।११	६।४९	२३	३१	१३
१० बृ.	१२।५४	दि. १०।२१	रे. १७।२	दि. १२।००	शो. ५०।३७	वि. १२।५४	मी. १७।२	दि. १२।००	१।२९।४६।४२	३४।६	५।११	६।४९	२४	३२	१४
११ शु.	१७।१४	दि. १२।०५	अ. २२।५८	दि. २।२२	अगं. ५२।२	बा. १७।१४	मेष	अहो.	२।०।४३।४२	३४।७	५।११	६।४९	२५	१	१५
१२ श.	२२।८	दि. २।०१	भ. २९।२६	दि. ४।५६	सु. ५३।४१	तै. २२।८	मे. ४६।४	रा. ११।३६	२।१।४०।४२	३४।८	५।१०	६।५०	२६	२	१६
१३ र.	२७।१३	दि. ४।०३	कृ. ३६।१	सा. ७।३४	धृ. ५५।१८	व. २७।१३	वृष	अहो.	२।२।३७।३८	३४।९	५।१०	६।५०	२७	३	१७
१४ चं.	३२।२	सा. ५।५६	रो. ४२।१३	सा. १०।०३	शू. ५६।३४	श. ३२।२	वृष	अहो.	२।३।३४।३३	३४।१०	५।१०	६।५०	२८	४	१८
३० मं.	३६।६	रा. ७।३८	मृ. ४७।४६	सा. १२।१६	ग. ५७।१५	चं. ४।६	वृ. १५।००	दि. ११।१०	२।४।३१।२८	३४।११	५।१०	६।५०	२९	५	१९

पूर्वयात्रा द्वितीयायां, विल्वमाषाढके त्यजेत् । × उपरि, भ. १३।३८ या. ।
पूर्वयात्रा द्वितीयायां, भ. ४५।५३ उ., (२–३) एकोद्दिष्टम् ।
पश्चिमोदितो बुधः ७।५२, **श्रीविघ्नराज** ४ व्रतं, द. ति. १३।३८ उ. पूर्वोत्तरयात्रा पूर्वाषाढे, पुष्टः शुक्रः **शुद्धारम्भश्च** २०।५१×
ऐन्द्रयोगमानं ५५।१८, **मृगशिरसि रविः** ०।१३, द. ति. १०।१ या., पश्चिमां विना यात्रा पञ्चम्यां, **विवाहः (A)**
पञ्चकारंभो दिवा घं. ६ मि. २५ पूर्वाह्नोपरि, पश्चिमयात्रा कुम्भस्थे चन्द्रे । **(A)** मुण्डनं कर्णवेधश्च पञ्चम्याम् ।
विवाहो धनिष्ठायां, भ. ६।४ उ. ३५।५६ या. ।
पश्चिमयात्राष्टम्यां कुम्भस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा, ।
पश्चिमयात्रा पूर्वभाद्रपदे ।
विवाहो दशम्यां, भ. ४१।१५ उ., पश्चिमयात्रा रेवत्याम् ।
मासान्तः, **पञ्चकान्तो** दिवा घं. १२ मि. ० उ., भ. १२।५४ या. । **(B) योगिनी** ११ व्रतं सर्वेषां, (१२) एको. ।
मिथुने रविः, १।४ मु. ३० फलं साम्यं षडशीतिसंक्रान्तिपुण्यकालो घं. ५ मि. ३७ उ. घं. १२ मि. १ यावद्दिने, **पुण्याहः, (B)**
मासादिः यवचूर्णेन पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतम् ।
प्रदोष १४ व्रतं, भं. २७।१३ उ. ५६।३८ या., (१३) एको. । ● तत एव **पराभवनामकचत्वारिंशन्मध्यमगुरुसंवत्सरारम्भः** ।
सोमवत्यमाव्रतं दिनान्ते घं. ५ मि. ५६ उ. घं. ६ मि. ५० या.,
आषाढी ३० स्नानदानादिः, भौमवती ३० गंगास्नानं **कोटिसूर्यग्रहणसमफलदं**, वृषे **मध्यमो गुरुः** ३।२८. ●

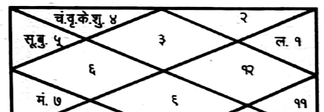
मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च । दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्

ति. दि.	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ मं.	४।२१।३५।४२	२।३।२१।३७	१।५।१०।१३	१।१४।१९।५६	५।२८।३६।५५	१।१२।५१।१९	४६।५८	३।५५	५।५१	८।०४	१०।२२	१२।३८	१४।५३	१७।१०	१९।२७	२१।३२	२३।१८	०।४९	२।१८
२ बु.	४।२२।०२।३३	२।५।०६।०७	१।५।२४।२३	१।१३।४२।५३	५।२८।३४।४७	१।१२।४८।०५	४६।५६	३।५१	५।४७	८।००	१०।१८	१२।३४	१४।४९	१७।०६	१९।२३	२१।२८	२३।१४	०।४५	२।१४
३ बृ.	४।२२।२९।२४	२।६।५६।३६	१।५।३८।३३	१।१३।५।५१	५।२८।३२।४०	१।१२।४४।५४	४७।००	३।४७	५।४३	७।५६	१०।१४	१२।३०	१४।४५	१७।०२	१९।१९	२१।२४	२३।१०	०।४१	२।१०
४ शु.	४।२२।५६।१५	२।८।४४।५	१।५।५२।४३	१।१२।२८।४९	५।२८।३०।३३	१।१२।४१।४४	४७।००	३।४३	५।३९	७।५२	१०।१०	१२।२६	१४।४१	१६।५८	१९।१५	२१।२०	२३।०६	०।३७	२।०६
५ श.	४।२३।२३।०६	२।१०।३१।३४	१।६।०६।५३	१।११।५१।४७	५।२८।२८।२६	१।१२।३८।३४	४७।००	३।३९	५।३५	७।४८	१०।६	१२।२२	१४।३७	१६।५४	१९।११	२१।१६	२३।०२	०।३३	२।०२
६ र.	४।२३।५१।२६	२।१२।१०।३६	१।६।२०।५५	१।११।२७।४७	५।२८।२६।४४	१।१२।३५।२३	४७।१	३।३५	५।३१	७।४४	१०।२	१२।१८	१४।३३	१६।५०	१९।०७	२१।१२	२२।५८	०।२९	१।५८
७ चं.	४।२४।१९।५२	२।१३।४९।३८	१।६।३४।५७	१।११।३।५८	५।२८।२५।०२	१।१२।३२।१२	४७।२	३।३१	५।२७	७।४०	९।५८	१२।१४	१४।२९	१६।४६	१९।०३	२१।०८	२२।५४	०।२५	१।५४
८ मं.	४।२४।४८।१५	२।१५।२८।४०	१।६।४८।५९	१।१०।३९।४९	५।२८।२३।२०	१।१२।२९।०१	४७।३	३।२७	५।२३	७।३६	९।५४	१२।१०	१४।२५	१६।४२	१८।५९	२१।०४	२२।५०	०।२१	१।५०
९ बु.	४।२५।१९।३८	२।१७।०७।४२	१।७।३।०१	१।१०।१५।५०	५।२८।२१।३८	१।१२।२५।५०	४७।४	३।२३	५।१९	७।३२	९।५०	१२।०६	१४।२१	१६।३८	१८।५५	२१।००	२२।४६	०।१७	१।४६
१० बृ.	४।२५।४५।०१	२।१८।४९।४४	१।७।१७।०३	१।९।५१।५१	५।२८।१९।५६	१।१२।२२।३९	४७।४	३।१९	५।१५	७।२८	९।४६	१२।०२	१४।१७	१६।३४	१८।५१	२०।५६	२२।४२	०।१३	१।४२
११ शु.	४।२६।१३।२४	२।२०।२५।४५	१।७।३१।४	१।९।२७।५२	५।२८।१८।१५	१।१२।१९।२९	४७।४	३।१५	५।११	७।२४	९।४२	११।५८	१४।१३	१६।३०	१८।४७	२०।५२	२२।३८	०।०९	१।३८
१२ श.	४।२६।४१।४९	२।२२।४।४९	१।७।४५।०५	१।९।३।५३	५।२८।१९।३४	१।१२।१६।१९	४७।४	३।११	५।०७	७।२०	९।३८	११।५४	१४।०९	१६।२६	१८।४३	२०।४८	२२।३४	०।०५	१।३४
१३ र.	४।२७।११।४५	२।२३।२०।४९	१।७।५८।५३	१।८।५५।८	५।२८।१५।२६	१।१२।१३।०८	४७।५	३।०७	५।०३	७।१६	९।३४	११।५०	१४।०५	१६।२२	१८।३९	२०।४४	२२।३०	०।०१	१।३०
१४ चं.	४।२७।४१।४४	२।२४।५४।५२	१।८।१२।४१	१।८।४६।२३	५।२८।१५।१८	१।१२।०९।५७	४७।६	३।०३	४।५९	७।१२	९।३०	११।४६	१४।०१	१६।१८	१८।३५	२०।४०	२२।२६	२३।५७	१।२६
३० मं.	४।२८।११।४३	२।२६।१९।५५	१।८।२६।२६	१।८।३७।३८	५।२८।१४।४०	१।१२।६।४६	४७।७	२।५९	४।५५	७।०८	९।२६	११।४२	१३।५७	१६।१४	१८।३१	२०।३६	२२।२२	२३।५३	१।२२

५ शनौ बल्ली ८।३८।४७।३
अयनांशाः २२।४१।४८



१२ शनौ बल्ली ८।३८।४७।१०
अयनांशाः २२।४१।४९



विविधविषयाः—ग्रहस्थितिवशेन **वृष्टिविचारः**—बुधः शुक्रसमीपस्थः करोत्येकार्णवां महीम् । तयोरन्तर्गतो भानुः समुद्रमपि शोषयेत् ।। पुरतः पृष्ठतो भानुः शुभा यदि समीपगाः । तदा वृष्टिं प्रकुर्वन्ति च चेत्ते प्रतिलोमगाः ।। ग्रहाणामुदये चास्ते राश्यन्तरगतेऽयने । संयोगो वापि पक्षान्ते प्रायो वृष्टिः प्रजायते ।। उदयास्तगतः शुक्रः बुधश्च वृष्टिकारकः । चलत्यंगारके वृष्टिः ध्रुवा वृष्टिश्शनैश्चरे ।। वारिपूर्णा महीं कृत्वा पश्चात्सञ्चरते गुरुः । शुक्रे वास्तमिते मन्दे त्रिविधोऽपि प्रजायते ।।

सूर्यनक्षत्राणि—रोहिणि–मृगशिरा–पूर्वोत्तरफल्गुनी–हस्त–चित्रा–स्वाती–विशाखाऽनुराधा–ज्येष्ठा–मूल–शतभिषोत्तरभाद्रपदानीति त्रयोदशर्क्षाणि, शेषाणि चन्द्रनक्षत्राणि ज्ञेयानि । **एतत्फलम्**—चन्द्रे सूर्यर्क्षगे वृष्टिः सूर्ये चन्द्रर्क्षगे सति । उभौ चन्द्रर्क्षगौ स्यातां स्वल्पवृष्टिस्तदा भवेत् । तावेव यदि सूर्यर्क्षे तदा वृष्टिर्न जायते ।।

नक्षत्राणां **पुरुषादिसंज्ञा**—मूलादीनि चतुर्दशर्क्षाणि पुरुषसंज्ञकानि, आर्द्रादिदश स्त्रीसंज्ञकानि, विशाखादि त्रीणि नपुंसकानि । तत्र पुंस्त्रीयोगे सुवृष्टिः स्त्रीनपुंसकयोगे स्वल्पवृष्टिरन्यथा वृष्टेरभावः ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पूर्वास्तो बुधः ३ तः पश्चिमोदितः, वक्रिणौ पूर्वोदितौ शुक्रशनी ।

वातावरणम्—पक्षादिभागे तापमेघचारवायवस्तदुत्तरार्द्धभागे तापवृद्धिवह्निभय–झंझावातोपलपातादयः ।

आषाढशुक्लपक्षः

शकाब्दः १६३४, संवत् २०६६, सन् १४१६ साल, दि. २० ।०६ ।१२ ई. तः दि. ३ ।७ ।१२ ई. या., पश्चिमे कालः ।
मार्गी पूर्वोदितो गुरुः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः ४ तो मार्गी, शुद्धः, ग्रीष्मर्तुः, सौम्यगोलायने ।

तिथयः	तिथयः		नक्षत्राणि		योगाः	करणानि	चन्द्रराशयः		स्पष्टसूर्यः	दिनमानं	सू. उ.	सू. अ.	दिनांकाः		
दिनानि	द. प.	घं. मि.	द. प.	घं. मि.	द. प.	द. प.	रा.द.प.	घं. मि.	राश्यादिः	द. प.	घं. मि.	घं. मि.	रा.	सौ.	अं.
१ बु.	३६ ।१६	रा. ८ ।५४	आ. ५२ ।२०	रा. २ ।०६	वृ. ५७ ।५	किं. ७ ।४४	मिथुन	अहो.	२ ।५ ।२८ ।२३	३४ ।१२	५ ।१०	६ ।५०	३०	६	२०
२ बृ.	४१ ।२३	रा. ६ ।४२	पुन. ५५ ।४८	रा. ३ ।२८	ध्रु. ५६ ।५	बा. १० ।२१	मि. ३६ ।५६	रा. ६ ।०७	२ ।६ ।२५ ।१८	३४ ।१३	५ ।६	६ ।५१	३१	७	२१
३ शु.	४२ ।१०	रा. १० ।१	पुष्य ५७ ।५७	रा. ४ ।२०	व्या. ५४ ।१	तै. ११ ।४७	कर्क	अहो.	२ ।७ ।२२ ।१३	३४ ।१४	५ ।६	६ ।५१	१	८	२२
४ श.	४१ ।३६	रा. ६ ।४७	आश्ले. ५८ ।५२	रा. ४ ।४२	ह. ५० ।५८	व. ११ ।५३	क. ५८ ।५२	रा. ४ ।४२	२ ।८ ।१६ ।८	३४ ।१४	५ ।६	६ ।५१	२	६	२३
५ र.	३६ ।५१	रा. ६ ।०५	मं. ५८ ।३४	रा. ४ ।३५	व. ४६ ।५४	ब. १० ।४४	सिंह	अहो.	२ ।६ ।१६ ।००	३४ ।१३	५ ।६	६ ।५१	३	१०	२४
६ चं.	३६ ।५८	रा. ७ ।५७	पू.फ ५७ ।१०	रा. ४ ।०२	सिं. ४१ ।५८	कौ. ८ ।२५	सिंह	अहो.	२ ।१० ।१२ ।५२	३४ ।१२	५ ।१०	६ ।५०	४	११	२५
७ मं.	३३ ।१	सा. ६ ।२२	उ.फ ५४ ।५६	रा. ३ ।१०	व्य. ३६ ।१५	ग. ५ ।००	सिं. ११ ।३७	दि. ६ ।४६	२ ।११ ।०६ ।४४	३४ ।११	५ ।१०	६ ।५०	५	१२	२६
८ बु.	२८ ।१७	दि. ४ ।२६	ह. ५१ ।५६	रा. १ ।५६	व. २६ ।५१	वि. ० ।३६	कन्या	अहो.	२ ।१२ ।६ ।३६	३४ ।१०	५ ।१०	६ ।५०	६	१३	२७
९ बृ.	२२ ।५६	दि. २ ।२०	चि. ४८ ।२१	रा. १२ ।३०	प. २२ ।५५	कौ. २२ ।५६	कं. २० ।०६	दि. १ ।१४	२ ।१३ ।३ ।२७	३४ ।६	५ ।१०	६ ।५०	७	१४	२८
१० शु.	१७ ।००	दि. ११ ।५८	स्वा. ४४ ।२१	रा. १० ।५४	शि. १५ ।३६	ग. १७ ।००	तुला	अहो.	२ ।१४ ।० ।१८	३४ ।८	५ ।१०	६ ।५०	८	१५	२९
११ श.	१० ।५१	दि. ६ ।३१	वि. ४० ।८	रा. ६ ।१४	सि. ८ ।२	वि. १० ।५१	तु. २५ ।३६	दि. ३ ।२७	२ ।१४ ।५७ ।६	३४ ।६	५ ।११	६ ।४६	६	१६	३०
१२ र.	४ ।३६	दि. ७ ।०१	अनु. ३६ ।१	सा. ७ ।२३	सा. ०० ।२१	बा. ४ ।३६	वृश्चिक	अहो.	२ ।१५ ।५४ ।०	३४ ।४	५ ।११	६ ।४६	१०	१७	१
१४ चं.	५२ ।४३	रा. २ ।१७	ज्ये. ३२ ।७	सा. ६ ।०१	शु. ४५ ।३०	ग. २५ ।३७	वृ. ३२ ।७	सा. ६ ।०१	२ ।१६ ।५० ।५१	३४ ।२	५ ।१२	६ ।४८	११	१८	२
१५ मं.	४७ ।२८	रा. १२ ।११	मू. २८ ।३६	दि. ४ ।२८	ब्र. ३८ ।३६	वि. २० ।०६	धनु.	अहो.	२ ।१७ ।४७ ।४२	३४ ।००	५ ।१२	६ ।४८	१२	१६	३

ग्रीष्मनवरात्रारंभः, **कलशस्थापनं,** श्रीदुर्गापूजनोत्सवः, पश्चिमदक्षिणयात्रा पुनर्वसौ ।

चन्द्रदर्शनं मु. ४५ सौम्यशृंगफलं समर्घं, **रथयात्रा** समुद्रस्नानं श्रीजगन्नाथदर्शनञ्च, **मैथिलवैवाहिकसभारम्भः** (सौराठससौलयोः), देवादिप्रतिष्ठा, **मुण्डनं, कर्णवेधः,** ×

कर्के बुधः २२ ।२६, **आर्द्रायां रविः** २ ।३८ स्त्रीस्त्रीचंचंयोगो मिथुनलग्नं मण्डूकवाहनं जलानाडीपतिर्बुधस्तेन खण्डवृष्टियोगः, **उपनयनं,** देवादिप्रतिष्ठा, **मुण्डनं,** कर्णवेधः,●

कन्यायां कुजः २३ ।४३, मार्गी शुक्रः ४७ ।६, **श्रीगणेश** ४ व्रतं, म. ११ ।५३ उ. ४१ ।३६ यावत् ।

करमूले **पुलिकमूलबन्धनं, विवाहो** मघायाम् ।× पश्चिमयात्रा मिथुनस्थे चन्द्रे ततः पश्चिमोत्तरयात्रा पुनर्वसौ ततो दक्षिणां विना यात्रा पुष्ये ।

विवाह उत्तरफल्गुन्यां, **गृहप्रवेश** उत्तरफल्गुन्यां, उत्तरयात्रा षष्ठ्याम् ।

द. ति. ३३ ।१ उ., आर्द्रास्थे सूर्ये पितृतृप्तिकरं नवोदकनिमित्तकपार्वणं विधेयं, म. ३३ ।१ उपरि।

द. ति. २८ ।१७ या., भ. ०० ।३६ या. ।● **तडागवापीखननं,** कूपखननं घं. ६ मि. १२ पूर्वह्नोपरि, पश्चिमां विना यात्रा पुष्ये ।

विवाहो गृहप्रवेशः पश्चिमयात्रा च दशम्याम् ।

विवाहः स्वात्यां, **रैवतमन्वादिः, मैथिलवैवाहिकसभासमाप्तिः** (सौराठससौलयोः), **मुण्डनं,** देवादिप्रतिष्ठा, **गृहारंभप्रवेशौ** दक्षिणयात्रा■

मार्गी शनिः ४६ ।२७, **हरिशयन** ११ व्रतं सर्वेषां, चातुर्मास्यव्रतारंभः, म. १० ।५१ या., **गृहप्रवेशः** पश्चिमोत्तरयात्रा चानुराधायाम् ।

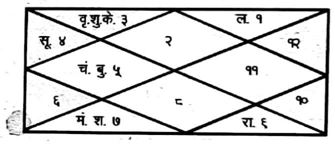
त्रयोदशीमानं ५३ ।५४, शुभयोगमानं ५२ ।२६, जुलाई ७, वासुदेव १२ यवचूर्णैः पारणं, **प्रदोष** १३ व्रतं, **करमूले पुलिकमूलबन्धनम्,** उत्तरयात्रानुराधायाम् ।

प्रदोष १४ व्रतं, **गृहारंभो** मूले, उत्तरयात्रा पूर्णिमायां, भ. ५२ ।४३ उपरि ।■ च स्वात्यां, (१०—११) एकोद्दिष्टम् ।

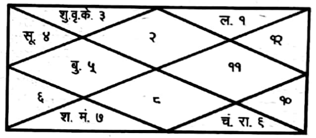
आषाढी १५ **गुरुपूर्णिमा,** स्नानदानादिः, गुरुव्यासयोः पूजनं, **चाक्षुषमन्वादिः,** पूर्वयात्रा पूर्णिमायां, म. २० ।६ या., **सन्१४२० सालसंज्ञकवर्षारंभः** पूर्णान्तात् ।

ति. दि.	मिश्रमानकालिकदैनिकमंगलादिस्पष्टग्रहा दिनद्वयग्रहान्तरं गतिश्च ।						दैनिकलग्नसारिणीचक्रम्												
	मंगल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	केतुः	मिश्रमानं	मे.अं.	वृ. अं.	मि. अं.	क. अं.	सि. अं.	कं. अं.	तु. अं.	वृ. अं.	ध. अं.	म. अं.	कु. अं.	मी. अं.
१ बु.	४ ।२८ ।४१ ।४२	२ ।२७ ।४४ ।५७	१ ।०८ ।४० ।१७	१ ।८ ।२८ ।५३	५ ।२८ ।१४ ।०२	१ ।१२ ।०३ ।३५	४७ ।८	२ ।५५	४ ।५१	७ ।०४	६ ।२२	११ ।३८	१३ ।५३	१६ ।१०	१८ ।२७	२० ।३२	२२ ।१८	२३ ।४६	१ ।१८
२ बृ.	४ ।२६ ।११ ।४२	२ ।२६ ।६ ।५६	१ ।८ ।५४ ।०४	१ ।८ ।२० ।०६	५ ।२८ ।१३ ।२५	१ ।१२ ।०० ।२४	४७ ।८	२ ।५१	४ ।४७	७ ।००	६ ।१८	११ ।३४	१३ ।४६	१६ ।०६	१८ ।२३	२० ।२८	२२ ।१४	२३ ।४५	१ ।१४
३ शु.	४ ।२६ ।४१ ।४२	३ ।० ।३५ ।०१	१ ।०६ ।०७ ।५१	१ ।८ ।११ ।२५	५ ।२८ ।१२ ।४८	१ ।११ ।५७ ।१४	४७ ।८	२ ।४७	४ ।४३	६ ।५६	६ ।१४	११ ।३०	१३ ।४५	१६ ।०२	१८ ।१६	२० ।२४	२२ ।१०	२३ ।४१	१ ।१०
४ श.	५ ।० ।११ ।४२	३ ।०२ ।० ।०३	१ ।०६ ।२१ ।३८	१ ।०८ ।०७ ।५७	५ ।२८ ।१२ ।११	१ ।११ ।५४ ।०४	४७ ।८	२ ।४३	४ ।३६	६ ।५२	६ ।१०	११ ।२६	१३ ।४१	१५ ।५८	१८ ।१५	२० ।२०	२२ ।०६	२३ ।३७	१ ।०६
५ र.	५ ।० ।४२ ।५२	३ ।०३ ।०२ ।३४	१ ।०६ ।३५ ।०४	१ ।८ ।१० ।५१	५ ।२८ ।११ ।५१	१ ।११ ।५० ।२३	४७ ।७	२ ।३६	४ ।३५	६ ।४८	६ ।०६	११ ।२२	१३ ।३७	१५ ।५४	१८ ।११	२० ।१६	२२ ।०२	२३ ।३३	१ ।०२
६ चं.	५ ।१ ।१४ ।०२	३ ।०४ ।०५ ।०५	१ ।०६ ।४८ ।३०	१ ।०८ ।२२ ।०१	५ ।२८ ।११ ।३२	१ ।११ ।४७ ।४२	४७ ।६	२ ।३५	४ ।३१	६ ।४४	६ ।०२	११ ।१८	१३ ।३३	१५ ।५०	१८ ।०७	२० ।१२	२१ ।५८	२३ ।२६	० ।५८
७ मं.	५ ।१ ।४५ ।१२	३ ।५ ।७ ।३६	१ ।१० ।०१ ।५६	१ ।८ ।३३ ।११	५ ।२८ ।११ ।१३	१ ।११ ।४४ ।३१	४७ ।५	२ ।३१	४ ।२७	६ ।४०	८ ।५८	११ ।१४	१३ ।२६	१५ ।४६	१८ ।०३	२० ।०८	२१ ।५४	२३ ।२५	० ।५४
८ बु.	५ ।२ ।१६ ।२१	३ ।०६ ।१० ।०७	१ ।१० ।१५ ।२२	१ ।८ ।४५ ।३१	५ ।२८ ।१० ।५४	१ ।११ ।४१ ।२०	४७ ।४	२ ।२७	४ ।२३	६ ।३६	८ ।५४	११ ।१०	१३ ।२५	१५ ।४२	१७ ।५६	२० ।०४	२१ ।५०	२३ ।२१	० ।५०
९ बृ.	५ ।२ ।४७ ।३०	३ ।०७ ।१२ ।३८	१ ।१० ।२८ ।४८	१ ।८ ।५५ ।३०	५ ।२८ ।१० ।३५	१ ।११ ।३८ ।०६	४७ ।३	२ ।२३	४ ।१६	६ ।३२	८ ।५०	११ ।०६	१३ ।२१	१५ ।३८	१७ ।५५	२० ।००	२१ ।४६	२३ ।१७	० ।४६
१० शु.	५ ।३ ।१८ ।३६	३ ।८ ।१५ ।०६	१ ।१० ।४२ ।१३	१ ।०६ ।०६ ।३६	५ ।२८ ।१० ।१६	१ ।११ ।३४ ।५८	४७ ।३	२ ।१८	४ ।१४	६ ।२७	८ ।४५	११ ।०१	१३ ।१६	१५ ।३३	१७ ।५०	१६ ।५५	२१ ।४१	२३ ।१२	० ।४१
११ श.	५ ।३ ।४६ ।४८	३ ।०६ ।१७ ।३६	१ ।१० ।५५ ।३८	१ ।०६ ।१७ ।४८	५ ।२८ ।०६ ।५७	१ ।११ ।३१ ।४८	४७ ।३	२ ।१४	४ ।१०	६ ।२३	८ ।४१	१० ।५७	१३ ।१२	१५ ।२६	१७ ।४६	१६ ।५१	२१ ।३७	२३ ।०८	० ।३७
१२ र.	५ ।४ ।२२ ।१०	३ ।६ ।४५ ।४६	१ ।११ ।८ ।४७	१ ।६ ।४० ।४६	५ ।२८ ।१० ।२२	१ ।११ ।२८ ।३७	४७ ।२	२ ।१०	४ ।०६	६ ।१६	८ ।३७	१० ।५३	१३ ।०८	१५ ।२५	१७ ।४२	१६ ।४७	२१ ।३३	२३ ।०४	० ।३३
१४ चं.	५ ।४ ।५४ ।३२	३ ।१० ।१३ ।५६	१ ।११ ।२१ ।५५	१ ।१० ।०३ ।४४	५ ।२८ ।११ ।२८	१ ।११ ।२५ ।२६	४६ ।१	२ ।०६	४ ।०२	६ ।१५	८ ।३३	१० ।४६	१३ ।०४	१५ ।२१	१७ ।३८	१६ ।४३	२१ ।२६	२३ ।००	० ।२६
१५ मं.	५ ।५ ।२६ ।५४	३ ।१० ।४२ ।०६	१ ।११ ।३५ ।०३	१ ।१० ।२६ ।४२	५ ।२८ ।१२ ।३४	१ ।११ ।२२ ।१५	४७ ।००	२ ।०२	३ ।५८	६ ।११	८ ।२६	१० ।४५	१३ ।००	१५ ।१७	१७ ।३४	१६ ।३६	२१ ।२५	२२ ।५६	० ।२५

४ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४७ ।१७
अयनांशाः २२ ।४१ ।५०



११ शनौ बल्ली ८ ।३८ ।४७ ।२४
अयनांशाः २२ ।४१ ।५१



विविधविषयाः—आषाढे शकुनविचारः—आषाढकृष्णाष्टम्यां चन्द्रोदये मेघे वृष्टिरुत्तमा सुभिक्षं चान्यथा दुर्भिक्षं, तथैव कृष्णनवम्यां मेघे विद्युति सत्यां सुवृष्टिः। आषाढशुक्लद्वितीयायां नवम्याञ्च शुभग्रहवारो वृष्टिकारकः समर्घकारकश्च। पूर्णिमायामाषाढे पूर्वाषाढे सति सुभिक्षं प्रजापीडा चोतराषाढे। आषाढशुक्लद्वितीयायां **जगन्नाथरथयात्रा** तद्दिने रथस्थरामावलोकनेन नैव विपद्यते। पूर्णिमायां **वायुपरीक्षणम्**—तत्र पूर्वपश्चिमवायुकोणोत्तरैशानवायौ धन्योत्पत्तिः सुवृष्टिः प्रजासुखञ्च जायते तदितरवायौ भीतिः दुर्भिक्षादिकञ्चेति । आषाढशुक्लपक्षे रविवासरे करमूले **पुलिकमूलबन्धनमन्त्रः**—शुचिसितदिनकरवारे करमूले बद्धपुलिकमूलस्य। नागारेरिव नागाः प्रयान्ति किल दूरतस्तस्य।। एवं कृते सर्पभयं न जायते । चातुर्मास्यव्यतीते तु मुक्तिस्तस्य कराद् भवेदित्यनेन चातुर्मास्यनन्तरं तस्य करान्मुक्तिः । आर्द्रानक्षत्रस्थे सूर्ये **पायसभोजनमहत्वम्**—आर्द्रायाः प्रथमे पादे क्षीरमश्नाति यो नरः । अपि रोषयुतस्तस्य तक्षकः किं करिष्यति । क्षीरमत्र पायसमिति ।

ग्रहस्थितिः—मार्गिणौ पूर्वोदितौ कुजगुरू, मार्गी पश्चिमोदितो बुधः, वक्री पूर्वोदितः शुक्रः ४ तो मार्गी, वक्री पूर्वोदितः शनिः ११ तो मार्गी ।

वातावरणम्—पक्षादिभागे तापवातखण्डवृष्टयस्तदुत्तरभागे तापाग्निभयवाताप्रचारादयः।

ग्रहाणां दानादिपदार्थाः

सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गलः	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
माणिक्य, गोधूम, गुड़, ताम्र, रक्तपुष्प, रक्तचन्दन, रक्तवस्त्र, सुवर्ण, केसर, मूँगा, सवत्सगौ, लाजा, जप७०००	वंशपात्र, श्वेततण्डुल, श्वेतवस्त्र, श्वेतपुष्प, श्वेतचन्दन, दधि, शंख, सिता, चांदी, कर्पूर, श्वेतवृषभ, घृत, कूट, मोती, जप११०००	विद्रुम, भूमि, मसूरद्विदल, रक्तवृषभ, गुड़, ताम्र, रक्तवस्त्र, रक्तचन्दन, रक्तपुष्प, सुवर्ण, केशर, कस्तूरी, बला, जप१००००	कांस्य, हरितवस्त्र, हरितपुष्प, कर्पूर, शंख, फल, मुद्रा, गजदन्त, घृत, सोना, मोथा, मणि, षड्रसभोजन, पन्ना, जप८०००	पीतधान्य, पीतवस्त्र, पीतपुष्प, पीतचन्दन, सोना, घृत, पीतफल, दधि, पोखराज, अश्व, मधु, पुस्तक, छत्र, भूमि, शक्कर, हरिद्रा, जप१६०००	श्वेततण्डुल, श्वेतचित्रवस्त्र, श्वेतचन्दन, घी, सोना, रजत, स्फटिक, दधि, शंख, गोधूम, शक्कर, सुगन्धद्रव्य, श्वेताश्व, भूमि, श्वेतगौ, हीरा, जप११०००	माषान्न तैल, कृष्णतिल, कृष्णवस्त्र, कृष्णपुष्प, कंबल, उपानह, कस्तूरी, सोना, लौह, कुल्थी, महिषी, छत्र, कृष्णधेनु, कज्जल, शमी, नीलम, जप२३०००	गोमेद, माषान्न, तुरग, तिल, नीलवस्त्र, नीलपुष्प, तिलतैल, सप्तधान्य, लौह, सुवर्ण, कृष्णपुष्प, कम्बल, शस्त्र, छाग, लाजावर्त्त, जप१८०००	माषान्न, कम्बल, कस्तूरी, तिलतैल, कृष्णवस्त्रादि, सुवर्ण लौह, छाग खड्ग, कस्तूरी, वैदूर्य मणि, उपानह, कृष्णतिल, लाजावर्त्त, जप७०००

ग्रहाणां दानरत्नधारणजपादिकाल:—सूर्यादीनाञ्च यदानं जपहोमार्चनादिकम्। तेषां वारे प्रकुर्वीत सन्तुष्टास्ते भवन्ति हि। कन्यामीनपत्यो राहुकेत्वोर्जपादिकं शनौ बुधे वा कार्यम्। धर्मप्रशंसा—धर्मेण हन्यते व्याधिर्धर्मेण शुभदा ग्रहाः। धर्मेण हन्यते शत्रुर्यतो धर्मस्ततो जयः ।।

● विंशोत्तरीमहादशान्तर्दशाचक्रम् ●

सूर्यदशावर्ष ६	चन्द्रदशावर्ष १०	भौमदशावर्ष ७	राहुदशावर्ष १८	गुरुदशावर्ष १६	शनिदशावर्ष १९	बुधदशावर्ष १७	केतुदशावर्ष ७	शुक्रदशावर्ष २०
कृ. उफ. उषा	रोहि. ह. श्रवणा	मृ. चि. ध.	आर्द्रा स्वा. शत	पुन. वि. पूभा	पुष्य. अनु. उभा	आश्ले. ज्ये. रेव.	मघा.मू.अश्वि	पूफ. पूषा. भर
अन्तर्दशा १८	अन्तर्दशा ३०	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ५४	अन्तर्दशा ४८	अन्तर्दशा ५७	अन्तर्दशा ५१	अन्तर्दशा २१	अन्तर्दशा ६०
ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.	ग्र. व मा. दि.
सू. ० ३ १८	चं. ० १० ०	मं. ० ४ २७	रा. २ ८ १२	वृ. २ १ १८	श. ३ ० ०३	बु. २ ४ २७	के. ० ४ २७	शु. ३ ४ ०
चं. ० ६ ०	मं. ० ७ ०	रा. १ ० १८	वृ. २ ४ २४	श. २ ६ १२	बु. २ ८ ०६	के. ० ११ २७	शु. १ २ ०	सू. १ ० ०
मं. ० ४ ६	रा. १ ६ ०	वृ. ० ११ ६	श. २ १० ६	बु. २ ३ ६	के. १ १ ६	शु. २ १० ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ८ ०
रा. ० १० २४	वृ. १ ४ ०	श. १ १ ६	बु. २ ६ १८	के. ० ११ ६	शु. ३ २ ०	सू. ० १० ६	चं. ० ७ ०	मं. १ २ ०
वृ. ० ६ १८	श. १ ७ ०	बु. ० ११ २७	के. १ ० १८	शु. २ ८ ०	सू. ० ११ १२	चं. १ ५ ०	मं. ० ४ २७	रा. ३ ० ०
श. ० ११ १२	बु. १ ५ ०	के. ० ४ २७	शु. ३ ० ०	सू. ० ६ १८	चं. १ ७ ०	म. ० ११ २७	रा. १ ० १८	वृ. २ ८ ०
बु. ० १० ६	के. ० ७ ०	शु. १ २ ०	सू. ० १० २४	चं. १ ४ ०	मं. १ १ ६	रा. २ ६ १८	वृ. ० ११ ६	श. ३ २ ०
के. ० ४ ६	शु. १ ८ ०	सू. ० ४ ६	चं. १ ६ ०	मं. ० ११ ६	रा. २ १० ६	वृ. २ ३ ६	श. १ १ ६	बु. २ १० ०
शु. १ ० ०	सू. ० ६ ०	चं. ० ७ ०	मं. १ ० १८	रा. २ ४ २४	वृ. २ ६ १२	श. २ ८ ०६	बु. ० ११ २७	के. १ २ ०

● योगिनीदशान्तर्दशाचक्रम् ●

मंगला १ श्र.आ.चि.	पिंगला २ ध.पुन.स्वा.	धान्या ३ श.पु.वि.	भ्रामरी ४ अ.आश्ले. अनु. पूभा	भद्रिका ५ भर.म.ज्ये. उभा	उल्का ६ कृ.पूफ मूरे	सिद्धा ७ रो.उफ पूषा	संकटा ८ मृ.ह.उषा
मा. १२ चं	मा. २४सू	मा. ३६वृ.	मा ४८मं	मा. ६०बु.	मा. ७२श.	मा. ८४शु.	मा. ९६कें.
मं. ०।१०	पिं. १।१०	धा. ३।०	भ्रा. ५।१०	भ. ८।१०	उ. १२।०	सि. १६।१०	सं. २१।१०
पिं. ०।२०	धा. २।०	भ्रा. ४।०	भ. ६।२०	उ. १०।०	सि. १४।०	सं. १८।२०	मं. २।२०
धा. १।०	भ्रा. २।२०	भ. ५।०	उ. ८।०	सि. ११।२०	सं. १६।०	मं. २।१०	पि. ५।१०
भ्रा. १।१०	भ. ३।१०	उ. ६।०	सि. १।१०	सं. १३।१०	मं. २।०	पि. ४।२०	धा. ८।००
भ.१।२०	उ. ४।०	सि. ७।०	सं. १०।२०	मं. १।२०	पि. ४।०	धा. ७।०	भ्रा. १०।२०
उ. २।०	सि. ४।२०	सं. ८।०	मं. १।१०	पि. ३।१०	धा. ६।०	भ्रा. ६।१०	भ. १३।१०
सि. २।१०	सं. ५।१०	मं. १।०	पि. २।२०	धा. ५।०	भ्रा. ८।०	भ. ११।२०	उ. १६।०
स. २।२०	मं. ०।२०	पि. २।००	धा. ४।००	भ्रा. ६।२०	भ. १०।०	उ. १४।०	सि. १८।२०

● योगिनीदशाभुक्तभोग्यानयनम् ●

जन्मर्क्षं त्रियुतं भक्तमष्टभिः शेषतः क्रमात् । मङ्गलाद्याः सङ्कटान्ता वर्षवृद्ध्या दशाः स्मृताः । ततो विंशोत्तरीदशावद् भुक्तभोग्यवर्षानयनं कार्यम्।

● योगिनीशान्तिमन्त्राः ●

मङ्गला—ॐ ह्रीं मंगले मंगलायै स्वाहा । **पिङ्गला**—ओं ग्लौं पिंगले वैरिकारिणि प्रसीद फट् स्वाहा। **धान्या**—ओं श्रीं धनदे धान्यायै स्वाहा। **भ्रामरी**—ॐ भ्रामरि जगतामधीश्वरि क्लीं स्वाहा। **भद्रिका**—ॐभद्रिके भद्रं देहि अभद्रं नाशय स्वाहा । उल्का—ओं उल्के मम रोगं नाशय जृंभय स्वाहा। **सिद्धा**—ओं ह्रौं सिद्धे मे सर्वमानसं साधय स्वाहा। **सङ्कटा**—ओं ह्रीं सङ्कटे मम रोगं नाशय स्वाहा।

गरुडादिवर्गवशेन शुभाशुभज्ञानप्रकारः

नामग्रामदिशाऽऽद्यक्षरवशेन शरसंख्यान् संयोज्याष्टभिर्भक्त्वा एकादिशेषे क्रमशः सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, शनि, वृहस्पति, राहु, शुक्राणां दशा ज्ञातव्याः। तत्र शुभग्रहाणां दशाः शुभदाः, पापग्रहाणाञ्च हानिकरा भवन्ति।। स्वनामाद्यक्षरवशेन यो वर्गेशस्तस्मादिग्वर्गेशस्य शत्रुवर्गे पतनात्तदिशि यद्गृहं तन्न शुभप्रदम्। अतएव स्ववर्गमित्रवर्गदिग्गृहवासः शुभः, समवर्गदिग्गृहवासो मध्यमः, शुत्रुदिग्गृहवासश्च हानिप्रदः।

● गरुडादिवर्गचक्रम् ●

वर्गेशः	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष
शरसंख्या	८	५	६	४	७	१	३	२
वर्गनाम	स्वरवर्ण	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग	तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
वर्गदिक्	पू.	आ.	द.	नै.	प.	वा.	उ.	ई
वर्गशत्रुः	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
वर्गसमः	सिंह	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार
वर्गमित्रम्	श्वान	सर्प	इन्दुर	गज	मेष	गरुड	मार्जार	सिंह

● अंगस्फुरणफलम् ●

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
मस्तके	भूमिलाभः	वक्षसि	सुखम्	कण्ठे	ऐश्वर्यम्
ललाटे	पदलाभः	हृदये	इष्टसिद्धिः	ग्रीवाघः	शत्रुभयम्
स्कन्धे	भोगः	कटिदेशे	प्रमोदः	पृष्ठे	पराजयः
भ्रूमध्ये	सुखम्	नाभौ	स्त्रीनाशः	मुखे	मधुभोजनम्
भ्रूवोः	सुखम्	कटिपार्श्वे	प्रीतिः	कपोलौ	व्यभिचारः
कपाले	शुभम्	आन्त्रिके	कोषवृद्धिः	बाहौ	प्रियलाभः
नेत्रयोः	धनाप्तिः	भगे	पतिसमागमः	बाहुमध्ये	धनागमः
नेत्रकोणयोः	धनम्	कुक्षौ	प्रीतिः	वस्तिदेशे	उन्नतिः
नेत्रसमीपे	प्रियसमागमः	उदरे	धनम्	उरसी	वस्त्रलाभः
नेत्रपक्ष्मणि	राज्याप्तिः	लिङ्गे	स्त्रीसमागमः	जागुन्योः	भयम्
नेत्रपक्ष्मणोः	विजयः	गुदे	वाहनाप्तिः	जंघे	स्वामिप्राप्तिः
नेत्रपांगे	स्त्रीलाभः	वृषणौ	पुत्रलाभः	पादयोरुपरि	स्थानलाभः
नासिकयोः	सुखम्	ओष्ठे	इष्टसिद्धिः	पादतले	पराक्रमः
हस्ते	धनलाभः	हनौ	भयम्	पादयोः	हानिः

● **नेत्रस्फुरणफलम्**—नेत्रस्योर्ध्वं हरति सकलं मानसं दुःखजालं नेत्रोपान्ते दिशति च धनं नासिकान्ते च मृत्युः । नेत्रस्याधः सफुरणमसकृत् संगरेऽभद्रहेतुः वामे चैतत्फलमविकलं दक्षिणे वैपरीत्यम्। एतानि फलानि पुरुषाणां ज्ञेयानि, स्त्रीणान्तु प्रोक्तवैपरीत्येन बोध्यानि ।

शतपदचक्रम्

नक्षत्रवर्णः	चु. चे चो. ल. अश्विनी	लि. लु. ले लो. भरणी	अ. इ उ ए. कृत्तिका	ओ. ब. वि. बु. रोहिणी	वे. वो. क. कि. मृगशिरा	कु. घ. ङ. छ. आर्द्रा	के. को. ह. हि. पुनर्वसु	हु. हे हो. ड. पुष्य	डि. डु. डे. डो. आश्लेषा	म. मि. मु. मे. मघा	मो. ट. टि. टु. पूफ	टे. टो ए. पि. उफ	पु. ष. ण. ठ. हस्त	पे. पो र. रि चित्रा	रु. रे. रो. त. स्वाती	ति. तु. ते. तो. विशाख	न. नि. नु. ने. अनुराधा	नो. य. यि. यु. ज्येष्ठा	ये. यो भ. भि. मूल	भु. ध. फ. ढ. पूषा.	भे. भो. ज. जि. उषा.	खि. खु. खे. खो. श्रवणा	ग. गि गु. गे. धनिष्ठा	गो. स. सि. सु. शतभिषा	से. सो. द. दि. पूभा.	दु. थ. झ. ञ. उभा.	दे. दो च. चि रेवती
राशि	मेष	मेष	मेष१वृ३	वृष	वृ२मि२	मिथुन	मि३क१	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिं१कं३	कन्या	कं२तु२	तुला	तु३वृ१	वृश्चिक	वृश्चिक	धनु	धनु	ध१म३	मकर	म२कुं२	कुम्भ	कु३मी३	मीन	मीन
वर्ण	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र	क्षत्रिय	क्षत्रिय	क्ष१वै३	वैश्य	वै२शू२	शूद्र	शू३वि१	विप्र	विप्र
वश्य	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	चतुष्पद	च२म२	मनुष्य	म३ज१	जलचर	जलचर	वनचर	वनचर	व१म३	मनुष्य	मनुष्य	मनुष्य	म३की१	कीट	कीट	मनुष्य	म।।च३।।	चतुष्पद	च१।।ज२।।	ज२म२	मनुष्य	म३ज१	जलचर	जलचर
युंजा	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	पूर्व	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	अन्त्य	पूर्व
हंसक	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल	अग्नि	अग्नि	अ१भू३	भूमि	भू२वा२	वायु	वा३ज१	जल	जल
योनि	अश्व	गज	मेष	सर्प	सर्प	श्वान	मार्जार	मेष	मार्जार	मूषक	मूषक	गो	महिष	व्याघ्र	महिष	व्याघ्र	मृग	मृग	श्वान	वानर	नकुल	वानर	सिंह	अश्व	सिंह	गो	गज
योनिवैर	महिष	सिंह	वानर	नकुल	नकुल	मृग	मूषक	वानर	मूषक	मार्जार	मार्जार	व्याघ्र	अश्व	गो	अश्व	गो	श्वान	श्वान	मृग	मेष	सर्प	मेष	गज	महिष	गज	व्याघ्र	सिंह
राशीश	मंगल	मंगल	मं१शु३	शुक्र	शु२बु२	बुध	बु३च१	चन्द्रः	चन्द्र	सूर्यः	सूर्यः	सू१बु३	बुध	बु२शु२	शुक्र	शु३मं१	मंगल	मंगल	गुरु	गुरु	गु१श३	शनि	शनि	शनि	श३गु१	गुरु	गुरु
गण	देव	मनुष्य	राक्षस	मनुष्य	देव	मनुष्य	देव	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	देव	राक्षस	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देव	राक्षस	राक्षस	मनुष्य	मनुष्य	देवः
नाडी	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य	अन्त्य	मध्य	आदि	आदि	मध्य	अन्त्य

पल्लीपतनफलबोधकचक्रम्

स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्	स्थानम्	फलम्
शिरसि	राज्यलाभः	दक्षिणकर्णे	आयुर्वृद्धिः	स्तनयोः	सौभाग्यम्	स्कन्धयोः	विजयः	मुखे	मधुरभोजनम्
ललाटे	बन्धुदर्शनम्	वामकर्णे	लाभः	उदरे	भूषणाप्तिः	नाभौ	धनाप्तिः	केशान्ते	कष्टम्
भ्रूमध्ये	सम्मानम्	नेत्रयोः	धनलाभः	पृष्ठदेशे	बुद्धिनाशः	कटिभागे	पशुलाभः	गुल्फयोः	धनम्
उत्तरोष्ठे	धनहानिः	द. भुजे	पराक्रमः	जानुद्वये	शुभः	द. मणिबधे	हानिस्तापः	द. चरणे	भ्रमणम्
अधरोष्ठे	ऐश्वर्याप्तिः	वामभुजे	राजभयम्	जंघयोः	शुभः	वा. मणिबंधे	कीर्तिनाशः	वा. चरणे	बन्धुनिग्रहः
नासाग्रे	रोगः	कण्ठे	शत्रुनाशः	हस्तद्वये	लाभः	हृदये	धनाप्तिः	पादान्ते मध्ये	स्त्रीनाशः

पल्लीपतनफलम्—यदि पतति च पल्ली दक्षिणांगे नराणां स्वजनधनवियोगी लाभदा वामभागे । उदरशिरसि कण्ठे पृष्ठदेशे च मृत्युः करचरणहृदिस्था सर्वसम्पत्तिदा स्यात् ।। एतानि फलानि पुरुषाणां, स्त्रीणान्तु वैपरीत्येन ज्ञेयानि । अनिष्टपल्लीपतने स्नात्वा तिलमाषादिदानं कार्यम्। शिवालये दीपं दद्यादष्टोत्तरशतसंख्यक "ॐ नमः शिवाय" इति मन्त्रस्य जपश्च कार्यः ।

जन्मराशेः सायुररिष्टदवर्षाणि

राशिः	अरिष्टदवर्षाणि	आयुः
मेष	१ ।१३ ।५० ।६२	७५
वृष	३ ।६ ।८ ।३३ ।४६ ।५२ ।६३	७५
मिथुन	६ ।१० ।११ ।१८ ।२४ ।५३ ।६३	७५
कर्क	१ ।१६ ।२२ ।२७ ।३५ ।४५ ।५५ ।६०	७०
सिंह	१ ।१० ।१५ ।२५ ।४५ ।५१ ।६१	६५
कन्या	१ ।३ ।१३ ।२६ ।३३ ।४३	६८
तुला	२ ।४ ।१६ ।२१ ।३३ ।४१ ।५१ ।६१	६५
वृश्चिक	३ ।७ ।८ ।१३ ।३२ ।३५ ।४५ ।६३	७५
धनु	३ ।६ ।१० ।१६ ।२३ ।३६ ।४७ ।५७ ।६७	६५
मकर	३ ।१० ।३२ ।३३ ।४२ ।५१ ।५६ ।६१	१००
कुम्भ	१८ ।३२	६१
मीन	१८ ।३३	६१

जन्मलग्नात् सायुररिष्टदवर्षाणि

लग्नं	अरिष्टदवर्षाणि	आयुः
मेष	४ ।११ ।१६ ।४४ ।५८	१००
वृष	१ ।२८ ।३३ ।४४	६०
मिथुन	४ ।१० ।१४ ।३८ ।५८	६४
कर्क	५ ।२५ ।४० ।४८ ।६२	१००
सिंह	५ ।१३ ।२८ ।३६ ।४८	६३
कन्या	४ ।१६ ।२३ ।३६ ।४५	१००
तुला	१५ ।३१ ।३५ ।५४ ।६२	७५
वृश्चिक	११ ।२८ ।३८ ।५२ ।६२	१००
धनु	२ ।८ ।१० ।१८ ।३१ ।३८ ।४२ ।६७	८१
मकर	५ ।१३ ।२७ ।३६ ।५७ ।६२	८५
कुम्भ	२ ।२८ ।३३ ।४८ ।६४	६०
मीन	१ ।८ ।१३ ।३६ ।४८	८३

माहेन्द्रादियोगचक्रम्

चैत्रवैशाखश्रावणभाद्रमाघफाल्गुनमासेषु

रवि—मा२ अ८ व१० शू८ मा२ शू२ अ६ शू८ व६ मा२ व४ अ२
चन्द्र—मा४ शू६ व१२ मा२ अ२ शू४ व२ मा६ व २२
मंगल—व४ शू२ मा६ व४ शू२ अ४ शू४ अ६ व४ शू२ व८ अ६ शू४ अ४
बुध—व४ अ४ व६ अ४ शू२ व४ मा२ व४ शू४ अ६ शू६ व८ अ६
गुरु—अ६ शू४ व४ अ६ व६ अ४ व४ मा४ अ२ व८ अ४ शू४ अ४
शुक्र—शू२ अ१६ व८ अ२ शू२ व४ शू८ अ६ व८ अ२ शू२
शनि—शू४ व४ शू६ अ४ शू२ अ४ शू२ अ४ शू४ व४अ४व४ अ६ व४ अ२ शू२

ज्येष्ठाषाढमासयोः

रवि—शू४ अ६ मा६ व६ शू२ व४ अ२ शू४ मा६ शू४ व६ शू२ मा४ व४
चन्द्र—व८ अ४ शू६ अ६ मा६ व६ अ८ व८ शू४ व४
मंगल—अ४ शू४ व४ शू२ अ४ व२ मा८ शू२ व६ अ४ व४ अ२ शू२ व२ अ६ व४
बुध—शू२ व४ अ८ व६ अ८ शू२ अ१० शू२ व८ अ६ शू२ अ२
गुरु—अ२ शू२ अ४ व८ अ६ शू२ अ६ शू४ अ४ शू२ व६ अ६ शु४ व४
शुक्र—शू४ अ१४ व८ अ२ शू२ व४ शू२ अ६ शू६ अ८ मा२ शू२
शनि—शू४ व६ अ६ शू२ व४ अ४ शू६ व४ अ६ व४ अ४ शू२ अ२ व६

आश्विनकार्तिकमार्गपौषमासेषु

रवि—मा६ व८ अ८ शू२ मा४ शू६ व४ अ४ व४ अ६ शू२ अ४ शू२
चन्द्र—अ४ व४ अ६ व२२ अ८ व६ अ४ व६
मंगल—मा२ व६ अ१० व६ शु२ व१२ अ२ शू२ अ६ व४ मा४ व४
बुध—शू४ अ४ मा६ शू४ व६ शू२ व८ अ४ व८ अ६ शू८
गुरु—अ४ व६ अ८ शू४ व६ शू६ अ८ व४ अ६ व६ मा२
शुक्र—अ२ व६ शू६ व६ अ८ व१४ शू४ मा२ व६ मा६
शनि—मा४ शू४ अ८ शू८ अ४ शू२ अ१२ शू४ व६ मा२ शू६

फलम्—ज्योतिषां ग्रहशास्त्राणां सारमुद्धृत्य यत्नतः । क्रियते मिहिरेणेद नराणां हितकाम्यया। न वार-तिथि-नक्षत्रं न योगः करणन्तथा । शिवस्याज्ञां समासाद्य देवकार्यं विचारयेत्।। माहेन्द्रे विजयो नित्यममृते कार्यशोभनम् । वक्रे कार्यविनाशः स्वाच्छून्ये च मरणं ध्रुवम् ।। अयं रव्यादिवारेषु माहेन्द्रादियोगः प्रोक्तदण्डप्रमाणकालेन व्यतीतो भवतीति चक्रे विलोकनीयम्।

१ वर्णगुणाः वरस्य

वर्णा	विप्र	क्षत्रि	वैश्य	शूद्र
विप्र	१	०	०	०
क्षत्रि	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

कन्यायाः

२ वश्यगुणाः वरस्य

वश्यः	चतु.	म.	जल	वन	कीट
चतु.	२	१	१	०	१
मानव	१	२	॥	०	१
जलचर	१	॥	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

३ तारागुणाः वरस्य

ता.	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

५ ग्रहमैत्रीगुणाः वरस्य

ग्रह	सू.	चं.	मं.	बु.	वृ.	शु.	श.
सू.	५	५	५	४	५	०	०
चं.	५	५	४	१	४	॥	॥
मं.	५	४	५	॥	५	३	॥
बु.	४	१	॥	५	॥	५	४
वृ.	५	४	५	॥	५	॥	३
शु.	०	॥	३	५	॥	५	५
श.	०	॥	॥	४	३	५	५

कन्यायाः

७ राशिकूटगुणाः वरस्य

राशयः	१ मे	२ वृ.	३ मि.	४ कं.	५ सि.	६ कं.	७ तु.	८ वृ.	९ ध.	१० म.	११ कु.	१२ मी.
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	७
वृष	०	७	०	७	७	७	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
वृश्चि	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	६	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

४ योनिकूटगुणाः वरस्य

	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
मेष	४	२	३	२	२	३	३	३	१	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	२	२	२	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	३	३	३	१	३	०	३	०
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	२	०
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
महिष	१	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	२	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	३
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	४	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	२	२	३	२	२	२	२	४

कन्यायाः

नैसर्गिकग्रहमैत्रीचक्रम्

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	मंगलः	बुधः	वृहः	शुक्र	शनिः
मित्राणि	चं.मं बुधः	सूर्यः बुधः	सू.चं. वृ.	सूर्यः शुक्रः	सू.चं. मं.	बुधः शनिः	बुधः शुक्रः
समाः		मं.वृ. शु.श.	शुक्रः शनि	म.वृ. शनि	शनिः	भौमः वृहः	गुरुः
शत्रवः	शुक्रः शनिः	×	बुधः	चन्द्रः	बुधः शुक्रः	सूर्यः चन्द्रः	सूर्यः चं.म.

अष्टौ वर्गास्तदीशाश्च

अवर्ग	कवर्ग	चवर्ग	टवर्ग
गरुड	मार्जार	सिंह	श्वान
तवर्ग	पवर्ग	यवर्ग	शवर्ग
सर्प	मूषक	मृग	मेष

६ गणगुणाः

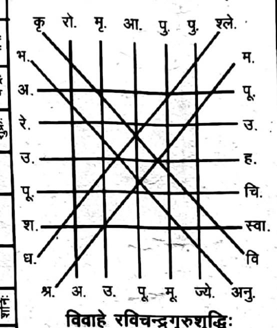
गण	दे.	मा.	रा.
दे	६	५	०
मा.	५	६	०
रा.	०	०	६

कन्यायाः

८ नाडीगुणाः

ना.	अ.	म.	अ.
आ.	०	८	०
म.	८	०	८
अ.	८	८	०

विवाहे पञ्चशलाकाचक्रम्



विवाहे रविचन्द्रगुरुशुद्धिः

ग्रहाः	सूर्यः	चन्द्रः	गुरुः
शुभ	३।६।१०।११	३।६।७।१०।११	२।५।७।९।११
पूज्यः	१।२।५।९	१।२।५।९	१।३।६।१०
निन्द्य	४।८।१२	४।८।१२	४।८।१२

विवाहे रेखाप्रदग्रहाः

सू.	चं.	मं.	बु.	बृ.	शु.	श.	ग्र.
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	सं

राहुकेत्वोः शनिवत् । सू. श. रा. के. ३।६।८।११ चं. २।३।११ मं. ३।६।११ बु. वृ. १ ।२ ।३ ।४ ।५ ।६ ।९ ।१० ।११ शु. १ ।२ ।४ ।५ ।९ ।१० ।११ ॥ उक्त **स्थानस्थ**—ग्रहांकान् संयोज्य विवाहलग्ने ग्रहवलविश्वा बोध्याः। लग्नेशनवमांशेशौ १।४।७।१०।११ स्थौ सर्वदोषनाशकौ भक्तः ।

मेषसंक्रमे वारिपूर्णघटदानं—कुशादिकं गृहीत्वा ओ सोपकरणवारिपूर्णघटाय नमः ३ । कुशोपरि ओ ब्राह्मणाय नमः ३ । घटं सिक्त्वा—ओमद्यामुके मासि अमुकेपक्षेऽमुकतिथौ मेषार्कसंक्रमणप्रयुक्तपुण्याहे (पुण्यकाले) अमुकगोत्रस्य मम श्रीअमुकशर्मणः सकलमनोरथसिद्धिपूर्वकपितृ स्वर्गकाम इमं सोपकरणवारिपूर्णघटं वरुणदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे। ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय—ओमद्य कृतै तत्सोपकरणवारिपूर्णघटदानप्रतिष्ठार्थमेतावद्द्रव्य मूल्यकहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे। ततः—एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णु शिवात्मकः। अस्य प्रसादात्सफला मम सन्तु मनोरथाः। इति प्रार्थयेत् ।

वर्षप्रवेशसारिणी । प्रतिवर्षक्षेपकदिनादि ।

गतवर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०
दिन	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५
दण्ड	१५	३१	४६	२	१७	३३	४८	४	१९	३५
पल	३१	३	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००
गव	२०	३०	४०	५०	६०	७०	८०	९०	१०.०	
दिन	४	२	१	६	५	४	२	१	६	
दण्ड	१०	४५	२१	५६	३१	६	४२	१७	५२	
पल	३०	४५	००	१५	३०	४५	००	१५	३०	
विपल	००	००	००	००	००	००	००	००	००	

विंशोत्तरीमुद्दादशाचक्रम्

पति	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	००	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०

गतवर्षसंख्या जन्मनक्षत्रसंख्यायुक्ता द्विहीना नवभक्ता शेषक्रमेण दशापतिः ।

त्रिपताकिचक्रे ग्रहस्थापनम्—सैका गताब्दसंख्या या विभक्ता नवभिस्ततः । शेषांके जन्मनिगताच्चन्द्रराशिरिह न्यसेत् । शेषग्रहाश्चतुर्भक्तशेषसंख्यासु विन्यसेत्। त्रिपताके वर्षलग्नमादौ स्थाप्यौ विधूदयौ। शुभैर्विद्धौ शुभफलौ पापैः पापफलप्रदौ ॥

त्रिराशिपतिः

लग्न	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
दिवा	सू.	शु.	श.	शु.	वृ.	चं.	बु.	म.	श.	म.	वृ.	च.
रात्रै	वृ.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	वृ.	चं.

वर्षमुन्थानयम्—(गतवर्षसंख्या + जन्मलग्नसंख्या) ÷ १२ ॥ एकादिशेषे मेषादिमुन्थाराशिः। **वर्षेशनिर्णयः**—वर्षलग्नेशजन्मलग्नेश–मुंथेश–त्रिराशिपति–दिवारविराशीश–रात्रौचन्द्रराशीशेषु लग्नद्रष्टा सर्वाधिकबलवत्तरो वर्षेशः ।

गोचरफलबोधकचक्रम्

भावाः	सूर्यः	चन्द्रः	मङ्गल	बुधः	गुरुः	शुक्रः	शनिः	राहुः	केतुः
तनुः	स्थानहानिः	सौख्यम्	बन्धनम्	भयम्	अभयम्	शत्रुनाशः	नाशः	कष्टम्	रोगः
धनम्	भयम्	धनम्	धननाशः	धनाप्तिः	धनाप्तिः	धनागमः	हानिः	धनम्	धननाशः
सहजः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	भीतिः	लाभः	शोकः	लाभः	नेरुज्यम्	सुखम्
सुहृद	मानहानिः	रोगः	भयम्	धनम्	धनहानिः	लाभः	शत्रुवृद्धिः	शत्रुवृद्धिः	भीतिः
सुतः	दैन्यम्	कार्यसिद्धिः	धनक्षयः	रोगः	पुत्रसुखम्	पुत्राप्तिः	धनुपत्रनाशः	शोकः	शोकः
रिपुः	विजयः	शत्रुभयम्	विजयः	अलाभः	शोकः	शत्रुभयम्	द्रव्यलाभः	धनम्	धनाप्तिः
जाया	भ्रमणम्	लाभः	व्ययः	विग्रहः	मानम्	अशोकः	स्त्रीकष्टम्	हानिः	दुर्गतिः
मृत्युः	पीड़ा	कष्टम्	कष्टम्	लाभः	क्लेशः	विपत्तिः	शत्रुभयम्	रोगः	राजभयम्
धर्मः	धर्महानिः	मानम्	पीड़ा	रोगः	धर्मरतिः	लाभः	धर्महानिः	पापरतिः	बन्धनम्
कर्मः	कार्यसिद्धिः	सुखम्	शोकः	सुखम्	उन्नतिः	दैन्यम्	दौर्मनस्यम्	वैरम्	शोकः
आयः	धनम्	लाभः	धनाप्तिः	सौख्यम्	लाभः	धनाप्तिः	आयुवृद्धिः	सौख्यम्	सुयशः
व्ययः	कष्टम्	व्ययः	हानिः	नाशः	चिन्ता	हानिः	हानिः	शोकः	धनक्षयः

७॥ **वर्षाय शनेः मासभेदेन फलम्**—मस्तक ७ मासाः—सर्वाशे हानिः। नेत्रे६ मासाः—सवांशहानिः। मुख ८ मासाः भोजनादिलाभः। कण्ठे ६ मासाः—भूषणादिलाभः। हृदये १० मासाः—यन्त्रादिलाभः। उदरे ११ मासाः अन्नादिलाभः। नाभौ ४ मासाः—कष्टमुदरे। गुह्ये ५ मासाः—सर्वांशेहानिः। जानुनि १४ मासाः—राजबलेन जयः। जंघयोः ११ मासाः स्त्रियादौ सौख्यम्। पादयोः ५ मासाः—व्यर्थभ्रमणम्।

• गुणयोगबोधक (मेलापक) चक्रम् • पार्श्वे कन्यानक्षत्राणि • उपरि वरनक्षत्राणि •

नक्षत्र	अ	भ.	कृ.१	कृ३.	रो.	मृ२.	मृ.२	आ.	पुन.३	पुन.१	पु.	श्ले.	म.	पूफ.	उफ.१	उफ.३	ह.	चि.२	चि.२	स्वा.	वि.३	वि.१	अनु.	ज्ये.	मू.	पू।।	पू३।।	उ१	उ३	श्र१।।	श्र२।।	ध२	ध२	श.	पू.३	पू.१	उभा.	रे.
अश्वि	२८	३३	२८।।	१८।।	२१।।	२२।।	२६	१७	१८	२२।।	३१।।	२७	२०।।	२६	१७।।	११	६	१३	२२।।	२६।।	२२।।	१६।।	२६।।	१५	१३	२६	२७	२४।।	२६	२६	२४	२१	२१	१५	१६	१४।।	२४।।	२६
भरणी	३४	२८	२६	१६	२२।।	१४।।	१७	२६	२६	३०।।	२३।।	२४।।	२१	१६	२८	२१।।	१६	६	१४।।	२६।।	२२।।	१६।।	१७।।	२०	२०	१६	२०	२७	२८।।	२८	२६	१०	१०	२०	२४	२२।।	१६।।	२८
कृति १	२७।।	२७।।	२८	१६।।	६	१५।।	१६	२०	२१	२५।।	२६।।	२३।।	१७।।	२१	२२	१५।।	१५।।	१८।।	२७।।	१५।।	१६।।	१६।।	२०।।	२६।।	२४।।	१८	१६	१४	१५।।	११।।	१०।।	२५	२५	२७	१६।।	१७।।	१६।।	११।।
कृति ३	१८।।	१८।।	१६	२८	१६	२५।।	१६।।	१७।।	१८।।	२२	२३	२०	१६।।	२३	२४	२१	२१	२३।।	२२।।	१०।।	१४।।	२१।।	२५।।	३१।।	२०	१२।।	१३।।	६।।	१४	१२	१०	२२।।	२६।।	३१	२३।।	२०	२२	१४
रोहिणी	२३।।	२३।।	१०	१६	२८	३६	२७	२३।।	२३।।	२७	२८	१३	१२।।	२६।।	२८	२५	२६	२०	१६	१५।।	६।।	१६।।	३०।।	२४।।	१४	१६	२०	१२।।	१७	१६	१८	२०	२६	२४	३०।।	२७	२६	१६
मृग २	२३।।	१३।।	१८।।	२८।।	३४	२८	२०	२५	२३।।	२६	२२	२२	२१।।	१७।।	२५।।	२३।।	२७	१३	१२	२५	१७।।	२३।।	२२।।	२५।।	१५	१२	१६	१८	२१	२४।।	२४	१३	१६	२७	२६।।	२६।।	१७	२७
मृ. २	२७	१८	२१	१८।।	२५।।	२०	२८	३३	३१।।	१६।।	१३	१५।।	२४	२०।।	२८।।	३०।।	३४	२१	१४	२७	१६।।	१४	११	१३	२३	१६	१८	२४	२०।।	२५	२५	१२	१३	२१	२३।।	२७।।	१७	२७
आर्द्रा	१६	२७	२१	१८।।	२४।।	२६	३४	२८	२५	१३	२०।।	१३।।	२३।।	२६।।	२२।।	२४।।	२४।।	२७	२०	२७	२०	१३।।	१७	४	१६	२८	२७	२७	२२।।	२२।।	२२।।	१७	२०	११	१६	१६	२७	२७
पुन ३	१६	२६	२३	१६।।	२३।।	२४।।	३२।।	२४	२८	१६	२३	१६।।	२२।।	२७।।	२१।।	२३।।	२४।।	२५।।	१८।।	२७	२१	१३।।	२०।।	५	१३	२७	२६	२७	२२।।	२२।।	२३।।	१७।।	१८।।	११	१७	१६।।	२७	२८
पुन१	२१।।	२८	२५।।	२०	२४	२५	१६	१०।।	१४।।	२८	३५	२८।।	१५।।	२०	१४।।	१७	१८	२०।।	२०	२७	२०	१६	२६	१०।।	८	२१	२०।।	२१।।	२६	२५	२७	२१	१२।।	७	११	१७	२५	२१।।
पुष्य	३०।।	२१।।	२६।।	२३	२४	१७	१०	१८	२१।।	३५	२८	३०	१८।।	१४।।	२३।।	२६	२७	१२	११।।	२६	२१	२०	१६	२२	१७	१६	११।।	२१।।	२६	२४	२५	१३	४।।	१४।।	१८	२४	१८	२७
आश्ले.	२५	२३।।	२२।।	१६	१२	२१	१३	१२	१५	२८।।	२८।।	२८	१५	१५।।	१७।।	२०।।	२०	२६	२५	११।।	१६।।	१५।।	२०	२६	२२।।	१६	१७।।	८।।	१२	१३	१३	२७	१८।।	१८।।	१२।।	१८।।	२०	१२
मघा	२१	२१	१७।।	१८।।	११।।	१६।।	२२।।	२२।।	२१।।	१६।।	१८।।	१६	२८	३०	२६।।	१६।।	१६।।	२२।।	२५।।	११।।	१७।।	२४।।	२६।।	३४	२४	२०	२१	११।।	५।।	५।।	४।।	१८।।	२४।।	२५।।	१८।।	१८।।	१७।।	११
पूफ.	२७	१६	२१	२२	२५।।	१७।।	२०।।	२८।।	२७।।	२२।।	१६।।	१६।।	३०	२८	३४।।	२४	२२।।	८।।	११।।	२५।।	१६।।	२६।।	२४।।	२४।।	१६	१८	१६	२७	२१	१६।।	१८।।	४।।	११।।	१६।।	२४।।	२३।।	१६।।	२४।।
उफ१	१८।।	२७	२२	२३	२७	२५।।	२८।।	२१।।	२१।।	१६।।	२५।।	१८।।	२६।।	३४	२८	२८	१६।।	१४।।	१७।।	२६।।	१७।।	२४।।	३०	१६।।	१०	२३	२७	२८	२२	२१	२१	११।।	१८।।	१२।।	१६।।	१५।।	२६।।	२४।।
उफ३	१३	२१।।	१६।।	२१	२५	२३।।	३०।।	२३।।	२३।।	१६।।	२८।।	२१।।	१७।।	२५	१६	२७	२५।।	२४।।	१६।।	२५।।	१६।।	१८	२७	१३	१५।।	२६।।	२८।।	२६।।	२६	२५	२५	१६।।	१६।।	१०।।	१४।।	१८	२६	२७
हस्त	१०	२०	१६।।	२१	२६	२६	३३	२३।।	२३।।	१६।।	२८।।	२२	१७।।	२२।।	१७	२६	२८	२७	१६	२६।।	१७।।	१६।।	२६	१२	१४	२७	२६	२७।।	२३	२४	२४	१६	१६	८।।	१४।।	१६	२७	२७
चित्रा२	१३	६	१६	२५।।	२०	१२	१६	२६	२४।।	२०।।	१२।।	२६।।	२३।।	६।।	१५।।	२४	२७	२८	२०	१६	२६।।	२८।।	१६	२५	२८	१४	१३	२१	१७।।	१६	११	१८	१८	२४	१८।।	२२	११	२१
चित्रा२	२२।।	१५।।	२८।।	२३।।	२०	१२	१३	२०	१८।।	२०	१२	२६	२५।।	१०	१७।।	१७।।	२१	२१	२८	२७	३४।।	२४।।	७।।	२१।।	२८	१४	१३	२१	२५।।	२७	२७	२६	२०	२६	२१	१५	४	१३
स्वाती	२७।।	२६।।	१७।।	१२।।	१६।।	२७	२७	२६	२६।।	२८	२८	१५।।	१३।।	२५।।	२५।।	२५।।	२७।।	२१	२८	२८	२०	१०	२३।।	१८।।	१३	२७	२६	१८	२२।।	२३।।	२३।।	२७	२१	२०	२५	१६।।	२०	१३
वि. ३	२२।।	२२।।	२०।।	१५।।	१०।।	१८।।	१६।।	२१	२१	२२।।	२१।।	१६	१७।।	१६।।	१८।।	१७।।	१८।।	२७।।	३४।।	१८	२८	१८	१७	२१।।	२८	२२	२१	१३	१७।।	१७	१७।।	३२।।	२६।।	२६।।	२२	१६।।	१३।।	५
वि. १	१६।।	१६।।	१४।।	१६।।	१४।।	१२।।	१३	१४।।	१४।।	१६	१८	१५।।	२१	२३	२१।।	१८	१६	२८	२३।।	८	१७	२८	२७	३१।।	२३।।	१७।।	१६।।	६।।	१२	१२	१२	२७	२७	२६।।	२२।।	२१	१८	६।।
अनु.	२४।।	१४।।	१६।।	२४।।	२७।।	२०।।	११	१६	२१।।	२६।।	१८	२१	२४।।	२०।।	२१।।	२६	२७	१२	७।।	२२।।	१७	२८	२८	३१	१६।।	१४।।	१४।।	२२	२५	२६	२६	१२	१२	२२	२४।।	२४	१८	२७
ज्ये.	१२	१८।।	२४।।	२६।।	२२।।	१२।।	१३	३	६	१०।।	२०	२६	३१	२३।।	१६।।	१३	१२	२५।।	२०।।	१६।।	२०।।	३१।।	३०	२८	१५	१७।।	१७।।	१७।।	२०	२०	२०	२५	२५	१६	११	६।।	२१	२१
मूल	१२	२०	२४।।	१६	१३	२३	२१	१५	१२	८।।	१७।।	२४	२५	१६	६।।	१३	१३	२७	२७	२१	२७	२४।।	१६।।	१६	२८	२८	२७	२५।।	१५।।	१५।।	१५।।	१५।।	२५	२१	१५।।	१६।।	२५।।	२७
पूषा।।	२६	१६	८	१२।।	१६	११	१६	२७	२७	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१६	२५	२८।।	२७	१२	१२	२७	२०	१६।।	१८।।	१८।।	२८	२८	२७	३३	२३	२३।।	२३।।	८।।	१६।।	२३।।	३१।।	३२।।	२३।।	३२।।
पू३।।	२७	२०	१६	१३।।	२०	१२	१८	२६	२६	२३।।	१३।।	१७।।	२१	१६	२७	२७	२६	११	११	२६	१६	१८।।	१८।।	१६	२७	२७	२८	३५	२४	२४	२३।।	८।।	१५।।	२२।।	२६।।	३२।।	२३।।	३२।।
उ. १	२५।।	२७	१४	८।।	११।।	१८	२४	२६	२६	२३।।	२४।।	६।।	११।।	२७	२८	२८।।	२७।।	२०	२०	१६	१२	११।।	२५।।	१६।।	२५।।	३३	३४	२८	१८	१६	१५।।	१५।।	२२।।	२२।।	२८।।	३१।।	३२।।	२३।।
उ. ३	२८	२६।।	१६।।	१४	१७	१८	२०।।	२२।।	१२।।	२७	२८	१३	६।।	२२	२३	२६	२५	१७।।	२४।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२२	१६।।	२६	२५	१६	२८	२६	२५	२५।।	१७।।	१७।।	२३।।	३०।।	३२।।	२३।।
श्र१।।	२८	२७	१४।।	१२	१८	२८	२४	२१।।	२१।।	२७	२५	१५	५।।	१६	२०	२४	२५	१६।।	२६।।	२३।।	१६।।	१४	२८	२३	१७।।	२३।।	२४।।	१७	२५	२८	२७	३०	२२	१८।।	२३।।	३१।।	३०।।	२२।।
श्र२।।	२७	२६	१३।।	१०	१७	२६	२३।।	२१	२३।।	२८।।	२६	१५	६।।	१८।।	२१।।	२३।।	२४	१८।।	२५।।	२३	१६	१४	२८	२२	१६	२३	२५।।	१५	२४	२७	२८	३०	२०	१८।।	२३	२६।।	३१।।	२४।।
धनि. २	२०।।	१०।।	२६	२३।।	२०	१२	८।।	१७।।	१७।।	२२	१३	२८	१८।।	५।।	१२।।	१६	१७।।	१६।।	२४।।	२६	३०	२८	१४	२६	२१।।	६	६।।	१६।।	२५।।	२८	२८	२८	१८।।	२३।।	२१।।	२६।।	१५।।	२२।।
धनि. २	२०	११	२६	३०।।	२७।।	१६	१०	२०	१६	१४	५	२०	२५।।	११।।	१६।।	१७।।	२१	१८	१६	२२	२५।।	२८	१२	२६	२६।।	१७।।	१६।।	२३।।	१८।।	२१।।	२१	२०।।	२८	३३	२८।।	१८।।	७।।	१४।।
शत.	१५	२१	२८	३२।।	२५।।	२५	१८	१०	१०	७।।	१५	२०	२६।।	२०।।	१३।।	११	८।।	२६	२६	१६	२६।।	२६।।	२१	२०	२२।।	२४।।	२३।।	२३।।	१८।।	१८।।	१८।।	२५	३३	२८	१६	६	१७।।	१६।।
पू३	१८	२५	२०	२४।।	३१।।	३१।।	२४।।	१७	१७	२३।।	२०।।	१४	१६।।	२५।।	१६।।	१५।।	१७।।	१८।।	१६।।	२८	२१	२१।।	२७	१२	१५।।	३१।।	३०।।	२६।।	२४	२५।।	२५।।	२०।।	२७।।	१६	२८।।	१८	२३	२०।।
पू.१	१४।।	२१।।	१६।।	१६	२६	२६।।	२५।।	१८	१८	१८	२५	१८।।	२६	२२।।	१४।।	१६।।	१८।।	१६।।	१२।।	१६	१४	२१	२७	११।।	१७	३१।।	३१।।	३०	२८	२६।।	३०।।	२५।।	१७	७।।	१६।।	२८	३३	३०।।
उभा.	२४।।	१५।।	१८।।	२१	२५।।	१६।।	१६।।	२५।।	२७	२६	१६	२०	१७।।	१५।।	२५।।	२७।।	२६	६।।	५	१६।।	१२	१६	२०	२३	२४	२२	२२।।	३१।।	२६।।	२८।।	२६।।	१५।।	६	१६।।	२१।।	३३	२८	३४।।
रे.	२५	२४।।	११।।	१४	१७	१६	२५।।	२४	२५।।	२४।।	२७	१३	१२	२२	२२	२४।।	२६।।	२०।।	१३।।	११।।	५।।	१२।।	२७	२२	२७	३०	३०।।	२१	१६	२०	२२।।	२२।।	१४	१६	१८	२८	३३	२८

गुणविचार:—गुणै: षोडशभिर्निन्द्यो मध्यमा विंशतिस्तथा। श्रेष्ठस्त्रिंशद्गुणं यावत्परतस्तूत्तमोत्तमम् ।। **वर्णादिपरिहार:**—मैत्र्यां राशिस्वामिनोरंशनाथ—द्वन्द्वस्यापि स्याद्गणानां न दोष:। खेटारित्वं नाशयेत्सद्भकूटं खेटप्रीतिश्चापि दुष्टं भकूटम्।। राशीशयोरभित्रत्वे मित्रत्वे चांशनाथयो:। गणादिदौष्टयेऽप्युद्वाह: पुत्रपौत्रपद: स्मृत:।। राश्यैक्ये चेद्भिन्नमृक्षं द्वयो: स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव। नाडीदोषो नो गणानाञ्च दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात्।। रोहिण्यार्द्रामृगेन्द्राणां पुष्यश्रवणपौष्णभम्। अहिर्बुध्न्यर्क्षमेतेषां नाडीदोषो न विद्यते ।

वरकन्ययोर्मेलापकविचार:—लग्ने व्यये च पाताले यामित्रे चाष्टमे कुज:। कन्या भर्तृविनाशाय भर्ता कन्याविनाशक:।। इदं लग्नचन्द्राभ्यां विचार्यम्। सप्तमेशे षष्टाष्टव्ययगते न शोभन:। परं सप्तमेशे स्वोच्चमूलत्रिकोणमित्रगृहगते शोभन:।। **अस्य परिहार:**—यामित्रे च यदा सौरिर्लग्ने वा हिबुकेऽथवा। अष्टमे द्वादशे वापि भौमदोषविनाशकृत् ।। शनिर्भौमोऽथवा कश्चित्पापो वा तादृशो भवेत्। तेष्वेव भवनेष्वेव भौमदोषविनाशकृत् ।। लग्नाद्विधोर्वा यदि जन्मकाले शुभग्रहो वा मदनाधिपश्च। द्यूनस्थितो हन्त्यनपत्यदोषं वैधव्यदोषं च विषाख्यदोषम्। केन्द्रे कोणे शुभा: सर्वे त्रिषडायेऽप्यसद्ग्रहा: । तदा भौमस्य दोषो न मदने मदपस्तथा। उभयोर्वरकन्ययोर्नामनक्षत्रानुसारं जन्मर्क्षानुसारं वा मेलापकं गणनीयम्। यतो हि व्यत्ययोऽशुभप्रद:।

• नित्यपूजाविधि: •

देवताओं की पूजा दिन में उत्तर या पूर्वाभिमुख होकर और रात्रि में उत्तराभिमुख होकर करें। पूजा के आरम्भ में दिन में सूर्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की तथा रात्रि में गणपत्यादि पञ्चदेवता एवं विष्णु की पूजा करनी चाहिए अक्षत लेकर—ॐ भूर्भुव स्व: सूर्यादिपञ्चदेवता इहागच्छत इह तिष्ठत इस मन्त्र से आवाहन कर एतानि पाद्यार्घाचमनीयस्नानीयपुनराचमनीयानि ॐभूर्भुव: स्व: सूर्यादिपञ्चदेवताभ्यो नम: इस मन्त्र से जल दें । इसके बाद इदमनुलेपनम् ॐ सूर्यादि पञ्चदेवताभ्यो नम: इस मन्त्र से चन्दन तथा इसी तरह अन्य वस्तु भी समर्पित करें। रात्रि में सूर्यादि के स्थान पर गणपत्यादि पढ़ें। इसी तरह ॐ भूर्भुव: स्वर्विष्णो इहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर ॐ भूर्भुव: स्वर्विष्णवे नम: से पूजा करें (मूर्ति या शालग्राम हो तो आवाहन विसर्जन न करें) इसके बाद स्वेष्टदेवता की पूजा जप आदि करें। इसके बाद ॐभूर्भुव स्व: कीर्तिमुख इहागच्छ इह तिष्ठ इस मन्त्र से पूर्ववत् पूजा करें। तत: ॐ हराय नम: इस मन्त्र से पवित्र मृत्तिका ग्रहण कर ॐ महेश्वराय नम: इस मन्त्र से महादेव बनाकर शूलपाणये नम: ॐशूलपाणे इह सुप्रतिष्ठितो भव इस मन्त्र से अक्षत लगाकर पात्र में शिव को सामने रखें उसके बाद निम्नलिखित मन्त्र से ध्यान करें—

ॐ ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीतिहस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात्स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्। तत—ॐपिनाकधृगिहागच्छ इह तिष्ठ से आवाहन कर एतानि पाद्यादीनि ॐ नम शिवाय नम:। तत: इदमनुलेपनम्, एतानि पुष्पाणि एतानि बिल्वपत्राणि, एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलयथाभागनाना विधनैवेद्यानि ॐ पशुपतये नम: इस मन्त्र से क्रमश: चन्दनाक्षतपुष्पबिल्वपत्रगन्ध पुष्पधूपदीपनैवेद्य आदि दें। इसके बाद फूल अक्षत चन्दन से महादेव के पूर्व, ईशान, उत्तर आदि चारों ओर और अन्त में महादेव के उफपर निम्नलिखित मन्त्रों से क्रमश: अष्टमूर्त्ति की पूजा करें—

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्त्तये नम: १ । ॐभवाय जलमूर्त्तये नम: २ । ॐ रुद्रायाग्निमूर्त्तये नम: ३ । ॐ उग्राय वायुमूर्त्तये नम: ४ । ॐ भीमायाकाशमूर्त्तये नम: ५ ॐपशुपतये यजमानमूर्त्तये नम: ६ । ॐ महादेवाय सोममूर्त्तये नम: ७ । ॐ ईशानाय सूर्यमूर्त्तये नम: ८ । ॐ महादेवाय नम: । अन्त में जल पुष्पाक्षतचन्दनादि से ॐ ब्रह्मणे नम: इस मन्त्र से ब्रह्मा की पूजा एक बार ही भूमि पर करें। उसके बाद पूजा क्रम से जल लेकर विसर्जन करें। ॐ सूर्यादिपञ्चदेवता: पूजिता: स्थ: क्षमध्वं स्वस्थानं गच्छत। ॐ भगवन् विष्णो पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ कीर्त्तिमुख पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ महादेव पूजितोऽसि प्रसीद क्षमस्व स्वस्थानं गच्छ। ॐ विष्वक्सेनाय नम: मन्त्र से भगवान पर से तथा ॐ चण्डेश्वराय नम: इससे महादेव पर से निर्माल्य हटावें ।

निवेदनम्

कौशिकीन्तु समारभ्य गण्डकीमभिगम्य वै । योजनानि चतुर्विंशद् व्यायामः परिकीर्त्तितः ।।
गंगाप्रवाहमारभ्य यावद्धैमवतं वनम् । विस्तारः षोडश प्रोक्तो देशस्य कुलनन्दन ।।
मिथिला नाम नगरी तत्रास्ते लोकविश्रुता ।। (वृहद्विष्णुपुराण, मिथिलामाहात्म्य, अ १४, श्लो. ४२–४४)

जाता सा यत्र सीता सरिदमलजला वाग्वती यत्र पुण्या, यत्रास्ते सन्निधाने सुरनगरनदी भैरवो यत्र लिङ्गम्।
मीमांसान्यायवेदाध्ययनपटुतरैः पण्डितैर्मण्डिता या, भूदेवो यत्र भूपो यजन वसुमती साऽस्ति मे तीरभुक्तिः ।।
(श्रीशंकरमिश्र (१४४० ई.–१५३० ई.) कृत, द्रष्टव्य विद्याकरसहस्त्रक, म.म. उमेशमिश्रसम्पादित, १९४२ ई. प्रयागविश्वविद्यालयप्रकाशित)

गंगा वहथि जनिक दक्षिणदिशि पूर्व कौशिकीधारा । पश्चिम वहथि गण्डकी उत्तर हिमवत वन विस्तारा ।।
कमला त्रियुगा अमृता धेमुरा वागमती कृतसारा । मध्य वहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यागारा ।।
(श्रीमहेन्द्रनारायणशर्मकृत–मिथिलादेशीय–पञ्चाङ्ग, मुखपृष्ठ, सन् १३५१ साल, १९४३–४४ ई.)

उपर्युक्त प्रमाणों के आधार पर कोशी से गण्डकी (हरिहरक्षेत्रस्थ शालग्रामी या नारायणी) तक, पूरब से पश्चिम तक २४ योजन (९६ कोश) लम्बा एवं गङ्गाप्रवाह से हिमालय वन तक (दक्षिण से उत्तर तक) १६ योजन (६४ कोश) चौड़ा तीरभुक्ति अथवा मिथिला क्षेत्र कहा गया है। इस आधार पर वर्त्तमान समय में उत्तर से दक्षिण तक क्रमशः नेपाल के तराई क्षेत्र (दक्षिणीभाग) से मुंगेर तक तथा पश्चिम से पूरब तक क्रमशः चम्पारण्य–वैशाली से पूर्णियाँ–भागलपुर तक का क्षेत्र तिरहुत अथवा मिथिला क्षेत्र है। १८१५–१७ ई. में सुगौली सन्धि के समय विविध राजनीतिक स्थितिवश उक्त तराई क्षेत्र नेपाल के अधीन हो गया। किन्तु आचार–विचार, सभ्यता–संस्कृति की दृष्टि से आज भी सर्वथा साम्य है।

वेद, उपनिषद् रामायण, भागवत, गीता, पुराण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रन्थों एवं विविध भाषा के मानक (ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि) ग्रन्थों में तीरभुक्ति (तिरहुत) क्षेत्र का महत्वपूर्ण वर्णन मिलता है। प्राचीनकाल से ही यह क्षेत्र विद्या, उपासना एवं आध्यात्मिक चिन्तन के क्षेत्र में विश्वविख्यात रहा है। यहाँ देवरात, मिथि, निमि, जनक, विशाल, गार्गी, मैत्रेयी, अष्टावक्र, वाल्मीकि, गौतम, कपिल, कणाद, मण्डन–भारती, आयाची, वाचस्पति, उदयन, कालिदास, श्रीधर, रामदत्त, वीरेश्वर, विद्यापति, महात्माबुद्ध, भगवान् महावीर, तान्त्रिकशिरोमणि मदन उपाध्याय, भक्तशिरोमणि बाबासाहेब राम, सन्तशिरोमणि लक्ष्मीनाथ गोस्वामी, नव्यन्यायप्रवर्त्तक गंगेशोपाध्याय, म.म. गोकुलनाथ, महार्घ्य मधुसूदन ओझा, देवीकान्त ठाकुर, गोविन्द ठाकुर, दैवज्ञरत्न गेनालाल चौधरी, डॉ. म.म. सर गंगानाथ झा, स्वतंत्रस्वतंत्र बच्चा झा, म.म. जयदेवमिश्र, म.म. परमेश्वर झा, म.म. बालकृष्ण मिश्र, आचार्य जानकी वल्लभशास्त्री, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, गोपाल सिंह नेपाली, रामवृक्ष बेनीपुरी, भिखारी ठाकुर, फणीश्वरनाथ रेणु, वैद्यनाथमिश्र यात्री–नागार्जुन, सुरेन्द्र झा सुमन आदि अनेक मनीषिगण हो चुके हैं जिनके कार्यकलापालोक से समस्त विश्व आलोकित हो रहा है। सीतामढ़ी में दुर्भिक्षनिवारणार्थ सम्पन्नयज्ञ के पश्चात् सीरध्वजजनक द्वारा स्वर्णहलप्रवाहावसर पर पुण्यारण्य (पुनौरा) में भूगर्भ से आदिशक्ति–जगज्जननी जानकी का प्रादुर्भाव, याज्ञवल्क्य द्वारा ब्रह्मविद्या की प्राप्ति एवं उपदेश (श्रीमद्भागवत स्क १२ अ ६ श्लो. ६१–७३ एवं वृहदारण्यकोपनिषद्) बलराम एवं श्रीकृष्ण की मिथिलायात्रा (हरिवंश पर्व, अ ३६ श्लो. २३, २८ श्रीमद्भागवत स्क. १० अ. ८६, विष्णु पुराण ३, ५) कर्म की उत्कृष्टता निरूपणावसर पर भगवान श्रीकृष्ण द्वारा (कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः, (श्रीमद्भगवद्गीता, अ ३, श्लो. २०) जनकादि का उदाहरण के रूप में उल्लेख तथा पिता (श्रीव्यास) जी की आज्ञा से शुकदेव जी द्वारा विदेहाधिपति जनक से (श्रीमद्देवीभागवत् सक १, अ १४–१६) आत्मज्ञान की प्राप्ति सर्वविदित ही है।

हिमालय के सान्निध्य एवं गंगादि विविध नदियों के प्रवाह होने के कारण यहाँ का वातावरण शुद्ध एवं भूमि ऊर्वराशक्ति सम्पन्न है। अतएव सम्पूर्ण क्षेत्र जीवनोंपयोगी कन्द, मूल, वनस्पति, लता, गुल्म, फूल, फल, औषधि तथा शरद, हेमन्त एवं ग्रैष्मिक धान्यादि विविध वस्तुओं के उत्पादन के लिए मशहूर है। विशेषतः हाजीपुर का केला, मुजफ्फपुर की शाही लीची, समस्तीपुर का विविध कृषि उत्पादन, चम्पारण का धान, भागलपुर के कतरनी धान का चूड़ा, दरभंगा का मालदह आम एवं सकल मिथिलाञ्चल का पान, माँछ तथा मखान प्रसिद्ध है।

यहाँ के लोग शालीनता, कर्मठता, सौम्यस्वरूप, आचार–विचार, प्रतिभा, मेधाविता एवं उच्चविचार के लिये प्रसिद्ध हैं। मनोरंजन–हास्य–गीत–संगीत–नृत्य क्षेत्रों में रामलीला, भजन–कीर्त्तन, लोरिक, दीनाभद्री, विहुला, राजा–सलहेश, सामाचकेवा, कठपुतली एवं जटजटिन आदि सुप्रसिद्ध है।

यह संपूर्ण क्षेत्र शक्तिपीठ के नाम से विख्यात है। आदि शक्ति सती के योगाग्निदग्ध शरीर के विभिन्नावयवपात से जब इस धराधाम पर ५१ सिद्धपीठ बन गये तो जहाँ उनका साक्षात् प्राकट्य हो उस धाम के संबंध में कुछ कहने की आवश्यकता ही क्या है? यहाँ सोमेश्वरनाथ, गरीबनाथ, हरिहरनाथ, उग्रनाथ (उगना), कपिलेश्वर, सिंहेश्वर, कुशेश्वर, त्रिपुरसुन्दरी, छिन्नमस्तिका, रमेश्वरी श्यामा, काली, कंकाली, दुर्गा, उग्रतारा, वृद्धेश्वर (बूढ़ानाथ), जयमंगला, बगला, भुवनेश्वरी, कल्याणेश्वर, जलेश्वर, हलेश्वर, अहल्या–गौतम स्थान, गिरिजास्थान, जानकीस्थान, जनकपुरधाम आदि शिव–शक्तिक्षेत्र सतत् प्रेरणास्रोत के रूप में इस क्षेत्र में विद्यमान है ।

यह विश्व में एकमात्र ऐसा क्षेत्र है जिसमें वैवाहिक संबंध हेतु अधिकारमूलक जानकारी के लिये पञ्जीप्रबन्ध की व्यवस्था है। यहाँ (मधुबनी) की चित्रकला सर्वत्र विख्यात है। यह भूमि (चम्पारण) महात्मा गांधी की एवं (मुजफ्फरपुर) जयप्रकाश नारायण की कर्मभूमि रही है। इस तरह हर क्षेत्र में इसका अपना महत्त्वपूर्ण अवदान अति प्राचीन काल से ही रहा है। अस्तु ।

उपर्युक्त परिप्रेक्ष्य में अन्य विद्याओं के साथ–साथ ज्योतिष के क्षेत्र में भी तीरभुक्ति का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। यहाँ अनेक गन्थकार, टीकाकार एवं संपादक हुए हैं जिनकी कृति ज्यौतिष जगत् में सदैव शिरोमणि की तरह समादृत है। इनमें सिद्धान्तशेखरकार श्रीपति एवं तट्टीकाकार बबुआजी (श्रीकृष्ण) मिश्र, कृत्यचिन्तामणिकार चण्डेश्वर, अद्भुतदर्पणकार महामहोपाध्याय माधव, सिद्धान्तसेतु रचयिता एवं सिद्धान्त शिरोमणि प्रभा टीकाकार मुरलीधर ठाकुर, सिद्धान्ततत्त्वविवेक टीकाकार गंगाधर मिश्र, गोलप्रकाशकार नीलाम्बर, भावकुतुहलादि ग्रन्थकार जीवनाथ दैवज्ञ, व्यवहाररत्नकार भानुनाथ, चापीयत्रिकोणमिति–गोलीय रेखागणितटीकाकार–चन्द्रशेखर झा, चापीयंत्रिकोणमिति–टीकाकार महावीर पाण्डेय, ज्योतिषरत्नाकरकार देवकीनन्दन सिंह मोखतार, आर्यभटीय टीकाकार बलदेव मिश्र, मकरन्दोपत्तिकार गोकुलनाथ, शताधिकग्रन्थप्रणेता म. म. मधुसूदन ओझा, वृहजातक–सूर्यसद्धान्तादिटीकाकार सीताराम झा, वृहत्संहितादिग्रन्थटीकाकार अच्युतानन्द झा, जातकक्रोडकार–कृष्णदत्त झा, सिद्धान्त–सुधाकार परमानन्द, बीजगणितादिटीकाकार देवचन्द्र झा, ग्रहणमालाकार म.म. हेमाङ्गद ठाकुर, रत्नशतककार जीवेश्वरदैवज्ञ, टिप्पणी विवरणकार बुद्धिनाथ झा, सूर्यसिद्धान्तटीकाकार कपिलेश्वर चौधरी एवं सिद्धान्ततत्त्वविवेकादिग्रन्थ संपादक म. म. मुरलीधर झा आदि प्रमुख हैं। वर्तमान समय में भी उच्चकोटि के ग्रन्थकार, टीकाकार, संपादक, अध्यापक एवं चिन्तक ज्योतिर्विद् यहाँ हैं।

सभी प्रकार के शास्त्रीय एवं व्यावहारिक कार्यों के लिए शुभ मुहूर्त्त का ज्ञान उपेक्षित होता हैं। शुभमुहूर्त्त की जानकारी ज्योतिषशास्त्र की गणनानुसार निर्मित पञ्चाङ्ग से होती है। तदनुसार विवाहादि सकल शास्त्रीय एवं व्यावहारिक शुभकार्य सम्पन्न किये जाते हैं।

तीरभुक्ति क्षेत्र में प्राचीन काल से ही पञ्चाङ्ग निर्माण की परम्परा है। मुद्रण व्यवस्था से पूर्व हस्तलिखित पञ्चाङ्ग का प्रचलन था। तत्पचात् मुद्रित पञ्चाङ्ग का प्रचलन हुआ। मुद्रित–पञ्चाङ्गकारों में गोवर्धन–टुमनी–बालकृष्ण–रूपनारायण–लोकनाथ–कण्टीर–महीधर–उमानाथ–उमाकान्त–झारिखण्डी–महेन्द्रनारायण–विद्यानाथ जगदीश– अम्बिकानाथ–जगन्नाथ–मुनीन्द्र–जयनारायण–हरिनन्दन– वासुदेव– लक्ष्मीनारायण–लषणलाल–अभिराम–रमानन्द–पुलकित–यशस्पति–कपिलेश्वर–परमानन्दन–बलदेव– ब्रजकिशोर–अयोध्यानाथ– लक्ष्मीकान्त आदि ज्योतिर्विदो के नाम प्रमुख हैं।

मिथिला की उक्त मर्यादा को अक्षुण्ण बनाये रखने के उद्देश्य से महाराधिराज–सर–कामेश्वरसिंह ने १९६१ ई. में उत्तम पुस्तकालय से सुसज्जित अपना आवास भवन "लक्ष्मीश्वर–विलास–प्रासाद" दान देकर इस विश्वविद्यालय की स्थापना की जिसका उद्देश्य संस्कृत (पाली–प्राकृत सहित) विद्या का अध्ययन–अध्यापन एवं प्रचार–प्रसार है। इसी परिप्रेक्ष्य में पण्डित सभा के निर्णयानुसार १९७८–७९ ई. से "विश्वविद्यालय पञ्चाङ्ग" का निरन्तर प्रकाशन हो रहा है जिसका आधार मकरन्द सारिणी है । मकरन्दाचार्य ने समूलमकरन्दसारिणी या मकरन्दसारिणी नामक एक ग्रन्थ लगभग ५०० वर्ष पहले लिखा है । इन्होंने यह ग्रन्थ काशी में बनाया जिसके प्रथम श्लोक में यह स्पष्ट है–

श्रीसूर्यसिद्धान्तमतेन सम्यग् विश्वोपकाराय गुरूपदेशात् ।
तिथ्यादिपत्रं वितनोति काश्या-मानन्दकन्दो मकरन्दनामा ।। इति ।।

यद्यपि स्थानादि का उल्लेख इन्होंने स्वयं नहीं किया है। तथापि परंपरया लोग इन्हें तीरभुक्ति परंपरा (मकरन्दा, दरभंगा) के मानते हैं । इनका जन्म शकाब्द १४०० माना गया है। तत्पश्चात् उनके ग्रन्थ पर दिवाकर दैवज्ञ ने शकाब्द १५२८ में मकरन्द विवरण, विश्वनाथ ने शकाब्द १५४० में उदाहरण तथा शकाब्द १६८८ में गोकुलनाथ ने उपपत्ति लिखी है। अन्त में शकाब्द १८३१ में नारायण शर्मा (मिथिलावयव–नेपालराज्यान्तर्गत–रौतहटजिलान्तःपाति–लक्ष्मीपुरग्रामवासी) ने सारिणी के साथ–साथ फलादेश आदि विषययुक्त सरल एवं मनोरम मकरन्दप्रकाशनामक ग्रन्थ बनाया, जो उनके निम्नलिखित कथन से स्पष्ट है–

शशिशिखीगजभूमिशके समे सितदलेऽमलकार्तिक-मासके ।
शशिसुतस्य दिने हरिवासरे विरतिरस्य बभूव तिथौ हरेः ।। (ग्रन्थकर्तृपरिचय, श्लो. ६)

इससे स्पष्ट होता है कि मकदरन्दसारिणी ग्रन्थ को ही विद्वानों ने यथासमय गणित, उदाहरण, उपपत्ति एवं फलादेश आदि द्वारा परिष्कृत किया है। इनमें दिवाकर ने दो महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं–(१) कुजादि ग्रहों में बीज संस्कार तथा फलचतुष्टय के स्थान पर फलत्रय संस्कार। इनमें परवर्ती विद्वानों ने बीजसंस्कार को अंगीकार नहीं किया किन्तु फलत्रय संस्कार को माना। श्री लषण लाल झा के अनुसार विष्णुदैवज्ञ आदि आचार्यों ने भी इसी को स्वीकार किया है। (मकरन्द प्रकाश, आमुख, पृ४)। आजकल इसी आधार पर पञ्चाङ्ग बनाये जाते हैं। बीज संस्कार एवं ३ या ४ फलों के संस्कारादि के विषय में चिरकाल से विद्वानों के बीच मतैक्य का अभाव रहा है। इस क्रम में गुरु–शुक्र का शीघ्रकेन्द्रांश के स्थान पर क्रमशः ११–६ उदयास्त कालांश स्वीकार किया गया है तथा गुरु–शुक्र के बाल्य वार्द्धक्य तीन–तीन दिन स्वीकार किये गये हैं ।

देशान्तर–अतिप्राचीनकाल से ही मिथिला देशान्तर तिथ्यादि में १।३५ दण्डादि धन का प्रचलन है, मकरन्दाचार्य के पहले से भी। मकरन्दाचार्य ने इसे लिपिबद्ध किया। नारायणदैवज्ञ का इस अंश में अपना कोई नया योगदान नहीं अपितु पूर्वतः व्यवहारविहित उक्त देशान्तर को यथावत् इन्होंने भी स्वीकार किया है। इस संबंध में मैंने नारायण दैवज्ञ से १४ वर्ष पूर्व १८१६–१७ शकाब्द, १८६४–६५ ई. सन् १३०२ साल, विक्रमसंवत् १९५१–५२ के पञ्चाङ्ग के वैशाखकृष्णद्वितीया २६।१७ दण्डादि, स्वाती १२।२६ दण्डादि, दि. ११।४।१८६५ ई. वृहस्पति दिन के तिथ्यादिमान का साधन मकरन्द की उक्ततविधि से किया तो २६।१६ दण्डादि द्वितीया का मान आया। (एक पल का अंतर सारिणी की भिन्नता से संभव है)। इससे सिद्ध हुआ कि १।३५ देशान्तर के संस्थापक नारायण दैवज्ञ नहीं, अपितु उनके पूर्ववर्ती मकरन्दाचार्य अथवा उनसे भी पूर्ववर्ती आचार्य माने जा सकते हैं।

विभिन्न ग्रन्थों, पञ्चाङ्गों एवं एटलसों के देखने से स्पष्ट होता है कि देशान्तर (रेखांश) के मान में ५ से १० कला तक का अंतर प्राप्त होता है। यह अन्तर व्यवहार–योग्य है। तदनुसार मिथिला का उक्त देशान्तर जगजननी–जानकी की जन्मभूमि अर्थात् सीमामढ़ी का है तथा इसका मान ८५।३० रेखांश पूरब है। पूर्ववर्ती विद्वानों ने काफी मनन–चिन्तन के पश्चात् यह नाम/स्थान निर्धारित किया होगा। इसकी धार्मिक महत्ता, प्राचीनता एवं मान्यता पूर्वोक्त विवेचन से स्पष्ट है। अतः इसमें किसी प्रकार का परिवर्तन सर्वथा अनुचित होगा।

अक्षांश–देशान्तर की भाँति अक्षांश में भी ५–१० कला का अन्तर ग्रन्थभेद अथवा मानचित्रभेद अथवा पञ्चाङ्गभेद से पाया जाता है किन्तु बहुसम्मत पक्षावलम्बन के पश्चात् यह कह सकते हैं कि २६।३५ अंशादि उत्तर अक्षांश (मिथिला) सीतामढ़ी का है ।

पलभा–देशान्तर एवं अक्षांश की भाँति पूर्वतः मिथिला की षडङ्गुल पलभा भी सीतामढ़ी का सिद्ध होता है। इसी के आधार पर राशियों के मिथिलोदयमान अधोलिखित मान्य हैं–

अष्टेन्दुपक्षाः शशिबाणपक्षा गुणाभ्ररामा गुणवेदरामाः ।
शैलाब्धिरामा वसुरामरामाः क्रमोत्क्रमान्मेषतुलादिमानम् ।। [जीवेश्वर (१३०० ई.) कृत रत्नशतक, श्लो. १४]

कोई भी पञ्चाङ्ग किसी खास रेखांश, अक्षांश एवं पलभा के आधार पर बनता है। तदनुसार "विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्ग" का रेखांश ८५।३० पूरब, अक्षांश २६।३५ उत्तर तथा पलभा ६ अंगुल है। मिथिला के सभी पञ्चाङ्ग इसी रेखांश एवं अक्षांश के आधार पर प्राचीनकाल से बनते आ रहें हैं।

सूर्योदय–ज्ञातव्य है कि स्थानीय समय प्रत्येक स्थान में भिन्न–भिन्न होते हैं किन्तु प्रामाणिक समय आजकल प्रायः देशस्तर पर एक होता है । इससे सरकारी कार्यों (रेल–डाक परिचालनादि) में सुविधा होती है। किन्तु वास्तविक फलदान शक्ति स्थानीय समय में ही है। अतएव प्रामाणिक समय को स्थानीय समय में बदलकर निर्मित कुण्डली के आधार पर फलादेश किया जाता है। वैसे पञ्चाङ्ग प्रामाणिक समयानुसार भी बन सकता है किन्तु फलदायकता, परंपरा एवं मर्यादा की दृष्टि से स्थानीय समयानुसार पञ्चाङ्ग में तिथ्यादि का उल्लेख उचित है। अन्य स्थानों में शास्त्रविहित रीति से अपेक्षित संस्कार कर उनकी जानकारी प्राप्त की जाती है।

विश्वविद्यालय पञ्चाङ्ग का सूर्योदय स्थानीय है। मकरन्दाचार्य की अथवा आर्षपरंपरा भी यही है। अतः जैसे प्रामाणिक (स्टैण्डर्ड) समय मे देशान्तर–बेलान्तर संस्कार कर उसे स्थानीय समय (जन्मकुण्डली–फलादेश हेतु) बनाया जाता है, उसी तरह इसके विपरीत संस्कार द्वारा स्थानीय समय को भी प्रामाणिक समय में बदला जा सकता है। उदाहरण–प्रतिहारषष्ठी प्रातः कालिक अर्घ के दिन दि. ०२।११।२०११ को इस पञ्चाङ्ग में स्थानीय सूर्योदय मान ६।२६ (घण्टा–मिनट) हैं। इस दिन उक्त नियमानुसार ६।२६–०।१६ (वेलान्तर) = ६।१३, ६।१३–०।१२ (देशान्तर) = ६।१ = प्रामाणिक समय होगा जानकी जन्मभूमि–सीतामढ़ी, शिवहर, मुजफ्फरपुर, नालन्दा एवं राँची का । उक्त विधि से उक्ततिथि को किशनगंज में ५।५१, कटिहार में ५।५२, पूर्णिया–अररिया में ५।५३, विराटनगर में ५।५४, फारविसगंज, सहरसा, सुपौल, मधेपुरा में ५।५५, देवघर, सिन्दरी, भागलपुर में ५।५६, बोकारो, बेगूसराय, खगड़िया, मुंगेर में ५।५७, समस्तीपुर, जमुई, जयनगर, जमशेदपुर, झाझा में ५।५८, दरभंगा, मोकामा, मधुबनी में ५।५६, जनकपुर में ६।०, हाजीपुर, सोनपुर, पटना, वैशाली, काठमाण्डू में ६।०२, वीरगंज, दानापुर में ६।०३, छपरा, मोतिहारी, रक्सौल, आरा, नरकटियागंज में ६।०४, बगहा–बेतिया में ६।०५, बक्सर, सासाराम में ६।७, ममुआ में ६।६, काशी में ६।११, प्रयाग में ६।१६, कलकत्ता में ५।५०, दिल्ली में ६।३४, मुम्बई में ६।५१ तथा लखनऊ में ६।१६ बजे प्रामाणिक समयानुसार सूर्योदय होगा। इसी तरह अन्य दिनों में भी ज्ञातव्य है । उक्त तिथि को बेलान्तर परमाधिक (१६ मि. धन) है। १५–१६ अप्रील एवं जून को बेलान्तर शून्य रहने के कारण अन्तर परमाल्प होगा। अतः सूर्योदयादि मान पर किसी प्रकार का आक्षेप समुचित नहीं हे।

भूकेन्द्रिक गणना के आधार पर धर्मकृत्य का संपादन तथा फलादेश उचित है। इस दृष्टि से सूर्यसिद्धान्त के अनुसार निर्मित मकरन्द सारिणी के आधार पर बना हुआ "विश्वविद्यालय–पञ्चाङ्ग" सर्वथा उपयुक्त है। भूकेन्द्रिक गणना (आर्षमत) में अदृष्टफलदान की शक्ति है। पृष्ठाभिप्रायिक गणना ग्रहण–शृंङ्गोन्नति दर्शन के लिये मान्य है। अतएव पञ्चाङ्ग में अदृश्य और दृश्य दोनों ही गणना अपेक्षित है। अतः ग्रहणादि के दर्शन के लिये दृश्यगणित तथा तिथ्यादिसाधन में अदृश्यगणना मान्य है। आचार्य गिरिजा प्रसाद द्विवेदी जी ने भी यह बात स्पष्टतया सिद्धान्तशिरोमणि की टीका में लिखी है। (स्पष्टाधिकार श्लोक ७१–७५ की टिप्पणी)। सिद्धान्ततत्त्वविवेक में कमलाकर ने भी लिखा है–

अदृष्टफलसिद्ध्यर्थं यथार्काद्युक्तितः कुरु ।
गणितं यद्धि दृष्टार्थं तद्दृष्टयुद्भवतः सदा ।। (म. अ. श्लो. ३२६)

पृथ्वी के संकोच एवं प्रसार, समुद्रजल स्तर में वृद्धि, हिमजल की न्यूनाधिकता, ग्रहों के बिम्ब–स्थानोदय में भेद, ग्रहों की ऊर्ध्वाधर, याम्योत्तर एवं पूर्वापर गति की प्रतिक्षण विलक्षणता एवं भूकम्पादि विविध प्राकृतिक ज्ञाताज्ञात कारणों से ज्योतिष शस्त्रीय गणना में भी आचार्य एवं कालभेद से अन्तर की संभावना रहती है। तात्कालिक सत्यता की जानकारी वेधादि द्वारा हो जाने पर भी दीर्घकालीन अथवा भविष्य की सत्यता का ज्ञान केवल अतीन्द्रियज्ञानियों को ही संभव हो पाता है। इन सभी परिस्थितियों को सही रूप में जानबुझकर ही हमारे पूर्वजों ने आर्षमूलक सिद्धान्त की स्थापना की। यह सिद्धान्त स्थायी है, क्योंकि यह दिव्य दृष्टि सम्पन्न ऋषियों, तपस्वीगणों एवं ज्ञानियों द्वारा स्थापित है। अतः त्रिकाल सत्य है। मनुष्यकृत सिद्धान्त स्थायी नहीं होते हैं। ये सतत् परिवर्तित होते रहते हैं क्योंकि इन्हें दीर्घकालीनज्ञान अथवा अतीन्द्रियज्ञान नहीं होता है। उदाहरणस्वरूप १००–२०० वर्षों से मनुष्य द्वारा ग्रहकोटि में स्वीकृत प्लुटो ग्रह का अभी–अभी लगभग ५ वर्ष पहले वैज्ञानिकों ने ग्रहत्व समाप्त कर दिया है, किन्तु हमारे यहाँ बहुत से ऐसे पञ्चाङ्ग हैं जिनमें इनके समावेश (फलादेश के लिये) कर लिये गये हैं। कम्प्युटर–निर्मित कुण्डली की भी यही दशा है। यह स्थिति चिन्तनीय है। फलतः आर्षमत में किसी प्रकार का आक्षेप अनुचित हैं। अतएव यह पञ्चाङ्ग शास्त्रानुमोदित, व्यवहारविहित, परंपरासंपोषक एवं धर्मकृत्योपयोगी है।

परमश्रद्धेय स्वामी श्रीचिदात्मन् जी महाराज के प्रस्ताव एवं पण्डितसभा के निर्णय के आलोक में मिथिला के सिमरियाधाम में तुलाराशिगत गुरु–सूर्य की स्थिति में कुंभयोग का आयोजन होगा। यह योग १८ अक्टूबर से १७ नवम्बर २०१७ ई. के मध्य होगा । इस वर्ष गुरु की भगणार्द्धस्थितिवशात् उक्त धाम में दि. १८।१०।२०११ से १७।११।११ ई. तक अर्द्धकुंभयोग लगेगा जिसमें "चतुर्दश्यष्टमी चैव अमावास्याथ पूर्णिमा। पर्वाण्येतानि राजेन्द्र रविसंक्रान्तिरेव च" ।। (विष्णुपुराण ३।११।११८) वचनानुसार अष्टमी, चतुर्दशी, अमावस्या, सत्ययुगादित्वात् अक्षयनवमी, पूर्णिमा एवं संक्रान्ति विशेषस्नान (शाहीस्नान) के महत्त्वपूर्ण दिन होंगे। वैसे तुला से वृश्चिक संक्रान्तिपर्यन्त प्रतिदिन स्नानपूजाजपहोमदानादि अनन्तफलद होंगे।

अन्त में धर्मानुरागी विद्वजनों एवं ज्यौतिषशास्त्र के मूर्धन्य विद्वानों से निवेदन है कि कृपा करके उक्त विषयों के आलोक में अपना बहुमूल्य सम्मति प्रदान कर हमें अनुगृहीत करेंगे ताकि आगे तदनुसार इस दिशा में कार्य करने के लिये प्रोत्साहन मिलता रहे। सभी के सहयोग से कार्यसम्पादन में सुविधा होती हैं तथा समस्या का समाधान होता है। यह एक ऐसा क्लिष्ट कार्य है जिसे अकेले करना सर्वथा संभव नहीं है। किन्तु यदि विद्वानों का मार्गदर्शन मिलता रहे तो कठिन कार्य भी आसान हो जाता है। शमिति।

दरभङ्गा
सौ. दि.-२३।१।१६३३

निवेदक
प. श्रीरामचन्द्र झा

★ देशान्तरसारिणी ★

स्थान		मिनट	स्थान		मिनट
अहल्यास्थान	+	१३।३०	मधुबनी	+	१४।२८
अररिया	+	२०।००	मधपुरा	+	१८।००
आरा	+	८।४०	मुंगेर	+	१६।००
औरंगाबाद	+	७।३२	मुजफ्फरपुर	+	११।५६
कटिहार	+	२०।४०	मोकामा	+	१३।४०
किशनगंज	+	२२।२०	मोतिहारी	+	६।२०
काठमाण्डु	+	११।८	राजगीर	+	११।३६
खगड़िया	+	१६।१०	राँची	+	११।३२
गुमला	+	८।४०	लखीसराय	+	१६।१५
गया	+	१०।००	लोहरदग्गा	+	८।५०
गोड्डा	+	१८।३०	शिवहर	+	१२।००
गोपालगंज	+	७।१५	सहरसा	+	१७।३०
गिरीडीह	+	१५।२०	सीतामढ़ी	+	१२।००
चायवासा	+	१३।२४	साहेबगंज	+	२०।४५
चतरा	+	६।३०	समस्तीपुर	+	१४।५५
छपरा	+	६।६	सिवान	+	६।२८
जमशेदपुर	+	१४।४०	सासाराम	+	६।१२
जमालपुर	+	१६।८	सिन्दरी	+	१६।४०
जयनगर	+	१४।३६	सुपौल	+	१७।४०
जनकपुर	+	१३।२८	सोनपुर	+	१०।४५
जमुई	+	१५।२०	हाजीपुर	+	१०।५५
जहानाबाद	+	६।३०	हजारीबाग	+	११।३५
झरिया	+	१६।१०	अयोध्या	−	१।४४
झाझा	+	१५।३०	अमृतसर	−	३०।२०
डाल्टेनगंज	+	६।४०	आसनसोल	+	१८।४
दरभंगा	+	१३।४८	आगरा	−	१७।४०
दानापुर	+	१०।२०	पुरी	+	१३।००
दुमका	+	१९।२०	इलाहाबाद	−	२।४०
देवघर	+	१७।००	कलकत्ता	+	२३।२४
धनबाद	+	१६।००	कानपुर	−	८।२४
धरान	+	१८।३६	काश्मीर	−	२४।००
धनकूटा	+	१९।१५	कोटा	−	२६।३२
नवादा	+	११।५०	गोहाटी	+	३७।४४
नालन्दा	+	१२।८	गोरखपुर	+	४।००
पटना	+	१०।४०	जयपुर	−	२६।५२
पूर्णियाँ	+	२०।०४	दिल्ली	−	२१।००
पोखरा	+	५।५२	वाराणसी	+	२।८
फारविसगंज	+	१८।२०	मुम्बई	−	३८।२५
बाँका	+	१७।१०	बद्रीनाथ	−	१२।२०
बक्सर	+	६।४	वस्ती	+	१।५२
बेतिया	+	८।३२	बलिया	+	६।४०
बगहा	+	७।४५	विलासपुर	−	१।००
बेगूसराय	+	१६।००	मथुरा	−	१८।४८
बीरगंज	+	१०।००	मद्रास	−	१४।००
विराटनगर	+	१९।०४	लखनऊ	−	६।४
बोकारो	+	१६।३०	रायपुर	−	३।२०
वैशाली	+	१०।३५	बंगलौर	−	१९।३५
भागलपुर	+	१७।२८	हैदराबाद	−	१६।०४
भभुआ	+	४।८	उज्जैन	−	२६।४५
			अहमदाबाद	−	३६।३५

★ वेलान्तरसारिणी ★

मास दिनांक	जन. मि.	फर. मि.	मार्च मि.	अप्रील मि.	मई मि.	जून मि.	जूला. मि.	अग. मि.	सित. मि.	अक्टू. मि.	नव. मि.	दिस. मि.
१	−३	−१४	−१२	−४	+३	+२	−३	−६	+०	+१०	+१६	+११
२	″४	″१४	″१२	″४	″३	″२	″४	″६	″०	″१०	″१६	″११
३	″४	″१४	″१२	″४	″३	″२	″४	″६	″०	″११	″१६	″११
४	″५	″१४	″१२	″३	″३	″२	″४	″६	″१	″११	″१६	″१०
५	″५	″१४	″१२	″३	″३	″२	″४	″६	″१	″११	″१६	″१०
६	″५	″१४	″१२	″३	″३	″२	″४	″६	″१	″१२	″१६	″९
७	″६	″१४	″११	″२	″३	″१	″५	″६	″२	″१२	″१६	″९
८	″६	″१४	″११	″२	″४	″१	″५	″६	″२	″१२	″१६	″९
९	″७	″१४	″११	″२	″४	″१	″५	″६	″२	″१२	″१६	″८
१०	″७	″१४	″११	″२	″४	″१	″५	″५	″३	″१३	″१६	″८
११	″८	″१४	″१०	″१	″४	″१	″५	″५	″३	″१३	″१६	″७
१२	″८	″१४	″१०	″१	″४	″१	″५	″५	″४	″१३	″१६	″७
१३	″८	″१४	″१०	″१	″४	″०	″६	″५	″४	″१३	″१६	″६
१४	″९	″१४	″१०	″१	″४	″०	″६	″५	″४	″१४	″१६	″६
१५	″९	″१४	″९	+०	″४	″०	″६	″५	″५	″१४	″१६	″५
१६	″१०	″१४	″९	″०	″४	″०	″६	″४	″५	″१४	″१६	″५
१७	″१०	″१४	″९	″०	″४	−१	″६	″४	″५	″१४	″१५	″४
१८	″१०	″१४	″८	″०	″४	″१	″६	″४	″५	″१५	″१५	″४
१९	″१०	″१४	″८	″१	″४	″१	″६	″४	″६	″१५	″१५	″३
२०	″११	″१४	″८	″१	″४	″१	″६	″४	″६	″१५	″१५	″३
२१	″११	″१४	″८	″१	″४	″१	″६	″३	″७	″१५	″१४	″२
२२	″११	″१४	″७	″१	″४	″२	″६	″३	″७	″१५	″१४	″२
२३	″१२	″१४	″७	″१	″३	″२	″६	″३	″७	″१५	″१४	″१
२४	″१२	″१३	″७	″२	″३	″२	″६	″३	″८	″१६	″१४	″१
२५	″१२	″१३	″६	″२	″३	″२	″६	″२	″८	″१६	″१३	+०
२६	″१२	″१३	″६	″२	″३	″२	″६	″२	″८	″१६	″१३	−०
२७	″१३	″१३	″६	″२	″३	″३	″६	″२	″९	″१६	″१३	″१
२८	″१३	″१३	″५	″२	″३	″३	″६	″२	″९	″१६	″१२	″१
२९	″१३	″१२	″५	″३	″३	″३	″६	″१	″९	″१६	″१२	″२
३०	″१३	×	″५	″३	″३	″३	″६	″१	+१०	″१६	″१२	″२
३१	−१३	×	−५	×	+३	×	−६	−१	×	+१६	×	−३

देशान्तर एवं वेलान्तर संस्कारप्रकार—सम्पूर्ण भारत में स्टैण्डर्ड समय समान ही है । इसके अनुसार एक ही समय हरेक जगह १० या १२ बजते हैं । परन्तु स्थानीय समय प्रत्येक जगह के भिन्न–भिन्न होते हैं । अतः स्थानीय समय बनाने के लिये वेलान्तर और देशान्तर ये दो संस्कार (जोड़ना या घटाना) करना चाहिए । जैसे—१ जनवरी को देवघर के इष्टकाल में ३ मिनट वेलान्तर ऋण एवं १७ मिनट देशान्तर धन कर देंगे तो देवघर का स्थानीय समय हो जायेगा ।

★ शरीरान्तकालिकवैतरणीदानम् ★

हरि स्मृत्वा कुशत्रयपुष्पाक्षतजलान्यादाय—ओं कृष्णगव्यै नमः ३, कुशोपरि ओं ब्राह्मणाय नमः ३ । तत ओं उष्णे वर्षति शीते वा मारुते वाति वा भृशम् । दातारं त्रायते यस्मात्तस्माद्वैतरणी स्मृता ।। ओं यमद्वारे महाघोरे कृष्णा वैतरणी नदी। तां सन्तुर्तं ददाम्येतां कृष्णां वैतरणीं च गाम् ।। इति पठेत् । ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय—ओमद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणः यमद्वारस्थित–वैतरणीनदीसुखसन्तरणकाम इमां गां रुद्रदैवतां यथानामगोत्राय ब्राह्मणायाहं ददे । ततो ग्रहीता स्वस्तीति वदेत् । ततः कुशत्रयतिलजलान्यादाय—ओमद्य कृतैतत्कृष्णगवीदान— प्रतिष्ठार्थ मेतावद् द्रव्यमूल्य कहिरण्यमग्निदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणामहन्ददे । ततः स्वस्तीत्युक्त्वा ग्रहीता दक्षिणां स्वीकुर्यात् । शूद्र ओमित्यस्य स्थाने नमः, इति पठेत् । गोरभावे एतावद् द्रव्यमूल्यककृष्णगव्यै नमः इति पठेत् । शेषं यथावत्। मातृपक्षे गोत्राया मातुरमुकदेव्याः इति पठेत् ।

★ दाहसंस्कारविधिः ★

स्नातः शुचिवस्त्रादिधरः पूर्वाभिमुख उपविष्टः कुशहस्तः कर्त्ता नूतनमृद्भाण्डे जलं कृत्वा शवञ्च दक्षिणशिरसं कृत्वा ॐ गयादीनि च तीर्थानि ये च पुण्याः शिलोच्चयाः । कुरुक्षेत्रं च गंगां च यमुनां च सरिद्वराम् ।। कौशिकीं चन्द्रभागाञ्च सर्वपापप्रणाशिनीम् । भद्रावकाशां सरयुं गण्डकीं तमसां तथा ।। धैनवञ्च वराहञ्च तीर्थं पिण्डारकं तथा । पृथिव्यां यानि तीर्थानि चत्वारः सागरास्तथा ।। इत्यनेन तीर्थानि ध्यायन् जले आवाह्य तेन जलेन शवं संस्नाप्य नूतनवस्त्रयज्ञोपवीतपुष्पमाल्यचन्दनादिभिरलंकृत्य दारुविरचितचितायां कुशोपरि पुरुषमधोमुखं स्त्रियञ्चोत्तानमुखी मुत्तरशिरसं शाययेत्। ततोऽपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभिमुखो वामपाणिनोल्मुकं गृहीत्वा ॐ कृत्वा सुदुष्करं कर्म जानता वाप्यजानता। मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम्। धर्माधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम् । दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु । इति मन्त्रद्वयं पठित्वा शवं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य शिरोदेशे ज्वलदुल्मुकं दद्यात् । ततस्तृणकाष्ठघृतादिकं चितायां निःक्षिप्य कपोतावशेषं दहेत् । ततः प्रादेशमात्रक—सप्तकाष्ठिकाभिः सह प्रदक्षिणसप्तकं विधाय कुठारेण उल्मुकोपरि प्रहारसप्तकं विधाय 'ॐ' क्रव्यादयः नमस्तुभ्यम्, इति पठित्वा एकैकां काष्ठिकां चितायां क्षिपेत् । ततः ओं अहरहर्न्यमानो गामश्वं पुरुषं पशुम् । वैवस्वतो न तृप्यति सुराररिव दुर्मतिः ।। इति यमगाथां गायन्तो बालपुरस्सराः शवानुगमकर्त्तारः पादेन पादस्पर्शमकुर्वाणाः जलाशयं गत्वा स्नात्वा च ओमद्यामुकगोत्र अमुकप्रेत एष तिलतोयांजलिस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठतामित्यनेन तिलांजलिं दद्युः । स्त्रियाःपक्षे ओमद्यामुकगोत्रे अमुकप्रेते इति पठेयुः । ततः आर्द्रवस्त्रमेव धारयन्तः कर्तुः प्राङ्गणद्वारं गत्वा तत्र ओं लौहवद् दृढकायोऽस्तु इति लौहं, ओमश्मेव स्थिरो भूयासम् इत्यश्मानं, ओमग्निर्नः शर्म यच्छतु इत्यग्निं स्पृशेयुरेत्र प्रत्येकं जलस्पर्शः । ततस्तिक्तं प्राश्य समाचारात् स्वगृहं गच्छेयुरिति ।

★ अशौचव्यवस्था ★

ब्राह्मणों को जन्म से षण्मासाभ्यन्तर शरीरान्त होने पर सद्यः शौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। सात महीने से लेकर दो वर्ष के अन्दर एकाहोरात्र अशौच एवं मृत शरीर का भूमि में निक्षेपण। तीसरे वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त तीन अहोरात्र अशौच, अग्निसंस्कार पिण्डोदक क्रिया एवं चौथे दिन ब्राह्मण भोजन । उसके बाद यज्ञोपवीत हुआ हो अथवा नहीं सबों को दशाहाशौच एवं श्राद्ध । क्षत्रियों को षण्मासाभ्यान्तर ब्राह्मणवत् । सात मास से लेकर दो वर्ष तक दो रात्रि अशौच एवं भूमिनिक्षेपणमात्र । तीन वर्ष से लेकर षड्वर्षपर्यन्त षड्होरात्र अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदकक्रिया । सातवें वर्ष से उपर अग्निसंस्कार, द्वादशाहाशौच एवं श्राद्ध । वैश्यों को जन्म से षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत् । उसके बाद दो वर्षों तक भूमि निक्षेपण एवं तीन दिन अशौच, उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त नौ दिन तक अशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया । उसके बाद सम्पूर्ण पञ्चदशाहाशौच अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध । शूद्रों को षण्मासपर्यन्त ब्राह्मणवत्, उसके बाद दो वर्षों तक पाँच दिन अशौच एवं भूमिनिक्षेपण । उसके बाद षड्वर्षपर्यन्त अविवाहित मृत्यु से ५ दिन तथा विवाहित मृत्यु से द्वादशाहाशौच, अग्निसंस्कार एवं पिण्डोदक क्रिया उसके बाद सम्पूर्ण तीस दिन अशौच, अग्निसंस्कार एवं श्राद्ध ।

★ कन्यामरणाशौचः ★

सभी वर्णों को जन्म से दो वर्ष तक सद्यः शौच । उसके बाद विवाहावधि त्र्यहाशौच । विवाह के बाद पितृगृह अथवा स्वामी के घर में कन्या मृत्यु से माता–पिता को तीन अहोरात्र अशौच एवं स्वामी के घर में विहित स्वस्ववर्णानुसार अशौच एवं श्राद्ध ।

★ अशौचसङ्करविचारः ★

ब्राह्मणों को सम्पूर्णाशौच के बीच में ५ दिन तक, क्षत्रियों को ६ दिन तक, वैश्यों को ७ दिन तक एवं शूद्रों को १५ दिन तक यदि सजातीय द्वितीयसम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो प्रथमाशौच की शुद्धि के साथ–साथ दोनों की शुद्धि तथा साथ–साथ श्राद्ध होता है । यदि सम्पूर्णाशौच के मध्य ब्राह्मणादि को क्रमशः ६,७,८,१६ दिनों से लेकर क्रमशः ९,११,१४, २९ वें अहोरात्र के बीच में सजातीय द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीयाशौचान्त होने पर दोनों की शुद्धि तथा श्राद्ध साथ–साथ होता है ।

यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड रात्रि के अन्दर सजातीयाशौचान्तर प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के तीसरे दिन दोनों का क्षौर तथा चौथे दिन श्राद्ध होता है ।

यदि क्षौरकर्म के दिन ५६ दण्ड के बाद द्वितीय सम्पूर्णाशौच प्राप्त हो तो द्वितीय मृत्यु के चौथे दिन दोनों का क्षौर तथा पाँचवें दिन श्राद्ध होता है ।

आद्यश्राद्धसंकल्पानन्तर द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त हो तो आद्य श्राद्ध हो जाता है परञ्च सपण्डिन, द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन होता है । सपिण्डनदिन, संकल्प से पूर्व द्वितीय तादृशाशौच प्राप्त होने पर द्वितीय के आद्य श्राद्धदिन सपिण्डन होना चाहिए। सम्पूर्णाशौच के मध्य त्रिरात्राशौच तथा मरणाशौच के मध्य जननाशौच की मान्यता नहीं होता है। त्रिरात्राशौच के मध्य द्वितीय त्रिरात्राशौच हो जाय तो द्वितीय त्रिरात्राशौचानुसार दोनों की शुद्धि होती है ।

दूर्वाक्षतदानमन्त्रः

ॐ आब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्ध्रिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायताम् । निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्ताम् योगक्षेमो नः कल्पताम् । मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः । शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव ।

यज्ञोपवीतधारणमन्त्रः

वाजसनेयिनां—ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् । आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः । **छन्दोगानां**—ॐ यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वोपवीतेनोपनह्यामि । **जीर्णयज्ञोपवीतत्यागमन्त्रः**—एतावद्दिनपर्यन्तं ब्रह्म त्वं धारितं मया । जीर्णत्वात्त्वत्परित्यागो गच्छ सूत्र यथासुखम् ।

ग्रहाणां यजुर्वेदीय (वाजसनेयि) शान्तिमन्त्राः

सूर्यस्य—ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च । हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । **चन्द्रस्य**—ॐ इमं देवा असपत्नग्वं सुबध्वं महते क्षत्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय । इमममुष्य पुत्रममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी राजा सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानाग्वं राजा । **कुजस्य**—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपाग्वं रेताग्वंसि जिन्वति । **बुधस्य**—ॐ उद्बुध्यस्वाग्ने: प्रतिजागृहि त्वमिष्टापूर्ते सग्वं सृजेथामयञ्च । अस्मिन्त्सधस्थे अध्युत्तरस्मिंन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत । **गुरोः**—ॐ वृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋत प्रजात तदस्मासु द्रविणन्धेहि चित्रम् । **भृगोः**—ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः । ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपानग्वं शुक्रमन्धस इन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु । **शनेः**—ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । संयोरभिस्रवन्तु नः । **राहोः**—ॐ कयानश्चित्र आभुव दूती सदावृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता । **केतोः**—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ।

ग्रहाणां सामवेदीय (छन्दोग) शान्तिमन्त्राः

सूर्यस्य—ॐ उदुत्यञ्जातवेदसं देवं वहन्ति केतवः । दृशे विश्वाय सूर्यम् । **चन्द्रस्य**—ॐ सन्ते पयांसि समयन्तुबाजाः संवृष्ण्यान्यभिमातिषाहः । आप्यायमानो अमृताय सोम दिवि श्रवांस्युत्तमानिधिष्व। **कुजस्य**—ॐ अग्निर्मूर्द्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम् । अपां रेतांसि जिन्वति । **बुधस्य**—ॐ अग्ने विवश्वदुषसश्चित्रां राह्नो अमर्त्य आदाशुषे। जातवेदो वहात्वमद्या देवो उषर्बुधः । **गुरोः**—ॐ वृहस्पते परिदीयारथेन रक्षोहामित्रां अपबाधमानः । प्रभञ्जत्सेनाः प्रमृणो युधाजयन्नस्माकं मेध्यविता रथानाम्। **शुक्रस्य**—शुक्रन्ते अन्यद्यजन्ते अन्यद्विषुरूपे अहनी द्यौरिवासि विश्वाहि माया । अवसि स्वधावन् भद्रा ते पूषन्निह रातिरस्तु । **शनेः**—ॐ शन्नो देवीरभिष्टये शन्नो भवन्तु पीतये । संयोरभिस्रवन्तु नः । **राहोः**—ॐ कयानश्चित्र आभुवदूती सदा वृधः सखा । कया शचिष्ठया वृता । **केतोः**—ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशोमर्या अपेशसे । समुषद्भिरजायथाः ।

विशिष्टपर्वसूची

पर्व	तिथि	पर्व	तिथि	पर्व	तिथि
मीनापञ्चमी	२० जुलाई	अर्द्धकुंभयोगारंभ	१८ अक्टूबर	मकरसंक्रान्ति	१५ जनवरी
मधुश्रावणी	२ अगस्त	धन्वन्तरिजयन्ती	२४ अक्टूबर	नरकनिवारण १४	२१ जनवरी
नागपञ्चमी	४ अगस्त	हनुमानजयन्ती	२५ अक्टूबर	सोमवारी	२३ जनवरी
शीतलासप्तमी	६ अगस्त	दीपावली	२६ अक्टूबर	गणतन्त्रदिवस	२६ जनवरी
संस्कृतदिवस	१३ अगस्त	लक्ष्मीपूजा	२६ अक्टूबर	वसन्तपंचमी	२८ जनवरी
रक्षाबन्धन	१३ अगस्त	कालीपूजा	२६ अक्टूबर	सरस्वतीपूजा	२८ जनवरी
स्वतन्त्रतादिवस	१५ अगस्त	गोवर्द्धनपूजा	२७ अक्टूबर	अचलासप्तमी	३० जनवरी
कृष्णाष्टमी	२२ अगस्त	अन्नकूट	२७ अक्टूबर	माघीपूर्णिमा	७ फरवरी
कुशोत्पाटन	२६ अगस्त	भ्रातृद्वितीया	२८ अक्टूबर	महाशिवरात्रि	२० फरवरी
सोमवारी	२६ अगस्त	चित्रगुप्तपूजा	२८ अक्टूबर	शिवदर्शन	२० फरवरी
हरितालिका	३१ अगस्त	प्रतिहारषष्ठीव्रत	१ नवम्बर	होलिकादाह	७ मार्च
चौठचन्द्र	१ सितम्बर	जगद्धात्रीपूजा	२ नवम्बर	होली	९ मार्च
गणेशपूजा	१ सितम्बर	गोपाष्टमी	३ नवम्बर	सप्ताडोरा	९ मार्च
राधाष्टमी	५ सितम्बर	अक्षयनवमी	४ नवम्बर	वारुणीयोग	२० मार्च
इन्द्रपूजारंभ	६ सितम्बर	देवोत्थान ११	६ नवम्बर	रामनवमी	१ अप्रैल
वामनद्वादशी	९ सितम्बर	विद्यापतिपर्व	८ नवम्बर	महावीरजयन्ती	४ अप्रैल
अनन्तपूजा	११ सितम्बर	सामापूजा	१० नवम्बर	मेषसंक्रान्ति	१३ अप्रैल
अगस्त्यार्घदान	१२ सितम्बर	कार्त्तिकेयपूजा	१० नवम्बर	नववर्षारंभ	१३ अप्रैल
पितृपक्षारंभ	१३ सितम्बर	हरिहरक्षेत्रस्नान	१० नवम्बर	जुडिशीतल	१४ अप्रैल
विश्वकर्मापूजा	१८ सितम्बर	कार्त्तिकी १५	१० नवम्बर	अक्षयतृतीया	२४ अप्रैल
जितिया	२० सितम्बर	वीडपञ्चमी	१५ नवम्बर	परशुरामजयन्ती	२४ अप्रैल
मातृनवमी	२१ सितम्बर	अर्द्धकुंभयोगान्त	१७ नवम्बर	रविव्रतान्त	२६ अप्रैल
पितृपक्षान्त	२७ सितम्बर	रविव्रतारंभ	२७ नवम्बर	जानकीनवमीव्रत	३० अप्रैल
कलशस्थापन	२८ सितम्बर	नवान्नपार्वणा	२७ नवम्बर	नरसिंह १४	४ मई
विल्वाभिमन्त्रण	२ अक्टूबर	विवाहपञ्चमी	२६ नवम्बर	बुद्धजयन्ती	६ मई
पत्रिकाप्रवेश	३ अक्टूबर	नवान्नपार्वण	१ दिसम्बर	वटसावित्री	२० मई
निशापूजा	४ अक्टूबर	गीताजयन्ती	६ दिसम्बर	गंगादशहरा	३० मई
महाष्टमीव्रत	४ अक्टूबर	हरिहरक्षेत्रस्नान	१० दिसम्बर	सोमवारी	१८ जून
महानवमीव्रत	५ अक्टूबर	दशातारकारंभ	२४ दिसम्बर	रथयात्रा	२१ जून
विजयादशमी	६ अक्टूबर	दशातारकान्त	३ जनवरी	हरिशयन ११	३० जून
कोजागरा	११ अक्टूबर	कौशिकीस्नान	६ जनवरी	गुरुपूर्णिमा	३ जुलाई
लक्ष्मीपूजा	११ अक्टूबर	गणेशावतार	१२ जनवरी		

सौराठसभा

२१ जूनतः २६ जून २०१२ पर्यन्तम् ।

उपनयनदिनानि—फरवरी २, ३, २४, २६ । मार्च ४ (क्षत्रियवैश्य)। अप्रील १, २, २६ । जून २२।

विवाहदिनानि—नवम्बर, २०, २१, २३, २५, २७, ३० । दिसम्बर—१, ५, ६, ११। जनवरी—१८, १९, २०, २३, २५, २७, २९। फरवरी—२, ३, ८, ९, १०, १५, १६, १७, १९, २३, २४, २६ । मार्च—१, ८, ९, १२ । अप्रील—१५, १६, १८, १९, २५, २६ । जून—८, १०, १३, २४, २५, २८, २९ ।।

ग्रहणं तत्कृत्यञ्च

१. **मार्गशुक्लपूर्णिमायां शनौ** दि. १० ।१२ ।२०११ ई. रात्रौ **मिथिलायां** प्रमाणिकसमयानुसारं खग्रासचन्द्रग्रहणस्पर्शः घं. ६ मि. १४ मोक्षः घं. ९ मि. ५०। स्थानीयसमयानुसारं स्पर्शो रात्रौ घं. ६ मि. ३४ मोक्षः घं. मोक्षः घं. १० मि. १०। ग्रहणादौ भवेत्स्नानं मध्ये होम सुरार्चनम्। मुच्यमाने भवेद्दानं मुक्ते स्नानं समाचरेत्।। सर्वं गंगासमं तोयं सर्वे ब्रह्मसमा द्विजाः । सर्वं भूमिसमं दानं ग्रहणे नात्र संशयः ।। सूर्यग्रहे तु नाश्नीयात्पूर्वं यामचतुष्टयम्। चन्द्रग्रहे तु यामांस्त्रीन् बालवृद्धातुरैर्विना ।। बालवद्धातुरविषये मार्कण्डेयपुराणे—सायाह्ने ग्रहणं चेत्स्यादपराह्णे न भोजनं । अपराह्ने न मध्याह्ने मध्याह्ने चेन्न संगवे। संगवे ग्रहणं चेत्स्यान्न पूर्वां भोजनक्रियाम् ।। **ग्रहणकाले** नाश्नीयात्। ग्रहणे स्नानदानजपश्राद्धहोमादिकमनन्तफलदं भवति। अशुभदग्रहणशान्त्यर्थं सुवर्णगोदानादिकं कार्यमथवा ग्रहणं नावलोकनीयम् ।

माहेन्द्रवायव्यमण्डलयोर्ग्रहणफलं मिश्रितं (वायुवेग व्याध्यग्निभयसस्यहानि—धर्मकृत्य—विशिष्टकार्यादिरूप) फलं बोद्धव्यम्।

धर्मः सनातनो नित्यं जनैः सम्यगनुष्ठितः ।
राष्ट्रं विधत्ते सबलं समृद्धं निरुपद्रवम् ।।

आस्तिक्यभावनावशंवदानां श्रौतस्मार्त्तकर्मानुष्ठान—तत्पराणां शिष्टानां तदनुशिष्टानामितरेषाञ्च जनानां धर्मोपार्जनौपयिकवर्षव्यापिकृत्य जातसम्पादनोचितकालविशेषप्रबोधनप्रयोजनं निर्वोढुं दैवज्ञवर्य—श्रीरामचन्द्रझाशर्म्मणा विनिर्मितं पण्डितमण्डलीसमनुमोदितं पारम्पर्यक्रमागतं पञ्चाङ्गमिदं नूनमलङ्कर्मीणतां कलयिष्यतीत्याशास्ते।

श्रीजानकीनवमी — **डॉ. उमेश शर्मा**
संवत् २०६८ — **कुलपतिः**

अथैतच्चतुस्त्रिंशत्तमे नूतनतिथिपत्रे मैथिलनिबन्धसम्मतसमय—शुद्धिव्रतपर्वविशिष्टयोगप्रभृतिविषयान् संरक्ष्य समयशुद्धौ विहितमुहूर्त्तानुसारं विवाहोपनयनदेवादिप्रतिष्ठा— द्विरागमनमुण्डनकर्णवेध—यात्रागृहारंभ—प्रवेशप्रभृतिदिनानि सन्निवेशितानि। तानि च विश्वविद्यालय—ज्योतिषशोधकेन्द्राभ्यामायोजित चैत्रपूर्णिमासोम १८ ।४ ।२०११ दिवसीय पण्डितसमयानुमोदितानि ।

अपि च पञ्चाङ्गेऽस्मिन् वैशिष्ट्यमाधातुं स्वकीयाः सम्मतीः संस्कारप्रकारांश्च सहर्षं प्रेषयन्तु सुधीवराः ।

अन्ते चात्र कण्टकजन्यदोषाद् बुद्धिभ्रमदोषाद्वा या अशुद्धयस्ताः पूर्वापरसन्दर्भमवलम्ब्य स्वयमेव संशोध्य व्यवहरन्तु गुणैकपक्षपातिनो विद्वांस इति ।

श्रीपरशुरामजयन्ती — **निवेदयति**
सौर दि. २३।१।१९३३ — **पं. श्रीरामचन्द्र झाः**
दूरभाष : ०६४३००६३६४८

ग्रहणफलम्

राशयः—	मेषः	वृषः	मिथुनं	कर्कः	सिंहः	कन्या	तुला	वृश्चिकः	धनुः	मकरः	कुंभः	मीनः
फलानि—	क्षतिः,	घातः,	हानिः,	लाभः,	सुखं	अयश,	कष्टम्	स्त्रीकष्टं	सुखं	चिन्ता	व्यथा	धनं